विक्रमादित्य त्रयी पुस्तक 1

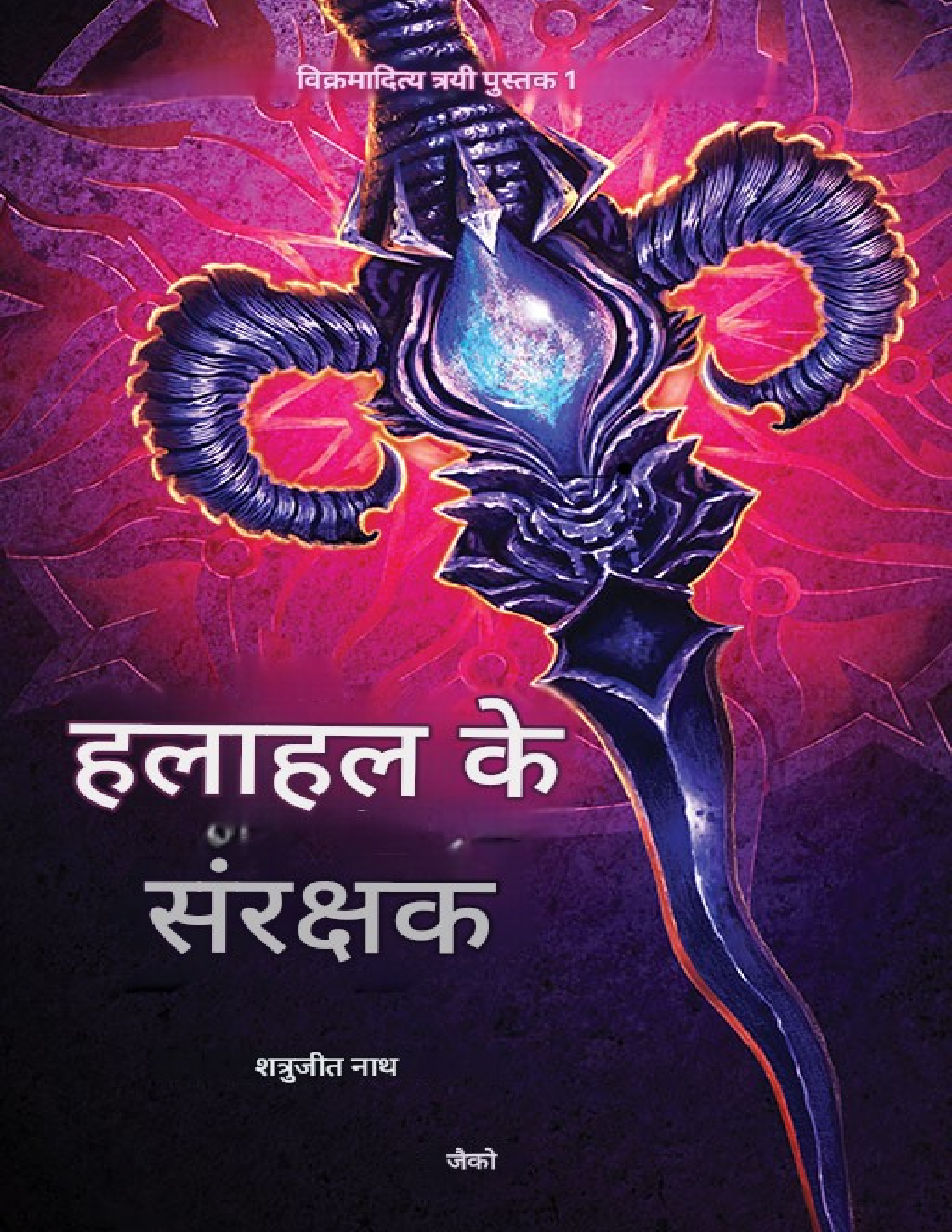

हलाहल के संरक्षक

शत्रुजीत नाथ

जैको

Table of Contents

□□□□ □□ □□□

□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□

□□□□□□□□□□

Hriiz

□□□□ □□□□

□□□□

□□□□□

□□□□

□□□□□

□□□□□

□□□

Andhaka

□□□□□□

□□□□□

□□□□□□□

□□□□□□□□

□□□ □□ □□

Vishakha

□□□□□□□□

□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□

□□□□□□□

□□□□□□□□□□□□

□□□□

□□□□□□□□□

□□□□□

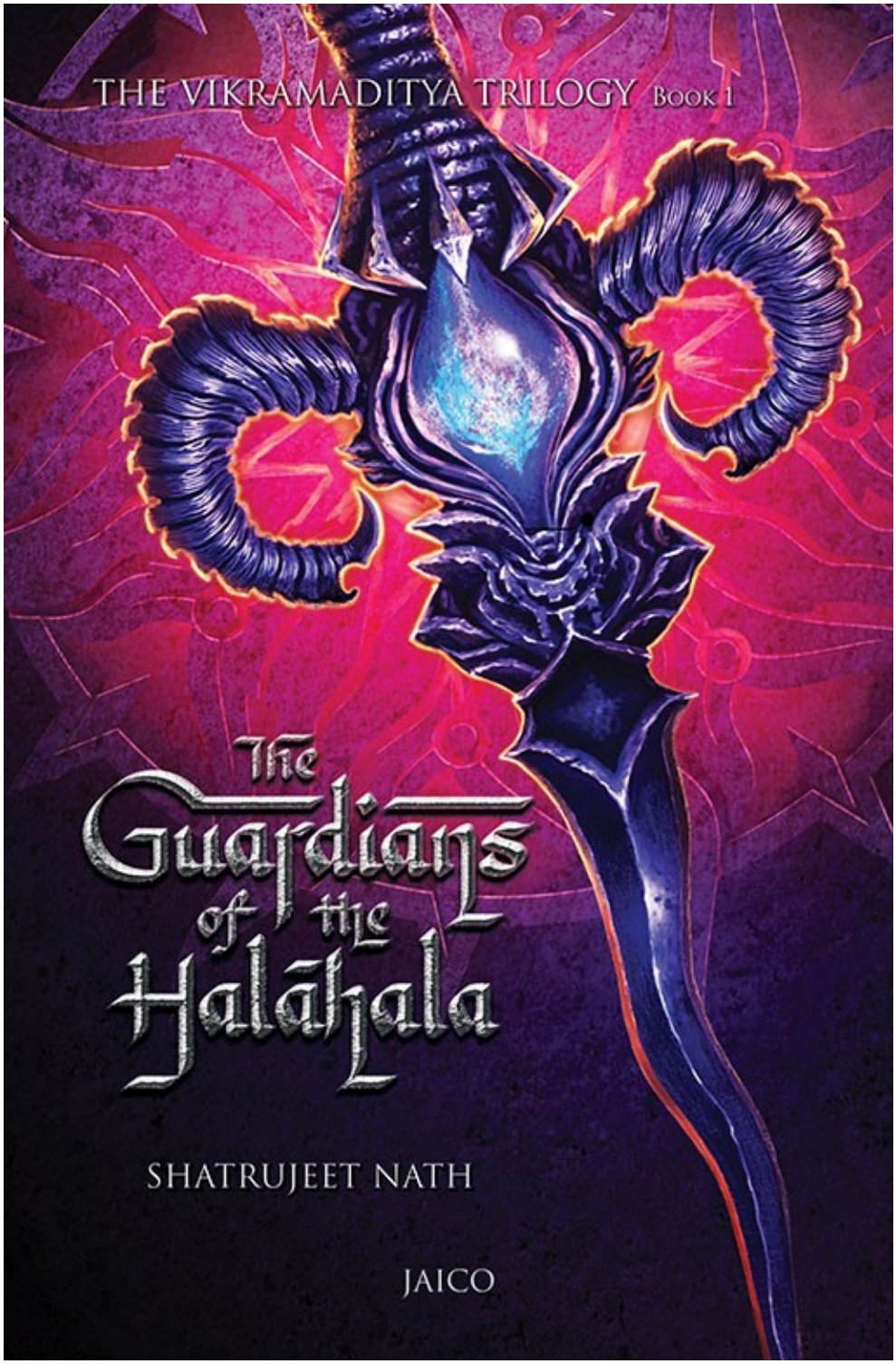
THE VIKRAMADITYA TRILOGY Book 1
The Guardians of the Halāhala
SHATRUJEET NATH
JAICO

THE VIKRAMADITYA TRILOGY Book 1

The Guardians of the Halāhala

SHATRUJEET NATH

JAICO PUBLISHING HOUSE

Ahmedabad Bangalore Bhopal Bhubaneswar Chennai
Delhi Hyderabad Kolkata Lucknow Mumbai

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], ए-2 [illegible], 7-ई [illegible] [illegible], [illegible], [illegible] - 400 001, jaicopub@jaicobooks.com, www.jaicobooks.com

© Shatrujeet Nath

[illegible]: [illegible] 1

[illegible]

ISBN 978-81-8495-638-2

[illegible]: 2015

इस [illegible] को [illegible] या [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] से [illegible] [illegible] या [illegible] [illegible] के [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible] के, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

□□□□□□□□□□

□□□□ □□ □□□

□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□

□□□□□□□□□□

Hriiz

□□□□ □□□□

□□□□

□□□□□

□□□□

□□□□□

□□□□□

□□□

Andhaka

□□□□□□

□□□□□

□□□□□□□

□□□□□□□□

□□□ □□ □□

Vishakha

□□□□□□□□

□□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□

□□□□□□□

□□□□□□□□□□□□

□□□□

□□□□□□□□□

□□□□□

लेखक का नोट

हिंदू पौराणिक कथाओं से परिचित पाठक यह बात तुरंत समझ जाएंगे कि मैंने इस कहानी को कहने में कई स्वतंत्रताएं ली हैं; इस पुस्तक में – और इस श्रृंखला की आने वाली अन्य पुस्तकों में भी – कई बातें स्थापित मिथकों और किंवदंतियों से भिन्न हैं। लेकिन 'स्थापित मिथकों और किंवदंतियों' की धारणा ही त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि पौराणिक कथाएं संभावनाओं का स्रोत हैं, जहां एक ही मिथक के कई रूप सामंजस्य में सह-अस्तित्व में रह सकते हैं। पौराणिक कथाएं हमेशा से इसी तरह रही हैं, कवियों और गीतकारों द्वारा बार-बार सुनाई जाती रही हैं, और प्रत्येक कथाकार कहानी को एक नया रूप देता है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यही बात मिथकों को जीवित रखती है। यह निरंतर बदलती, निरंतर विकसित होती कथा ही मिथकों की सुंदरता है।
पौराणिक कथाएँ स्वभाव से जटिल होती हैं, इसलिए मैंने यहाँ उन्हें यथासंभव सरल बनाने का प्रयास किया है, ताकि हिंदू पौराणिक कथाओं की सीमित जानकारी रखने वाले पाठक भी अत्यधिक विवरण और जानकारी से अभिभूत हुए बिना इस कहानी की मुख्य धारा को समझ सकें। मैं इसमें सफल हुआ हूँ या असफल, इसका निर्धारण केवल पाठक ही कर सकते हैं।
हमेशा की तरह, मैं उन सभी लोगों का आभारी हूं जिन्होंने इस पुस्तक को साकार करने में विभिन्न तरीकों से मेरी सहायता और समर्थन किया है। मेरी भाभी ऋतु मदन, और मेरे मित्रों रवि बालकृष्णन, प्रसन्ना सिंह, शंकर अय्यप्पन कुट्टी, गौरव धर और सौरभ गर्ग को उनके रचनात्मक सुझावों के लिए धन्यवाद। पॉल थॉमस, शेखर शिम्पी, विक्रम गायकवाड़, पायल जुथानी, संदीप कमल और उनकी टीम (इनकैंडललाइट), और सारंग कुलकर्णी और नूपुर दत्ये (व्हाइटक्रॉ डिज़ाइन्स) को भी डिज़ाइन के विभिन्न पहलुओं में उनकी सहायता के लिए धन्यवाद।
मेरी एजेंट कनिष्क गुप्ता और प्रकाशक आकाश शाह के बिना यह किताब संभव नहीं हो पाती। मैं इन दोनों को, साथ ही जैको की टीम - संध्या अय्यर, श्रीजा बसु और मीरा मेनन को धन्यवाद देता हूँ। साथ ही सविता राव, विजयकुमार अरुमुगम, नीता सतीकुवार और विजय ठाकुर को भी धन्यवाद!
मेरे माता-पिता ज्योति प्रसाद नाथ और शमा नाथ, मेरी प्यारी पत्नी प्रज्ञा और मेरी प्रिय बेटी काव्या: मुझ पर आपके विश्वास के लिए मैं आप चारों का जितना भी धन्यवाद करूं कम है।
और आर बाल्की, नंदिनी राघवेंद्र, सागरिका शाह और रेनसिल डी'सिल्वा के प्रति भी विशेष आभार व्यक्त किया जाता है।

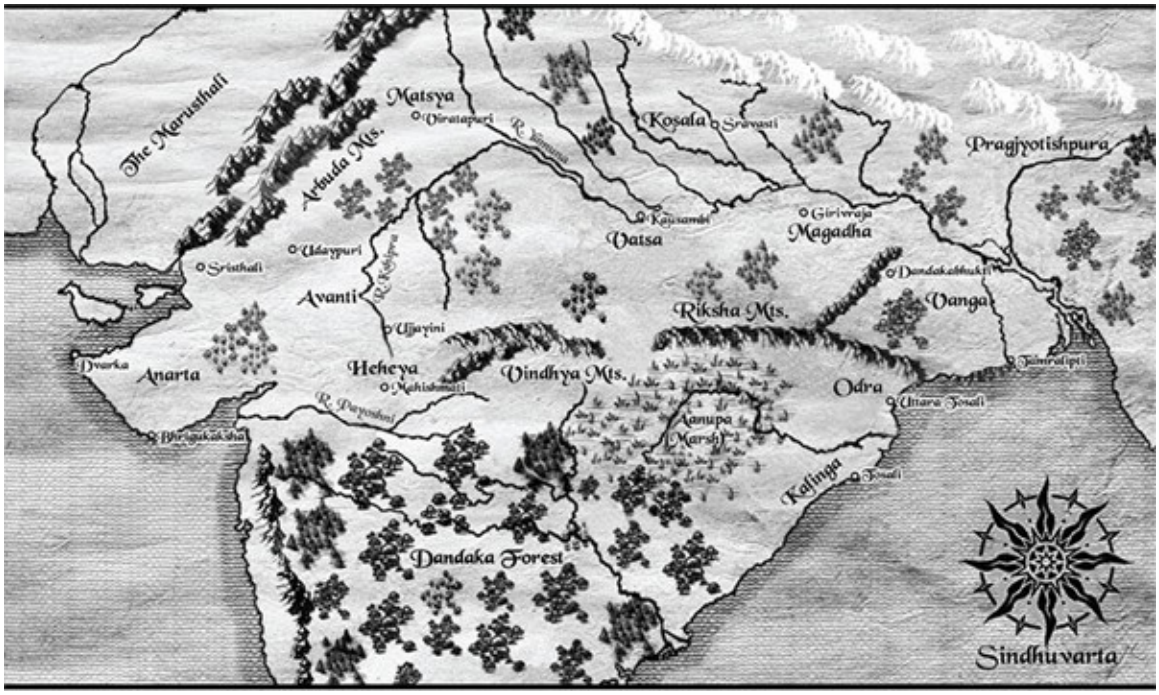
The Marusthali
Matsya
Virataputi
Arbuda Mts.
R. Yamuna
Kosala
Sravasti
Pragjyotishpura
Kausambi
Giriviraja
Magadha
Vatsa
Udayputi
Sristhali
R. Mahipura
Avanti
Dandakabhukti
Vanga
Riksha Mts.
Ujayini
Dwarka
Anarta
Heheya
Mahishmati
Vindhya Mts.
Tamraliptī
Odra
Utkara Josali
R. Payoshni
Bhrigukachha
Anupa (Marsh)
Kalinga
Josali
Dandaka Forest
Sindhuvarta

[illegible] [illegible] of [illegible]

([illegible] [illegible])

[illegible]

[illegible] of [illegible]	
[illegible] [illegible]	[illegible] of [illegible]
[illegible]	[illegible] of [illegible]
[illegible]	[illegible] of [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] of [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] of [illegible]
Dhanavantri	[illegible] of [illegible] of [illegible] [illegible]
Ghatakarpara	[illegible] of [illegible]; [illegible] of [illegible] of [illegible]
[illegible]	[illegible] of [illegible]
Kshapanaka	[illegible] of [illegible] [illegible] [illegible] of [illegible]
Mahendraditya	[illegible] of [illegible] [illegible]; [illegible], [illegible] of [illegible] of [illegible]

[illegible]	[illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
Pralupi	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
Satyaveda	[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
Upashruti	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
Ushantha	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]	[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
Vetala Bhatta	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible]
Vishakha	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]	
Daipayana	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
Shoorasena	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
Siddhasena	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]	
Chandravardhan	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
Himavardhan	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
Shashivardhan	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]	
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]	
Harihara	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]	
[illegible]	[illegible] [illegible]; [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]	
Yugandhara	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]	
Sudasan	[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

Brihaspati	[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible]; [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible]
Urvashi	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

Andhaka	[illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
Hiranyaksha	[illegible] [illegible]; [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
Shukracharya	[illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible]

[illegible]

□□□□ □ □□□□□□□□□; □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□

□□□ □□□□□□□□□□□

प्रस्तावना

मंथन की पांचवीं रात के दौरान किसी समय आकाश में ज्वाला प्रकट हुई, जब देव और असुर श्वेत झील के विपरीत किनारों पर गहरी नींद में सो रहे थे।
हालांकि, इसका पता भोर होते ही चला, जब कुछ देवता अपने भव्य मंडप से बाहर निकले और पश्चिमी आकाश में उस विस्मयकारी दृश्य को देखने लगे। जल्द ही, झील का उत्तरी किनारा देवताओं से भर गया, और उनके शोर ने दक्षिणी किनारे पर बैठे असुरों को जगा दिया। असुर भी अपने तम्बुओं से बाहर आ गए, सिर हिलाते हुए, ऊपर लटकती हुई नुकीली, आँसू के आकार की लौ को देखकर अचंभित थे।
विशाल झील के दोनों किनारों पर आश्चर्य धीरे-धीरे बेचैनी में बदल गया, जैसे- जैसे उगता सूरज हिमालय की युवा चोटियों पर अपनी चमक बिखेरता गया। सूरज की रोशनी से लौ की चमक कम होने के बजाय और भी तीव्र हो गई; आकाश में एक ऐसी चकाचौंध, मानो किसी निर्मम, द्वेषपूर्ण आँख से चमक रही हो।
इसे अपशगुन मानते हुए, असुरों और देवताओं ने दूतों का आदान-प्रदान किया, और दोनों पक्ष एक-दूसरे की राय जानने की कोशिश करने लगे। दोनों में से अधिक संकोची होने के कारण, देवताओं ने मंथन को रोकने और अपशगुन के अपने आप समाप्त होने का इंतजार करने का प्रस्ताव रखा। लेकिन असुर, श्वेत झील की गहराई में छिपे जादुई अमृत को पाने के लालच में, देवताओं को सावधानी छोड़कर झील का मंथन फिर से शुरू करने के लिए उकसाने लगे।
देवताओं की संख्या असुरों से कहीं अधिक थी, और उन्होंने देखा कि असुर मंथन को अकेले ही करने के लिए पूरी तरह तैयार थे। उन्हें यह भी एहसास हुआ कि यदि ऐसा हुआ, तो असुर अमर यौवन के वरदान वाले अमृत पर अपना पूर्ण अधिकार जता देंगे। अमृत में अपना हिस्सा छोड़ने को तैयार न होने के कारण, देवताओं के पास असुरों के प्रस्ताव को स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था।
इस प्रकार, एक ही पिता से जन्मे लेकिन सत्ता की लालसा से विमुख हो चुके देवताओं के दो प्रतिद्वंद्वी कुलों ने लगातार छठे दिन श्वेत झील को मथने का काम शुरू किया।
दिनभर वे परिश्रम करते रहे, जबकि आग की लपटें उनके सिर पर मंडरा रही थीं।
उन्होंने खूब जोर लगाया, पानी कुछ नहीं निकला। थकान उन पर हावी होती गई, सुस्ती और पीड़ादायक – फिर भी वे दृढ़ रहे, घायल और फफोले पड़े हाथों से आशा का सहारा लिए आगे बढ़ते रहे।

फिर, सूर्यास्त से कुछ ही पहले, कीचड़ से भरी, अशांत झील की तलहटी से एक काला पत्थर उभरा। वह पानी में तैरता रहा, भारी होते हुए भी हल्का, भंवरदार धाराएँ उससे टकराती रहीं और उसे धीरे-धीरे दूर किनारे की ओर ले जाती रहीं।
मंथन रुक गया। असुर और देव उस पत्थर को करीब से देखने के लिए दौड़े। वह विशाल था और ओब्सीडियन पत्थर से बना था, जिसे किनारे तक खींचने के लिए आधा दर्जन देवों और असुरों की आवश्यकता पड़ी। जैसे ही पत्थर पानी के किनारे से सुरक्षित दूरी पर पहुँचा, उनके प्रतिद्वंद्वी रिश्तेदार उसके चारों ओर जमा हो गए और लालच भरी जिज्ञासा से उसे घूरने लगे।
उन्हें पता था कि अमृत की उनकी खोज आखिरकार खत्म हो गई है!
ज्वालामुखी के कांच के भीतर गहराई में उन्होंने जो देखा, वह एक इंद्रधनुषी नीली रोशनी थी, जो पत्थर के अंदर दबी हुई एक कोमल घुमावदार आकृति से निकल रही थी। उस घुमावदार आकृति में हजारों सोने और चांदी के कण बिखरे हुए थे, जो ढलते सूरज की किरणों को पकड़ते ही झिलमिलाते हुए चमक रहे थे। नीली रोशनी नियमित अंतराल पर फैल रही थी, जो रात में एक प्रकाशस्तंभ की तरह चट्टान की चिकनी काली सतह से मोहक ढंग से चमक रही थी।
ऊपर उठती हुई भयंकर ज्वाला खून की तरह लाल जल रही थी और आकाश में एक अपवित्र दाग की तरह फैल रही थी, लेकिन देव और असुर इतने सम्मोहित थे कि उन्हें इस बदलाव का पता ही नहीं चला। उन्होंने एक सभा बुलाई और कुछ विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया कि चट्टान को तोड़कर उसमें से अमृत तुरंत बाँट दिया जाए। जैसे ही अधीर देव और असुर एक-दूसरे को धक्का देते हुए कतार में खड़े हुए, एक देव ने अपनी भारी गदा से चट्टान पर प्रहार किया। तीसरे प्रहार पर, पत्थर की सतह पर एक पतली दरार दिखाई दी और तुरंत ही, इंद्रधनुषी नीले रंग की हल्की सी भाप बाहर निकल आई। एकत्रित देवताओं ने उल्लास से जयजयकार की...
लेकिन देखते ही देखते, खुशी निराशा में बदल गई और निराशा भय में तब्दील हो गई। भय की भयानक लहरों से व्याकुल होकर, उन्होंने उस दुर्भाग्यशाली देवता को अपना गदा गिराकर अपने गले पर पंजे मारते देखा। उसका चेहरा हिंसक रूप से फड़कने लगा, उसके कंठों में एक अधूरी चीख गड़गड़ा रही थी। उसकी आँखें सॉकेट से बाहर निकलने लगीं, उसके विकृत चेहरे से त्वचा छिलने लगी। वह पीड़ा से जमीन पर गिर पड़ा, उसका गर्म मांस उसकी हड्डियों से पिघल गया, उसकी आंतें उसके पेट से बाहर निकल आईं और उसका शरीर खून से लथपथ, गंदे गूदे में बदल गया जो रेतीली मिट्टी में एक कर्कश, मरणासन्न कराह के साथ समा गया।

जैसे-जैसे चट्टान से और अधिक नीली धुंध निकली, सल्फर की दुर्गंध हवा में फैल गई, जिसने देव के शव की सुलगती दुर्गंध को भी दबा दिया। कुछ ही क्षणों में, चट्टान के सबसे करीब मौजूद देव और असुर दम घुटने लगे और गिरने लगे।
विषैली गैसों ने आस-पास के पेड़ों को घेर लिया, जिससे पक्षी अपने पंजों से गिर पड़े और ज़मीन पर गिरने से पहले ही उनके पंख आग पकड़ गए। पेड़-पौधे और झाड़ियाँ जलकर राख हो गईं और व्हाइट लेक की सतह किनारों पर अजीब तरह से उबलने और झाग निकलने लगी। ज़मीन के नीचे से कंपन उठने लगे और धरती की सतह पर चटखने वाली दरारें दिखाई देने लगीं।
आकाश में, लाल, दमनकारी लौ ने सूर्य को घेर लिया, और उसका रंग बदलकर एक घिनौने, इंद्रधनुषी नीले रंग में बदल गया।
भयभीत होकर, देव और असुर भाग निकले और झील के किनारे जंगलों में शरण ली। लेकिन हवा के झोंके से विषैली वाष्प उनका पीछा करती हुई, बिना किसी भेदभाव के असुरों और देवों को अपना शिकार बनाती हुई, प्रकृति पर कहर बरपा रही थी। देवताओं के पुरोहित बृहस्पति ऋषि ने असुरों के प्रधान पुरोहित शुक्राचार्य ऋषि से जल्दबाजी में परामर्श किया। कट्टर शत्रुओं ने एक बार इस बात पर सहमति जताई कि देवताओं और असुरों ने चट्टान की सामग्री का आकलन करने में गलती की थी। यह कोई जीवनदायी अमृत नहीं था। इसके विपरीत, यह शापित हलाहल था - आदिम विष, जो यदि निर्वात में न रखा जाए तो समस्त सृष्टि को नष्ट कर सकता है।
मंथन के कारण श्वेत झील की अथाह गहराई से वह विशाल शिलाखंड विस्थापित हो गया था, और अमृत को ग्रहण करने की लालसा में उसे तोड़कर, देवों और असुरों ने अनजाने में हलाहल के सुरक्षात्मक निर्वात का उल्लंघन कर दिया था, जिससे अपने ऊपर विपत्ति को आमंत्रित कर लिया था।
बृहस्पति और शुक्राचार्य ने हलाहल को नियंत्रित करने के लिए अत्यंत रहस्यमय मंत्रों का जाप करते हुए, एक के बाद एक कई मंत्रों का प्रयोग किया। लेकिन दरार इतनी गहरी और चौड़ी थी, और विष इतना शक्तिशाली था कि किसी भी मंत्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। देव और असुर लगातार मृत्यु के शिकार होते रहे, क्योंकि श्वेत झील से उठने वाली भाप हलाहल के साथ मिलकर एक घना, विषैला बादल बना रही थी, जिससे पहाड़ों पर झुलसा देने वाली, अम्लीय वर्षा हो रही थी।
बढ़ते आतंक के सामने घबराकर दोनों ऋषि सहायता के लिए प्राचीन देवता ब्रह्मा और विष्णु के पास गए। देवताओं ने अपनी असहायता स्वीकार करते हुए देवताओं और असुरों को उस शिला को सर्वज्ञ शिव के पास ले जाने का निर्देश दिया, क्योंकि तीनों लोकों में केवल शिव ही हलाहल को नष्ट करने में सक्षम थे।

विष उगलने वाले उस विशाल पत्थर को कैलाश पर्वत पर स्थित शिव के निवास स्थान तक ले जाने के लिए दो दर्जन सबसे शक्तिशाली देवों और असुरों को एकत्रित किया गया। बृहस्पति और शुक्राचार्य ने उनमें से प्रत्येक पर शक्तिशाली मंत्रों का उच्चारण किया ताकि हलाहल के प्रभाव को अस्थायी रूप से दूर किया जा सके, और जुलूस चल पड़ा। तीन दिनों तक, समूह ने तूफानी हवाओं और जमा देने वाली ठंड का सामना करते हुए, तेज हवाओं वाले पहाड़ों से होकर यात्रा की। और अपनी पूरी यात्रा के दौरान, आकाश में क्रोधित नीली ज्वाला उनके साथ रही।
अंततः, तीसरी रात को, जब बृहस्पति और शुक्राचार्य के मंत्रों का प्रभाव कम होने लगा था, तब समूह लड़खड़ाते हुए शिव के निवास स्थान, शाश्वत गुफा के प्रवेश द्वार तक पहुंचा।
उस भयानक वृत्तांत को सुने बिना ही, सर्वज्ञ शिव ने देवताओं और असुरों से विषैला पत्थर मांग लिया। एक हाथ में पत्थर लेकर, सबसे प्राचीन देवता ने उसे गुफा के फर्श पर तोड़ दिया। टूटे हुए पत्थर को होठों तक उठाकर, उन्होंने नीले, गाढ़े हलाहल को तुरंत अपने गले से नीचे उतार लिया।
विष ने शिव के मुख और गले को झुलसा दिया, और वे बुखार से व्याकुल होकर पसीने से तरबतर हो गए। उनकी काली त्वचा राख जैसी हो गई और उस पर छाले पड़ गए, और उनकी मांसल गर्दन इंद्रधनुषी नीले रंग की हो गई क्योंकि तेजाब उनके गले में फंस गया और आग की लपटों में तब्दील हो गया। देवता का दाढ़ीदार चेहरा फूलकर फटने की कगार पर पहुंच गया, और उनकी आंखें सफेद भाग तक ऊपर की ओर घूम गईं, और उन्होंने एक भयानक दहाड़ लगाई जो पहाड़ों पर गूंज उठी, जिससे शक्तिशाली हिमस्खलन उत्पन्न हो गए।
जब शिव ने अपने विशाल त्रिशूल से ज़मीन पर प्रहार किया और पथरीली ज़मीन दो भागों में फट गई, तो देवता और असुर भयभीत होकर एक जगह दुबक गए। जहाँ त्रिशूल लगा, वहाँ एक भूमिगत नदी से जल फूट निकला, और भगवान ने उस जल को लंबे समय तक पीकर हलाहल की आग को बुझा दिया। फिर वे ऐंठन से व्याकुल होकर ज़मीन पर गिर पड़े और शांत हो गए।
अंततः, सर्वशक्तिमान देवता ने अपना सिर उठाया और देवताओं और असुरों की ओर देखा, उनकी आँखें थकी हुई थीं लेकिन शांत थीं - और वे समझ गए कि विष पर विजय प्राप्त कर ली गई है।
ऊपर आसमान में सन्नाटा पसरा हुआ था, उस भयानक अपशगुन का कोई निशान नहीं था। असुर और देवता खुशी से झूम उठे, राहत की सांस लेते हुए एक-दूसरे को गले लगा लिया, उनकी शत्रुता क्षण भर के लिए भुला दी गई। लेकिन जब शिव अपने कोमल गले को

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

कई हजार साल बाद **...**

Hriiz

सीमा रक्षक दल के चार घुड़सवार एक ऊँची पहाड़ी की चोटी पर खड़े होकर, दूर क्षितिज को ढकने वाली बैंगनी धुंध में ढलते हुए मंद नारंगी सूर्य को देख रहे थे। उनके नीचे मरुस्थली रेगिस्तान फैला हुआ था, जो सपाट और सूखा था, जिसकी सतह पर दरारों का मकड़ी के जाले की तरह जाल पश्चिम की ओर अनंत तक फैला हुआ था। उनके पीछे अर्बुदा पर्वतमाला की पथरीली चोटियाँ उठी हुई थीं, जो इस बंजर रेगिस्तान को पूर्व में स्थित सिंधुवर्त की उपजाऊ विशालता से अलग करती थीं। और चारों ओर पहाड़ों की सन्नाटा पसरा हुआ था।
घने कोहरे ने लगभग आधे सूरज को ढक लिया था, तभी एक दाढ़ीदार गिद्ध सुस्ती से घुड़सवारों की नज़र के सामने आ गया। विशाल पक्षी ने कुछ चक्कर लगाए, फिर तेज़ी से एक दूर की चट्टान की ओर मुड़ गया। जैसे ही वह चट्टानों के पीछे गायब हुआ, मरुस्थली से अचानक एक ठंडी हवा चली, जिसने घुड़सवारों के कपड़ों को फड़फड़ाया और उनके सूखे और धूल से सने बालों को बिखेर दिया।
उनमें से एक, एक अनुभवी योद्धा, जिसके सिर पर सूर्य-शिखर के आकार का कांस्य पदक था, ने अपने लबादे को और कसकर लपेटा और मन ही मन बड़बड़ाया। बाकी घुड़सवारों ने एक-दूसरे को देखकर चालाकी भरी मुस्कान बिखेरी।
"क्या तुम्हें अभी से सर्दी लगने लगी है, कप्तान?" समूह के सबसे लंबे आदमी ने उपहास उड़ाते हुए कहा, उसका सुंदर युवा चेहरा व्यंग्यपूर्ण मुस्कान से विकृत हो गया।

“हम्फ!” बूढ़े आदमी ने कराहते हुए कहा और अंधेरे होते रेगिस्तान को घूरता रहा।
“कैप्टन, आप सेवानिवृत्त क्यों नहीं हो जाते और अवंती की धूप को अपनी बूढ़ी हड्डियों को गर्म करने का मौका क्यों नहीं देते?” उस आकर्षक लेफ्टिनेंट ने चिढ़ाते हुए कहा। “हूणों और साकों का शिकार करने का यह काम नौजवानों पर छोड़ दीजिए।”
कप्तान ने उस घमंडी नौजवान पर ठंडी निगाह डाली। जब वह बोला, तो उसकी आवाज कठोर और कटु थी।
“लेफ्टिनेंट, हूणों और साकों का शिकार करने का सौभाग्य पाकर खुद को भाग्यशाली समझो। क्योंकि जब मैं तुम्हारी उम्र का था, तब वे शिकारी थे और हम शिकार। और ये हड्डियाँ जिनका तुम मज़ाक उड़ा रहे हो...” वह रुका और पश्चिम क्षितिज की ओर अपना सिर उठाया। “ये हड्डियाँ हूण और साका सेनाओं को महान रेगिस्तान में धकेलते-धकेलते बूढ़ी हो गई हैं। यह बात कभी मत भूलना!”
इसके बाद सन्नाटा छा गया, जिसे समूह के सबसे छोटे सदस्य - बीस साल से एक दिन भी अधिक उम्र के नहीं एक दुबले-पतले लड़के - ने तोड़ा।
“ज़रूर कुछ तो खास रहा होगा... जिसने सिंधुवर्त से आक्रमणकारियों को खदेड़ दिया।” उन्होंने डूबते सूरज की आखिरी किरण को उदास निगाहों से देखा। “कभी-कभी मुझे लगता है कि काश मैं दस साल पहले पैदा हुआ होता। तब शायद...”
लड़के की आवाज़ धीमी होते ही कप्तान ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और सिर हिलाया। “तुम बच्चे हूणों और साकों से लड़ने की बातें करना बंद ही नहीं करते, है ना? तुम्हारे दिमाग में बचपन में सुनी कहानियाँ भरी पड़ी हैं। लेकिन तुम्हें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है कि असलियत क्या थी।” उसकी बेचैन निगाहें फिर से खाली रेगिस्तान पर टिक गईं। “मुझे डर है कि लड़ाई की इस बेताबी में कहीं तुम खुद को ही मुसीबत में न डाल लो।”
“तुम ऐसे बात कर रहे हो जैसे हूण और शक मनुष्य से भी अधिक राक्षस हों,” युवा लेफ्टिनेंट ने बीच में टोकते हुए कहा, अभी भी मुस्कुराते हुए। “शायद उम्र के साथ डर आता है।”
“और अज्ञानता से ही अभिमान आता है,” कप्तान ने व्यंग्यपूर्वक उत्तर दिया। “तुममें से किसी ने भी कभी युद्ध में हूण या साका का सामना नहीं किया है, तो तुम्हें क्या पता होगा।”
“मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हम तीनों इन पहाड़ियों में मिलने वाले किसी भी हूण या साका से निपटने में पूरी तरह सक्षम हैं, कप्तान।” युवा लेफ्टिनेंट

की आवाज़ आक्रामक हो गई, उसने अपने कंधे सीधे किए और तलवार की मूठ को दृढ़ता से पकड़ लिया। हल्के से व्यंग्य करते हुए उसने कहा, “इससे आपको ठंड से निपटने की पूरी आज़ादी मिल जाएगी।”
“ओह, मुझे यकीन है कि आप तलवार चलाने में माहिर होंगे,” कप्तान ने चुनौती स्वीकार करते हुए ऊँची आवाज़ में जवाब दिया। “आखिरकार, आपने प्रशिक्षण विद्यालय में वर्षों तक अभ्यास करके अपनी कला में महारत हासिल की है।”
बढ़ता तनाव उन पर एक उदास धुंध की तरह छाया हुआ था। लेकिन इससे पहले कि हालात बेकाबू हो जाते, चौथे घुड़सवार, शांत आँखों वाले एक युवक ने तुरंत हस्तक्षेप करके स्थिति को शांत कर दिया।
“कप्तान, हमारे पास कोई विकल्प नहीं था,” उसने बड़ी सहजता से हंसते हुए कहा। “आप बूढ़े लोगों ने आक्रमणकारियों के मन में अवंती का भय पैदा किया और सिंधुवर्त में शांति स्थापित की। तो अब हमें अभ्यास के पुतलों पर तलवारें गड़ाकर, इन निर्जन पहाड़ों पर गश्त लगाकर और आपस में मौखिक बहस करके ही संतोष करना होगा। फिर भी, हमें अपनी योग्यता साबित करने का उचित मौका दिए बिना ही दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए, है ना?”
अनुभवी योद्धा ने सिर झुकाने से पहले इस बात पर विचार किया। "मुझे लगता है आप सही कह रहे हैं," उसने गहरी साँस लेते हुए कहा। "खून से सनी तलवार का स्वभाव ही ऐसा होता है कि वह बिना परखे धातु की मजबूती पर संदेह करती है।"
“नई तलवार की यही फितरत होती है कि वह पुरानी तलवार की धार को कम कर देती है,” युवा व्यक्ति ने कप्तान के पीछे हटने को चतुराई से स्वीकार करते हुए मुस्कुराते हुए कहा। कुछ पल रुकने के बाद उसने आगे कहा, “फिर भी, मुझे खुशी है कि अवंती की शान कायम रही।”
“अवंती की महिमा सदा बनी रहेगी,” लेफ्टिनेंट ने बातचीत में फिर से भाग लेते हुए कहा, लेकिन अब उनका लहजा गंभीर और शांत था। “हमारे राज्य की समृद्धि राजा विक्रमादित्य के नेतृत्व में हो!”
अन्य घुड़सवारों ने सिर हिलाया और रेगिस्तान की ओर मुड़ गए। शांति समझौता हो जाने के बाद, वे कुछ देर तक ढलते प्रकाश में बैठे रहे। कप्तान ने चुप्पी तोड़ने के लिए फिर से बोलना शुरू किया।
“हमारी ड्यूटी खत्म हो गई है। अब चौकी पर लौटने का समय है।”
अपने घोड़े को मोड़कर, वह पहाड़ों की एक ऊबड़-खाबड़ दरार की ओर वापस चल पड़ा।
बाकी लोग चुपचाप उसके पीछे-पीछे चल दिए।

पंद्रह मिनट बाद, गश्ती दल चट्टानों से घिरी एक छोटी घाटी में पहुँचा। रात हो चुकी थी, लेकिन घुड़सवार बड़ी सहजता से आगे बढ़ रहे थे, उनके घोड़ों की नाक तीन टिमटिमाते प्रकाश बिंदुओं की ओर थी जो धीरे-धीरे बड़े होकर छोटी मशालें बन गईं।
टॉर्च की रोशनी से तीन छोटी लकड़ी की इमारतों की रूपरेखा भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगी।
जैसे ही चारों लोग इमारतों के पास पहुँचे, आगे चल रहे कप्तान ने देखा कि चौकी का रसोइया और एक छुट्टी पर मौजूद गार्ड बरामदे में बैठे हुए थे और उनके बीच बिछे चतुरंग बोर्ड पर झुके हुए थे। दोनों आदमी चुपचाप बैठे थे और खेल की रणनीति बनाने में मग्न थे।
कप्तान ने मन ही मन रसोइए को कोसते हुए कहा, "बेवकूफ, अभी भी अपने उस घटिया खेल में लगा हुआ है जबकि उसे रसोई में जाकर खाना तैयार करना चाहिए!"
रसोइए को फटकार लगाने का निश्चय करते हुए, कप्तान घोड़े से उतरा, उसे पास की रेलिंग से बांधा और तेज़ी से बरामदे की ओर चल पड़ा। वह घर से अभी दस मीटर ही दूर था कि उसे कुछ गड़बड़ का आभास हुआ।
जब से उसने उन्हें देखा था, वे दोनों आदमी अपनी जगह से हिले तक नहीं थे – यकीनन उन्होंने घोड़ों के सरपट दौड़ने की आवाज़ सुनी होगी। और अगर उन्होंने वह भी नहीं सुनी, तो भी बजरी पर उसके चमड़े के सैंडल की चरमराहट इतनी तेज़ थी कि मुर्दे को भी जगा दे। उनमें से किसी एक को तो यह आवाज़ सुननी ही चाहिए थी। लेकिन दोनों आदमी बस चतुरंग बोर्ड को घूरते बैठे रहे, जबकि टॉर्च की रोशनी से उनके चारों ओर परछाइयाँ बन रही थीं।
अचानक कप्तान को एहसास हुआ कि चौकी पर अजीब सी खामोशी छाई हुई है। हाँ, तैनात टुकड़ी छोटी थी, और कुछ सैनिक शायद अभी भी गश्त पर थे... फिर भी, कुछ न कुछ हलचल तो होनी चाहिए थी, लेकिन कुछ भी नहीं था।
एक और बात भी अजीब थी। कहीं भी जलती हुई लकड़ियों की गंध नहीं आ रही थी। न रसोई से, न ही उन आगों से जो ठंड से राहत पाने के लिए जलाई जानी चाहिए थीं।
अपनी सहज प्रवृत्ति पर चलते हुए, कप्तान ने अपनी तलवार निकाली, घुटनों के बल बैठ गया और दबे पांव आगे बढ़ा, उसकी निगाहें बरामदे से इमारत के पीछे मंडरा रही परछाइयों पर लगातार घूम रही थीं। उसके पीछे कहीं लेफ्टिनेंट और लड़का किसी मजाक पर हंस रहे थे, लेकिन कप्तान का ध्यान इस पर बिल्कुल नहीं गया। वह बरामदे में खड़े उन दोनों आदमियों में ही मग्न था।

जैसे ही कप्तान करीब पहुंचा, उसकी आंखें खौफ से चौड़ी हो गईं जब उसने रसोइए की पीठ से एक बड़े चाकू का हैंडल निकला हुआ देखा, जो ठीक कंधों के बीचोंबीच धंसा हुआ था। सावधानी से घूमते हुए, कप्तान रसोइए के सामने बैठे पहरेदार के सामने आ गया – और सबसे पहले उसने पहरेदार की कमीज देखी, जो खून से लथपथ थी। एक साफ-सुथरे घाव से उसका गला चीर दिया गया था। दोनों आदमी भाले से टिके हुए थे जो उनकी बगलों में धंसे हुए थे, जिससे उनके शरीर उनके वजन से गिरने से बचे हुए थे।
पल भर में कप्तान को पता चल गया कि यह सब एक जाल था।
"सब ठीक है, कप्तान?" पहाड़ी की चोटी पर झड़प होने से रोकने वाले घुड़सवार ने चिल्लाकर पूछा।
मतली और घबराहट की लहरों को दबाते हुए, कप्तान मुड़ा और इमारत से लड़खड़ाते हुए दूर चला गया, अपने आदमियों पर बेतहाशा हाथ-पैर मारते हुए, जो अब हिचकिचाते हुए उसकी ओर बढ़ रहे थे।
“नहीं…” उसने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा। “नहीं… हम फंस गए हैं। वे वापस आ गए हैं।”
तीनों सैनिक कप्तान को घूर रहे थे। "कौन वापस आया है?" लेफ्टिनेंट ने तलवार निकालते हुए तीखे स्वर में पूछा। बाकी दोनों ने भी ऐसा ही किया और असमंजस में बरामदे की ओर देखने लगे।
“वे... हूण और साका,” कप्तान की आवाज ऊंची हो गई और कांपने लगी।
"क्या?"
कप्तान मुड़ा, दोनों हाथों से अपनी तलवार उठाई और अंधेरे में चारों ओर नज़र घुमाई। तुरंत ही, बाकी तीनों भी अंधेरे की ओर मुड़ गए, उनकी तलवारें तैयार थीं। धीरे-धीरे, बाहर की ओर मुंह करके, वे एक-दूसरे की ओर पीछे हटते हुए एक तंग सुरक्षा घेरा बना लिया, और खतरे को भांपने के लिए चौकन्ने हो गए।
अचानक, एक हल्की सी सीटी की आवाज़ हवा में गूंज उठी। सैनिकों के कुछ समझ पाने से पहले ही, एक भारी तीर दुबले-पतले लड़के के सिर में जा लगा, जिससे उसकी खोपड़ी फट गई और बाएँ कनपटी से एक इंच ऊपर धंस गया। लड़का ज़मीन पर गिरने से पहले ही मर चुका था।
बाकी तीनों को अभी-अभी समझ आया था कि क्या हुआ है, तभी एक दूसरा तीर लेफ्टिनेंट की गर्दन में जा लगा, जो मांस और ऊतकों को चीरता हुआ दूसरी तरफ से बाहर निकल आया। लेफ्टिनेंट चौंककर खांसने लगा और उसके होठों से खून बहने लगा, वह धड़ाम से मुंह के बल गिर पड़ा।

चौथे घुड़सवार, शांतिदूत, का भाग्य इतना अच्छा नहीं था। उस पर दागा गया तीर उसकी गर्दन पर निशाना साध रहा था, लेकिन उसके अचानक हिलने-डुलने के कारण वह उसके बाएं जबड़े में जा लगा, जिससे उसका गाल फट गया और जबड़े की हड्डी टूट गई। युवक दर्द से चीख उठा और घुटनों के बल गिर पड़ा, फिर एक तरफ लुढ़क गया और कीचड़ में तड़पने लगा।
कप्तान दो-तीन बार घूमा, तलवार को बेसुध होकर लहराते हुए, मानो चौथे तीर के आने का इंतज़ार कर रहा हो। लेकिन अँधेरे से कुछ नहीं निकला। पल बीतते गए और कप्तान के भीतर डर बढ़ता गया, उसके कानों में खून की धड़कन की आवाज़ गूंजने लगी।
फिर उसे एक और आवाज सुनाई दी - घोड़ों के खुरों की हल्की-हल्की आवाज। धीरे-धीरे, घने अंधेरे से घुड़सवारों का एक घेरा प्रकट हुआ। जैसे ही वे मशालों की रोशनी के पास पहुँचे, कप्तान ने घुड़सवारों के माथे पर बने शमनकारी निशान (ह्रीज़) को देखा। उसने लगभग दस वर्षों से ये निशान नहीं देखे थे। कप्तान ने अपनी तलवार उठाई और अपनी आँखों से ठंडे पसीने और भय को दूर करने के लिए तेज़ी से पलकें झपकाईं।
“अपनी तलवार नीचे रख दो, बूढ़े आदमी। हमें तुम्हें मारने पर मजबूर मत करो।” घुड़सवार धाराप्रवाह अवंती भाषा बोल रहा था, लेकिन हूणों की कर्कश रेगिस्तानी भाषा और उसके शब्दों के पीछे छिपे इरादे को समझने में कोई गलती नहीं हो सकती थी। कप्तान ने अपने हथियार नीचे कर लिए, उसकी तलवार खटकती हुई नीचे गिर गई। उसके पैरों के पास, युवा पहरेदार फिर से कराहने लगा और कोमलता से अपना चेहरा पकड़ लिया।
“तुम बुद्धिमान हो, इसलिए तुम जीवित रहोगे,” हूण सरदार ने फिर कहा। “तुम इसलिए जीवित रहोगे ताकि तुम अपने राजा को बता सको कि हम वापस आ रहे हैं। और उसे बता देना कि इस बार हम सिंधुवर्त पर कब्जा करने का इरादा रखते हैं। पूरा का पूरा।” तीन हूण घुड़सवार घोड़े से उतरे। जैसे ही वे उसके पास पहुँचे, कप्तान तेज़ी से पीछे हटने लगा। लेकिन उनमें से दो ने उसे बांहों से पकड़ लिया और उसे अपने बीच दबा लिया।
“तुमने... तुमने कहा था कि तुम मुझे जाने दोगे,” उस पूर्व सैनिक ने डर से छटपटाते हुए मिमियाते हुए कहा।
“मैंने किया, और तुम भी करोगे। लेकिन हम तुम्हें दोबारा हमसे लड़ने के लिए वापस नहीं आने दे सकते, है ना?” हूना सरदार की आँखों में दुष्टता झलक रही थी।
कप्तान को पकड़ने वालों में से एक की ओर मुड़कर उसने आदेश दिया, “अहखात वा।”

तुरंत ही, दो हूण कप्तान को घसीटते हुए बरामदे की ओर ले जाने लगे, जबकि तीसरा उनके पीछे-पीछे आया और अपनी कमरबंद से एक बड़ा सा हथियार निकाला। कप्तान को तुरंत ही अपने सामने आने वाला भयानक मंजर दिखाई देने लगा – हूण उसकी सभी उंगलियां काट देंगे, और वह फिर कभी हथियार नहीं चला पाएगा।
“नहीं, कृपया... नहीं, नहीं। मैं आपसे विनती करता हूँ, कृपया... मुझ पर दया कीजिए... नहीं...”
हुना सरदार छटपटाते और बड़बड़ाते कप्तान को ले जाते हुए देखता रहा। फिर उसने अपनी काठी से एक भाला निकाला, घोड़े से उतरा और धूल में लोट रहे उस नौजवान सैनिक के पास गया। जैसे ही कप्तान की चीखें रात के सन्नाटे को चीरने लगीं, सरदार ने कुशलता से अपना भाला उस नौजवान की पसलियों के बीचोंबीच घुसा दिया। सिपाही का शरीर एक बार हिला और फिर स्थिर हो गया।

बहुत बड़ा

भारी बूंदा-बांदी में बैलगाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी, उसके बड़े लकड़ी के पहिए चूं-चूं करते हुए और घिसटते हुए उस पक्की चूना पत्थर की सड़क पर मुश्किल से चल रहे थे जो अंधेरे महल की ओर जाती थी।
महल के द्वार पर तैनात दोनों पहरेदारों का ध्यान सबसे पहले पहियों की आवाज़ से गया। वे एक अस्थायी आश्रय से बाहर निकले और बारिश में झाँकते हुए यह जानने की कोशिश करने लगे कि उनके कानों ने उन्हें क्या बताया था। उनकी सतर्कता तब रंग लाई जब गाड़ी धीरे-धीरे अंधेरे से निकलकर उनके सामने आकर रुक गई।
“वहाँ कौन है?” एक पहरेदार ने जलती हुई मशाल उठाते हुए पूछा। उसका लंबा भाला गाड़ी के आगे बैठे एक आदमी की ओर इशारा कर रहा था, जो बारिश से बचने के लिए मोटी शॉल ओढ़े बैठा था।
उस आकृति ने अपने सिर से शॉल झटक दिया, जिससे उसका गोल-मटोल चेहरा दिखाई दिया, जो दोहरी ठुड्डी की श्रृंखला में उसकी छाती तक फैला हुआ था। उस आदमी के होंठ मोटे और लचीले थे जो आसानी से मुस्कुरा उठते थे, और मशाल की मंद रोशनी में भी उसकी बड़ी काली आँखें आनंद से चमक रही थीं।
“मैं तो बस एक मामूली गाड़ीवाला हूँ, सामान पहुँचाने आया हूँ, महोदय... वैसे अगर आप इन दोनों बैलों से पूछेंगे, तो ये कसम खाकर कहेंगे कि इस गाड़ी पर सात आदमी हैं।” गाड़ीवाले ने मुस्कुराते हुए शॉल उतार दिया और अपना चौड़ा शरीर दिखाया – और साथ ही उसका बड़ा सा तोंद भी। “देखा?”

“बहुत मज़ेदार,” गार्ड ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा, हालाँकि उसमें हास्य की कमी नहीं थी। गाड़ी के पीछे की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा, “वहाँ तुम्हारे पास क्या है?”
“सोमा, महोदय।”
“सोमा?” दूसरे गार्ड ने संदेह भरी निगाहों से अपनी भौहें उठाईं। “किसके लिए?” “हेहेया के नए राजा कुलभेद के लिए। उत्तर के सोमा व्यापारियों की ओर से भेंट, साथ ही उनका अभिवादन।” आँख मारते हुए गाड़ीवाले ने शरारती लहजे में कहा, “ऐसा नहीं है कि आप दोनों थोड़ा सा नहीं ले सकते। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, यह सचमुच बहुत बढ़िया है। बढ़िया तरीके से आसुत किया गया है। अगर इसकी दो छोटी कलशें गायब हो जाएँ तो आपके राजा को पता भी नहीं चलेगा।”
एक तरफ तो इस सुझाव पर पहरेदार की आंखें चमक उठीं, वहीं दूसरी तरफ पहरेदार बेपरवाही से गाड़ी के चारों ओर घूमकर उसकी पीठ पर लदे छह बड़े कलशों का मुआयना करने लगा। मिट्टी के बने ये कलश पाँच-पाँच फीट ऊँचे थे और इनके चौड़े मुँह ढक्कनों से ढके हुए थे।
“आप इतनी रात को डिलीवरी क्यों कर रहे हैं?” गार्ड ने पूछा।
“बारिश की वजह से उत्तर की सड़क की हालत बहुत खराब हो गई है, साहब,” गाड़ीवाले ने समझाया। “मुझे बहुत सावधानी से गाड़ी चलानी पड़ी ताकि सोमा न गिरे, और इसी वजह से मेरी रफ़्तार धीमी हो गई। महिष्मती के बाहर अंधेरे में मैं थोड़ा रास्ता भी भटक गया था। और जैसा कि मैंने कहा, ये बदमाश बैल... ये तो ऐसे चलते हैं जैसे एक नहीं बल्कि सात आदमियों का बोझ ढो रहे हों।”
"हम्म... आपको अंदर जाने देने से पहले मुझे कलशों की जांच करनी होगी।"
“जी हां, महोदय। अपनी इच्छा पूरी कीजिए।” ठहाके लगाते हुए गाड़ीवाले ने आगे कहा, “हालांकि मैं अब भी यही सलाह दूंगा कि अपनी इच्छा पूरी करने का सबसे अच्छा तरीका आपका बड़ा बर्तन ही है।”
पहरेदार गाड़ी पर चढ़ गया। उसने मशाल उठाकर पहले कलश का ढक्कन खोला और अंदर झाँका। लगभग किनारे तक भरा हुआ, समृद्ध, सुगंधित, गहरे लाल रंग का पेय मशाल की रोशनी में चमक रहा था।
“महोदय, कलशों में ज़्यादा बारिश का पानी न जाने दें,” गाड़ीवाले ने शरारती मुस्कान के साथ कहा। “मुझे यकीन है कि आपके राजा को पतला किया हुआ सोमा पसंद नहीं आएगा।”
पहरेदार ने जल्दी से ढक्कन बंद कर दिया, और फिर बाकी कलशों की सरसरी जाँच की। हर कलश शराब से भरा हुआ था। संतुष्ट होकर वह गाड़ी से नीचे कूद गया। हालाँकि,

अंधेरे में वह यह देखना भूल गया था कि पतले, खोखले सरकंडे शराब की सतह से एक इंच बाहर निकले हुए थे - हर कलश में एक सरकंडा।
उसने दूसरे पहरेदार को महल के द्वार खोलने का इशारा किया। “आगे बढ़ो,” उसने गाड़ीवाले को कहा। “अनाज भंडार और गोदाम बाईं ओर हैं। अंदर मौजूद पहरेदार तुम्हें रास्ता दिखा देंगे।”
जैसे ही गाड़ी महल के परिसर में पहुंची और द्वार बंद हुए, पहरेदार ने अपने साथी की ओर मुड़कर कहा, "सोमा तो वाकई बहुत बढ़िया था।" फिर, जैसे-जैसे हल्की बारिश तेज होती गई, उसने थोड़ा अफसोस जताते हुए कहा, "शायद हमें अपने बर्तन भर लेने चाहिए थे।"
पांच मिनट बाद, दो कुली भारी कलशों को गाड़ी से सावधानीपूर्वक उतार रहे थे और उन्हें परिसर के पीछे स्थित एक गोदाम में ले जा रहे थे। गाड़ीवान एक सैनिक के बगल में खड़ा होकर कुलियों को देख रहा था।
अंतिम कलश उतारे जाने के बाद सैनिक ने गाड़ीवान पर अभद्र लहजे में गुर्राते हुए कहा, "तुम जा सकते हो।"
“अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो महोदय, मैं चाहता हूँ कि वह आखिरी कलश सुरक्षित रूप से रख दिया जाए,” गाड़ीवाले ने विनम्रतापूर्वक कहा। “मेरी तनख्वाह इसी पर निर्भर करती है।”
सिपाही ने हल्की झुंझलाहट भरी आवाज निकाली, लेकिन तब तक इंतजार किया जब तक कुली गोदाम से बाहर नहीं आ गए। कुली ने उन्हें जाने का इशारा किया, गाड़ी वाले की ओर मुड़ा और अपना सिर झटक दिया।
"छुट्टी।"
“अह... क्या आपको मुझे अपने राजा के पास नहीं ले जाना चाहिए ताकि मैं उन्हें प्रणाम कर सकूँ और इस माल की सूचना दे सकूँ?” गाड़ीवान हिचकिचाया, उसकी निगाहें कुलियों को देखती रहीं जब तक कि वे उसकी नजरों से ओझल नहीं हो गए।
एक पल के लिए सैनिक ने अविश्वास से उस मोटे-से छोटे आदमी को घूरा। अंत में वह भड़क उठा, "तेरी गुस्ताखी का बदला मैं तेरी ज़बान से लूंगा, कुत्ते!" और भाले से धमकी भरा इशारा करते हुए बोला, "दफ़ा हो जा।"
"जी श्रीमान।"
डांट खाकर गाड़ीवाला जल्दी से गाड़ी के आगे भागा और जाने की तैयारी करने लगा। लेकिन उसकी नज़र तिरछी नज़र सैनिक पर थी, और जैसे ही सैनिक ने सतर्कता छोड़ी और आराम किया, उसने गाड़ी के नीचे से लोहे की लकड़ी की लाठी निकाली। बड़ी

फुर्ती और तेज़ी से उसने सैनिक की बाईं कनपटी पर ज़ोरदार प्रहार किया। सैनिक ज़मीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया।
ज़मीन पर लेटे सैनिक को पार करते हुए, गाड़ीवान उस भंडारगृह में दाखिल हुआ जो बोरियों और संदूकों में लदे राशन से लबालब भरा हुआ था। छह कलश दीवार के सहारे कतार में रखे थे। कलशों के पास जाकर, गाड़ीवान ने अपनी लाठी से प्रत्येक कलश पर तीन बार जल्दी-जल्दी खटखटाया।
कलशों के ढक्कन खुल गए, और प्रत्येक से एक आदमी निकला, जिसके शरीर से सोमा टपक रहा था। आदमी फुर्ती से कलशों से बाहर कूदे, और जमीन पर पैर रखने से पहले ही उन्होंने अपनी तलवारें म्यान से निकाल लीं।
“फहू!” उनमें से एक आदमी ने एक सरकंडा थूका। “ऐसा लग रहा था जैसे हम पूरी रात उन्हीं कलशों के अंदर बिताएंगे, उन्हीं सरकंडों से सांस लेते हुए।”
उस आदमी की आवाज़ में दबदबा था। स्पष्ट रूप से वह समूह का नेता था, लगभग तीस वर्ष का, बेहद विशालकाय, चौड़ी छाती वाला और मजबूत कद-काठी का, भारी-भरकम मांसपेशियों वाले हाथों और कंधों वाला। उसका सांवला, साफ-सुथरा चेहरा एक क्रूर ढंग से आकर्षक था, और ऐसा लगता था मानो वह अपनी बात मनवाने के लिए मुक्कों और तलवारों का इस्तेमाल करने का आदी हो।
“खैर, सुबह होने तक तुम्हारा काम चलाने के लिए तुम्हारे पास काफी सोमा था,” गाड़ीवाले ने मुस्कुराते हुए कहा। “तो फिर शिकायत किस बात की?”
“मेरे दोस्त धनवंतरी, मैं इस बात की शिकायत कर रहा हूँ कि तुम उन पहरेदारों को बार-बार बता रहे थे कि गाड़ी में सात आदमी हैं,” उस लंबे-चौड़े आदमी ने अपने कंधे तक लंबे बालों से थोड़ी शराब निचोड़ी और फिर उन्हें ऊँची, बेढंगी पोनीटेल में बाँध लिया। “अगर उन्हें शक हो जाता तो क्या होता?”
“तब तो हत्याएं महल के द्वार से ही शुरू होतीं, और क्या होता? और मुझसे यह मत कहना कि इससे हममें से किसी को कोई समस्या होती।”
जब वे लोग एक-दूसरे को देखकर भेड़िया जैसी मुस्कान बिखेर रहे थे, तब धनवंतरी ने आगे कहा, “खैर, मैंने पहरेदारों को जो बताया वह सच था। मेरा अनुभव कहता है कि आप जितना सच बोलते हैं, लोग उतना ही कम आप पर विश्वास करते हैं।”
नेता ने बनावटी भय का भाव दिखाते हुए सिर हिलाया। “और मेरे अनुभव से मुझे यही लगता है कि आपको यहाँ से निकलना होगा। अगर आप और गाड़ी जल्दी महल के द्वार पर वापस नहीं पहुँचे, तो पहरेदारों को शक हो सकता है और वे शोर मचा सकते हैं।” धनवंतरी ने सिर हिलाया। “मैं शहर के बाहर घोड़ों के साथ इंतजार करूँगा। कल सुबह मिलते हैं।”

अपने मोटे दोस्त के चले जाने के बाद, सरदार ने अपनी भारी तलवार उठाई। उसकी धार पर अंगूठा फेरते हुए उसने अपने आस-पास के लोगों को देखा। “मैं एक बार फिर दोहराता हूँ... किसी भी तरह की अनावश्यक हिंसा से बचो। अधिकांश पहरेदार, सैनिक और महल के कर्मचारी अभी भी राजा हरिहर के प्रति वफादार हैं – वे बस कुलभेद और उसके कुलीन राजरक्षकों से डरते हैं। तुम केवल राजरक्षकों को मारोगे। उनमें से जितने हो सके उतने को मार गिराओ।” लोगों को सिर हिलाते देख उसने कहा, “ठीक है, चलो चलते हैं।”
वे लोग परछाई की तरह खामोश होकर भंडारगृह से बाहर निकले और महल परिसर में फैल गए।
***

महल के एक शयनकक्ष में, एक हट्टा-कट्टा आदमी नशे में धुत होकर बिस्तर पर लड़खड़ा रहा था, और मखमली गद्दों पर कांपती हुई लेटी एक युवती को देख रहा था। युवती की उम्र बीस वर्ष के आसपास थी, और उसके पीले पड़े चेहरे पर डर के मारे उसकी चमकती आंखें बड़ी-बड़ी हो गई थीं।
“तुम...” उस आदमी ने दूसरे हाथ से पलंग का खंभा पकड़ते हुए औरत की ओर आरोप लगाते हुए कहा। “तुम... मैं तुम पर ज़बरदस्ती कर सकता था। मैं तुमसे ज़बरदस्ती शादी कर सकता हूँ, तुम जानती हो। लेकिन इसके बजाय, मैं तुमसे पूछ रहा हूँ... मैं, कुलभेदा, तुमसे शादी करने के लिए कह रहा हूँ।”
कुलभेदा जब उस स्त्री पर लड़खड़ाते हुए बड़बड़ाने लगा तो वह सहम गई। अंत में, हिम्मत जुटाकर उसने विनती की, “कृपया... कृपया ऐसा मत करो। अगर तुम मुझे ऐसा करने दोगे तो मेरे पिता तुम्हें भरपूर इनाम देंगे...”
“क्या तुम्हारे पिता मुझे इनाम देंगे?” कुलभेद ने बीच में ही टोकते हुए ज़ोर से हंसते हुए कहा। “नहीं, नहीं... राजकुमारी रुक्मा, मुझे खेद है कि हरिहर किसी को इनाम देने की स्थिति में नहीं है। क्योंकि वह हमसे नीचे कालकोठरी में है, उसके पास देने के लिए कुछ भी नहीं बचा है। मैंने उसका सब कुछ छीन लिया है। उसका राज्य, उसका खजाना... सब कुछ। अगर कुछ है तो मैं तुम्हारे पिता को इनाम दे सकता हूँ – उनकी और तुम्हारी माता की जान देकर।”
"कृपया उन पर दया कीजिए," राजकुमारी ने सिसकते हुए कहा।
“मैं करूँगा, मैं तुमसे वादा करता हूँ।” कुलभेदा ने थोड़ा होश में आकर अपने हाथ में पकड़े सोमा के प्याले को गटक लिया।
“मुझे बस तुम्हारी शादी के लिए सहमति चाहिए,” उसने अपने होंठों को हाथ के पिछले हिस्से से बेढंगे तरीके से पोंछते हुए कहा। “हाँ, मान जाओ, और तुम्हारे

माता-पिता को कोई नुकसान नहीं होगा। मेरा वचन है। और सोचो – मुझसे शादी करके तुम हेहेया की रानी बन सकती हो! उसी राज्य की रानी जहाँ तुम पली-बढ़ी हो। कितनी राजकुमारियों को ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है?”
“आप हमारे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं?”
“क्यों? तुम पूछते हो क्यों?” कुलभेद का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और उसने खाली प्याला फेंक दिया। “तुमने अपने पिता द्वारा मुझे पुरस्कृत करने की बात कही थी... मैं तुम्हारे पिता का सबसे वफादार सेनापति था; मैंने वर्षों तक उनकी और हेहेया की निष्ठापूर्वक सेवा की। लेकिन जब तुम्हारा विवाह कराने का समय आया, तो उन्होंने किसी मूर्ख राजकुमार को मुझसे ऊपर चुना! यही मेरी वफादारी का इनाम है।” कुलभेद ने सांस लेने के लिए रुककर कहा, “शायद उन्हें लगता है कि एक सैनिक किसी राजसी राजकुमारी के योग्य नहीं है। इसलिए मैंने हेहेया के राजा के रूप में तुम्हारा हाथ मांगने का फैसला किया है।”
“मुझे... मुझे यकीन है कि मेरे पिता का इरादा बुरा नहीं था,” रुकमा ने समझाने की कोशिश की। “अगर तुमने कुछ और मांगा होता तो वो तुम्हें दे देते।”
“मैं तुम्हें चाहता था, लेकिन उसने मुझे नज़रअंदाज़ कर दिया,” कुलाभेद राजकुमारी की ओर झुका, उसकी लाल आँखें वासना से लथपथ थीं। उसने कामुकता से अपने होंठ चाटे, उसका चेहरा राजकुमारी के चेहरे से कुछ ही इंच दूर था। “तो अब मेरे पास अपना हक लेने के अलावा कोई चारा नहीं बचा है।”
अचानक, कुलभेद ने राजकुमारी पर झपट्टा मारा और अपने भार से उसे नीचे दबा दिया। जैसे ही उसने उन्माद में अपना सिर उसकी कोमल गर्दन में धंसाया, रुकमा बेबसी में छटपटाने लगी और चीख पड़ी।
कुछ ही देर बाद, बेडरूम का दरवाजा जोर से धमाके के साथ खुल गया।
टूटे हुए कब्ज़े पर दरवाज़ा लड़खड़ाते हुए खुला, तभी ऊँची चोटी वाला एक विशालकाय आदमी भारी तलवार लहराते हुए अंदर घुस आया। हालाँकि, उसका चेहरा छाया में छिपा हुआ था।
“तुम कौन हो?” कुलभेदा ने घूमते हुए पूछा।
“तुम्हारा जानी दुश्मन,” घुसपैठिए ने जवाब दिया। अपनी आवाज़ में एक शरारती मुस्कान लिए उसने आगे कहा, “यह जानकर कितना दिलचस्प है कि हेहेया के नए राजा को महिलाओं के साथ कुश्ती करने में दिलचस्पी है।”
कुलभेदा क्रोध से चमकते हुए पलंग से उठ खड़ा हुआ। उसने बगल की मेज पर रखी अपनी तलवार उठाते हुए कहा, "हेह्य का नया राजा भी अपने द्वारा मारे गए व्यक्ति के शव का भोज करता है।"

जैसे ही वह सीधा हुआ, दैत्य प्रकाश में आ गया। उस आदमी को पहचानते ही कुलभेद की आँखों में भय भर आया। "अरे, तुम हो!"
तभी, दरवाजे के ज़ोर से खुलने की आवाज़ सुनकर, तीन शाही रक्षक दौड़ते हुए शयनकक्ष की ओर भागे। तलवारें उठाए, वे घुसपैठिए पर टूट पड़े। लेकिन उस व्यक्ति ने बिजली की तेज़ी से कई वार करते हुए हमले को नाकाम कर दिया, जिससे एक रक्षक की बांह कट गई और बाकी दो के पेट चीर दिए गए।
यह देखकर कि घुसपैठिया पहरेदारों से लड़ रहा है, कुलाभेद ने अपनी तलवार उठाई और उसकी चौड़ी पीठ पर वार किया, जो उसकी ओर मुड़ी हुई थी। लेकिन आखिरी क्षण में, दैत्य घूम गया और कुलाभेद की तलवार से बच गया। संतुलन खोकर कुलाभेद लड़खड़ाते हुए आगे गिरा - सीधे दूसरे की तलवार की नोक पर, जो सीधे उसकी छाती पर निशाना साधे हुए थी। भारी तलवार मांस को भेदती हुई कुलाभेद के हृदय में धंस गई।
जैसे ही उस दैत्य ने अपनी तलवार बाहर निकाली, घाव से खून बहने लगा और कुलाभेद बेजान होकर कालीन बिछे फर्श पर गिर पड़ा।
घुसपैठिया सीधा खड़ा हुआ और सहमी हुई राजकुमारी की ओर देखा, जिसका चेहरा सदमे और भय से सफेद पड़ गया था।
“राजकुमारी रुक्मा, घबराइए मत। आप सुरक्षित हैं,” उन्होंने आश्वस्त करते हुए कहा। “मैं अवंती के राजा विक्रमादित्य के दरबार से आया हूँ। मैं राजा हरिहर को मुक्त कराने के लिए राजा विक्रमादित्य के आदेश पर यहाँ आया हूँ।”
उस आदमी ने झुककर कुलाभेद का सिर उसके बालों से पकड़ा और उसे ज़मीन से ऊपर उठा लिया। उसने अपनी तलवार उठाई और फिर राजकुमारी की ओर देखा, जो भयभीत आँखों से उसे घूर रही थी।
उन्होंने कहा, "कृपया अपनी आंखें बंद कर लें।"
रुकमा ने सिर हिलाया और अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं, अतिरिक्त सावधानी के तौर पर उसने अपने चेहरे को अपनी बांह से ढक लिया। तलवार नीचे आई और कुलभेद का सिर धड़ से अलग कर दिया।
एक हाथ में सिर लिए वह दैत्य एक विशाल, बंद आंगन की ओर खुलती हुई एक आंतरिक बालकनी की ओर बढ़ा। नीचे का हॉल भ्रमित सैनिकों से भरा हुआ था, जिनमें से कई पहले से ही शयनकक्षों और स्नानकक्षों की ओर जाने वाली घुमावदार सीढ़ियों पर चढ़ रहे थे।

“रुको और मेरी बात सुनो,” उस आदमी ने आदेश दिया, उसकी आवाज़ आँगन में गूँज उठी। सैनिक विस्मय से उसकी ओर देख रहे थे, तभी उसने कटा हुआ सिर ऊँचा उठाया। “कुलभेद मर चुका है।”
जब वह व्यक्ति सैनिकों को संबोधित कर रहा था, तो सैनिकों के बीच सामूहिक रूप से सिसकी उठी। “हरिहारा एक बार फिर तुम्हारा राजा है, और तुम्हें उसकी आज्ञा माननी होगी। राजा हरिहारा का आदेश है कि कुलभेद के सभी राजरक्षकों को गिरफ्तार किया जाए। यदि उनमें से कोई भी विरोध करे, तो तुम उसे जान से मारने के लिए स्वतंत्र हो।”
हॉल में उत्साहपूर्ण फुसफुसाहट फैल गई; कुछ सैनिक राजा हरिहर का जयजयकार करने लगे। शोरगुल के बीच, कलशों में आए लोगों में से एक विशालकाय राजा के पास आया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया। राजा ने सिर हिलाया, कुलभेद का सिर अहाते में फेंक दिया और आगे बढ़ गया।
कुछ देर बाद, वह दैत्य और उसके दो साथी, राजा हरिहारा के कुछ वफादार अंगरक्षकों के साथ, महल के नीचे बने तहखानों की ओर जाने वाली एक संकरी घुमावदार सीढ़ी से नीचे उतरे। जैसे ही वे पीछे की ओर स्थित एक कोठरी के पास पहुँचे, अंगरक्षक चिल्लाने लगे।
“Hail King Harihara! Glory to Heheya!”
एक गार्ड ने कोठरी का ताला खोला और अंदर प्रवेश किया। पल भर में, एक बुजुर्ग दंपति और तीन विद्वान मंत्री मशाल की रोशनी में अंदर आ गए, उनकी आँखें आश्चर्य, उल्लास और राहत के मिले-जुले भावों से झपक रही थीं।
“हे राजा हरिहर, राजा विक्रमादित्य की ओर से मेरा प्रणाम स्वीकार कीजिए,” उस विशालकाय व्यक्ति ने हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए कहा।
बूढ़े व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए रानी और अपने मंत्रियों की ओर देखा। “मुझे पता था कि विक्रमादित्य संकट में फंसे अपने पुराने सहयोगी की सहायता के लिए अपनी पूरी क्षमता से प्रयास करेंगे। लेकिन मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि वे इस काम के लिए अपने सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं में से एक को भेजेंगे।” उस विशालकाय व्यक्ति की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, “कालिदास, आपको देखकर बहुत अच्छा लगा।” “आप भी, महाराज,” कालिदास ने फिर से प्रणाम किया।
हरिहर ने कालिदास के हाथ में मौजूद तलवार को आश्चर्य से देखा। "मेरा मानना है कि कुलभेद अब जीवित नहीं है?"
“वह नहीं है, महाराज,” उस दैत्य ने खून से सने ब्लेड को म्यान में रखते हुए अपना सिर हिलाया।

“और हमारी बेटी?” रानी ने कांपती हुई आवाज में पूछा।
“राजकुमारी रुक्मा सुरक्षित हैं, महारानी माँ,” कालिदास ने उन्हें आश्वासन दिया।
“भगवान का शुक्र है।” राजा हरिहर कालकोठरी से बाहर निकलने के लिए आगे बढ़ने लगे। सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उन्होंने कालिदास से पीछे मुड़कर कहा, “मुझे लगता है कि आप भी मुझे उज्जैन तक पहुँचाने आए हैं?”
“जी जी महाराज। हमें जल्द से जल्द निकलना होगा ताकि हम परसों राजा विक्रमादित्य के राजसूय यज्ञ में समय पर पहुँच सकें। हेहेया अवंती के सबसे पुराने सहयोगियों में से एक है, इसलिए मेरे राजा यज्ञ में आपकी उपस्थिति अनिवार्य कर रहे हैं।”
“यह मेरा सौभाग्य है,” हरिहर ने गर्व से मुस्कुराते हुए कहा। “लेकिन क्या हमारे पास कम से कम स्नान और अच्छा भोजन करने का समय है? उस कमीने कुलभेद ने पिछले सप्ताह हमें दलिया के सिवा कुछ नहीं खिलाया।” “जी महाराज,” कालिदास ने सिर हिलाते हुए कहा। “आपकी अनुमति से, हम कल सूर्योदय के समय महिष्मती से निकलेंगे, ताकि सूर्यास्त तक उज्जैन पहुँच सकें।”

आगमन

सूरज अभी पूरी तरह जागा भी नहीं था कि छोटी नाव अंधेरे पानी में सरपट दौड़ पड़ी, उसका अगला हिस्सा क्षिप्रा नदी के पूर्वी किनारे पर बने स्नान घाटों की कतार की ओर इशारा कर रहा था। पर्याप्त रोशनी थी – घाट की सीढ़ियाँ साफ दिखाई दे रही थीं, जिन पर सुबह-सुबह स्नान करने वाले लोग खड़े थे और जो पानी की सतह से ऊपर की ओर खड़ी ढलान पर जा रही थीं। सीढ़ियों के ऊपर कई बड़े पीपल के पेड़ थे, जो अभी भी छाया में थे, जिनसे पक्षियों के झुंड समय-समय पर सुबह के आकाश में उड़ जाते थे। पेड़ों के पीछे अवंती की राजधानी उज्जैन की प्राचीन, सफेद संगमरमर की दीवारें खड़ी थीं।
साधु नाव के आगे वाले हिस्से में बैठे थे, अपनी गहरी, चौड़ी आँखों से दृश्य को निहार रहे थे, और उनकी उंगलियाँ रुद्राक्ष के दानों से बनी प्रार्थना की माला से अनमने ढंग से खेल रही थीं। वे मध्यम कद के, मांसल शरीर वाले थे, और उनकी सांवली त्वचा पर राख की पतली परत थी। उन्होंने काली धोती और पगड़ी पहनी हुई थी, और उनका चौड़ा और सुंदर चेहरा घनी काली दाढ़ी से ढका हुआ था जो उनकी छाती तक पहुँचती थी।
“गुरुदेव, क्या आप भी भोज में जा रहे हैं?”
साधु ने मुड़कर उस बूढ़े नाविक की ओर देखा, जिसने प्रश्न पूछा था। वह कुछ क्षण तक नाविक को अबोध से देखता रहा।
“वह भोज…” नाविक ने उज्जैनी की ओर इशारा करते हुए दोहराया। उसके लहजे से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह जिस बात का जिक्र कर रहा था वह स्पष्ट रूप से समझ में

आ जानी चाहिए थी। “राजा विक्रमादित्य के राजसूय यज्ञ के उपलक्ष्य में आयोजित भोज।”
साधु ने शहर की दीवारों की ओर देखा और अनमने ढंग से सिर हिलाया। उन्होंने न तो कुछ कहा और न ही नाविक की ओर मुड़कर देखा; स्पष्टतः साधु को बातचीत करने में कोई रुचि नहीं थी।
“राज्य के कोने-कोने से लोग इस उत्सव में शामिल होने आ रहे हैं।” नाविक को या तो इशारा समझ नहीं आया, या उसने जानबूझकर उसे अनदेखा किया। “मैंने खुद पिछले दो दिनों में लगभग एक हजार लोगों को शहर तक पहुँचाया है। आज आप पहले व्यक्ति हैं, गुरुदेव, लेकिन मुझे यकीन है कि जैसे-जैसे सूरज ऊपर चढ़ेगा, और भी लोग आएंगे।”
साधु लगातार प्राचीरों को घूरता रहा।
“मैं भी चलूँगा,” नाविक एकतरफ़ा बातचीत जारी रखते हुए खुश लग रहा था। “और क्यों नहीं, मैं आपसे पूछता हूँ? आख़िरकार, यह उत्सव हमारे राजा के सम्मान में है – अगर हम अवंती के नागरिक इसे नहीं मनाएँगे, तो कौन मनाएगा? क्या आप सहमत नहीं हैं?”
साधु ने हल्के से सिर हिलाकर विनम्रता दिखाई, इस उम्मीद में कि बात यहीं खत्म हो जाएगी। लेकिन उसे अपनी गलती का तुरंत खामियाजा भुगतना पड़ा।
“दरअसल, गुरुदेव, केवल अवंती ही नहीं, बल्कि और भी राज्य इस यज्ञ में शामिल हो रहे हैं,” नाविक ने एक और जोशीली व्याख्या शुरू की। “मत्य, वत्स, कोसल, मगध और हेह्य के राज दरबार भी यज्ञ में भाग ले रहे हैं, और मैंने सुना है कि इन राज्यों के कुछ प्रजाजन भी इस अवसर पर उज्जैन आए हैं।” एक क्षण के लिए वह रुका, क्योंकि उसके मन में एक नया विचार आया। “क्या आप भी इन्हीं राज्यों में से किसी एक से हैं?”
साधु ने मुड़कर नाविक को देखा। उसकी निगाहों में कुछ बेचैनी थी, जिससे नाविक घबराकर नज़रें हटाने लगा। अंत में, साधु ने सिर हिलाया और उज्जैन की दीवारों पर ध्यान केंद्रित किया, जो अब नवप्रकाशित सूर्य की सुनहरी रोशनी से जगमगा रही थीं। नाविक ने भी कुछ नहीं कहा।
कुछ मिनट बाद, नाव स्नान घाट से टकराई। अपने पास पड़ी एक छड़ी और कपड़े का गट्ठा उठाकर साधु नाव से उतर गया।
“मुझे आपको क्या देना है?” उसने अपनी धोती की तहों को टटोलते हुए पूछा। “गुरुदेव, आप एक पवित्र व्यक्ति हैं... मैं आपसे पैसे नहीं ले सकता...” नाविक ने विनम्रता से कहना शुरू किया, लेकिन उसके हावभाव से ऐसा लग रहा था मानो वह

सिर्फ दिखावा कर रहा हो। और जब साधु ने सिक्का आगे बढ़ाया, तो उसने बिना किसी झिझक के उसे ले लिया, उसकी आँखें खुशी से चमक रही थीं। “धन्यवाद, गुरुदेव। महल का परिसर आसानी से मिल जाएगा। आपको बस उस कोने वाले द्वार से अंदर जाना है...” साधु ने नाविक को चुप कराने के लिए हाथ उठाया। “मैं बहुत दूर से आया हूँ और मैंने लंबा सफर तय किया है। मुझे अपना रास्ता खोजना आता है।”
घाट की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए साधु ने कपड़े के गट्ठे पर जल्दी से हाथ फेरा और उसे हल्के से थपथपाया, मानो कुछ खोज रहे हों। एक पल के लिए उन्हें लगा कि उन्हें वह नहीं मिल रहा जिसकी उन्हें तलाश थी, और उनके चेहरे पर चिंता झलकने लगी। लेकिन जब उनकी हथेली गट्ठे के निचले हिस्से में किसी कठोर, नुकीली वस्तु से टकराई, तो उन्होंने राहत की साँस ली।
छुरी सुरक्षित थी। अब बस उस व्यक्ति को ढूंढना बाकी था जिसके लिए वह छुरी थी; वह व्यक्ति जो उज्जैन की दीवारों के भीतर कहीं था... राजमहल के भीतर कहीं। ***

महारानी उपश्रुति अपने शयनकक्ष से सटी अलंकृत, चंदवादार बालकनी से बाहर झुकीं, सुगंधित सुबह की हवा में सांस ली और संतुष्टि से मुस्कुराईं। आखिरकार जिंदगी उस पर मेहरबान हो रही थी।
जहां वह खड़ी थी, वहां से उसे अवंती के राजमहल को चारों ओर से घेरे हुए विशाल झील का विस्तृत नजारा दिखाई दे रहा था। झील में खिले हुए गुलाबी कमल अलग-अलग अवस्थाओं में थे और उस पर राजसी हंस इधर-उधर तैर रहे थे। झील के दूर किनारों पर जैकारांडा और गुलमोहर के पेड़ लगे थे, जिन पर किंगफिशर पक्षी दिन की पहली मछली का शिकार कर रहे थे। झील पर बना राजमहल का पुल रानी के बाईं ओर था, हालांकि पानी पर पड़ रही चकाचौंध भरी धूप के कारण वह उसे अभी देख नहीं पा रही थी।
रानी उपश्रुति ने दाईं ओर मुड़कर झील के उस पार, पतझड़ी पेड़ों और झाड़ियों के घने झुरमुट के दूसरी ओर फैले महल के मैदान की ओर देखा। उनके कानों ने उस दिशा से आती हुई हल्की-सी चहल-पहल सुनी और वे फिर मुस्कुरा उठीं। रानी जानती थीं कि मैदान राजसूय यज्ञ की तैयारियों में लगे लोगों से भरा हुआ है। पुरोहितों द्वारा प्राचीन देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त करने और यज्ञ अनुष्ठान संपन्न करने के बाद, उसकी कोख से जन्मा पुत्र सिंधुवर्त का सम्राट कहलाएगा। और सभी पड़ोसी राज्यों के राजा – जिनमें से कई पहले ही अधीन हो चुके थे, और कुछ नाममात्र के स्वतंत्र थे – उसके पुत्र और अवंती के सिंहासन के प्रति निष्ठा की शपथ लेंगे। जीवन वास्तव में उसके लिए अनुकूल होता जा रहा था।

“महाराज, राजकुमारी प्रलूपी और राजकुमार हिमवर्धन आपसे मिलने आए हैं,” उसने घोषणा की। अपनी रानी को सिर झुकाते देख, दासी ने दरवाजा चौड़ा खोलकर एक महिला और एक पुरुष को अंदर आने दिया।
यह स्पष्ट था कि अंधेरे शयनकक्ष में आगे-आगे चलने वाली महिला रानी उपश्रुति की पुत्री थी। उम्र और उनके चेहरों की कोमलता ही माँ और पुत्री के बीच का अंतर था। रानी के चेहरे पर आमतौर पर सौम्य भाव रहता था, लेकिन राजकुमारी प्रलूपी के चेहरे पर एक खुरदुरापन और तीखापन था, जो होठों की खट्टी मुस्कान से और भी स्पष्ट हो जाता था, मानो वह जीवन की कड़वाहट अपने साथ लिए फिर रही हो।
“कैसी हो मेरी परी? तुम्हें देखकर बहुत खुशी हुई।” रानी उपश्रुति की आँखें चमक उठीं और उन्होंने अपनी बेटी को गले लगा लिया। “उन्होंने मुझे बताया कि तुम कल रात आई थी।”
"जी मां," प्रालूपी ने रानी की पकड़ से खुद को छुड़ाते हुए अस्पष्ट रूप से उत्तर दिया।
महारानी माँ ने कुछ पल अपनी बेटी के चेहरे को निहारा, फिर शिष्टाचार का ध्यान रखते हुए राजकुमार हिमवर्धन की ओर मुड़ीं। “राजकुमार, आप कैसे हैं? आशा है आपकी वत्सा से यात्रा सुखद रही होगी और आपने आराम किया होगा?”
सफेद खरगोश को गोद में लिए वह व्यक्ति रानी की ओर शर्माते हुए मुस्कुराया, फिर अपनी नज़रें झुका लीं, पर उसने रानी के सवालों का जवाब नहीं दिया। हालांकि राजकुमार की उम्र लगभग चालीस के आसपास थी, लेकिन उसका व्यवहार किसी बच्चे जैसा था और वह शायद ही कभी दूसरों से नज़रें मिलाता था। वह बस संगमरमर के फर्श को घूरता रहा और धीरे से खरगोश को सहलाता रहा।
रानी को इससे कोई खास परेशानी नहीं हुई और उन्होंने अपना ध्यान फिर से प्रलूपी की ओर लगाया। “बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। मुझे उम्मीद है कि तुम दोनों कुछ समय उज्जैन में रुकोगे। मुझे और तुम्हारे भाई को भी यही अच्छा लगेगा।” राजकुमारी प्रलूपी ने अनिर्णय भाव से सिर हिलाया। लेकिन इससे पहले कि और कुछ कहा जा सकता, राजकुमार अचानक रानी के पलंग की ओर बढ़ा, उसकी आँखों में उत्सुकता की चमक थी। पलंग पर पहुँचकर उसने गहरे नीले मखमली चादर पर हाथ फेरना शुरू किया। फिर वह प्रलूपी की ओर मुड़ा।
"इतना नरम," उसने तुतलाते हुए कहा, उसकी आवाज विस्मय से भरी हुई थी।
रानी ने स्नेह भरी मुस्कान के साथ अपनी बेटी की ओर मुड़कर पूछा, "राजा चंद्रवर्धन कैसे हैं?"

“वह यहीं हैं,” प्रलूपी ने सपाट स्वर में उत्तर दिया। “मुझे लगता है कि आप उन्हें यज्ञ में देखेंगे।”
रानी ने सिर हिलाया और फिर दूसरा सवाल पूछा, "क्या आप घटाकरपारा से मिलीं?" “अभी नहीं। हम कल रात देर से पहुंचे थे।”
“ओह, वो तो बड़ा होकर एक अच्छा और मजबूत लड़का बन गया है।” रानी उपश्रुति की आवाज़ में वो स्नेह और गर्व झलक रहा था जो नाना-नानी को अपने पोते-पोतियों के बारे में बात करते समय होता है। “आचार्य ने उसे अच्छी तरह से प्रशिक्षित किया है। एक दिन तुम्हारा बेटा इस परिवार को गौरवान्वित करेगा।”
“लेकिन वो कभी राजा नहीं बनेगा, है ना?” प्रलूपी ने चिढ़कर मुंह फुलाते हुए कहा।
“तुम ऐसा क्यों कह रही हो?” रानी की आवाज़ तीखी थी। “माँ, सब जानते हैं कि वत्स पर शासन करने के लिए घटकरपारा सबसे योग्य उम्मीदवार है। लेकिन वह नहीं बनेगा
- क्योंकि वह राजा चंद्रवर्धन का पुत्र नहीं है। वह राजा के मंदबुद्धि भाई की संतान है। इसलिए मेरे पुत्र के बजाय, चंद्रवर्धन का निकम्मा और शराबी पुत्र शशिवर्धन वत्स के सिंहासन पर बैठेगा।”
“चुप रहो प्रिय,” रानी ने प्रलूपी को चुप कराने के लिए जल्दी से हाथ हिलाए। अपनी पत्नी से नाराज़ हिमवर्धन की ओर देखते हुए रानी ने कहा, “अपनी ज़ुबान और भावनाओं पर काबू रखो।”
प्रलूपी ने अपने पति की ओर मुड़कर कहा, "क्यों न आप जाकर झील पर हंसों को देख लें?" उसने बालकनी की ओर इशारा किया।
राजकुमार का चेहरा चमक उठा और वह दौड़ पड़ा। प्रलूपी ने अपनी माँ की कोहनी पकड़ी और उन्हें हिमवर्धन की पहुँच से दूर धकेल दिया।
“आप विक्रमादित्य से बात क्यों नहीं करतीं?” उसने फुसफुसाते हुए कहा। “वह आपसे प्यार करता है और आपकी बात सुनेगा।”
“उनसे किस बारे में बात करनी है?” रानी उपश्रुति असमंजस में दिखीं।
“Making Ghatakarpara the next king of Vatsa.”
रानी आश्चर्य से एक कदम पीछे हट गईं। "लेकिन प्रिय, शशिवर्धन ही वत्सा का असली उत्तराधिकारी है।"
“क्या यह सही है?” राजकुमारी की आँखों में ईर्ष्या और घृणा झलक रही थी। “अगर शशिवर्धन चंद्रवर्धन का सही उत्तराधिकारी होता, तो उसे आज के यज्ञ में उपस्थित होना चाहिए था। क्या युवराज से यही अपेक्षा नहीं की जाती? लेकिन नहीं, जबकि राजपरिवार के बाकी सदस्य यहाँ हैं, शशिवर्धन कौशांबी में है, शायद

सोमा में डूबा हुआ है और किसी जुए में राजकोष की दौलत उड़ा रहा है। सही है ना, छी!”
रानी उपश्रुति ने असहाय होकर चारों ओर नज़रें घुमाईं, मानो कमरे के अंधेरे कोनों में कोई संतोषजनक उत्तर खोज रही हों। "लेकिन चंद्रवर्धन तुम्हारे भाई की बात क्यों सुनेगा?"
“वह ऐसा क्यों नहीं करेगा?” प्रलूपी ने बात आगे बढ़ाते हुए कहा। “विक्रमादित्य सिंधुवर्त के सबसे शक्तिशाली सम्राट बनने वाले हैं। चंद्रवर्धन पहले से ही अवंती के अधीन हैं। अवंती की सेना वत्स की सेना से कहीं अधिक शक्तिशाली है और राज्य की अर्थव्यवस्था हमारे व्यापार मार्गों पर निर्भर करती है। चंद्रवर्धन का अस्तित्व हम पर निर्भर है; यदि विक्रमादित्य घातकपर को अपना उत्तराधिकारी बनाने का अनुरोध करें तो वह मना नहीं कर सकते। चंद्रवर्धन इतने बुद्धिमान हैं कि वे जानते हैं कि यदि वे मना करते हैं तो अवंती उन्हें कुचल सकती है।”
"तुम्हारा भाई इस बात पर कभी सहमत नहीं होगा," रानी की आंखें दुख से गोल हो गई थीं।
“मुझे समझ नहीं आता क्यों,” राजकुमारी की आवाज़ में इस संभावना पर आक्रोश झलक रहा था। “क्या वह अपने भतीजे से प्यार नहीं करता? क्या वह नहीं चाहेगा कि उसका भतीजा अपना खुद का राज्य चलाए?”
“प्रिय, विक्रमा निश्चित रूप से घटकरपारा से प्रेम करता है,” रानी ने झिझकते हुए कहा, “लेकिन मुझे नहीं लगता कि वह मेरी बात सुनेगा।”
उसी क्षण हिमवर्धन बालकनी से वापस आया। उसने खरगोश को दोनों हाथों से ऊपर उठाया। “इसे खाना चाहिए।” “मैं माँ से बात कर रही हूँ,” प्रलूपी ने थकी हुई आवाज़ में, अपनी आवाज़ में थोड़ी नरमी लाते हुए कहा। “हम थोड़ी देर में इसे खाना खिला देंगे। आप जाइए और हंसों को देखिए।”
“नहीं,” हिमवर्धन ने दृढ़ता से पैर पटका, उसका मुंह लटक गया। “अभी, अभी। उसे खाना चाहिए।”
प्रलूपी ने झुंझलाहट भरी निगाहों से अपने पति की ओर देखा, फिर सिर हिलाकर मान गई। जैसे ही राजकुमार शयनकक्ष के दरवाजे की ओर बढ़ा, वह रानी की ओर मुड़ी। "विक्रमादित्य से बात कीजिए, माँ," उसने फुसफुसाते हुए कहा। "अगर मेरे लिए नहीं, तो कम से कम अपने पोते के लिए तो कर दीजिए।"

रानी उपश्रुति ने अपनी बेटी और दामाद के पीछे दरवाजा बंद होते देखा और आह भरी। उन्होंने मन ही मन सोचा, शायद राजसूय यज्ञ के बाद विक्रमादित्य से इस विषय पर चर्चा करेंगी।
***

दो जोड़ी निगाहें राजकुमारी प्रलूपी और उनके पति का पीछा करती रहीं जब वे रानी के शयनकक्ष से बाहर निकले, सीढ़ियों से नीचे उतरे, एक खुले आंगन को पार किया और एक गलियारे में गायब हो गए।
ये निगाहें दो आदमियों की थीं जो मीठी खुशबू वाली चमेली से सजे मेहराबदार मंडप के ठीक अंदर लोहे की बेंच पर बैठे थे। उनमें से एक लगभग पचास वर्ष का, दुबला-पतला और लंबा था, जिसका गंभीर चेहरा घनी भूरी भौहों के नीचे उसकी तीक्ष्ण काली आँखों से और भी निखर रहा था, जो उसकी घनी भूरी दाढ़ी को और भी आकर्षक बना रही थीं। उसके गहरे बैंगनी रंग की पगड़ी के नीचे से निकले कुछ बाल भी उसी भूरे रंग के थे। आचार्य वेताल भट्ट, अवंती के राजा के राजशिक्षक और मुख्य सलाहकार, अपनी उम्र को गर्व और गरिमा के साथ स्वीकार करते थे।
“क्या वह आपसे मिलने आई थी?” वेतला भट्ट ने अंततः चुप्पी तोड़ते हुए राजकुमारी प्रलूपी के जाते हुए रूप की ओर इशारा किया।
आचार्य के बगल में बैठे व्यक्ति ने सिर हिलाया। वह उनसे काफी छोटा था, लगभग चालीस वर्ष का, कद में छोटा और दुबला-पतला। उसका शरीर गठीला था, मांसपेशियां त्वचा के नीचे लगातार फड़कती रहती थीं, मानो फंसी हुई ऊर्जा बाहर निकलने का रास्ता खोज रही हो। उसके काले घने बाल कंधों तक लटके हुए थे, और उसके होंठों पर घनी काली मूंछें और माथे पर चमकीला लाल तिलक लगा हुआ था।
“नहीं। वो ऐसा क्यों करेगी? उसे मेरी कोई परवाह नहीं है... कभी नहीं थी। मैं तो बस उसका सौतेला भाई हूँ, जो उसके पिता की दूसरी औरत से पैदा हुआ बेटा हूँ।” वेताला भट्टा ने अपने साथी की ओर तीखी नज़र डाली। "मुझे नहीं लगता कि यह सच है
- वह तुम्हारी परवाह करती है। बस वह इसे आसानी से दिखाती नहीं है।"
उस युवक ने मुड़कर आचार्य की ओर उदास मुस्कान के साथ कहा, "आप जानते हैं कि यह झूठ है, राजगुरु।"
वेताल भट्ट ने सिर झुकाने से पहले कुछ देर सोचा। यह झूठ था और राजकुमारी प्रलूपी और राजा विक्रमादित्य के सौतेले भाई वरारुचि ने इसे भांप लिया था। आचार्य ने इस बार ईमानदारी का रास्ता अपनाते हुए और बच्चों को वर्षों तक पढ़ाने और उन्हें बड़ा होते देखने के अपने अनुभव के आधार पर कहा, “सच तो यह है

कि प्रलूपी को शायद अपने अलावा किसी और की परवाह नहीं है। इसलिए, उसके बारे में ज़्यादा कठोर राय मत बनाइए।”
“नहीं,” वरारुचि ने उत्तर दिया। “दरअसल, मुझे उसके लिए एक अजीब सी सहानुभूति है। वह सिंधुवर्त के सबसे शक्तिशाली राज्य अवंती की राजकुमारी है, लेकिन उसे ऐसे आदमी के साथ रहना पड़ता है जो मुश्किल से अपना ख्याल रख पाता है। मुझे नहीं लगता कि पिता ने हिमवर्धन से उसका विवाह कराकर बुद्धिमानी का काम किया। वह इससे बेहतर की हकदार थी। मुझे कभी समझ नहीं आएगा कि उन्होंने ऐसा क्यों किया।”
“वरारुचि, वो बहुत कठिन समय था... तुम इतने बड़े हो चुके थे, इसलिए तुम्हें ये पता होना चाहिए,” वेताल भट्ट ने धैर्यपूर्वक याद दिलाया। “हूणों और शकों को खदेड़ना था, और अवंती को आक्रमणकारियों से लड़ने के लिए मजबूत गठबंधन बनाने की ज़रूरत थी। वत्स के चंद्रवर्धन एक स्वाभाविक विकल्प थे, लेकिन उन्होंने प्रलूपी का हाथ स्वीकार नहीं किया। इसके बजाय, चंद्रवर्धन ने प्रलूपी का विवाह अपने भाई से प्रस्तावित किया और... खैर, राजा महेंद्रदित्य ने अवंती के लिए ये निर्णय लिया।”
दोनों व्यक्ति कुछ देर चुपचाप बैठे रहे। यह स्पष्ट था कि उम्र के अंतर और गुरु-शिष्य के रिश्ते के बावजूद, दोनों के बीच गहरा संबंध था। अंत में, वरारुचि ने अपना चेहरा नीले आकाश की ओर उठाया।
“पिताजी आज बहुत गर्व महसूस कर रहे होते। उनका हमेशा से मानना था कि विक्रमादित्य महान कार्य करेंगे... जब हम शिकार पर जाते थे तो वे अक्सर मुझसे यही कहते थे,” वरारुचि की आँखों से उदासी छटते हुए उन्होंने कहा। “आज उनका पुत्र, अवंती का राजा, सिंधुवर्त का सम्राट बनेगा।”
वेताल भट्ट ने वरारुचि को कुछ देर देखा और फिर सिर हिलाते हुए कहा, “हाँ, उन्हें गर्व होता – अपने दोनों बेटों पर। अपने छोटे बेटे पर, जो जल्द ही सम्राट विक्रमादित्य बनेगा... और आप पर, जिन्होंने विक्रमादित्य के राजा बनने की उम्र तक अवंती पर बुद्धिमानी से शासन किया।” आचार्य ने वरारुचि के कंधे पर प्यार से थपथपाया और मुस्कुराते हुए कहा, “विक्रमादित्य और अवंती का दरबार आपका बहुत ऋणी है।”
उस युवक ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, “आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद, राजगुरु। लेकिन मैंने जो कुछ भी किया, वह अपने छोटे भाई के प्रति प्रेम के कारण किया। और पिताजी से उनकी मृत्युशय्या पर किए गए वादे के कारण भी। मैंने

उन्हें वचन दिया था कि उनके बड़े बेटे के रूप में, मैं हमेशा अपने भाई के साथ खड़ा रहूंगा और यह सुनिश्चित करूंगा कि अवंती की महिमा धूमिल बनी रहे।” आचार्य ने सूर्य की ओर तिरछी नज़र से देखा और जल्दी से उठने लगे। “तो फिर, आपको जल्दी से तैयार हो जाना चाहिए। आपके भाई के यज्ञ का शुभ मुहूर्त निकट ही आ गया है।”
***

मंदिर की घंटियों और घंटों की लयबद्ध झंकार ने सुबह की शांति भंग कर दी, जिससे डरे हुए कबूतरों के झुंड उड़ गए। नीचे, एक प्राचीन बरगद के पेड़ के नीचे, राजसी मंदिर खड़ा था, जिसके दरवाजों और खिड़कियों से सफेद धुआं निकल रहा था। वातावरण में सांब्रानी और कपूर की सुगंध फैली हुई थी, और घंटियों की प्रत्येक ध्वनि के बीच गंभीर मंत्रों की गूंज सुनाई दे रही थी। मंदिर के बाहर, सफेद वस्त्र पहने युवा पुजारी दो पंक्तियों में खड़े थे, उनके होंठ मौन रूप से हिल रहे थे क्योंकि वे अंदर पढ़े जा रहे मंत्रों और भजनों को दोहरा रहे थे। पुजारियों के पीछे और थोड़ा बाईं ओर, चार पुरुषों का एक समूह धीमी आवाज़ में बातचीत कर रहा था। वे आचार्य वेताल भट्ट, वरारुचि, धनवंतरी और अमर सिंह थे, जिनमें से अमर सिंह कद में छोटे, बलिष्ठ, सीने में गठीले और मांसपेशियों से भरे हुए थे। उनके सिर पर लाल-भूरे बालों का गुच्छा था, और उनकी बड़ी दाढ़ी और घुमावदार मूंछें भी उसी रंग की थीं। उनकी काली आँखें तीव्र थीं जो हर चीज़ को आक्रामक ढंग से घूरती रहती थीं।
घंटियों की ध्वनि और मंत्रोच्चार थम गए, जो एक पवित्र अनुष्ठान के अंत का संकेत था। जैसे ही बाहर पुजारी देवताओं को प्रणाम करने लगे, मंदिर के धुएँ से भरे गर्भगृह से तीन आकृतियाँ प्रकट हुईं। पहली एक ब्राह्मण पुजारी थीं, जो उम्र और कद में वरिष्ठ थीं, जबकि दूसरी रानी उपश्रुति थीं।
तीसरा व्यक्ति लगभग पैंतीस वर्ष का लंबा और गरिमामय पुरुष था। उसकी चाल शांत और आत्मविश्वासपूर्ण थी, और यह स्पष्ट था कि अधिकार उसके चौड़े कंधों पर सहजता से टिका हुआ था। चमकदार, काले बाल उसके कंधों तक लंबे थे, जबकि गहरी काली आँखें उसकी सुडौल भौंहों के नीचे से झाँक रही थीं। घनी मूंछें उसकी मजबूत, तराशी हुई ठुड्डी को और भी आकर्षक बना रही थीं। उस व्यक्ति में एक अद्वितीय आकर्षण था, और जैसे ही वह खुले में आता, सबकी निगाहें उस पर टिक जाती थीं।
वेताल भट्ट की ओर देखते हुए, उस व्यक्ति ने मुख्य पुजारी से संक्षेप में बात की। फिर वह आचार्य के पास गया, हाथ जोड़कर गहरा प्रणाम किया।

“राजगुरु, मुझे आशीर्वाद दीजिए,” उन्होंने कहा।
“महाराज, आपको मेरा आशीर्वाद प्राप्त है,” शाही सलाहकार ने उत्तर दिया।
“मैं आपका आशीर्वाद आपके राजा के रूप में नहीं, बल्कि आपके शिष्य के रूप में चाहता हूँ,” उस व्यक्ति ने ज़ोर देकर कहा। “जिस प्रकार आपने अतीत में मेरा मार्गदर्शन किया है, उसी प्रकार मुझे भी अपने ज्ञान से मार्गदर्शन दें और अवंती को और भी अधिक गौरव की ओर ले जाने में मेरी सहायता करें।”
वेताल भट्ट का चेहरा नरम पड़ गया और वे मुस्कुराए। “विक्रमादित्य, मेरा आशीर्वाद आपके साथ है। सिंधुवर्त के सम्राट के रूप में, आप बुद्धिमानी और न्यायपूर्वक शासन करें और राजाओं में सर्वश्रेष्ठ माने जाएं।” विक्रमादित्य ने वरारुचि की ओर मुड़कर प्रणाम किया और कहा, “भाई, मैं भी आपका आशीर्वाद चाहता हूँ।”
“आपके पास तो इससे भी अधिक है,” वरारुचि ने राजा की ओर मुस्कुराते हुए कहा। “मेरा प्राण आपकी सेवा में समर्पित है, भाई। सम्राट विक्रमादित्य, अवंती का सुचारु नेतृत्व कीजिए।”
राजा ने वरारुचि की ओर स्नेहपूर्वक देखा। “भाई, मैं अभी सम्राट नहीं बना हूँ। यज्ञ समाप्त होने तक नहीं।”
"पिताजी और मेरे लिए, आप हमेशा सम्राट ही रहे।"
शब्दहीन होकर विक्रमादित्य कुछ पल के लिए वरारुचि को देखता रहा। फिर, भावनाओं के आवेश में आकर उसने अपने भाई को गले लगा लिया। जब वे अलग हुए, तो वरारुचि ने फिर से बोलना शुरू किया।
“मां आपको अपना आशीर्वाद भेजती हैं।”
राजा ने आश्चर्य से अपने भाई की ओर देखा। "अरे, लेकिन क्या वह यज्ञ के लिए नहीं आ रही है?"
“उन्हें लाने के लिए पालकी भेजी गई थी, लेकिन वे नहीं आ सकीं। गठिया की वजह से।”
“क्या स्थिति और बिगड़ रही है?” विक्रमादित्य ने चिंता से वरारुचि के चेहरे को देखा।
"उसे बहुत दर्द हो रहा है," बड़े भाई ने कंधे उचकाते हुए कहा, उसकी आँखों में चिंता के बादल छा गए थे।
“वह ऐसा क्यों नहीं करती...” राजा ने अपने विचारों को बीच में ही रोक दिया और धनवंतरी से पूछा, “क्या तुम बड़ी माँ के लिए कुछ नहीं कर सकते?”

“मुझे इसके बारे में पहले क्यों नहीं बताया गया?” मोटे पार्षद ने वरारुचि को उस खास तरह के तिरस्कार से देखा, जैसा कि चिकित्सक लापरवाही या उदासीनता के कारण बिगड़ी बीमारियों के मामले में दिखाते हैं। विक्रमादित्य की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा, “मैंने कुछ समय पहले उन्हें कुछ दवाइयाँ दी थीं और मुझे लगा था कि वे ठीक हो गई हैं। किसी ने मुझे नहीं बताया कि वे... खैर, यज्ञ समाप्त होते ही मैं उनसे मिलने जाऊंगा।”
आश्वस्त होकर राजा ने अपना ध्यान आचार्य की ओर मोड़ा।
"क्या बाकी सब लोग आ गए हैं?"
“चंद्रवर्धन और उनका दरबार यहाँ मौजूद है। राजा बाणहस्त, राजा भूमिपाल और अनार्ता संघ के पाँचों प्रमुख भी यहाँ हैं। और मुझे अभी-अभी पता चला है कि मगध से राजा सिद्धसेना और उनके पुत्र कुछ देर पहले महल में पहुँचे हैं।”
“And King Harihara?” Vikramaditya glanced back at Dhanavantri.
"हमने कल रात उन्हें सुरक्षित रूप से उज्जैन पहुँचा दिया।"
“वह पिता के मित्र थे, और हमारे सबसे पुराने सहयोगियों में से एक हैं,” राजा ने संतुष्टि से सिर हिलाया। वे महल के प्रांगण की ओर चलने लगे, जहाँ यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित थी, और महल के कर्मचारी और पुजारी यज्ञ की तैयारियों में व्यस्त थे। जैसे ही अन्य लोग उनके साथ चलने लगे, विक्रमादित्य ने धनवंतरी की ओर रुख किया।
"तो कुलभेद ने वास्तव में कोई समस्या खड़ी नहीं की, है ना?"
“बिल्कुल नहीं,” धनवंतरी ने अपने मोटे कंधों को उचकाते हुए कहा। “कालिदास ने मुझे जो बताया है, उसके अनुसार वह दुष्ट सोमा पीकर मदहोश होने और राजकुमारी रुक्मा को रिझाने में इतना व्यस्त था कि उसने ज्यादा प्रतिरोध नहीं किया।” “खैर, कम से कम उसने कालिदास और तुम्हें शांति की एकरसता से कुछ राहत तो दी,” राजा मुस्कुराया। “कालिदास तो हमेशा यही कहता रहता है कि यह शांति बहुत उबाऊ होती जा रही है।”
“और इस तरह उसे तो युद्ध का इनाम मिल गया, जबकि मेरी कुल्हाड़ी इस्तेमाल न होने के कारण जंग खा रही है,” अमारा सिम्हा ने सौम्य भाव से बड़बड़ाया। “कुछ लोगों की किस्मत ही इतनी अच्छी होती है।”
“मैं मानता हूँ कि तुम्हें युद्ध से वंचित करना अन्याय था, अमरा सिंह,” आचार्य ने मुस्कुराते हुए कहा। “अक्षमाण्य।”

“हाँ, लेकिन कुलभेद को हटाने के लिए कालिदास और अमर सिंह दोनों को भेजना चींटी को कुचलने के लिए हथौड़े का इस्तेमाल करने जैसा होता,” वरारुचि ने अमर सिंह के मजबूत कंधों पर दोस्ताना हाथ रखते हुए टिप्पणी की।
“तो फिर मुझे कालिदास के बजाय हेहेया के पास भेजा जाना चाहिए था,” अमर सिंह ने हठपूर्वक कहा।
“अगर तुम वहाँ गए होते, तो राजा हरिहर के महल को दोबारा रहने लायक बनाने से पहले बहुत मरम्मत की ज़रूरत पड़ती,” धनवंतरी हँसते हुए बोला और अमरा सिंह की पसलियों में गुदगुदी की। “और इससे अवंती-हेहेया गठबंधन का अंत हो जाता।” जैसे-जैसे लोगों का समूह धीरे-धीरे महल के मैदान की ओर बढ़ता गया, पुरुष दिल खोलकर हंसते रहे। थोड़ी ही दूर, एक नीम के पेड़ के नीचे बैठा एक साधु समूह को ध्यान से देख रहा था, उसकी पैनी निगाहें विक्रमादित्य पर टिकी थीं, वही साधु जिसे नाविक ने उसी सुबह उज्जैन पहुंचाया था।
साधु को वह व्यक्ति मिल गया था जिसके लिए वह आया था।
***

राजमहल के एक विशाल कमरे में, लगभग बीस वर्ष का एक युवक पीतल और टिन की मिश्र धातु से बने एक बड़े दर्पण के सामने खड़ा था। कद में बहुत छोटा होने के बावजूद, उसका शरीर सुगठित था और उसमें युवावस्था की स्वाभाविक चपलता थी, जो मार्शल आर्ट के घंटों के प्रशिक्षण से निखर उठी थी। उसका गोरा, साफ-सुथरा चेहरा बेहद आकर्षक था, उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें जीवंतता से भरी थीं - और उनमें थोड़ा सा घमंड भी झलक रहा था, जो उच्च कुल के लोगों में स्वाभाविक रूप से पाया जाता है।
हाथीदांत की कंघी से उस युवक ने अपने माथे से घने बालों को सावधानीपूर्वक हटाया, फिर अपनी आँखों में काजल लगाया। इसके बाद उसने एक चोगा ओढ़ा और उस पर अवंती का सोने का औपचारिक पदक लगा लिया। अंत में, उसने एक मेज से छोटी तलवार उठाई और उसे अपनी कमर पर टंगी म्यान में डाल दिया।
वह आखिरी बार पॉलिश की हुई धातु में अपनी परछाई को निहार रहा था कि तभी किसी ने उसके दरवाजे पर दस्तक दी।
“अंदर आ जाओ,” उसने पुकारा, उसकी निगाहें अभी भी दर्पण पर टिकी हुई थीं। दरवाजा खुला और एक संतरी अंदर आया। उसने घोषणा की, "उदयपुरी की चौकी से एक घुड़सवार आपसे मिलना चाहता है, महोदय।"

“घुड़सवार मुझसे मिलना चाहता है?” युवक मुड़ा, उसकी भौंहें थोड़ी सी उठीं। फिर उसने उलझन में सिर हिलाया, उसके कुछ बाल इधर-उधर होकर उसकी आँखों पर आ गिरे। “किसलिए? उसे यहाँ कमांड सेंटर में रिपोर्ट करना चाहिए। यही नियम है।” "माननीय न्यायाधीश महोदय, वह अपना संदेश स्वयं उपस्थित होकर देना चाहते हैं।"
“तो उनसे कह दो कि उन्हें इंतजार करना पड़ेगा। यज्ञ का समय लगभग हो चुका है और मुझे राजा के साथ रहना है।”
“मैंने घुड़सवार को यही बात बताई, लेकिन वह कहता है कि यह बहुत जरूरी है, महाराज,” संतरी ने अपना वजन एक पैर से दूसरे पैर पर बदलते हुए कहा। “वह कहता है कि उसे आपसे कुछ बहुत महत्वपूर्ण बात कहनी है।”
युवक ने भौंहें चढ़ाईं, लेकिन जिज्ञासावश सिर हिला दिया। संतरी बाहर चला गया, और कुछ ही क्षणों बाद, घुड़सवार दरवाजे पर खड़ा था, सिर से पैर तक धूल से सना हुआ। नींद की कमी से उसकी आँखें लाल थीं, और उसके लड़खड़ाने के तरीके से लग रहा था कि वह अत्यधिक थकावट के कगार पर है।
“राजकुमार घटाकरपारा को प्रणाम... अवंती की जय हो और...”
राजकुमार घटाकरपारा ने घुड़सवार को रोकने के लिए अधीरता से हाथ उठाया और फिर उसे अंदर आने का इशारा किया। "तुम कहते हो कि यह अत्यावश्यक है, तो जल्दी करो।"
घुड़सवार ने अपने पीछे दरवाजा बंद किया और आगे बढ़ा। "मैं उदयपुरी के छावनी कमांडर अतुल्यातेजा का एक निजी संदेश लाया हूँ," उसने कर्कश स्वर में कहा। "तीन दिन पहले..."
“अतुल्यतेज ने तुम्हें भेजा है?” घटकरपारा का चेहरा खिल उठा और वे मुस्कुराए। “मेरा पुराना मित्र कैसा है? जब से वह उज्जैन छोड़कर अपनी सेना की कमान संभालने गया है, तब से मैंने उसे बहुत कम देखा है।”
घुड़सवार चुप रहा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि इस पर क्या प्रतिक्रिया दे। राजकुमार ने घुड़सवार की अनिश्चितता को भांप लिया और अपनी तल्लीनता से बाहर आ गया।
"अतुल्यतेजा का मेरे लिए क्या संदेश है?" उसने नाटकीय ढंग से एक अलंकृत स्तंभों के सहारे झुकते हुए पूछा।
“माननीय महोदय, तीन दिन पहले, उदयपुरी के निकट पहाड़ियों में सीमा रक्षक बल का एक कप्तान बेहोश पाया गया। कप्तान के हाथों की सभी उंगलियां गायब थीं और उनका

बहुत खून बह चुका था। छावनी में मौजूद चिकित्सकों और नर्सों ने उनकी देखभाल की और कल दोपहर उन्हें आखिरकार होश आ गया।”
“जारी रखो।” युवा राजकुमार ने अपनी आवाज में सहज अधिकार का भाव भर दिया। "कैप्टन का कहना है कि वह अरबुदा पर्वतमाला के पश्चिमी छोर पर, महान रेगिस्तान के करीब तैनात एक गश्ती दल का हिस्सा था।"
घटकरपारा ने अपना संयम खो दिया और एकदम सख्त हो गए। उन्हें आभास हो गया था कि क्या होने वाला है।
“लगता है उसकी चौकी नष्ट हो गई और उसके सभी आदमियों का नरसंहार कर दिया गया।” घुड़सवार ने गहरी साँस लेते हुए कहा, “कैप्टन का कहना है कि हमलावर हूणों का गिरोह था।”
“वह कैसे आश्वस्त हो सकता है?” घटाकरपारा ने अपनी आँखें सिकोड़ लीं।
"उसने कहा कि उन सभी के माथे पर हरिज़ के निशान थे।"
“कैप्टन हमले में कैसे बच गए?”
“उन्होंने उसकी उंगलियां काट दीं और उसे जाने दिया – हमारे राजा के लिए एक संदेश के साथ। उन्होंने राजा को बताया कि वे सिंधुवर्त को जीतने के लिए वापस आ रहे हैं।”
घुड़सवार के शब्दों और उनके भयावह निहितार्थों ने राजकुमार को कंपकंपा दिया।
"कमांडर अतुल्यातेजा ने मुझे यह बात आपको गोपनीय रूप से सौंपने का निर्देश दिया है, क्योंकि वे अनावश्यक घबराहट पैदा नहीं करना चाहते थे, महोदय।" घटकरपारा ने गंभीर भाव से सिर हिलाया। उन्हें समझ आ गया था कि अतुल्यतेज ने उज्जैन को समाचार पहुंचाने के लिए सूर्ययंत्रों का उपयोग करने के बजाय घुड़सवार क्यों भेजा था। सूर्ययंत्र प्रणाली तेज़ तो होती, लेकिन कहीं अधिक असुरक्षित होती। हमले की खबर बहुत से लोगों को मिल जाती, और एक बार जब लोगों के बीच अफवाहें फैलने लगतीं, तो जनता में दुख और भय फैलने से कोई नहीं रोक पाता।
“आज दोपहर कमांडर के लिए मेरे पास एक संदेश होगा,” उसने जबड़े भींचते हुए बुदबुदाया। “इस बीच, आप लोग आराम कर लीजिए – और इस बारे में किसी को एक शब्द भी मत बताना।”
जैसे ही घुड़सवार के कदमों की आहट गलियारे में धीमी होती चली गई, घटाकरपारा ने अपनी ठुड्डी पर हाथ फेरा और ज़मीन की ओर देखने लगा। उनके माथे पर बिच्छू का चिन्ह बना हुआ था। उसने बाज़ार में कुछ दाँतविहीन बूढ़े गुलामों के माथे पर

बिच्छू का विशिष्ट चिन्ह देखा था... और उसने इसे धारण करने वाले क्रूर पुरुषों के बारे में कई खौफनाक कहानियाँ सुनी थीं।
वे सिंधुवर्त पर विजय प्राप्त करने के लिए वापस आ रहे हैं।
इस बारे में राजा को तुरंत सूचित करना आवश्यक था।
राजकुमार ने तीन बड़े कदम बढ़ाए और दीर्घा का दरवाजा खोल दिया। लेकिन ठीक उसी क्षण, महल के मैदान से ढोल की थाप और तुरही की तीखी आवाज उनके कानों में गूंज उठी, जो राजसूय यज्ञ के प्रारंभ की घोषणा कर रही थी।
घटकरपारा ने शाप दिया। अब उन्हें यज्ञ समाप्त होने तक इंतजार करना होगा ताकि वे राजा और परिषद के बाकी सदस्यों को यह अशुभ समाचार सुना सकें।

परिषद

जैसे-जैसे समय बीतता गया, घटाकरपारा के चेहरे पर उदासी बढ़ती गई। वह संगमरमर की मुंडेर पर झुककर महल की दीवारों से टकराती झील के शांत हरे पानी को निहारते रहे। वे भोज कक्ष से सटे एक चौड़े, सुव्यवस्थित चबूतरे के निचले हिस्से में बैठे थे, जहाँ दोपहर की तेज़ धूप से उन्हें चमकीले लाल गुलमोहरों की छतरी ने आश्रय दिया हुआ था। उनके पीछे, थोड़ा बाईं ओर, जलपरियों और जलपरियों की आकृतियों वाला एक भव्य फव्वारा ज़ोरदार छपछपाहट कर रहा था, जिससे भोज कक्ष से आ रही उल्लास की आवाज़ दब गई और महल के मैदान की ओर से आ रही हल्की आवाज़ भी गुंजन में डूब गई, जहाँ अवंती की प्रजा के लिए भोज चल रहा था। आप यहां अकेले क्या कर रहे हैं?
युवा राजकुमार उस आवाज को सुनकर चौंक गया, हालांकि वह आवाज इतनी मधुर और सुकून देने वाली थी कि मानो उसमें सुनहरे शहद की मिठास समाई हो। उसने मुड़कर देखा तो पाया कि एक लंबी, आकर्षक स्त्री, एक अनोखे झाड़ की पत्तियों में आधी छिपी हुई, फव्वारे की ओर जाने वाले घुमावदार रास्ते के ऊपर से उसे देख रही थी। "क्या सब ठीक है?" महिला ने पूछा, उसके चेहरे पर चिंता की एक झलक दिखाई दे रही थी।
घटकरपारा ने सिर हिलाया, उसकी सांस गले में अटक गई और वह बोलने में असमर्थ हो गया। क्षपनाका का उस पर हमेशा यही प्रभाव होता था। वास्तव में, उसे पूरा विश्वास था कि वह लगभग सभी पुरुषों पर ऐसा ही प्रभाव डालती है।

राजकुमार ने क्षपनाका को झाड़ियों के पास से गुजरते हुए और सीढ़ियों से नीचे उतरकर उसके पास आते हुए श्रद्धा भरी निगाहों से देखा। लगभग पच्चीस वर्ष की क्षपनाका लंबी और आकर्षक थी, फिर भी उसका शरीर सुगठित था, जो उसके औपचारिक सैन्य प्रशिक्षण का प्रमाण था। सांवले, तराशे हुए चेहरे पर उसकी बड़ी और शांत आँखें थीं, लेकिन राजकुमार को उनकी गहराई में एक जोशीली चिंगारी दिखाई दी। उसके बाल आकर्षक घुंघराले होकर उसके कंधों पर लटके हुए थे, जो उसकी पतली गर्दन की सुंदरता को और भी निखार रहे थे।
“तो, क्या बात है?” क्षपनाका चबूतरे पर झुककर घटकरपारा के चेहरे को ध्यान से देखने लगीं, फिर उनकी निगाहें झील के दूर किनारे पर टिक गईं। “मुझे लगता है कि आप किसी बात से परेशान हैं।”
"नहीं, वास्तव में नहीं," राजकुमार ने अपना सिर हिलाया, अनजाने में महिला की दूरदर्शिता पर आश्चर्यचकित होते हुए।
“तो फिर जब बाकी सब लोग अंदर हैं तो आप यहाँ क्यों हैं?” क्षपनाका ने भोज कक्ष की ओर सिर झुकाया।
"अरे, वो बात। मैं तो बस ऊब रहा था।"
"क्या आपको यकीन है कि और कुछ नहीं है?"
प्रश्न पूछते समय क्षपनाका ने जिस तरह से घटकर्परा की ओर देखा, उसमें कुछ ऐसा था जिसने लड़के के संकोच को तोड़ दिया।
“खैर... मेरा मतलब है कि वे सब बड़े घमंडी और खुदगर्ज हैं, अपनी जीती हुई लड़ाइयों या अपने राज्यों पर शासन करने की चतुराई का बखान करते रहते हैं,” ये शब्द तेज़ी से निकले और राजकुमार ने अपने बगल में खड़ी खूबसूरत महिला के सामने अपने दिल की बात कह दी। “सिर्फ इसलिए कि किसी ने कुछ लड़ाइयाँ लड़ी हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि जिन्होंने नहीं लड़ीं वे मूर्ख हैं और उन्हें गंभीरता से नहीं लेना चाहिए।”
क्षपणक ने कुछ क्षण चुपचाप घटकर्परा की ओर देखा। "और कौन आपको गंभीरता से नहीं ले रहा है?"
“चाचा वरारुचि,” राजकुमार ने आक्रोश से भरी आवाज में बुदबुदाया।
“तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि वह तुम्हें गंभीरता से नहीं लेता?” क्षपनाका ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं।
“मुझे राजा से कुछ कहना था, लेकिन जब मैं उनके पास पहुँचा, तो चाचा वरारुचि ने मुझे रोक दिया। उन्होंने कहा कि राजा मेहमानों की सेवा में व्यस्त हैं और मुझे उन्हें परेशान नहीं करना चाहिए। मैंने चाचा वरारुचि से कहा कि यह

ज़रूरी है, लेकिन उन्होंने मुझे बस भगा दिया।” कुछ पल रुकने के बाद, राजकुमार ने ज़ोर से सिर हिलाया। “यहाँ सब लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे मैं अभी भी बच्चा हूँ।”
"ऐसा इसलिए है क्योंकि आप उन्हीं की तरह व्यवहार करते हैं।"
स्तकरपारा क्षपनाका की ओर तेज़ी से मुड़े। उन्होंने क्षपनाका से यह उम्मीद करते हुए अपने मन की बात कही थी कि वह उनका समर्थन करेंगी, लेकिन इसके बजाय, क्षपनाका ने अपनी उस टिप्पणी से उन्हें आहत कर दिया था। उन्होंने विरोध में कुछ कहा, लेकिन फिर अपना इरादा बदल दिया और मुंह फेरकर, आहत होकर चुप हो गए। क्षपनाका ने सहज भाव से कहा, "सिंधुवर्त के इतने सारे राजाओं की मेजबानी कर रहे राजा को परेशान करने के बारे में केवल एक बच्चा ही सोच सकता है।"
“मेरे पास... मेरे पास राजा के लिए कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण समाचार है,” घटाकरपारा ने उग्र स्वर में कहा। “बहुत-बहुत महत्वपूर्ण समाचार...”
"क्या तुमने वरारुची को इस खबर के बारे में बताया?"
“नहीं,” राजकुमार ने धीमी आवाज़ में कहा।
“शायद तुम्हें ऐसा करना चाहिए था, और फिर उन्हें यह तय करने देना चाहिए था कि क्या यह राजा को परेशान करने लायक कोई बात थी। लेकिन नहीं, तुम खुद राजा को बड़ी खबर सुनाकर उन्हें प्रभावित करना चाहती थीं।” सिर हिलाते हुए, क्षपनाका ने मुंडेर से खुद को धक्का दिया और जाने के लिए मुड़ गईं। “ध्यान आकर्षित करने की चाहत बचकानी प्रवृत्ति है, परिपक्वता की निशानी नहीं।”
क्षपनाका को अपने पास से जाते देख राजकुमार को अचानक शर्म और हानि का अहसास हुआ और उसका चेहरा उतर गया। उसने बड़ी मुश्किल से अपनी बात रोककर उससे विनती भरे स्वर में पूछा, “क्या तुम वह खबर नहीं जानना चाहती जो मेरे पास है?” महिला ने अपनी चाल धीमी की, मुड़ी और घटाकरपारा को ध्यान से देखा। "यह आपको तय करना है कि आप इसे किसके साथ साझा करना चाहते हैं।"
“आज सुबह उदयपुरी की चौकी से एक घुड़सवार मेरे पास आया था।” राजकुमार क्षपनाका की ओर कुछ कदम बढ़ाए। “चौकी के कमांडर ने सूचना भेजी है कि हमारी एक सीमा चौकी पर हूणों के एक गिरोह ने हमला किया है।”
क्षपणक जड़वत होकर वहीं खड़ा रहा और संकुचित आँखों से घटकर्परा को घूरता रहा।
"ऐसा लगता है कि चौकी पर तैनात सभी सीमा रक्षकों को मार दिया गया, लेकिन एक कप्तान को जाने की अनुमति दे दी गई..."

क्षपणक ने राजकुमार को रोकने के लिए हाथ उठाया और फिर उसे जल्दी से इशारा किया। “हमें यह खबर वरारुचि या राजगुरु तक पहुंचाने में जरा भी देर नहीं करनी चाहिए। आओ...”
***

आचार्य वेताल भट्ट और क्षपणक छज्जे के एक कोने में दुबककर, घटकर्पर का वृत्तांत बिना किसी रुकावट के ध्यानपूर्वक सुन रहे थे। राजकुमार के वृत्तांत समाप्त होने पर, राज सलाहकार ने बोलने से पहले एक बार फिर चारों ओर नज़र घुमाई ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कोई उनकी बातें सुन न ले।
“खबर लाने वाला यह घुड़सवार... वह कहाँ है?”
"मैंने उनसे कहा है कि वे मेरी ओर से जवाब का इंतजार करें... और इस बारे में किसी से कुछ न कहें," घटाकरपारा ने उत्तर दिया।
“जी हां, हमें शायद उनसे उदयपुरी तक संदेश पहुंचाने की जरूरत पड़ सकती है,” आचार्य ने सिर हिलाते हुए कहा। “लेकिन पहले हमें राजा से परामर्श करना होगा।” "अब हम ऐसा कैसे करेंगे?" क्षपनाका ने भोज कक्ष की ओर देखते हुए पूछा, जो बातचीत और हंसी से गूंज रहा था।
“अभी नहीं। हम नहीं कर सकते,” राजगुरु ने माथे पर शिकन डालते हुए कहा। “यह आज रात बाद में या शायद कल ही हो पाएगा। तब तक हम इसे अपने तक ही रखेंगे, हालांकि मैं इसे वरारुचि के साथ साझा करूँगा। इसका कोई फायदा नहीं है...”
वेतला भट्टा अपने विचारों को पूरी तरह व्यक्त कर पाते, तभी भोज कक्ष की दिशा से आती एक तेज आवाज ने उन्हें रोक दिया।
“आचार्य, मेरे मित्र... तुम कैसे हो!”
चौंककर राजगुरु ने पीछे मुड़कर देखा कि किसने उन्हें आवाज़ दी है। उन्हें राहत मिली जब उन्होंने देखा कि दो बुजुर्ग व्यक्ति, जो काफी दूर थे, मुस्कुराते हुए उनकी ओर आ रहे थे।
“आओ, राजा चंद्रवर्धन, राजा हरिहर... आओ, आओ,” आचार्य का चेहरा आत्मीयता से चमक उठा और वे आने वाले पुरुषों की ओर कुछ कदम बढ़े; हालांकि, उन्होंने एक बार क्षपणक और घटकर्परा की ओर संक्षिप्त रूप से देखा। “याद रखना, किसी को कुछ भी मत बताना,” उन्होंने धीमी आवाज़ में चेतावनी दी।
क्षपणक और घटाकरपारा ने आदरपूर्वक देखा जब राजगुरु ने हरिहर और चंद्रवर्धन से अभिवादन किया। मध्यम कद का भारी-भरकम, दिखने में काफी थका हुआ चंद्रवर्धन, मूंछों से ढके ढीले-ढाले चेहरे पर शराब के आदी होने का लालिमा लिए हुए था।

उसकी बोली में स्पष्ट लड़खड़ाहट से भी इसका प्रमाण मिलता था, फिर भी उसकी आवाज मजबूत और प्रभावशाली थी, जो उसकी युवावस्था में रही शक्ति का अंश थी।
“आप लोग यहाँ किस बात की साजिश रच रहे हैं?” उन्होंने आचार्य से मजाक में पूछा।
“महाराज के सांसारिक मामले, महाराज,” राजगुरु ने सौहार्दपूर्ण मुस्कान के साथ कहा।
“अरे, आज तो तुम्हें ये सब भूलकर जश्न मनाना चाहिए।” चंद्रवर्धन ने अपने दाहिने हाथ में पकड़े हुए सोमा के विशाल प्याले से एक घूंट भरा। “आज तो तुम्हें जश्न मनाना चाहिए मेरे मित्र और भाई विक्रमादित्य!”
“ज़रूर,” आचार्य ने चंद्रवर्धन को हंसाते हुए कहा और दोनों अतिथियों को छाया में ले गए। “मुझे यकीन है कि आप क्षपणक और राजा के भतीजे, घटकर्परा से मिल चुके होंगे।”
क्षपणका को देखते ही चंद्रवर्धन रुक गया और नाटकीय अंदाज़ में अपने दिल पर हाथ रखकर बोला, “ओह, स्वर्ग की अप्सराओं को हमारा यही जवाब है! अगर मैं बीस साल छोटा होता, तो आज मैं तुम्हारे सामने घुटनों पर बैठकर तुमसे विवाह का प्रस्ताव रखता।”
वत्स के राजा ने अपनी छोटी सी गलती को छिपाने के लिए सिर पीछे करके ज़ोर से हँसा, और बाकी लोग भी हँसते-हँसते उनका साथ देने लगे। शांत होने के बाद, चंद्रवर्धन ने अपना ध्यान घातकपर की ओर मोड़ा और संतुष्टि से सिर हिलाया। “अपने युवा भतीजे को एक बलवान पुरुष बनते देखना अच्छा लगता है,” उन्होंने राजकुमार का कंधा पकड़ते हुए और उसकी मांसपेशियों की मजबूती को महसूस करते हुए कहा। “आचार्य के मार्गदर्शन में अच्छी तरह से अभ्यास करो,” उन्होंने राजगुरु की ओर इशारा करते हुए कहा। “यदि तुम उनके द्वारा सिखाई गई आधी बातें भी सीख लेते हो, तो मैं वादा करता हूँ कि युद्ध में कोई भी तुम्हें हरा नहीं पाएगा।”
“जी हां, महोदय,” राजकुमार ने आदरपूर्वक कहा।
हरिहारा, जो अब तक सौम्य मुस्कान बिखेर रहा था, क्षपणक की ओर मुड़ा। “निशाद वंश की प्रथम संतान राजकुमारी कैसी हैं? क्या अब उनकी सेहत बेहतर है?”
एक पल के लिए, समूह में एक अजीब सी खामोशी छा गई। वेताल भट्ट ने धीरे से अपने हाथ में खांसा और क्षपणक पर तिरछी नज़र डाली। घटकरपारा ने हाथ जोड़कर ज़मीन की ओर देखा, जबकि चंद्रवर्धन ने शराब के प्याले में अपना सिर छिपा लिया। क्षपणक ने जवाब देने से पहले केवल विनम्रता से मुस्कुराया।

“मुझे खेद है कि निषाद का राज्य अब केवल स्मृतियों में ही मौजूद है, महाराज,” उसने रहस्यमय ढंग से कहा। “हम अब अवंती की पुत्रियाँ हैं।” थोड़ी देर रुकने के बाद उसने आगे कहा, “नहीं, मेरी बहन की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ है, लेकिन उसकी स्थिति बिगड़ी भी नहीं है।”
हेहेया के राजा ने शर्मिंदा होकर सिर हिलाया, उनकी आँखों से स्पष्ट था कि उन्हें पता था कि उन्होंने एक संवेदनशील विषय उठा दिया है। सौभाग्य से, एक छोटे से महल अधिकारी के आने से स्थिति संभल गई।
“राज-गुरु, सम्राट चाहते हैं कि आप सभी उनके साथ परिषद कक्ष में आएं ताकि एक अत्यंत अत्यावश्यक मामले पर चर्चा की जा सके,” सेवक ने झुककर सम्मानपूर्वक विदा ली।
जब आचार्य क्षपणक और घटकर्पर के साथ रहस्यमय निगाहों का आदान-प्रदान कर रहे थे, तब हरिहर ने आश्चर्य से चारों ओर देखा। “विक्रमादित्य अब हमसे क्या चाहते हैं?” उन्हें इस बात से राहत मिली कि कुछ ऐसा हुआ जिससे उस क्षण की असहजता दूर हो गई।
“मुझे पक्का नहीं पता, माननीय न्यायाधीश,” वेताला भट्टा ने कंधे उचकाते हुए कहा।
"पता लगाने का सिर्फ एक ही तरीका है," चंद्रवर्धन ने चिढ़ते हुए कहा और अंदर की ओर वापस जाने लगा।
***

परिषद कक्ष विशाल और ऊँचा था, जिसमें कमरे के एक तरफ खिड़कियों की एक लंबी कतार से भरपूर हवा आती थी, जहाँ से झील का नज़ारा दिखता था। उत्तर दिशा से आती हल्की हवा खिड़कियों पर लगे महीन पर्दों को हिला रही थी, लेकिन भीतरी दीवारों पर टंगी जटाधारी टेपेस्ट्री को हिला नहीं पा रही थी, जिनमें आदित्य राजवंश के युद्ध हथियारों और अन्य विरासत की वस्तुओं को सजाया गया था।
कक्ष में एक विशाल कांसे की बनी सभा-मेज शोभायमान थी, जिसकी सतह पर अवंती का राजचिह्न अंकित था। सोने से निर्मित और मूंगा तथा नीलमणि से जड़ा यह राजचिह्न एक जटिल, आठ-नुकीले सौर आकृति का प्रतिनिधित्व करता था जो चौड़ी मेज की पूरी चौड़ाई में फैला हुआ था, जिसके चारों ओर कई ऊँची कुर्सियाँ रखी थीं। इनमें से लगभग दो दर्जन कुर्सियाँ इस समय भरी हुई थीं, जिनमें सम्राट विक्रमादित्य मेज के शीर्ष पर विराजमान थे।
कक्ष में एक विशाल कांसे की बनी सभा-मेज शोभायमान थी, जिसकी सतह पर अवंती का राजचिह्न अंकित था। सोने से निर्मित और मूंगा तथा नीलमणि से जड़ा यह

राजचिह्न एक जटिल, आठ-नुकीले सौर आकृति का प्रतिनिधित्व करता था जो चौड़ी मेज की पूरी चौड़ाई में फैला हुआ था, जिसके चारों ओर कई ऊँची कुर्सियाँ रखी थीं।
इनमें से लगभग दो दर्जन कुर्सियाँ इस समय भरी हुई थीं, जिनमें सम्राट विक्रमादित्य मेज के शीर्ष पर विराजमान थे।
राजा ने सभा में चारों ओर देखा, मेज पर छाए रहस्यमय वातावरण को भांपते हुए यह सुनिश्चित किया कि कमरे में सभी महत्वपूर्ण लोग मौजूद हैं।
“मुझे पता है कि यह बिल्कुल अप्रत्याशित है, और मुझे आपको नीचे सजे हुए शानदार भोज से विदा करने में बहुत दुख हो रहा है,” उन्होंने संयमित स्वर में कहा, और उत्सुकता से उनकी ओर देख रहे हर व्यक्ति से नज़रें मिलाईं। “लेकिन एक चिंताजनक मामला सामने आया है, और चूंकि हम सभी एक ही छत के नीचे हैं, मुझे लगता है कि इस पर तुरंत चर्चा करना सबसे अच्छा होगा। यह मामला मत्स्य के राजा ने मेरे ध्यान में लाया है...”
विक्रमादित्य रुका और अपने ठीक दाहिनी ओर बैठे व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए बोला, “हे राजा बाणहस्त, क्या आप कृपा करके मुझे बताई गई बातें सभी के साथ साझा करेंगे?”
बाणहस्त ने प्रणाम किया और खड़े हो गए। वे दुबले-पतले और लंबे थे, उनका चेहरा सांवला और कोणीय था, जो नुकीली दाढ़ी से ढका हुआ था, जिसे वे बातचीत के दौरान सहलाते रहते थे।
“मुझे क्षमा करें, मैं उत्सव में खलल डाल रहा हूँ, क्योंकि मैं जो कहने जा रहा हूँ उसका शायद कोई महत्व न हो,” उन्होंने गला साफ करते हुए कहा। “लेकिन सम्राट का मानना है कि इसमें कुछ सच्चाई हो सकती है।”
"हमारा पूरा ध्यान आप पर है," चंद्रवर्धन ने सीधे मुद्दे पर आने के स्पष्ट इरादे से कहा, हालांकि उनके शब्दों से ऐसा प्रतीत नहीं हुआ।
“जी हां,” बानाहस्ता ने कहा। “बात यह है कि हमें मत्स्य से कुछ चिंताजनक खबरें मिल रही हैं। मैं मानता हूं कि ये खबरें आधिकारिक नहीं हैं; ये पहाड़ियों में रहने वाले अफीम किसानों, बकरी चराने वालों... यहां तक कि मेरे सैनिकों द्वारा पकड़े गए पहाड़ी डाकुओं से भी आ रही हैं। लेकिन उनकी बातों में एक समानता है।” वह रुका और गहरी सांस ली। "उन सभी का दावा है कि उन्होंने मेरे राज्य की सीमा से लगे पहाड़ों पर साका घुड़सवारों को घूमते हुए देखा है।"
बाणहस्त की बातों पर सन्नाटा छा गया, मानो सन्नाटा कभी मिट ही न रहा हो। अंत में, घनी दाढ़ी वाले एक छोटे कद के, गठीले शरीर वाले व्यक्ति ने सन्नाटा तोड़ा। ये थे कोसल के राजा भूमिपाल।

"क्या आपकी सीमा गश्ती टीमों ने इनमें से किसी भी घटना को देखे जाने की सूचना दी है?" भूमिपाला ने अपनी ऊंची, नाक से निकलने वाली आवाज में पूछा।
“मुझे खेद है कि ऐसा नहीं है,” बानाहास्ता ने माफी मांगते हुए खांसा। “जैसा कि मैंने कहा, ये रिपोर्टें आधिकारिक नहीं हैं। ऐसा लगता है कि साका घुड़सवार बड़ी संख्या में मौजूद नहीं हैं। शायद इसीलिए मेरी गश्ती टीमों ने उन्हें नहीं देखा है।”
“महाराज, आपके क्षेत्र में शक घुड़सवार कब से देखे जा रहे हैं?” आचार्य ने मत्स्य के शासक पर तीखी निगाह डालते हुए बीच में ही टोकते हुए कहा।
“लगभग दो हफ्ते पहले से खबरें आनी शुरू हो गईं। तो ये घटनाएं... कौन जाने... एक महीने पहले, शायद उससे भी पहले घटी होंगी,” बानाहस्ता ने कंधे उचकाते हुए कहा। “क्या हमें पता है कि घुड़सवारों ने कभी आपके किसी भी प्रजाजन पर हमला किया है या उन्हें धमकी भी दी है?” अब विक्रमादित्य की बारी थी प्रश्न पूछने की। “कुछ रिपोर्टों में कहा गया है कि उन्होंने एक-दो खेतों में तोड़फोड़ की, लेकिन ऐसा लगता है कि उनका मकसद सिर्फ भोजन प्राप्त करना था,” बानाहस्ता ने जवाब दिया। “भोजन और पशुधन चोरी हो गए, लेकिन किसी को धमकाया नहीं गया और न ही किसी को शारीरिक नुकसान पहुँचाया गया।”
“तो शायद वे इलाके की रेकी करने ही वहाँ आए हों,” चंद्रवर्धन ने धीमी आवाज़ में कहा। “या फिर वे साका जनजाति से अलग हुए छोटे समूह हो सकते हैं... बहिष्कृत, अगर आप समझ रहे हों तो। अब उन्हें पता नहीं कि कहाँ जाना है, इसलिए वे पहाड़ियों में भोजन की तलाश में भटक रहे हैं... कुछ भी हो सकता है।”
परिषद कक्ष में सन्नाटा छा गया क्योंकि हर कोई उस रहस्योद्घाटन के महत्व को समझने की कोशिश कर रहा था। हालाँकि, यह सन्नाटा तब टूट गया जब मेज के निचले हिस्से से एक कर्कश आवाज ने अभद्र लहजे में कहा।
“क्या सिंधुवर्त का सम्राट मत्स्य के दीन चरवाहों, किसानों और डाकुओं की रिपोर्टों को गंभीरता से लेगा?”
सभी की निगाहें उस व्यक्ति की ओर मुड़ गईं जिसने अभी-अभी बात की थी। लगभग तीस वर्ष की आयु का वह व्यक्ति लंबा और चौड़े कंधों वाला था, उसके सुंदर चेहरे पर एक स्टाइलिश दाढ़ी और मूंछें थीं जो उसके पतले होंठों को घेरे हुए थीं, जिनके एक कोने पर हमेशा एक हल्की सी मुस्कान रहती थी। उसकी हल्की हरी आँखें विक्रमादित्य को बड़ी मुश्किल से छिपे हुए अहंकार से देख रही थीं।
सम्राट ने उस व्यक्ति को घूरते हुए जवाब देने में समय लिया। जवाब देते समय उनकी आवाज़ दृढ़ थी। “हाँ। क्योंकि ऐसी रिपोर्टों को, चाहे वे कितनी भी

अविश्वसनीय क्यों न लगें, खारिज करना अत्यंत मूर्खता होगी। हम सब जानते हैं कि हूण और शक धूर्त और भयंकर शत्रु हैं, और हम उन्हें सिंधुवर्त में फिर से पैर जमाने नहीं दे सकते।”
दूसरे आदमी ने कंधे उचकाते हुए कुर्सी पर पीछे की ओर झुककर आलस भरी निगाहों से छत की ओर देखा। "मुझे लगता है कि हम सब इस बात को ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ा- चढ़ाकर पेश कर रहे हैं।"
“हो सकता है तुम सही कह रहे हो, शूरसेना,” विक्रमादित्य के स्वर में सूक्ष्म परिवर्तन आ गया था क्योंकि उन्होंने अपने अधिकार को चुनौती का डटकर सामना किया। “लेकिन सिंधुवर्त ने हूणों और शकों के कब्जे में बहुत कष्ट झेला है। हमारे सभी राज्यों को आक्रमणकारियों से अपनी भूमि को मुक्त कराने के लिए बड़े बलिदान देने पड़े। तुम्हारे स्वयं के पिता...”
सम्राट ने शूरसेना के बगल में बैठे दुर्बल, सफेद बालों वाले व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा, “...आदरणीय राजा सिद्धसेन ने युद्ध में अपने दो भाइयों को खो दिया। राजा भूमिपाल ने अपना पुत्र खोया, वरारुचि और मैंने अपने पिता को खोया... उस युद्ध को जीतने के लिए हम सभी ने बहुत कुछ खोया है। इसे हल्के में लेकर हम सिंधुवर्त के लिए लड़ने वाले शहीदों की स्मृति का अपमान करेंगे। यह मुझे स्वीकार्य नहीं है।”
शूरासेना ने एक पल के लिए विक्रमादित्य को देखा, फिर मेज के चारों ओर जल्दी से नज़र घुमाकर माहौल का जायजा लिया। लगभग सभी की तीखी, नापसंदगी भरी निगाहों को देखकर, उसने अपनी नज़रें झुका लीं, सिर हिलाया और खामोशी में डूब गया।
वेतला भट्टा ने अपनी सीट से उठने का अवसर लिया। उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, “मत्स्य अखबार में छपी खबरों के सही होने का एक और ठोस कारण है। आज सुबह ही उदयपुरी स्थित हमारी चौकी से एक खबर आई है। मेरा इरादा इसे शाम को सम्राट को देने का था, लेकिन अब मैं इसे यहां मौजूद सभी लोगों के साथ साझा कर देता हूं।” राजगुरु ने बिना किसी भूमिका के, सभा में उपस्थित लोगों को हुनाओं द्वारा सीमा सुरक्षा चौकी पर किए गए हमले के बारे में बताया। उनके बोलते ही कमरे में बेचैनी का माहौल गहरा गया और चारों ओर चिंता भरी निगाहें घूमने लगीं। आचार्य ने निष्कर्ष निकालते हुए कहा, “यह स्पष्ट है कि हूण-शक संघ ने सिंधुवर्त में अपनी रुचि फिर से जगा ली है। शक मत्स्य की जासूसी कर रहे हैं, जबकि हूण अवंती की सीमाओं पर नजर रखे हुए हैं।”
"यह बहुत चिंताजनक है," बानाहस्ता ने अपनी दाढ़ी में ठुड्डी सहलाते हुए चिंता से कहा, अचानक अपने राज्य के लिए एक वास्तविक खतरे की संभावना से जागृत होकर।

“हमले में हमने कितने जवान खोए?” अमारा सिम्हा ने गुस्से से भरी आवाज में पूछा।
राजगुरु ने घटाकरपारा की ओर जिज्ञासा भरी नजरों से देखा, जिन्होंने कंधे उचकाकर यह संकेत दिया कि सवार ने इस बारे में कोई जिक्र नहीं किया था।
"वे सीमा चौकियां छोटी हैं, इसलिए शायद वहां एक दर्जन आदमी होंगे," आचार्य ने अनुमान लगाया।
“हमें तुरंत सीमा पर सेना भेजनी होगी,” विक्रमादित्य ने दृढ़ता से कहा। “भाई वरारुचि, कृपया सुनिश्चित करें कि शाही सेना की दस हजार पैदल सेना, तीन हजार तीरंदाज और तीन हजार घुड़सवार सैनिक कल सुबह तक रवाना कर दिए जाएं और उन्हें उदयपुरी के उत्तर और दक्षिण में शिविर स्थापित करने का निर्देश दिया जाए। साथ ही, शाही इंजीनियरों के कमांडर को सभी सीमा सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करने और आक्रमण से बचाव के लिए उन्हें सुरक्षित करने का आदेश दिया जाए।” “सम्राट, क्या आप चाहेंगे कि मैं सैनिकों की गतिविधियों की निगरानी के लिए उदयपुरी भी जाऊं?”
विक्रमादित्य ने स्वीकार किया, “महल से किसी को जाना होगा। आइए, इस बारे में जल्द ही विचार-विमर्श करके निर्णय लें। फिलहाल, सैनिकों को तुरंत रवाना होने दें।”
वररुचि ने आदेश स्वीकार कर लिया और राजा कालिदास की ओर मुड़े, जो तब तक एक तरफ भावहीन खड़े थे, उनकी विशाल भुजाएँ छाती पर बंधी हुई थीं। “मैं चाहता हूँ कि आप अपने संसप्तकों को शीघ्र ही तैनात करने की तैयारी शुरू कर दें।”
“सम्राट, ये सभी दो हजार सैनिक युद्ध के लिए पूरी तरह तैयार हैं,” उस विशालकाय व्यक्ति ने कहा। “वे केवल आपके आदेश की प्रतीक्षा कर रहे हैं।”
“अच्छा,” विक्रमादित्य ने संतुष्टि से सिर हिलाया।
राजा हरिहर खड़े हो गए। उन्होंने स्वेच्छा से कहा, “सम्राट विक्रमादित्य, मैं दो दिनों में हेहेया के तीन हजार सर्वश्रेष्ठ सैनिकों और एक हजार घुड़सवारों को आपकी सेवा में उपलब्ध करा दूंगा।”
“धन्यवाद,” सम्राट ने सिर झुकाया।
“मैं तुम्हें पाँच हज़ार सैनिक भी भेजूँगा,” चंद्रवर्धन ने बाणहस्ता की ओर देखते हुए प्रतिज्ञा की। “और मत्स्य की सीमा की रक्षा में सहायता के लिए, तुम्हें वत्स के पाँच हज़ार सर्वश्रेष्ठ सैनिक और मेरी कुलीन घुड़सवार सेना भी मिलेगी।”

मेज पर नीचे की ओर बैठा एक पगड़ीधारी युवक खड़ा हो गया। छह फीट से अधिक लंबा, दुबला-पतला और आकर्षक, उसकी भूरी आँखें भावपूर्ण थीं और उसकी छोटी, कटी हुई मूंछें थीं। उसने घोषणा की, “मैं अनार्ता संघ के सभी पाँच प्रमुखों की ओर से बोल रहा हूँ, सम्राट। हममें से प्रत्येक तीन हज़ार सैनिक भेजेगा, जिन्हें अवंती और मत्स्य के बीच बाँटा जाएगा।”
"सिंधुवर्त राज्य आप सभी के बहुत आभारी हैं, हे युगंधर," विक्रमादित्य ने उत्तर दिया और पाँचों अनार्ता सरदारों को प्रणाम करके उनका आभार व्यक्त किया।
अब राजा भूमिपाला की बारी थी। उन्होंने कहा, “मैं मत्स्य राज्य में आठ हजार सैनिक और दो हजार धनुर्धर भेजने का वचन देता हूँ। एक सप्ताह के भीतर राजा बाणहस्त के अधीन ये सैनिक होंगे।”
कोसल के राजा के वापस बैठने के बाद, सबकी निगाहें सिद्धसेना पर टिक गईं, जो कुर्सी पर झुके बैठे, नम आँखों से मेज को निहार रहे थे। जब कुछ देर तक बूढ़े राजा की ओर से कोई आवाज नहीं आई, तो विक्रमादित्य ने उनसे विनम्रता से बात की। "महामहिम, क्या हूणों और शकों के हमले की स्थिति में मगध राज्य से हमें कुछ सहायता की उम्मीद हो सकती है?"
सिद्धसेना ने सम्राट की ओर सिर उठाया और अनिच्छा से अपना मुंह खोला। लेकिन इससे पहले कि वह अपना जवाब दे पाता, शूरासेना ने अपने पिता को बीच में ही रोक दिया।
“मगध की सेना वांगा गणराज्य के विरुद्ध एक बड़े अभियान की तैयारी कर रही है। हमें आशंका है कि हमारे पास आपको देने के लिए पर्याप्त सैनिक नहीं होंगे।” मेज पर बैठे सभी लोगों की भौंहें आश्चर्य से ऊपर उठ गईं, विक्रमादित्य ने सिद्धसेना को गौर से देखा। “लेकिन आप वांगा के विरुद्ध युद्ध क्यों कर रहे हैं, राजा सिद्धसेना? वे तो शांतिप्रिय लोग हैं।”
“वे मगध की संप्रभुता को चुनौती दे रहे हैं,” शूरासेना ने अपने पिता की ओर से फिर उत्तर दिया। “वंगा, किकाटा विद्रोहियों का समर्थन करके मगध के किकाटा कबीले के विद्रोह को बढ़ावा दे रहा है।”
किसी के कुछ कहने से पहले ही वरारुचि आगे झुके और शूरसेना को संबोधित करते हुए बोले, “सम्राट के प्रश्न मगध के राजा से हैं, आपसे नहीं। राजा को ही उत्तर देने दीजिए।”
"मगध राज्य की अखंडता से संबंधित मामलों में हमारे राजा दूसरों के प्रति जवाबदेह नहीं हैं।"

इस बार वक्ता सिद्धसेना के बाईं ओर बैठा एक सांवला व्यक्ति था। वह लगभग तीस वर्ष का था, उसकी आंखें तेज और नुकीली थीं और उसकी घनी काली मूंछें थीं। यह शूरसेना का छोटा भाई कपिला था, हालांकि शारीरिक रूप से दोनों में कोई समानता नहीं थी।
“बस करो!” चंद्रवर्धन अपनी सीट से उठते हुए गरज उठा। मेज पर हाथ टिकाकर उसने भाइयों को घूरते हुए कहा, “हम यहाँ तुम्हारी बातें सुनने नहीं आए हैं। वरारुचि सही कह रहा है। अपने पिता को बोलने दो।”
परिषद कक्ष का वातावरण तनावपूर्ण था क्योंकि तीखी निगाहों का आदान-प्रदान हो रहा था, लेकिन राजा सिद्धसेना ने और अधिक नुकसान होने से पहले ही सुलह का हाथ उठा दिया।
“शांत हो जाइए, कृपया। शांत हो जाइए,” उन्होंने कांपती हुई आवाज में विनती की। “हे राजा चंद्रवर्धन, शूरसेना और कपिला को क्षमा कर दीजिए, क्योंकि वे युवा हैं।”
वत्सा के राजा ने घृणा से नाक सिकोड़ी, लेकिन बड़े राजा के सम्मान में बैठ गए। इस बीच सिद्धसेना ने अपने दोनों ओर बैठे बेटों की ओर देखा।
“मुझे बोलने दीजिए,” उन्होंने विक्रमादित्य की ओर मुड़ते हुए कहा। “सम्राट, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरे पुत्रों को भी उनकी नादानी के लिए क्षमा कर दें। परन्तु वे आपसे कोई द्वेष नहीं रखते। इसके प्रमाण स्वरूप मगध राज्य सिंधुवर्त की रक्षा के लिए सेना भेजने का वादा करता है।”
शूरसेना और कपिला जब मेज की ओर पत्थर की तरह टकटकी लगाए देख रहे थे, तब विक्रमादित्य ने अपना सिर झुकाया। “हे महाराज, हम इसके लिए आभारी हैं,” उन्होंने आगे बात न बढ़ाते हुए कहा। “हम आपके वचन पर कभी संदेह नहीं करेंगे।” सभा की ओर देखते हुए उन्होंने आगे कहा, “अच्छा, फिलहाल तो बात यहीं खत्म होती है। चलिए भोज में वापस चलते हैं।”
“आखिरकार,” चंद्रवर्धन ने हरिहारा से बुदबुदाते हुए कहा, जब सभी लोग कक्ष से बाहर निकलने लगे। “लेकिन मैं कह सकता हूँ कि पिछले आधे घंटे ने मेरी भूख पूरी तरह से मिटा दी है,” उसने उदास स्वर में कहा।
***

उज्जैन में रात हो चुकी थी और दिनभर की चहल-पहल के बाद महल में सन्नाटा पसरा हुआ था। शाही मेहमान हल्के भोजन के बाद अपने कमरों में लौट गए थे, हालांकि दोपहर के भव्य भोज और परिषद कक्ष में हुई गंभीर बैठक के मिले-जुले प्रभाव के कारण किसी ने भी ज्यादा भोजन या बातचीत नहीं की।

महल के पूर्वी भाग में, दो आकृतियाँ एक चौड़े गलियारे से नीचे की ओर धीमी आवाज़ में बातें करते हुए चल रही थीं। उनमें से लंबा व्यक्ति विक्रमादित्य था, जबकि दूसरा धनवंतरी था, जिसकी फूली हुई परछाईं टिमटिमाते दीपों की रोशनी में उसके पीछे हिल रही थी।
गलियारे के अंत में एक नक्काशीदार लकड़ी के दरवाजे पर पहुँचकर राजा ने हाथ उठाकर लकड़ी पर हल्के से दस्तक दी। कुछ क्षण बाद, एक युवती ने दरवाजा खोला, आदरपूर्वक प्रणाम किया और विक्रमादित्य के लिए रास्ता बनाया। धनवंतरी भी उनके पीछे-पीछे आए, अपने भारी-भरकम शरीर को उस खाली जगह से निकालने में उन्हें थोड़ी कठिनाई हुई।
कमरा शयनकक्ष था, जिसके बीचोंबीच चंदन की लकड़ी का एक विशाल चौपाया पलंग रखा था। पलंग पर लगे जालीदार पर्दे हटा दिए गए थे और एक स्त्री रेशमी चादर पर लेटी हुई थी। दो दासियाँ पलंग के दोनों ओर खड़ी थीं, जिनके हाथों में बड़े-बड़े पंखे थे, जिनसे वे स्त्री के सिर के ऊपर की हवा को हिला रही थीं। एक बुजुर्ग महिला पलंग के किनारे बैठी थी, और जैसे ही विक्रमादित्य और धनवंतरी पास आए, वह खड़ी हो गई और आदरपूर्वक कुछ दूरी पर हट गई।
पलंग के पास जाकर राजा ने उस स्त्री को देखा। वह लगभग तीस वर्ष की थी, उसका चेहरा पतला और पीला पड़ गया था। कभी उसका चेहरा आकर्षक रहा होगा, लेकिन अब उस पर कमजोरी के निशान साफ दिख रहे थे, आँखों के नीचे गहरे काले घेरे थे जो मानो खाली निगाहों से सामने घूर रही थीं, मानो आसपास की हलचल पर कोई ध्यान न दे रही हों।
विक्रमादित्य उस महिला के पास बैठ गए, धीरे से उसका कमजोर हाथ उठाया और प्यार से सहलाया, लेकिन वह महिला अपनी निर्मम अवस्था में अनुत्तरदायी बनी रही। उन्होंने महिला की ओर मुड़कर पूछा, "क्या उसे खाना खिलाया गया है?"
"जी हां, महाराज। राजकुमारी क्षपनाका स्वयं आज शाम उन्हें भोजन कराने आई थीं।"
“क्या उसने अच्छे से खाना खाया?”
वह महिला, जो स्पष्ट रूप से एक आया थी, हिचकिचाई। "जी हाँ... थोड़ा-थोड़ा, महोदया। वह... वह दिन-ब-दिन कम खाती जा रही है..."
धनवंतरी बिस्तर के दूसरी तरफ आया। उसने पूछा, "क्या उसे मेरी हिदायतों के मुताबिक दवाइयाँ दी जा रही हैं?" उसकी आवाज़ में हमेशा की तरह कोई चंचल हंसमुखता नहीं थी।
“बिल्कुल, महोदय,” नर्स ने उत्तर दिया।

चिकित्सक नीचे झुका और महिला की नब्ज़ जाँची। फिर उसने उसकी पुतलियों की जाँच की, और उसके बाद धैर्यपूर्वक खड़ा हो गया, जबकि राजा उस मुरझाए हुए, भावहीन चेहरे को देखता रहा।
अंत में, सम्राट ने धीरे से महिला का हाथ वापस उसकी गोद में रख दिया। फिर उन्होंने कुछ देर तक उसके माथे को सहलाया, उसके बाद गहरी साँस ली और उठ खड़े हुए। उन्होंने महिला को सिर हिलाकर अभिवादन किया, जिसने जवाब में झुककर अभिवादन किया, बिस्तर पर लेटी महिला पर एक और टकटकी लगाई और कमरे से बाहर चले गए।
राजा और धनवंतरी चुपचाप उसी रास्ते से वापस लौट गए। रास्ते के अंत में, जहाँ रास्ता दो भागों में बँटता था, पहुँचकर विक्रमादित्य उदास आँखों से अपने साथी को देखने के लिए रुक गए।
“क्या आपको लगता है कि उसकी हालत बिगड़ रही है?” उसने पूछा।
“यह कहना मुश्किल है, सम्राट।”
राजा कुछ पल चुप रहे। "लेकिन हम इस बात को लेकर काफी हद तक आश्वस्त हो सकते हैं कि वह कभी ठीक नहीं होगी, है ना?"
धनवंतरी ने नज़रें फेर लीं, क्योंकि उनमें प्रश्न का उत्तर देने की हिम्मत नहीं थी।
धनवंतरी की चुप्पी को सही ढंग से समझते हुए, विक्रमादित्य ने गहरी साँस ली और सामने वाली दीवार को खाली निगाहों से घूरने लगा। “काश मैं उससे बात कर पाता... किसी तरह। उससे बात कर पाता और उसे बता पाता कि मैं उससे प्यार करता हूँ और उसका इंतज़ार कर रहा हूँ...” उसने एक बार फिर धनवंतरी की ओर देखा, उसकी आँखों में विनती थी। “वह दो साल से ऐसी ही है। क्या इसका कोई इलाज नहीं है, कहीं?” “आप जानते हैं कि मैंने हर संभव कोशिश की है। दुर्भाग्य से, अभी तक कुछ भी कारगर नहीं हुआ है।”
“हाँ, मुझे पता है आपने पूरी कोशिश की है,” राजा ने निराशा से सिर झुका लिया। “यदि यह रोग सिंधुवर्त के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक के भी बस से बाहर है, तो मुझे इसे अपना भाग्य स्वीकार करना होगा।”
धनवंतरी ने हाथ बढ़ाकर सम्राट के कंधे पर दिलासा भरा हाथ रखा। “उम्मीद मत छोड़ो, मित्र। मैं वादा करता हूँ कि मैं उसे वापस लाने की कोशिश करता रहूँगा। अब आराम करो।”
“तुम भी अच्छी नींद लो, मेरे मित्र,” राजा ने उत्तर दिया।

दोनों व्यक्ति अलग हो गए, राजचिकित्सक सीढ़ियों से नीचे वाले तल पर उतर गया, जबकि विक्रमादित्य उस गलियारे में मुड़ गया जो उसके शयनकक्ष की ओर जाता था। जैसे ही पुरुषों के कदमों की आवाज धीमी हुई, नीचे गलियारे में एक बड़े खंभे की छाया से एक आकृति धीरे-धीरे बाहर निकली। दूर लगे एक लैंप की रोशनी तुरंत उस आकृति पर पड़ी, जिससे काले रंग की पगड़ी के नीचे एक आदमी का सांवला, दाढ़ी वाला चेहरा दिखाई दिया।
वह नाव वाला साधु था।
साधु चुपके से रुका और इधर-उधर देखकर यह सुनिश्चित किया कि आसपास कोई न हो।
रास्ता साफ था, इसलिए वह राजा के शयनकक्ष की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। जैसे-जैसे वह ऊपर चढ़ता गया, उसने अपने कढ़े शॉल में हाथ डाला और उसकी उंगलियां धोती की तहों में सावधानी से रखे लंबे खंजर के मूठ पर जा टिकीं।

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

एक चहचहाहट निकाली। फिर, घोड़े की लगाम पकड़कर, सवार आग की रोशनी की ओर चलने लगा।
तंबुओं के आधे रास्ते में, अंधेरे से तीन आकृतियाँ निकलीं और घुड़सवार के रास्ते में खड़ी हो गईं।
“नमस्कार, बहन,” उनमें से एक आकृति ने दोस्ताना स्वर में कहा। “इस समय आप घुमंतू जनजाति की खोज में क्यों आई हैं?”
मैं यहां मदर ओरेकल से बात करने आया हूं।
“आह!” तीनों आकृतियाँ घुड़सवार के साथ कदम मिलाकर चलने लगीं। “लेकिन आपको कैसे पता चला कि हम कहाँ मिलेंगे?”
“तुम भूल जाते हो कि मुझमें भी घुमंतू लोगों का खून है। पहाड़ की चोटी पर पिघलने वाला बर्फ का टुकड़ा सहज रूप से दूर समुद्र की ओर वापस जाने का रास्ता जानता है।”
घुड़सवार और उसके तीन अंगरक्षक तंबुओं तक पहुँचे। आग की रोशनी के घेरे में कदम रखते ही घुड़सवार ने अपना लबादा उतार दिया, जिससे बीस साल से कुछ अधिक उम्र की एक युवती का चेहरा सामने आया। दुबली-पतली, उसके चेहरे की बनावट नुकीली और आकर्षक थी, और उसकी बड़ी-बड़ी काली आँखें आग की रोशनी में चमक रही थीं। उसके गोरे चेहरे के चारों ओर काले घुंघराले बाल बिखरे हुए थे, और उस समय वह आग के चारों ओर बैठे परिचित चेहरों को देखकर शरारती मुस्कान बिखेर रही थी। “शंकुबाला, राजमहल में तुम्हारा कैसा बर्ताव हो रहा है?” लगभग पचास साल की एक सांवली महिला ने चिंता जताते हुए घुड़सवार को आग के पास खींचते हुए और उसके हाथों में मसालेदार शोरबे से भरा लकड़ी का कटोरा थमाते हुए कहा। “आओ, तुम्हें भूख और थकान जरूर हुई होगी। इसे पी लो!”
“शंकु, बहुत दिनों बाद तुम हमारे यहाँ आए होगे। देखो तुम्हारा भतीजा कितना लंबा हो गया है,” एक आदमी ने दस साल के एक लड़के की ओर इशारा करते हुए कहा, जो शरमाते हुए मुस्कुराया और एक तंबू में घुस गया।
पारिवारिक मिलन की औपचारिकताओं को पूरा होने में कुछ समय लगा और शंकु को अपनी दादी से अकेले में मिलने की अनुमति मिली। एक छोटे से तंबू में, जो एक छोटे से दीपक से रोशन था, बूढ़ी दादी के सामने बैठी, उनके झुर्रीदार चेहरे और धुंधली आँखों को देखते हुए, लड़की सोच रही थी कि वह उस बात को कैसे उठाए जिसके कारण वह तंबू में आई थी। लेकिन उसे यह निर्णय लेने से छूट मिल गई।
“मेरे बच्चे, तुम बेहद खूबसूरत हो,” बूढ़ी औरत ने अपने दांतविहीन मुंह से कहा। “तुम्हें अपनी माँ की सुंदरता तो मिली है, लेकिन ये बड़ी-बड़ी आँखें तुम्हारे

पिता की हैं... धिक्कार है उनके कपटी हृदय पर! मुझे कभी समझ नहीं आएगा कि तुम्हारी माँ को उनमें क्या पसंद था – उन्होंने घुमंतू जनजाति को कलंक के सिवा कुछ नहीं दिया। लेकिन तुम यहाँ परिवार के बारे में बात करने तो नहीं आए हो, है ना? बताओ तुम्हें क्या चाहिए।”
शंकु ने कुछ मिनट तक बोलते हुए अपनी दादी को बताया कि अवंती के राजा उनसे क्या चाहते हैं। बूढ़ी औरत चुपचाप सुनती रही और सिर हिलाती रही, और जब लड़की बोल कर समाप्त कर चुकी, तो वह वापस बैठ गई और कुछ देर तक तम्बू की छत को निहारती रही। अंत में बुढ़िया बोली, “पश्चिम से आने वाली हवाएँ कम से कम एक सप्ताह तक, शायद उससे भी अधिक समय तक, इस ओर नहीं चलेंगी। लेकिन मुझे प्रवासी पक्षियों की बातें सुनने दीजिए। हो सकता है उनके पास कुछ ऐसा हो जो आपके राजा के लिए उपयोगी हो।”
“बादलों का क्या हुआ?” शंकु ने पूछा।
"हां, मैं बादलों को भी पढ़ने की कोशिश करूंगा, लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे महान रेगिस्तान की दिशा से आ रहे हैं या नहीं।"
शंकु ने सिर हिलाया। “मैं कल रात लौट आऊंगा, दादी। मुझे उम्मीद है कि आपने कुछ उपयोगी जानकारी हासिल कर ली होगी।”
“और अगर मैंने ऐसा नहीं किया हो तो?” बूढ़ी औरत ने छोटी वाली को गौर से देखा। “तो मैं परसों फिर लौट आऊंगा।”
शंकु ने विदा ली और तम्बू से बाहर निकलने ही वाली थी कि उसकी दादी ने उसे पुकारा।
“क्या तुम्हें अपने पिता दिखाई दे रहे हैं, बच्चे?”
शंकु पीछे मुड़ी और चुपचाप अपनी दादी को देखने लगी। "मैंने बहुत समय से ऐसा नहीं किया है," उसने अंत में धीरे से कहा।
“और क्या उज्जैनी के महल में तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार किया जाता है... उसके किए के बाद भी? वैसे, तुम हमेशा हमारे पास वापस आ सकते हो। तुम्हारा यहाँ हमेशा स्वागत है।”
लड़की ने फिर सिर हिलाया। “मुझे पता है। लेकिन नहीं, वहाँ सब लोग मेरे प्रति बहुत दयालु हैं... खासकर राजा।”
“तो फिर, वापस आकर बैठ जाओ, बच्ची,” बुढ़िया ने गंभीरता से कहा और अपने बगल की ज़मीन पर थपथपाया। “मुझे एक सपना आया है जिसके बारे में तुम्हारे राजा को पता होना चाहिए।”
***

विक्रमादित्य सागौन और हाथीदांत से बनी एक नीची मेज पर बैठे थे, ताड़ के पत्तों पर लिखी एक पांडुलिपि पर झुके हुए थे, उनकी पीठ उनके शयनकक्ष के दरवाजे की ओर थी।
मेज पर रखे दो दीपों की रोशनी ताड़ के पत्तों पर पड़ रही थी, जिससे संस्कृत में लिखी हुई लयबद्ध कविता की पंक्तियाँ उभर रही थीं। राजा प्रत्येक पंक्ति को ध्यान से पढ़ रहे थे, बीच-बीच में रुककर प्रशंसा में मुस्कुरा रहे थे या हाशिये पर कुछ टिप्पणियाँ लिख रहे थे। महल में सन्नाटा पसरा हुआ था, और केवल सूखे ताड़ के पत्तों की सरसराहट और राजा की कलम की छिटपुट आवाज़ ही सुनाई दे रही थी। महल के बाहर, झील के ऊपर लटके गुलमोहर के पेड़ों पर कहीं, एक जंगली चिड़िया रुक-रुक कर चहचहा रही थी।
सम्राट पांडुलिपि में इतना मग्न था कि उसने अपने कक्ष का दरवाजा चुपचाप खुलने और बंद होने पर कमरे में आई हल्की हवा को लगभग महसूस ही नहीं किया। हालांकि, अंतिम क्षण में, उसने हवा के झोंके से जलते हुए दीपों की अचानक झिलमिलाहट देखी और उसका चेहरा सख्त हो गया।
जरा भी सतर्कता दिखाए बिना, राजा ने कलम को वापस स्याहीदान में रख दिया और पांडुलिपि पर अपनी नज़रें फिर से टिका दीं। फिर भी, उनका दाहिना हाथ मेज के नीचे चला गया, जहाँ वे छिपी हुई छोटी तलवार को ढूँढ रहे थे। कदमों की आहट सुनते हुए, उन्होंने चुपके से तलवार निकाल ली। एक गहरी साँस लेकर, वे अचानक झुककर उठे और पीछे मुड़े, तलवार उनके सामने सीधी फैली हुई थी।
तलवार की नोक से तीन कदम की दूरी पर साधु खड़ा था, तलवार उसकी छाती की ओर तनी हुई थी।
“तुम कौन हो?” विक्रमादित्य ने कठोर स्वर में पूछा और कमरे में किसी और घुसपैठिए की तलाश करने लगे। जब उन्हें यकीन हो गया कि कोई नहीं है, तो उन्होंने साधु पर अपनी निगाहें गड़ा दीं। “तुम क्या चाहते हो? तुम यहाँ कैसे आए?”
“इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं यहाँ कैसे आया,” साधु ने जवाब दिया। “और मैं कौन हूँ और मैं क्या चाहता हूँ... यह एक लंबी कहानी है। क्या हम बैठकर बात कर सकते हैं?”
विक्रमादित्य ने अपनी तलवार को अडिग रखते हुए, संकुचित निगाहों से साधु को देखा। उन्होंने पूछा, “तुमने शॉल के नीचे अपने हाथ में क्या छिपा रखा है?” साधु मुस्कुराया और शॉल से अपना हाथ बाहर निकाला। जैसे ही दीयों की रोशनी घुसपैठिए के हाथ में मौजूद कटार की धार पर चमकी, सम्राट ने धमकी भरे अंदाज़

में अपनी तलवार तान दी। साधु ने तुरंत अपना बायां हाथ उठाकर राजा को रोक दिया।
“मैं शांति से आया हूँ और मेरा इरादा आपको कोई हानि पहुँचाने का नहीं है, सम्राट विक्रमादित्य,” उन्होंने कहा। फिर साधु ने तलवार की मूठ पर अपनी पकड़ बदल ली, जिससे तलवार उनकी ऊपर उठी हथेली पर सुरक्षित रूप से टिकी रही। “मैं आपको यह तलवार देने और इसे आपकी देखरेख में छोड़ने आया हूँ।”
“क्यों? इस कटार में ऐसी क्या खास बात है?” राजा ने फिर भी अपनी सतर्कता कम नहीं की।
साधु ने उत्तर देने से पहले एक क्षण रुककर कहा, “यह तीनों लोकों का सबसे शक्तिशाली हथियार है, सम्राट।”
विक्रमादित्य ने साधु से लेकर कटार तक और फिर वापस साधु की ओर देखा, उनकी आँखों में संदेह के बादल छाए हुए थे।
“देवलोक के देवता और पाताललोक के राक्षस, दोनों ही इस कटार को पाने की लालसा रखते हैं,” साधु ने गंभीर स्वर में आगे कहा। “देव और असुर, दोनों ही इसे पाने के लिए कुछ भी करेंगे... कुछ भी।”
सम्राट ने साधु की निगाहों में देखते हुए, अविश्वास भरी मुस्कान के साथ अपने होंठों के कोनों को नीचे की ओर मोड़ लिया।
“क्या ऐसा है? तो फिर आप इसे मेरे पास क्यों लाए हैं?”
मैं चाहता हूं कि तुम इसकी रक्षा करो और इसे उनके कब्जे में आने से बचाओ। ***

महल के दूसरे छोर पर, एक कोने के शयनकक्ष में, कपिला एक दीवान पर उकड़ू बैठा था और अपने हाथ में पकड़े सोमा के पात्र की गहराई में देख रहा था। उसने कुछ देर तक पात्र के अंदर घूमते हुए गाढ़े तरल को देखा, फिर चिंतित निगाहों से शूरसेना की ओर देखा, जो खिड़की के पास हाथ बांधे खड़ा था और रात के अंधेरे में बाहर देख रहा था।
“अब हम क्या करें?” कपिला ने अपने भाई की चौड़ी पीठ से पूछा।
शूरासेना ने अपना चेहरा थोड़ा सा अंदर की ओर मोड़ा, मानो कुछ जवाब देने का इरादा हो, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल लिया और वापस बाहर की ओर देखने लगा। “पिताजी ने मत्स्य और अवंती की रक्षा को मजबूत करने के लिए मगध की सेना भेजने का संकल्प लिया है,” कपिला ने धीमी लेकिन गंभीर आवाज में कहा। “अब हम वंगा के विरुद्ध कैसे आगे बढ़ें?”
शूरासेना चुपचाप अंधेरे में देखती रही।

“हमारे पास वांगा के खिलाफ अभियान को स्थगित करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है,” कपिला ने अफसोस से भरे चेहरे के साथ आह भरी।
“हमारी योजनाओं में कोई बदलाव नहीं होगा,” शूरासेना घूमकर अपने छोटे भाई पर गुर्राया। “हमें वंगा पर आक्रमण करके उसकी लौह खानों पर कब्ज़ा करना होगा। मगध के तीव्र सैन्यीकरण के लिए हमें सस्ते लौह अयस्क की आवश्यकता है। उस लोहे के बिना, हमारी सेना का विस्तार लगभग असंभव होगा। और ताम्रलिप्ति को मत भूलिए
– अगर हम बंदरगाह पर कब्ज़ा कर लेते हैं, तो सिंधुवर्त और श्रीभोज और श्रीविजय के पूर्वी राज्यों के बीच समुद्री व्यापार पर हमारा नियंत्रण हो जाएगा।” “मुझे पता है, भाई। लेकिन अगर सिंधुवर्त की रक्षा के लिए हमारी कुछ टुकड़ियों को भेजा गया, तो वांगा पर हमारा आक्रमण विफल हो सकता है।”
“जी हाँ, हमें उस मोर्चे पर मगध के हर एक सिपाही की ज़रूरत है।” शूरसेना जाकर कपिला के पास बैठ गया। “धिक्कार है, हमें पिता को यहाँ आने ही नहीं देना चाहिए था! वह कभी मगध के लिए खड़े होने के काबिल नहीं रहे। हमेशा अवंती की इच्छाओं के आगे झुकते रहे... पहले राजा महेंद्रादित्य के आगे, फिर उस धूर्त वरारुचि के आगे, और अब विक्रमादित्य के आगे... सम्राट विक्रमादित्य,” उसने ईर्ष्या से भरी आवाज़ में कहा।
“और विक्रमादित्य के उस चापलूस चंद्रवर्धन को भी मत भूलो,” कपिला ने गुस्से से दांत पीसते हुए कहा। “पिताजी को उस मोटे सूअर से माफी मांगते देखना मुझे घृणास्पद लगा।”
“चंद्रवर्धन, बाणहस्त, भूमिपाल... ये सब अवंती के कठपुतली हैं,” शूरसेना ने तिरस्कार से कहा। “ये अवंती को सिंधुवर्त का रक्षक मानते हैं, पर मूर्ख इस बात से पूरी तरह अनजान हैं कि अवंती उनकी सेनाओं का इस्तेमाल सिंधुवर्त की रक्षा के लिए कर रही है। फिर, जब अवंती चतुराई से सारी विजय का श्रेय खुद ले लेती है, तो बाकी सभी राज्य कृतज्ञता से एक-दूसरे पर गिर पड़ते हैं और तालियाँ बजाते हैं जब अवंती का राजा खुद को सिंधुवर्त का सम्राट घोषित करता है!”
“भाई, अवंती ने सिर्फ़ यश ही नहीं कमाया है,” कपिला ने बीच में कहा। “देखो, इसने हूणों और शकों से मुक्ति दिलाने के नाम पर गोश्रृंग, निषाद, मालवा और कुंती के पूर्ववर्ती राज्यों पर कैसे कब्ज़ा कर लिया है। गोश्रृंग, निषाद और मालवा अब अवंती के प्रांत हैं, जबकि कुंती एक संरक्षित राज्य मात्र है। अवंती ने अपने पड़ोसियों के खून-पसीने पर अपना विस्तार किया है, फिर भी चंद्रवर्धन और अन्य संकीर्ण सोच वाले मूर्ख इसकी प्रशंसा करते नहीं थकते।” कपिला रुका और

निराशा से उसके कंधे झुक गए। “लेकिन सिर्फ़ उन्हें ही क्यों दोष दें? मगध भी हमेशा से इसी तरह चाटुकारिता करता आया है।”
“अब और नहीं,” शूरासेना ने दहाड़ते हुए कहा और दीवान से उठ खड़ा हुआ। कमरे की अलंकृत छत की ओर देखते हुए उसने सिर हिलाया। “एक बार जब हम वंगा और ओद्रा, कलिंग और प्राग्ज्योतिषपुरा के अन्य पूर्वी राज्यों पर विजय प्राप्त कर लेंगे, तो हमारी शक्ति अवंती के बराबर हो जाएगी। तब अवंती और उसके कठपुतली राज्य हमसे नीचा दिखाने की हिम्मत नहीं करेंगे, मैं वादा करता हूँ।” “बिल्कुल। लेकिन अभी हमें पिता द्वारा विक्रमादित्य से किए गए वादे पर ध्यान देना होगा।” कपिल भी अपनी सीट से उठ खड़े हुए। “हमें यह सुनिश्चित करने का तरीका ढूंढना होगा कि मगध की पूरी सेना हमारे नियंत्रण में रहे।”
“चिंता मत करो,” शूरासेना ने अपने भाई के कंधे पर दिलासा भरा हाथ रखते हुए कहा। “मैं कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगा।”
***

विक्रमादित्य ने दीपों की रोशनी में कटार को इधर-उधर घुमाते हुए ध्यान से देखा और भौंहें सिकोड़ीं। बीच-बीच में, वह एक तरफ खड़े साधु पर संदेह भरी नज़र डालते, जो बिल्कुल शांत खड़ा था।
राजा की समझ के अनुसार, हथियार काफी आदिम था, जिसमें पॉलिश किए हुए ओब्सीडियन पत्थर का एक हैंडल था, जिससे एक पतली, लंबी ब्लेड जुड़ी हुई थी। खंजर की धार तेज थी, लेकिन अब तक देखे गए खंजरों में सबसे तेज नहीं थी।
चाकू में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे साधु के दावे की पुष्टि हो सके।
“यह... तीनों लोकों का सबसे शक्तिशाली हथियार है?” सम्राट ने घुसपैठिए का आकलन करते हुए व्यंग्यात्मक स्वर में कहा।
साधु ने सिर हिलाया। “इसकी शक्ति इसकी तलवार की धार में नहीं, बल्कि इसके मूठ में निहित है।”
राजा ने एक बार फिर काले पत्थर की मूठ पर नज़र डाली, फिर साधु की ओर देखकर अधीरता से सिर हिलाया। “तुम्हारी कहानी सरासर बकवास है,” उन्होंने कहा। “मुझे बताओ कि तुम वास्तव में क्या चाहते हो, वरना मैं...”
“खंजर को प्रकाश के सामने रखो और मूठ के आर-पार देखो,” साधु ने दबंग लहजे में कहा।
साधु के अभद्र लहजे पर विक्रमादित्य ने अपनी आँखें सिकोड़ लीं।
“आगे बढ़ो,” घुसपैठिए ने आग्रह किया और बिना बुलाए ही एक गद्देदार कुर्सी पर बैठ गया।

राजा ने एक पल के लिए साधु को घूरकर देखा। फिर उसने धीरे से कटार को प्रकाश की ओर उठाया, उसके चेहरे पर अब भी पूरी तरह से अविश्वास का भाव था। लेकिन, एक क्षण बाद, कटार को निहारते हुए उसके चेहरे पर एक नाटकीय परिवर्तन आया।
तलवार की मूठ के घने अंधेरे में, उसने एक अजीब रोशनी देखी।
यह दीपों की धुंधली, पीली रोशनी नहीं थी जो काँच जैसे पत्थर से परावर्तित हो रही थी। यह पत्थर से होकर आने वाली रोशनी भी नहीं थी। यह तलवार की मूठ के गहरे कालेपन से आ रही रोशनी थी, इंद्रधनुषी नीले रंग की, सोने और चाँदी के कणों से जगमगाती हुई, जीवन से स्पंदित।
विक्रमादित्य ने मानो युगों के बीतने के बाद कटार नीचे रखी और साधु की ओर मुड़े।
"इस मूठ के अंदर क्या है?" उसने दबी हुई श्रद्धा से पूछा।
“आप हलाहल के बारे में क्या जानते हैं?” जवाब देने के बजाय, साधु ने खुद ही एक सवाल पूछ लिया।
“हलाहला...?” राजा आश्चर्य से रुक गए। “यह वही सर्वनाशकारी विष था जिसे देवताओं और असुरों ने अमृत की खोज करते समय गलती से श्वेत झील से निकाल दिया था।”
“हां, श्वेत झील से आया हुआ प्रकोप,” साधु ने खंजर के मूठ की ओर इशारा करते हुए सिर हिलाया।
विक्रमादित्य ने अपने हाथ में पकड़ी कटार को घूरकर देखा, फिर उलझन में साधु की ओर मुड़े। "आप कह रहे हैं कि मैंने इस कटार की मूठ में जो देखा, वही हलाहल है?"
"इसका एक बहुत ही छोटा हिस्सा, हाँ। फिर भी, यह असीम रूप से शक्तिशाली है और अत्यधिक नुकसान पहुँचाने में सक्षम है।"
“लेकिन...लेकिन ऐसा नहीं हो सकता,” सम्राट ने तर्क दिया। “हालाहल को शक्तिशाली शिव ने तीनों लोकों का नाश करने से पहले ही नष्ट कर दिया था।”
“नहीं, पूरा नहीं,” साधु ने खेद से सिर हिलाया। “अत्यधिक लोभ और धूर्तता के कारण विष का एक छोटा सा हिस्सा विनाश से बच गया – वही हिस्सा अब आपके हाथों में है। और दुर्भाग्य से, विष के अस्तित्व के ज्ञान ने और भी अधिक लोभ और धूर्तता को जन्म दिया है – किसी भी कीमत पर हलाहल को प्राप्त करने का लोभ और धूर्तता।”
“तुम्हें यह कैसे पता चला?” राजा की आवाज आश्चर्य से भरी हुई थी।

“जैसा कि मैंने कहा, यह एक लंबी कहानी है, इसलिए आराम से बैठ जाइए। मैं आपको हलाहल की अनकही कहानी सुनाऊंगा – जिसकी शुरुआत वीषाद नामक एक कम ज्ञात लेकिन धूर्त असुर से हुई थी।”

पोशाक

“बृहस्पति और शुक्राचार्य ऋषियों द्वारा हलाहल को श्वेत झील के तट से कैलाश पर्वत तक ले जाने के लिए चुने गए असुरों में से एक वीषाद था,” साधु ने अपना वर्णन शुरू करते हुए कहा। “अन्य सभी देवताओं और असुरों की तरह, जिन्हें यह कार्य सौंपा गया था, वह भी दुर्जेय स्वभाव का था और उसे काले जादू में महारत हासिल थी।”
"अब, असुरों के मानकों के अनुसार भी, वीषाद एक अत्यंत धूर्त और गणनात्मक बुद्धि से संपन्न था, और जब देवों और असुरों का दल घातक हलाहल के साथ हिमालय पार कर रहा था, तो वीषाद के दिमाग में एक कुटिल योजना रची गई।"
असुर ने हलाहल द्वारा मचाई गई तबाही को देखा था और उसे यह बात समझ में आ गई थी कि इतने विनाशकारी प्रभाव वाला विष देवताओं के विरुद्ध वर्चस्व की लड़ाई में असुरों के लिए बहुत उपयोगी होगा। वह समझ गया था कि हलाहल की थोड़ी सी मात्रा ही असुरों के पक्ष में सत्ता का संतुलन बदलने के लिए पर्याप्त होगी – वे इसके खतरे से देवलोक को हमेशा के लिए बंधक बना सकते थे।
साधु ने कुछ देर रुककर अपने विचारों को समेटा, और विक्रमादित्य ने ध्यानपूर्वक उनकी बातें सुनीं। साधु ने आगे कहा, “बृहस्पति और शुक्राचार्य की बातचीत से वीषाद को यह भी पता चला था कि चट्टान के टूटने से पहले हलाहल उस चट्टान के भीतर एक निर्वात में समाहित था। इसलिए, जब समूह कैलाश पर्वत की ओर यात्रा कर रहा था, तो वीषाद ने गुप्त रूप से काले पत्थर की मूठ वाला एक खंजर बनाया और मूठ के भीतर एक छोटा सा कक्ष बनाया।”

सम्राट की आंखें चौड़ी हो गईं, और उन्होंने एक बार फिर कटार उठाई और उसे धीरे से दीपों के सामने रखा, और मूठ के अंदर चमकती नीली रोशनी को देखकर आश्चर्यचकित रह गए।
यात्रा की दूसरी रात, जब पहाड़ों में भयंकर बर्फीला तूफान चल रहा था और देव और असुर ठंड से बचने के लिए एक साथ huddled होकर सो रहे थे, तब वीषाद ने चुपके से हलाहल की कुछ बूंदें अपने खंजर के मूठ में छिपे कक्ष में रख लीं। अपनी जादुई शक्तियों का उपयोग करके, उसने चुराए गए विष को निर्वात में सील कर दिया और फिर रात के अंधेरे में असुरों के राज्य की ओर भाग गया।
“क्या बाकी देवताओं और असुरों ने अगली सुबह वीषाद की अनुपस्थिति पर ध्यान नहीं दिया?” विक्रमादित्य ने बीच में टोकते हुए कहा।
“उन्होंने ऐसा किया था, लेकिन उन्हें लगा कि वह अंधेरे में भटक गया था और बर्फीले तूफान की चपेट में आ गया,” साधु ने उत्तर दिया। “वैसे भी, उनकी मुख्य चिंता पत्थर को शाश्वत गुफा तक ले जाना था। इसलिए उन्हें वैषदा के धोखे का ज़रा भी शक नहीं हुआ – जब तक मैंने उन्हें इसके बारे में नहीं बताया।”
“तुमने उन्हें बताया?” राजा की भौंहें तन गईं। खंजर को मेज पर वापस रखते हुए उन्होंने पूछा, “तुम कौन हो? तुमने अभी तक मुझे यह नहीं बताया कि तुम्हें यह सब कैसे पता चला?”
साधु मुस्कुराए... और एक क्षण के लिए, टिमटिमाते दीयों की रोशनी में वे थोड़े धुंधले से प्रतीत हुए। फिर, जैसे ही राजा ने अपनी आँखों को धोखा समझकर पलकें झपकाईं, साधु का रूप प्रकट हुआ। उसी क्षण, एक हल्की सी चमक ने उनके पूरे शरीर को क्षण भर के लिए घेर लिया।
और उसी क्षण, जब डमरू की ब्रह्मांडीय ध्वनि उनके कानों में गूंज रही थी, विक्रमादित्य ने साधु की जटाओं को सुशोभित करते हुए सफेद, अर्धचंद्राकार चंद्रमा को देखा और उनके गले के आसपास नीले रंग की आभा को महसूस किया।
वह दृश्य पल भर में गायब हो गया, और जब राजा ने दोबारा देखा, तो उन्हें अपने सामने बैठा साधु चुपचाप अपनी दाढ़ी सहलाता हुआ दिखाई दिया। लेकिन विक्रमादित्य जानते थे कि उन्होंने जो देखा वह कोई भ्रम नहीं था। अपने आगंतुक से नज़रें हटाए बिना, वे अपनी सीट से उठे और हाथ जोड़कर घुटनों के बल बैठ गए।
“मेरी गुस्ताखी के लिए क्षमा करें, महादेव, लेकिन आपके वेश के कारण मैं आपको पहचान नहीं पाया,” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

“अच्छा ही हुआ,” शिव ने सौम्य मुस्कान के साथ कहा। “अगर लोग इसे पहचान लेते, तो भेस बदलने का पूरा मकसद ही बेकार हो जाता।”
“मैं धन्य हूँ, गुरुदेव,” राजा घुटनों के बल बैठे रहे, उनका सिर झुका हुआ था। “उठो, सम्राट, और बैठ जाओ,” शिव ने आदेश दिया। “समय कम है और मुझे तुम्हें हलाहल के बारे में बहुत कुछ बताना है।”
राजा अपनी कुर्सी पर लौट आए और शिव ने अपनी कथा को आगे बढ़ाया।
“जब मैंने हलाहल का सेवन कर लिया, तो देवता और असुर अत्यंत प्रसन्न हुए। लेकिन मैंने उन्हें वीषाद के भाग जाने की सूचना देकर उनकी प्रसन्नता को भंग कर दिया। मैंने उन्हें असुर का पता बताया और उन्हें आदेश दिया कि वे कटार को ढूंढकर मेरे पास लाएं।”
“परन्तु गुरुदेव, आप सर्वज्ञ हैं, प्राचीन देवताओं में सर्वोपरि हैं,” विक्रमादित्य ने बीच में ही टोकते हुए कहा। “जब आपको पता था कि वीषाद कहाँ है और आप स्वयं उसे रोक सकते थे, तो आपने उसके पीछे देवताओं और असुरों को क्यों भेजा?”
“मैं सर्वज्ञ तो हूँ, पर वीषाद को रोकना मेरे भाग्य में नहीं था,” शिव ने उत्तर दिया। “देवों और असुरों का भाग्य था कि वे उसे उसकी शरारत करने से रोकें – ठीक वैसे ही जैसे अब तुम्हारा भाग्य है कि तुम उन्हें उनकी शरारत करने से रोकें। अब मुझे अपनी कहानी सुनाने दो।”
राजा ने सम्मान में सिर झुकाया, और शिव ने आगे कहा, “देवताओं और असुरों ने मेरी आज्ञा का पालन किया और दो दिनों तक वीषाद का पीछा किया। अंततः उन्होंने उसे एक भूमिगत गुफा में घेर लिया और उसे कटार सौंपने का आदेश दिया। धूर्त असुर ने अपने साथियों को देवताओं के विरुद्ध भड़काने का प्रयास किया और उन्हें बताया कि हलाहल की सहायता से वे देवताओं पर शासन कैसे कर सकते हैं। यह तनावपूर्ण गतिरोध तब समाप्त हुआ जब एक देवता ने अंततः वीषाद का वध कर कटार पर कब्जा कर लिया। लेकिन नुकसान हो चुका था।”
शिव रुक गए और उदास आँखों से कटार को देखने लगे। “वैषद ने देवताओं और असुरों को हलाहल की वास्तविक शक्ति से अवगत करा दिया था। उसने उनके हृदयों में कटार को पाने की लालसा जगा दी थी। कैलाश लौटने पर भी कटार को छोड़ने की उनकी अनिच्छा उनके चेहरों पर स्पष्ट थी। मेरा डर सच हो गया। मैंने देख लिया कि हलाहल अब देवताओं और असुरों से कभी सुरक्षित नहीं रहेगा।”
“लेकिन क्या आप शेष हलाहल का भी सेवन करके इस मामले को समाप्त नहीं कर सकते थे, महादेव?”

“हालाहल तीनों लोकों में सबसे खतरनाक पदार्थ है,” शिव ने धैर्यपूर्वक कहा। “प्राचीन देवता भी इससे भयभीत होते हैं, इसीलिए इसे श्वेत झील की गहराई में इस उम्मीद से फेंक दिया गया था कि यह कभी न मिले। जब मैंने इसे पहली बार निगला था, तो इसने मुझे लगभग मार ही डाला था। इस विष के दोबारा संपर्क में आने पर मेरे जीवित रहने की कोई संभावना नहीं है।”
अपने आसन से उठकर शिव खिड़की की ओर चले गए। वे कुछ देर मौन खड़े रहे, फिर विक्रमादित्य की ओर मुड़े। “सम्राट, आप मेरी दुविधा देख पा रहे हैं?” उन्होंने पूछा। “मेरे पास एक ऐसा विष है जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता, एक ऐसा विष जिसके लिए असुर और देवता दोनों ही बेताब हैं। लेकिन मैं हलाहल को किसी के भी हाथ नहीं लगने दे सकता – क्योंकि यदि उनमें से कोई भी सफल हो गया, तो ब्रह्मांड का नाजुक संतुलन बिगड़ जाएगा और तीनों लोक अराजकता में डूब जाएंगे। इसलिए, उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन से, जो हजारों वर्ष पहले हुआ था, मैं इस खंजर को इन दोनों समान रूप से शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वियों से बचाने के लिए विवश हूँ।”
“हे गुरुदेव, मेरी अज्ञानता के लिए क्षमा करें, लेकिन हलाहल विधि से स्वर्ग के देवताओं को पाताल लोक के राक्षसी असुरों पर बहुत बड़ा लाभ प्राप्त होगा,” राजा ने कहा। “क्या बुराई पर अच्छाई की विजय के लिए यह वांछनीय नहीं है?” “सम्राट, यह ब्रह्मांड संतुलन पर आधारित है,” शिव ने सिर हिलाते हुए कहा। “प्रकाश और अंधकार की शक्तियाँ एक-दूसरे पर नियंत्रण रखने के लिए बनी हैं। यदि एक शक्ति अत्यधिक शक्तिशाली हो जाए और दूसरी पर हावी होने लगे, तो यह संतुलन बिगड़ जाएगा। क्योंकि पुण्य का अत्याचार उतना ही असहनीय है जितना कि पाप का गला घोंटना।”
शिव थोड़ी देर रुके और हल्की सी हंसी हंसे। “और जैसा कि आप स्वयं देखेंगे, देवता अपनी इच्छा पूरी करने के लिए छल और क्रूरता से भी पीछे नहीं हटते। इसलिए, बुराई पर अच्छाई की जीत का सवाल ही नहीं उठता।”
विक्रमादित्य शिव के शब्दों पर विचार करते हुए कुछ देर तक कमरे में सन्नाटा छाया रहा। अंत में, सिर उठाकर उन्होंने पूछा, "हेमहादेव, आपने हलाहल को मेरी सुरक्षा में क्यों रखा है?"
“मेरे पास और क्या विकल्प है? मैं न तो देवों पर और न ही असुरों पर भरोसा कर सकता हूँ। एकमात्र विकल्प यही है कि मैं इस कटार को मानव जाति के हवाले कर दूँ, जो देवलोक और पाताललोक के बीच की मध्यस्थ शक्ति है। और इस कार्य के लिए आपसे बेहतर कोई नहीं है, सम्राट।”

“लेकिन क्या आप कटार की रक्षा करना जारी नहीं रख सकते, गुरुदेव?” राजा ने विरोध किया। “कोई भी देव या असुर आपसे हलाहल छीनने का साहस नहीं करेगा। यह आपके हाथों में ही सबसे सुरक्षित है।”
“आप सही कह रहे हैं,” शिव ने स्वीकार किया। “लेकिन मैं ध्यान के माध्यम से मोक्ष की खोज में लगा एक योगी हूँ। हलाहल एक निरंतर बाधा है, जो मुझे भौतिक संसार से बांधे रखती है। यह मुझे अपने धर्म का पालन करने और ज्ञान प्राप्त करने से रोकती है। हजारों वर्षों से मैं इस कटार की रक्षा करने के दायित्व से बंधा हुआ हूँ – इसके विपरीत करना ब्रह्मांड को खतरे में डालना होगा। लेकिन मैं अब और अपने आप से और अपने धर्म से विश्वासघात नहीं कर सकता। अब समय आ गया है कि मैं हलाहल को उसके वास्तविक संरक्षक को सौंप दूं और स्वयं को मुक्त कर लूं।”
विक्रमादित्य एक बार फिर गहन मौन में डूब गए। जब उन्होंने अंततः शिव से बात की, तो उनकी आवाज में चिंता झलक रही थी।
“गुरुदेव, यह मेरा सौभाग्य है कि आपने मुझे इस कटार की रक्षा के लिए चुना है। लेकिन मुझे डर है कि मैं आपके भरोसे पर खरा नहीं उतर पाऊंगा। देवलोक के देवताओं और पाताललोक के राक्षसों से हलाहल की रक्षा करने का दायित्व एक व्यक्ति के लिए बहुत भारी है।”
“फिर भी, सम्राट विक्रमादित्य, मुझे आपकी क्षमताओं पर ज़रा भी संदेह नहीं है,” शिव ने शांत भाव से उत्तर दिया। “वरना, मैं इतनी दूर की यात्रा न करता। और कौन कहता है कि आप अकेले हैं? आपके साथ पृथ्वी के नौ सर्वश्रेष्ठ योद्धा हैं। और यदि मुझे कुछ और कहना ही है, तो इस मामले में आपके और आपके नौ साथियों के पास कोई विकल्प नहीं है – आप सभी का भाग्य हलाहल के भाग्य से पहले से ही जुड़ा हुआ है।”
एक अंतहीन सन्नाटे के बाद, राजा ने एक गहरी साँस ली और शिव के चेहरे की ओर देखा। "जैसा आप चाहें, महादेव," उन्होंने दृढ़ निश्चय से भरी आवाज़ में कहा। "मैं और मेरी नौ सदस्यीय परिषद अंतिम साँस तक इस कटार की रक्षा करने की शपथ लेते हैं।"
“यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई।” विक्रमादित्य के शब्दों से शिव को तसल्ली मिली। “अब मैं इस बात से आश्वस्त होकर शाश्वत गुफा में लौट सकता हूँ कि कटार हलाहल के रक्षकों के पास सुरक्षित है।”
***

परिषद कक्ष का वातावरण गंभीर था, हवा एकदम शांत थी, मानो कमरे में बोले जा रहे हर शब्द को सुन रही हो। खिड़कियों पर लगे पतले लेस के पर्दे भी सीधे लटके हुए थे, जूट के भारी कपड़े की तरह, मानो उस अवसर की गंभीरता को भांप रहे हों। “क्या महादेव ने इस बात का कोई संकेत दिया था कि देवता और असुर आगे क्या करेंगे?”
यह प्रश्न आचार्य वेताल भट्ट ने पूछा, जो विक्रमादित्य के बगल में सभा की मेज पर बैठे थे।
“नहीं, उसने ऐसा नहीं किया,” राजा ने मेज के चारों ओर देखते हुए उत्तर दिया। उनके बाईं ओर राजगुरु कालिदास, क्षपणक, शंकु और धनवंतरी बैठे थे। मेज के दाईं ओर वरारुचि, घटकर्पण, अमर सिंह और लगभग पचास वर्ष के एक अन्य व्यक्ति बैठे थे। उनका कद मध्यम था, चेहरा भूरा और साफ-सुथरा था, जिस पर चेचक के निशान थे। उनके चौड़े माथे से सफेद बालों की लंबी लटें पीछे की ओर लहरा रही थीं, और उनकी घनी सफेद भौहों के नीचे उनकी आंखें गहरी और चिंतनशील थीं। उनकी कुर्सी के बाजू पर एक काली लकड़ी की बैसाखी टिकी हुई थी।
विक्रमादित्य ने आगे कहा, “उसने बस इतना ही कहा कि जल्द ही उन्हें पता चल जाएगा कि खंजर अवंती में है। और यह अपरिहार्य है कि दोनों पक्ष इस पर अपना दावा जताने की कोशिश करेंगे।”
"और इन प्रयासों में बल का प्रयोग भी शामिल होगा," अमारा सिम्हा ने अपनी मजबूत भुजाओं को मेज पर टिका दिया, और उसकी उग्र निगाहें मेज की सतह पर बने सूर्य-चिह्न के पैटर्न का पीछा कर रही थीं।
“संभवतः हाँ,” सम्राट ने उत्तर दिया, हालाँकि अमर सिंह ने सीधे तौर पर कोई प्रश्न नहीं पूछा था। “लेकिन सर्वज्ञ ने कहा था कि देवता और असुर शायद पहले अन्य उपाय आजमाएंगे।”
“जी हाँ... हमारी अंतरात्मा को जगाना, रिश्वत देना, अप्रत्यक्ष धमकियाँ देना, गंभीर चेतावनी देना...” आचार्य ने सिर हिलाया। “बल प्रयोग शायद अंतिम उपाय होगा – जब बाकी सभी तरीके विफल हो जाएँगे।”
“यह भी न भूलें कि छल-कपट के जरिए कटार चुराने के सीधे-सीधे प्रयास भी हो सकते हैं,” वरारुचि ने चेतावनी दी। “देव और असुर दोनों ही काले जादू के माहिर हैं।” जब मेज के चारों ओर बैठे सभी लोगों ने सहमति में सिर हिलाया, तो राजा ने वेताल भट्ट को संबोधित करते हुए कहा, “राजगुरु, हमें यह मानकर चलना होगा कि देवता और असुर जादू का सहारा लेंगे। हमें कटार की रक्षा के लिए कुछ शक्तिशाली मंत्रों की आवश्यकता होगी।”

“मैं अपनी तरफ से पूरी कोशिश करूंगा,” आचार्य ने आह भरी, उनके माथे पर हल्की चिंता की लकीरें उभर आईं। “लेकिन हमें यह समझना होगा कि देवताओं और असुरों के पास जादू-टोने का ऐसा ज्ञान है जो मनुष्य के ज्ञान से कहीं अधिक है।” विक्रमादित्य ने कहा, "हमें अपनी तरफ से पूरी कोशिश करनी होगी।"
बातचीत में एक पल का विराम आया। क्षपणक ने विराम तोड़ा।
"जब देवता या असुर हमारे खिलाफ बल प्रयोग करने का फैसला करेंगे तो हमें क्या उम्मीद करनी चाहिए?"
मुझे नहीं पता – लेकिन सर्वज्ञानी ने कहा था कि हमें तीनों लोकों में कल्पना की जा सकने वाली सबसे बुरी चीजों के लिए तैयार रहना होगा।
सभी लोग अपनी कुर्सियों पर असहज होकर हिलने-डुलने लगे और चिंतित निगाहों से एक-दूसरे को देखने लगे। राजा ने अमर सिंह के बगल में बैठे चेचक के निशान वाले व्यक्ति की ओर मुड़कर कहा, "वराहमिहिर, बहुत कुछ शायद तुम्हारे आविष्कारों पर निर्भर करेगा।"
बुजुर्ग व्यक्ति ने एक बार सिर हिलाया, लेकिन कोई मौखिक प्रतिक्रिया नहीं दी।
वररुचि आगे झुके और गर्दन उठाकर वराहमिहिर की ओर देखा। उन्होंने पूछा, "क्या आपके पास कोई सुझाव है?"
वराहमिहिर ने कंधे उचकाए और हाथ फैला दिए। “मैं क्या कहूँ? जब तक मुझे यह पता नहीं चल जाता कि हम किस स्थिति का सामना कर रहे हैं, तब तक मुझे पता नहीं चलेगा कि क्या करना है।”
पार्षदों के सहमति में सिर हिलाने के बाद, घटाकरपारा ने ज़ोरदार स्वर में कहा, “हमें उज्जैन की किलेबंदी को मजबूत करने से शुरुआत करनी चाहिए। हमें खाईयों का पुनर्निर्माण करना चाहिए और शहर की दीवारों और फाटकों पर अधिक पहरेदार तैनात करने चाहिए। हमें और अधिक सेना तैनात करनी चाहिए...”
“युवक, हमें इन सेनाओं को ठीक कहाँ तैनात करना चाहिए?” वेताल भट्ट ने राजकुमार को गंभीरता से देखते हुए पूछा। “हम राक्षसों और देवताओं के आक्रमण की संभावना की बात कर रहे हैं, न कि सीमा पार के किसी राज्य की। जब भी आक्रमण होंगे, वे कहीं से भी आ सकते हैं – ज़मीन से, हवा से, पानी से। वे किसी भी रूप, आकार या आकार में प्रकट हो सकते हैं। वराहमिहिर सही कह रहे हैं... हमें नहीं पता कि हमारा सामना किससे होगा।”
"तो फिर हम आने वाली चुनौतियों के लिए खुद को कैसे तैयार करें?" क्षपणका ने पूछा, हालांकि वह जानती थी कि इस प्रश्न का कोई संतोषजनक उत्तर नहीं है।

कक्ष में एक बार फिर घबराहट की लहर दौड़ गई। मानो इसे शांत करने के लिए, वराहमिहिर ने कहा, “मैं कुछ प्रयोग शुरू करने जा रहा हूँ। कुछ समय पहले मेरे मन में दो विचार आए थे जिन्हें मैंने भुला दिया था... चलिए, उन पर फिर से काम शुरू करते हैं और देखते हैं कि उनसे क्या परिणाम निकलते हैं। अगर ये विचार देवताओं और असुरों के विरुद्ध कारगर न भी हों, तो हूणों और शकों के विरुद्ध तो शायद काम आ जाएँ।”
कक्ष में एक बार फिर घबराहट की लहर दौड़ गई। मानो इसे शांत करने के लिए, वराहमिहिर ने कहा, “मैं कुछ प्रयोग शुरू करने जा रहा हूँ। कुछ समय पहले मेरे मन में दो विचार आए थे जिन्हें मैंने भुला दिया था... चलिए, उन पर फिर से काम शुरू करते हैं और देखते हैं कि उनसे क्या परिणाम निकलते हैं। अगर ये विचार देवताओं और असुरों के विरुद्ध कारगर न भी हों, तो हूणों और शकों के विरुद्ध तो शायद काम आ जाएँ।”
"हाँ, हूणों और शकों के साथ कम से कम हमें यह तो पता होता है कि क्या उम्मीद करनी है," कालिदास ने हल्के से कंधे उचकाते हुए और व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ बुदबुदाया।
"उम्मीद तो यही है," वरारुची ने तुरंत कहा।
“बिल्कुल सही,” विक्रमादित्य ने परिषद को संबोधित करते हुए अनिश्चितता के माहौल को दूर करने और आत्मविश्वास जगाने के उद्देश्य से कहा। “आइए, हम अपनी ऊर्जा एक वास्तविक और तात्कालिक खतरे से निपटने पर केंद्रित करें। देवों और असुरों से निपटने का तरीका हम बाद में सोच लेंगे।” वरारुचि की ओर मुड़कर उन्होंने पूछा, “सैनिकों की तैनाती में हमने क्या प्रगति की है?”
“सम्राट, आपने जिन तीन हजार घुड़सवारों को उदयपुरी भेजने का आदेश दिया था, वे कल रात रवाना हो गए। पैदल सेना और तीरंदाज अगले एक घंटे में रवाना हो जाएंगे। मैंने उदयपुरी के चौकीदार अतुल्यतेजा को भी संदेश भेजकर सैनिकों की गतिविधियों की जानकारी दे दी है और उन्हें सीमा पर शिविर और कमान केंद्र स्थापित करने का निर्देश दिया है। उन्हें सीमा सुरक्षा गश्ती दल को मजबूत करने और अर्बुदा पर्वतमाला के साथ-साथ स्काउट्स की संख्या बढ़ाने के लिए भी कहा गया है।”
“हमें मलावा और गोश्रिंगा के प्रांतीय गवर्नरों को भी सैनिकों की गतिविधियों के बारे में सूचित करना चाहिए,” कालिदास ने याद दिलाया। “तब स्थानीय मिलिशिया को शाही सेना और सीमा रक्षक दल की सहायता के लिए बुलाया जा सकता है।”

“मैंने राज्यपाल सत्यवेदा को संदेश भेज दिया है, क्योंकि उदयपुरी की चौकी मालवा प्रांत के अधिकार क्षेत्र में आती है,” वररुचि ने कहा। “लेकिन मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि गोश्रृंगा के राज्यपाल को भी तुरंत सूचित किया जाए।” “क्या रॉयल इंजीनियर्स को कार्रवाई में लगाया गया है?” आचार्य ने पूछा। “उन्होंने ऐसा कर दिया है, राजगुरु। सीमा पर स्थित सभी किले और चौकियों को मजबूत किया जा रहा है।”
“अच्छा,” विक्रमादित्य ने सहमति में सिर हिलाया। “अब चलो तय करते हैं कि उदयपुरी जाकर व्यवस्थाओं का समन्वय कौन करेगा।”
क्षपणक और कालिदास ने बिना एक पल रुके एक साथ कहा, "मैं जा सकता हूँ।"
कुछ देर बाद वरारुची ने कहा, "मैं भी तैयार हूं।"
घटकरपारा ने अपना हाथ उठाया और बोलने के इरादे से आगे की ओर झुके, लेकिन धनवंतरी ने उन्हें बीच में ही रोक दिया।
“मेरा सुझाव है कि हम अपने मित्र अमारा सिम्हा को भेज दें,” चिकित्सक ने मेज के उस पार इशारा करते हुए मुस्कुराते हुए कहा। “वह यहाँ बैठे-बैठे ऊब की शिकायत कर रहे हैं और उनका वजन भी बढ़ रहा है। व्यायाम उनके लिए अच्छा रहेगा। और सच कहूँ तो, महल में उनका उदास चेहरा देखकर मैं थक गया हूँ। उन्हें यहाँ से भेजना उनके लिए और हम सबके लिए एक सुखद बदलाव होगा।”
मेज के चारों ओर मुस्कानें फैल गईं और माहौल तुरंत खुशनुमा हो गया। अमारा सिम्हा ने एक पल के लिए धनवंतरी को घूरा, फिर थोड़ा संकोच से मुस्कुराते हुए खड़ा हो गया।
"जब तक आगे एक अच्छी लड़ाई का वादा है, मैं खुशी-खुशी जाने को तैयार हूं, सम्राट," उसने अपने हाथों को रगड़ते हुए और एक्शन की उम्मीद में अपनी उंगलियों को चटकाते हुए कहा।
“ठीक है, तो बात पक्की हो गई। तुम कल सुबह जा सकते हो,” राजा ने कहा। “एक आखिरी बात...”
विक्रमादित्य की निगाहें शंकु को ढूंढ रही थीं, जो हमेशा की तरह लंबी चर्चा के दौरान शांत और मौन बना रहा था।
“क्या आप कल रात मदर ओरेकल से मिले थे?” सम्राट ने पूछा।
“मैंने किया। उसने मुझे बताया कि वह पश्चिम से आने वाली खबरों के लिए मौसम के तत्वों को समझने की कोशिश करेगी। मुझे आज रात उसके पास वापस जाना है।”
“जब तुम उससे मिलो, तो मेरी ओर से उसे और घुमंतू जनजाति को धन्यवाद देना,” राजा ने विनम्रतापूर्वक सिर झुकाते हुए कहा।

शंकु के बोलते ही विक्रमादित्य अपनी कुर्सी पर आराम से बैठ गए।
“लेकिन उसने मुझे एक और बात बताई है, सम्राट...” यह जानते हुए कि सबकी निगाहें उस पर टिकी हैं, लड़की हिचकिचाई।
“जी?” राजा ने उसे प्रोत्साहन भरी नजरों से देखा।
“उसने मुझे बताया कि उसे एक दिव्य दृष्टि मिली है। उसने यह नहीं बताया कि वह क्या थी, लेकिन उसने मुझसे कहा कि मैं आपको चेतावनी दूं कि सूर्य का आकार घट रहा है, और एक बड़ा सूर्यग्रहण आने वाला है जो सूर्य को निगल जाएगा।”
कमरे में सन्नाटा छा गया और वराहमिहिर ने अपना सिर हिलाया। “यह संभव नहीं है, लड़की,” उन्होंने दृढ़ता से कहा। “मेरी गणना के अनुसार अगला सूर्य ग्रहण दो सौ वर्षों में नहीं होगा।”
शंकु ने जवाब देने से पहले कुछ देर रुककर कहा, उसके शब्दों में भविष्यवाणी की झलक थी। “मेरी दादी जिस सूर्य की बात कर रही थीं, वह आदित्य वंश का शाही प्रतीक है, जो कुलीन सलाहकारों का प्रतीक है। अवंती का सूर्य-शिखर...”

भतीजा

आसमान बेहद नीला था, दूर-दूर तक फैला हुआ और एकदम साफ, क्षितिज से क्षितिज तक बादल का एक भी अंश नहीं था। नीले आकाश में सन्नाटे में एक अकेली ब्राह्मणी चील के अलावा कुछ भी हलचल नहीं थी, जो बर्फ से ढकी पर्वत श्रृंखला के ऊपर ऊँची उड़ान भर रही थी, ठंडी हवा की धाराएँ उसके हल्के शरीर को शांत, सुबह के आसमान में और ऊपर उठा रही थीं। नीचे मीलों तक फैले ग्लेशियर थे, जो सूरज की तेज रोशनी को प्रतिबिंबित कर रहे थे, जिससे पहाड़ी परिदृश्य एक चमकदार, पीले-सफेद रंग की रोशनी से जगमगा रहा था।
चील उत्तर-पूर्व दिशा में उड़ती हुई, मेरु पर्वत की विशालता की ओर बढ़ रही थी, जो अपने आसपास की चोटियों के बीच बौनों के बीच एक विशालकाय की तरह खड़ी थी। अपने रास्ते में बाधा बन रहे विशाल पर्वत के पास पहुँचते ही, पक्षी ने एक बार फिर ऊँचाई प्राप्त की, अंततः शिखर पर पहुँचकर देवलोक में प्रवेश कर गया। लगभग तुरंत ही, मेरु पर्वत पीछे छूट गया और नीचे धुंध से ढकी पहाड़ी ढलानों और घाटियों के बीच बसा हुआ, लुभावनी अमरावती शहर दिखाई दिया, जिसके शिखर और बुर्ज सुबह की ओस की तरह सूर्य की रोशनी में चमक रहे थे।
तेजी से नीचे उतरते हुए, पतंग देवलोक की विशाल राजधानी के ऊपर से गुज़री और सीधे शहर के मध्य में स्थित एक भव्य, बहुमंजिला महल की ओर बढ़ गई। चारों ओर चट्टानी पहाड़ियों से घिरे इस महल का निर्माण एक विशाल, धूसर बेसाल्ट चट्टान पर हुआ था जो एक गहरी, अथाह खाई के केंद्र से ऊपर की ओर निकली हुई थी। महल के रंगीन गुंबद और बुर्ज, झंडों से लहराते हुए, तेज धूप में चमक रहे थे, जिससे खाई

“क्या यही तुम्हारा सबसे अच्छा हथियार है?” उसने उपहास उड़ाते हुए कहा। “एक नाज़ुक अप्सरा तुम सब से कहीं ज़्यादा नुकसान पहुँचा सकती है। चलो...” चुनौती से प्रेरित होकर, सभी देवों ने मिलकर उस विशालकाय पर आक्रमण किया, लेकिन वह डटा रहा और बड़ी कुशलता से उनके हमलों को नाकाम करता रहा। जब उसने पलटवार किया, तो कुछ देवों की तलवारें छिन गईं, जबकि कुछ अन्य पीठ के बल गिर पड़े। देव एक बार फिर पीछे हट गए, और उस विशालकाय को बीच में खड़ा छोड़ दिया। “अब ठीक है,” उसने गहरी सांस लेते हुए कहा। अपनी तलवार और ढाल नीचे फेंकते हुए उसने आगे कहा, “कल मैं निहत्थे युद्ध का अभ्यास करूंगा। आप जा सकते हैं।”
जब देवता चले गए और विशालकाय राक्षस खुद को तौलिए से पोंछने लगा, तभी एक महल का अधिकारी उसके पास आया और उसके कान में धीरे से कुछ फुसफुसाया। राक्षस मुड़ा और गरुड़ की ओर देखा, उसकी नीली आँखें तेज और सजग थीं। उसने सिर हिलाकर संकेत दिया कि गरुड़ को उसके साथ आने की अनुमति है।
गरुड़ अपने पंखों को आदरपूर्वक मोड़े हुए कीचड़ के गड्ढे में प्रवेश कर गया। उसने विशाल इंद्र को प्रणाम करते हुए कहा, "देवताओं के पराक्रमी राजा इंद्र को मेरा प्रणाम।"
इंद्र ने एक बार फिर सिर हिलाकर उस जानवर को जवाब दिया। "तुम क्या खबर लाए हो?"
जैसे ही गरुड़ ने बोलना शुरू किया, इंद्र बढ़ती रुचि के साथ सुनने लगे, उनकी आंखें उत्साह से चमक रही थीं।
"क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है?" गरुड़ के चुप हो जाने के बाद उसने पूछा। “जी हां, देवलोक के स्वामी। मैंने सर्वज्ञ को राजा को वीषाद का खंजर देते हुए देखा।”
“अवंती के राजा सम्राट विक्रमादित्य,” इंद्र ने विस्मय से कहा। “एक मनुष्य हलाहल धारण किए हुए... एक तुच्छ मनुष्य...”
अपना सिर हिलाकर खुद को वर्तमान में वापस लाते हुए, देवों के राजा ने गरुड़ की ओर देखा। "तुम जा सकते हो," उन्होंने कहा और फिर थोड़ी दूरी पर खड़े महल के अधिकारी की ओर रूखेपन से मुड़ गए।
“गुरु बृहस्पति और नारद से अनुरोध करो कि वे मेरे कक्ष में मुझसे मिलें,” उन्होंने आदेश दिया।
***

“क्या मैंने हलाहल की रक्षा करने की जिम्मेदारी लेकर कोई गलती की है, राजगुरु?”

“नहीं, विक्रम। अपने भाग्य को गरिमा और साहस के साथ स्वीकार करना ही मनुष्य का धर्म है।”
सम्राट और आचार्य महल की झील के दक्षिणी किनारे पर स्थित एक पहाड़ी पर बने एकांत कबूतरखाने के पास अकेले खड़े थे। उस स्थान की निजता ने वेताल भट्ट को राजा से आत्मीयतापूर्वक बात करने की स्वतंत्रता दी – ठीक वैसे ही जैसे विक्रमादित्य के अठारह वर्ष की आयु में अवंती के सिंहासन पर बैठने से पहले वे हमेशा करते आए थे।
“इसके अलावा, आप सर्वज्ञानी को अपना वचन दे चुके हैं,” राजगुरु ने हल्की सी मुस्कान के साथ कहा, मानो हल्की फटकार को कम कर रहे हों। “इसलिए, अभी ऐसे प्रश्न पूछने का समय नहीं है।”
राजा ने चुपचाप सिर हिलाया और अपने होंठ चबाते हुए मुट्ठी भर अनाज जमीन पर बिखेर दिया, जो कि चहचहाते और फड़फड़ाते कबूतरों से भरी हुई थी।
अंत में उन्होंने कहा, “मैं बस यही सोच रहा हूँ कि क्या मुझे पहले आपको, वरारुची और परिषद के बाकी सदस्यों को विश्वास में लेना चाहिए था? मुझे लगता है कि खंजर की जिम्मेदारी स्वीकार करके मैंने परिषद पर निर्णय लेने का दबाव डाल दिया है।”
उत्तर देने से पहले आचार्य ने सम्राट को कुछ क्षण तक परख कर देखा। “विक्रम, ऐसा मानना तुम्हारा और नौ देवमंडल का घोर अन्याय है। देवमंडल तुम्हारे प्रति अटूट निष्ठा की शपथ इसलिए नहीं लेता कि तुम अवंती के राजा हो, बल्कि इसलिए कि तुम सत्यनिष्ठा और सम्मान के धनी हो। देवमंडल को तुम पर भरोसा है कि तुम सही कार्य करोगे, न कि अपनी सुविधा के अनुसार। विक्रम, हम तुम्हारे इस गुण का सम्मान करते हैं और तुम्हारे सलाहकार होने पर गर्व महसूस करते हैं। तुम और देवमंडल एक हो, और तुम्हारा निर्णय देवमंडल का निर्णय है। यह बात सदा याद रखना।”
“मैं करूँगा, आचार्य,” विक्रमादित्य ने वादा किया, उनकी आवाज राहत और कृतज्ञता से भर उठी थी।
और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि हलाहल की रक्षा का दायित्व उन्हें सौंपा जाता, तो परिषद का निर्णय आपके निर्णय से भिन्न नहीं होता। सर्वशक्तिमान शिव द्वारा सौंपे गए कर्तव्य को पूरा करने से मिलने वाला सम्मान, दुनिया के हर खतरे से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।
दोनों व्यक्ति दाना चुग रहे कबूतरों से मुंह मोड़कर वापस लौटने लगे। उनकी बातचीत हूणों के खतरे और सीमा को आक्रमण से सुरक्षित करने के लिए चल रही

तैयारियों की ओर मुड़ गई। लेकिन पहाड़ी की चोटी पर पहुँचते ही सम्राट ने दूर उत्तर दिशा में उज्जैन के द्वारों के पार रथों और घोड़ों का एक काफिला जाते हुए देखा। वह पेड़ों के बीच से जुलूस को देखने के लिए रुक गया।
राजगुरु ने राजा के पास पहुँचते हुए कहा, “राजा सिद्धसेना, हमारे शाही मेहमानों में से अंतिम मेहमान घर लौट रहे हैं।”
विक्रमादित्य कुछ देर चुप रहे। जब उन्होंने अंततः बोलना शुरू किया, तो उनकी आवाज सूखी और कठोर थी।
"क्या आप मगध द्वारा वांगा के विरुद्ध चलाए गए अभियान के बारे में बूढ़े राजा से बात करने में सफल रहे?"
आचार्य ने जवाब दिया, “मैंने कल रात खाने पर उनसे इस बारे में संक्षेप में बात की थी। उनके जवाब बहुत अस्पष्ट थे – मुझे लगभग ऐसा लगा जैसे वे इस बारे में बात करना ही नहीं चाहते थे।”
“उसने क्या कहा?”
उन्होंने बस इतना कहा कि वांगा के खिलाफ युद्ध छेड़ने का फैसला मगध की शाही परिषद से परामर्श करके लिया गया था।
"क्या उसने कहा कि उसने यह निर्णय लिया?"
“नहीं,” वेतला भट्टा ने कंधे उचकाते हुए कहा। “जैसा कि मैंने कहा, वह बहुत टालमटोल कर रहा था।”
विक्रमादित्य ने कहा, “मुझे नहीं लगता कि अब राजा सिद्धसेना मगध पर शासन कर रहे हैं।” कुछ देर रुककर उन्होंने पूछा, “क्या मगध के विरुद्ध किकाटा विद्रोह का कोई गंभीर खतरा है?”
“मेरी जानकारी में तो नहीं,” राजगुरु ने संदेह से सिर हिलाया। “किकाटा जनजाति इतनी छोटी और महत्वहीन है कि मगध की शक्ति के विरुद्ध विद्रोह नहीं कर सकती। फिर भी मैं अपने जासूसों से जानकारी मांगूंगा।”
राजा ने सहमति में सिर हिलाया। "यदि मान भी लें कि किकाता अशांति में हैं, तो क्या वांगा गणराज्य मगध के विरुद्ध उन्हें समर्थन देगा?"
“यह विचार निराधार लगता है। वांगा ने ऐसे मामलों में हमेशा तटस्थता बनाए रखी है। यह गणराज्य अन्य राज्यों के क्षेत्रीय विवादों में हस्तक्षेप न करने के लिए जाना जाता है।”
“बिल्कुल सही। तो हमें जिस सवाल का जवाब चाहिए, वह यह है।” विक्रमादित्य ने वेताल भट्टा पर पैनी नज़र डालते हुए पूछा, “वंगा को संघर्ष में उलझाने के पीछे राजकुमार शूरसेना का असली मकसद क्या है?”

राजा और उनके मुख्य सलाहकार दूर पहाड़ी के पीछे धीरे-धीरे गायब होते जुलूस को देख रहे थे, तभी उन्हें रास्ते पर कदमों की आहट सुनाई दी। मुड़कर देखने पर विक्रमादित्य की भौंहें आश्चर्य से ऊपर उठ गईं जब उन्होंने एक ऊँचाई से घटकरपारा को प्रकट होते देखा। उसी क्षण, उस युवक ने राजा को देखा।
“चाचा जी, मुझे बताया गया था कि आप यहाँ मिल सकते हैं,” घटाकरपारा हाँफते हुए बोला। “कृपया, क्या मैं आपसे कुछ बात कर सकता हूँ?”
जब भतीजा पास आया तो राजा ने सिर हिलाकर अभिवादन किया। लेकिन उसी क्षण, एक पेड़ के पीछे छिपे वेताल भट्ट, घटकरपारा की नज़र के सामने आ गए। आचार्य को देखते ही राजकुमार थम गए और हिचकिचाते हुए चारों ओर देखने लगे।
“जी?” सम्राट ने कहा।
"कोई... जरूरी बात नहीं है," घटाकरपारा ने झिझकते हुए कहा। "हम... बाद में बात कर सकते हैं।"
लड़के की झिझक को भांपते हुए विक्रमादित्य ने कहा, “बात करने का इससे बेहतर समय और कोई नहीं हो सकता।” राजगुरु की ओर सिर झुकाते हुए उन्होंने आगे कहा, “तुम मित्रों के बीच हो, और मित्रों के बीच कोई रहस्य नहीं होता। बेझिझक बोलो, नौजवान।”
राजकुमार एक पल के लिए बेचैन हो गया और आचार्य की ओर चोरी-छिपे देखता रहा। फिर, हिम्मत जुटाकर उसने कहा, "मेरा मतलब है... मेरा मतलब है, मैं उदयपुरी जाना चाहता हूँ।"
राजा और राजगुरु आश्चर्य से एक-दूसरे को देखने लगे। विक्रमादित्य ने पूछा, "किसलिए?"
“हूणों से लड़ने के लिए,” घटाकरपारा ने अचानक कहा। “मैं मोर्चे पर जाने का अवसर चाहता हूँ। मैं युद्ध की तैयारियों की देखरेख के लिए स्वेच्छा से आगे आना चाहता हूँ। मैं...”
“रुको, रुको,” सम्राट ने हाथ उठाकर लोगों के गुस्से को शांत किया। “हूणों के साथ कहीं भी कोई लड़ाई नहीं हो रही है – कम से कम अभी तो नहीं। और अमर सिंह ने पहले ही उदयपुरी जाने की पेशकश कर दी है।”
“तो कृपया मुझे भी उनके साथ जाने दीजिए, चाचा जी... कृपया,” राजकुमार ने विनती की।
राजा ने एक बार फिर वेताला भट्टा से नजरें मिलाईं। "लेकिन आपको अभी भी अपना प्रशिक्षण यहीं पूरा करना होगा।"

“चाचा जी, कृपया,” घटाकरपारा लगभग घुटनों के बल बैठकर गिड़गिड़ा रहा था। “मेरा सबसे अच्छा दोस्त पहले से ही एक छावनी कमांडर है। अगर अतुल्यातेजा युद्ध के लिए योग्य है, तो मैं क्यों नहीं? आचार्य जानते हैं कि मैंने अच्छा प्रशिक्षण लिया है...” उसने राजगुरु से विनती भरी निगाहों से कहा। “कृपया सम्राट को वही बता दीजिए जो आपने मुझे उस दिन बताया था।”
विक्रमादित्य ने आचार्य की ओर देखा, जिन्होंने केवल एक बार सिर हिलाया। लेकिन राजा ने वेताल भट्ट के चेहरे पर हल्की, स्नेहपूर्ण मुस्कान भी देखी।
मुड़कर सम्राट ने कुछ क्षण राजकुमार पर विचार किया।
ठीक है, तुम जा सकते हो।
“हाँ!” घटाकरपारा खुशी से उछल पड़े, उनकी आँखें आनंद से चमक उठीं। तुरंत ही राजा ने चेतावनी देते हुए उंगली उठाई।
“लेकिन... लेकिन... तुम्हें मुझसे वादा करना होगा कि तुम अमरा सिंह के करीब रहोगे और उनके आदेशों का पालन करोगे। अगर मुझे पता चला कि तुमने ऐसा नहीं किया, तो मैं आकर तुम्हें कान पकड़कर वापस यहाँ ले आऊँगा।” विक्रमादित्य ने अपनी बात को नरम करने के लिए मुस्कुरा दिया।
“मैं वादा करता हूँ, अंकल। मैं वादा करता हूँ। धन्यवाद।”
“अच्छा। अमारा सिंह के साथ जाने की तैयारी करो। मैं तुम्हें संदेश भेज दूँगा कि तुम भी उनके साथ आ रहे हो।”
राजकुमार अपनी उत्तेजना को रोक न पाने के कारण पहाड़ी से नीचे दौड़ पड़ा। राजा उसे स्नेहपूर्वक देखते हुए आह भरते हुए राजगुरु से बोले, “आपका एक और शिष्य अपने घोंसले की सुरक्षा छोड़कर जाने को तैयार है।”
“जी हां,” आचार्य ने गर्व से मुस्कुराते हुए कहा। “वह आपकी स्वीकृति पाने के लिए बेताब है, जो उसकी उम्र में स्वाभाविक है।”
“क्या आपको यकीन है कि वह आने वाली हर चुनौती के लिए तैयार है?” विक्रमादित्य ने अचानक चिंता व्यक्त करते हुए पूछा।
“जी हां,” मुख्य सलाहकार का लहजा आत्मविश्वास से भरा था। “उसमें कुछ नरम पहलू हैं और कुछ कठोर पहलू भी – लेकिन सीमावर्ती जीवन से ये सब ठीक हो जाएगा। अमरा सिंह और कुछ लड़ाइयों के बीच, प्रलूपी का बेटा अपनी असलियत जान जाएगा।”
***

वररुचि और धनवंतरी के सामने बैठी बुजुर्ग महिला का चेहरा दयालु और सौम्य था। उनका शरीर थोड़ा गोल-मटोल था, जो एक स्नेहपूर्ण और मातृत्वपूर्ण भाव पैदा करता था। मुस्कुराने पर उनके गोल-मटोल गालों में गड्ढा बन जाता था, और वे

अक्सर मुस्कुराती थीं। चर्बी के कारण उनकी आंखें लगभग पतली हो गई थीं, लेकिन फिर भी उनमें परोपकार की भावना झलकती थी। उनका समग्र रूप आत्मसंतुष्टि को दर्शाता था।
वररुचि ने अपने सामने रखी थाली से नज़रें ऊपर उठाईं और उस महिला की आँखों में देखा। "खाना बहुत स्वादिष्ट है, माँ," उसने निवाले लेते हुए कहा।
“उम्म, बस शानदार…” धनवंतरी ने एक पारखी की तरह हार्दिक प्रशंसा व्यक्त करते हुए सहमति जताई।
“यह तो बहुत ही साधारण खाना है,” महिला ने थोड़ा संकोच दिखाते हुए हाथ हिलाया। “अगर मुझे पता होता कि आप दोनों आएंगे, तो मैं और भी शानदार खाने का इंतजाम करती। आपने पहले सूचना क्यों नहीं दी?”
वररुची ने बस हल्की सी आवाज निकाली और अपना सिर हिलाया, वह खाने का इतना आनंद ले रहा था कि जवाब देने का उसे समय ही नहीं मिला।
“हमने यहाँ आने का फैसला इसलिए किया ताकि मैं आपकी टांग देख सकूँ, बड़ी माँ। दोपहर का खाना तो हमारे प्लान में था ही नहीं,” धनवंतरी रुका और शरारती मुस्कान के साथ बोला। “हालाँकि अब सोचता हूँ तो लगता है कि आने का समय इससे बेहतर नहीं हो सकता था।”
महिला ने स्नेह भरी मुस्कान के साथ पार्षदों की थालियों में थोड़ी और ग्रेवी डाली। उन्होंने कहा, “मुझे अपने गठिया पर बहुत गर्व है। इसकी बदौलत कम से कम आप दोनों से मिल तो पाई। आजकल आप लोग बहुत कम आते हैं।” हालांकि उनकी आवाज़ में थोड़ी निराशा थी, पर कोई द्वेष नहीं था – क्योंकि यह एक ऐसी भावना थी जिसे राजा महेंद्रदित्य की पहली पत्नी उषांथा कभी व्यक्त नहीं कर सकती थीं। वास्तव में, उनका यही गुण, बाकी सभी गुणों से ऊपर, अवंती के दिवंगत राजा को सबसे अधिक आकर्षित करता था। जब तक राजा उन्हें जानते थे, उषांथा ने कभी शिकायत नहीं की या मन में कोई बैर नहीं रखा, बल्कि हर मुश्किल में मुस्कुराते हुए आगे बढ़ना चुना।
धनवंतरी, जिसने उशांता के शब्दों को चतुराई से अपने बेटे के लिए लक्षित समझा था, चुप रही। हालांकि, वरारुचि ने भी कोई टिप्पणी करने से परहेज किया।
“क्या आजकल महल में बहुत चहल-पहल है?” उषांथा का प्रश्न फिर से सीधा-सादा था, जिसका उद्देश्य न तो वरारुचि के अपराधबोध को भड़काना था और न ही उस पर तंज कसना था।

पार्षदों ने एक-दूसरे को देखा, और उसी क्षण उनके दिमाग में वीशादा के खंजर का ख्याल आया। "जी माँ। और अब वे शायद और भी व्यस्त हो जाएँगे," वरारुचि ने सच्चाई से कहा, लेकिन विस्तार से कुछ नहीं बताया।
धनवंतरी ने महिला का चेहरा उतरते देखा। "इसका मतलब है कि मैं तुम्हें और भी कम देख पाऊँगा।"
फिर, उदासी को लंबे समय तक अपने मन में न रख पाने के प्रमाण स्वरूप, उषांथा का चेहरा खिल उठा। “लेकिन बेशक, विक्रम के सलाहकार होने के नाते, आप व्यस्त होंगे ही - आखिर, वह अब सिंधुवर्त के सम्राट हैं।” उनके सौतेले बेटे के लिए उनकी आवाज़ में सच्ची खुशी झलक रही थी। “उपश्रुति को विक्रम पर बहुत गर्व होगा।” न तो उशांत और न ही धनवंतरी, जिनका सिर मीठे दही के कटोरे में डूबा हुआ था, ने रानी उपश्रुति का नाम सुनते ही वरारुचि के चेहरे पर आई उदासी को महसूस किया। पल भर में वह उदासी गायब हो गई और उसकी जगह मुस्कान आ गई।
"हम सभी को विक्रम पर गर्व है," वरारुचि ने अपनी खाली थाली को मेज साफ करने के लिए इंतजार कर रहे नौकर की ओर बढ़ाते हुए कहा।
दोपहर का भोजन समाप्त होते ही, उषांथा और पार्षद ऊपर के एक बड़े शयनकक्ष में चले गए। शयनकक्ष से एक बड़ी बालकनी खुलती थी, जहाँ से ग्रामीण क्षेत्र का मनोरम दृश्य दिखाई देता था। चारों ओर धान के खेत हरे-भरे थे, जिन्हें संकरे रास्तों और नहरों द्वारा छोटे-छोटे चौकों में बाँटा गया था, और ये दृश्य दूर तक फैली बैंगनी पहाड़ियों तक फैले हुए थे। जगह-जगह आम और जामुन के पेड़ थके हुए यात्रियों और दोपहर की नींद ले रहे खेतिहर मजदूरों को छाया दे रहे थे। दोपहर की चिलचिलाती गर्मी में हवा बिल्कुल शांत थी, केवल दूर से आती तांबे के बर्तन की धातु की टंक-टंक-टंक की आवाज ही सन्नाटे को भंग कर रही थी। खुली खिड़कियों से फ्रैंगिपानी की खुशबू अंदर आ रही थी।
“बड़ी माँ, मैं आपके लिए गुग्गुल और हल्दी का लेप लाया हूँ,” धनवंतरी ने अपने कंधे पर लटके कपड़े के थैले से दो मिट्टी के बर्तन निकालते हुए कहा। उन्होंने बर्तन एक बुज़ुर्ग महिला को संभालकर रखने को दिए। “इन्हें अगले एक महीने तक हर सुबह और रात जोड़ों पर लगाना है। दर्द कम करने के लिए आप गर्म सिकाई भी कर सकती हैं। और कृपया ठंडे पानी से स्नान न करें।”
बिस्तर पर सहारा लेकर बैठी उषांथा ने मुंह बनाया, लेकिन चिकित्सक को चेतावनी के तौर पर अपनी मोटी उंगली हिलाते देख उसने तुरंत एक शांत करने वाली मुस्कान दे दी।

“इससे उन्हें राहत मिलेगी,” धनवंतरी ने पलंग के पास से उठते हुए वरारुचि को आश्वासन दिया। हालांकि, उषांथा की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा, “मुझे अब भी लगता है कि आपको महल में आकर रहना चाहिए, बड़ी माँ। वहाँ सारी सुख-सुविधाएँ हैं, और आप हम सभी से ज़्यादा बार मिल पाएंगी। और मुझे आपके पैर की नियमित रूप से देखभाल करने का मौका भी मिलेगा।”
“नहीं, नहीं...” उषांथा ने ज़ोर से सिर हिलाया। “मैं गाँव में ज़्यादा खुश रहती हूँ, जहाँ मेरा जन्म और पालन-पोषण हुआ है। आपको याद होगा कि हूणों के कब्ज़े के दौरान मैं उज्जैन में रही थी – लेकिन शहर का जीवन मेरे लिए बहुत तनावपूर्ण है। जिस दिन आप उज्जैन में मेरे लिए कोई ऐसी जगह ढूँढ़ देंगे जहाँ मुझे ये सब मिल सके, मैं यहाँ से चली जाऊँगी...” उसने चौड़ी बालकनी और बाहर फैली देहाती शांति की ओर इशारा किया।
महिला के इशारे को सुनकर धनवंतरी को यह मानना पड़ा कि बड़ी माँ का उज्जैन जाने के खिलाफ तर्क बिल्कुल सही था। “शहर में गाँव की शांति का कोई विकल्प नहीं है,” उसने सहमति जताते हुए कहा। “अगर इससे आपको शांति और खुशी मिलती है, तो ठीक है।”
बाद में, जब वरारुचि और धनवंतरी चुपचाप अपने-अपने विचारों में खोए हुए उज्जैन की ओर लौट रहे थे, तब वरारुचि ने वैद्य द्वारा अपनी माता को महल में आकर रहने के निमंत्रण पर विचार किया। धनवंतरी के सुझाव देते ही वरारुचि समझ गए थे कि उषांथा की क्या प्रतिक्रिया होगी। उन्हें यह भी पता था कि उनकी माता के महल में आने की अनिच्छा का असली कारण क्या था।
जन्म से ब्राह्मण होने के बावजूद, उषांथा हमेशा से जानती थी कि महेंद्रादित्य से उसका विवाह परंपरा के विरुद्ध है – क्षत्रिय राजाओं के लिए क्षत्रिय राजकुमारियों से विवाह करना अनिवार्य था, और केवल ऐसे विवाहों से उत्पन्न संतानें ही सिंहासन की वैध उत्तराधिकारी होती थीं। उषांथा यह भी जानती थी कि परंपरा के अनुसार महेंद्रादित्य को भी एक क्षत्रिय से विवाह करना होगा, जो उन्हें अवंती की वैध उत्तराधिकारी प्रदान करेगी। इसलिए, उसने महल में जाने के विचार का दृढ़तापूर्वक विरोध किया, और जब रानी उपश्रुति महेंद्रादित्य की नई दुल्हन बनकर आईं, तो उषांथा ने यथासंभव उज्जैन से दूर रहने का निश्चय किया। वरारुचि को याद है कि हूणों के आक्रमण के दौरान महेंद्रादित्य और आचार्य को अपनी माता को उज्जैन में रहने के लिए मनाने में कितनी मशक्कत करनी पड़ी थी, और कैसे अवंती पर आक्रमणकारियों के आक्रमण से मुक्ति मिलते ही वह शहर छोड़कर चली गई थी।

“तुम्हारी छोटी माँ अवंती की रानी हैं, लेकिन हम दोनों जानते हैं कि उनका विवाह एक सुविधा के लिए हुआ है,” उषांथा ने एक बार उनसे कहा था। “मैं तुम्हारे पिता का सच्चा प्रेम हूँ। और यद्यपि एक स्त्री बहुत कुछ सह सकती है, पर कोई भी स्त्री यह जानकर नहीं जी सकती कि उसका पति किसी और से अधिक प्रेम करता है। उपश्रुति के पास इस मामले में कोई विकल्प नहीं है, लेकिन उज्जैन में रहकर मैं राजा के जीवन में उनकी निम्न स्थिति की निरंतर याद नहीं दिलाना चाहती।” वरारुचि ने पीछे मुड़कर उस पुराने महल को देखा, जिसे वह बचपन में अनगिनत बार घूमा करता था, इससे पहले कि महेंद्रादित्य उसे आचार्य की देखरेख में महल ले गए। वह महल धान के खेतों के बीचोंबीच अकेला खड़ा था, अब घने पेड़ों के झुरमुट से आधा छिपा हुआ, जीर्ण-शीर्ण एकांत में डूबा हुआ। यह दृश्य उसे उदास कर देता था, फिर भी वरारुचि को एहसास था कि उसकी माँ ने इसे अपना आश्रय स्थल चुनकर सही किया था। विक्रमादित्य और राजपरिवार के लिए उसने जो कुछ भी किया था, उसके बावजूद वह जानता था कि रानी उपश्रुति उसे उसके व्यक्तित्व के कारण बेहद नापसंद करती थीं; अगर उशांत भी महल में होती तो महारानी की ईर्ष्या की कोई सीमा नहीं रहती।
एक गहरी आह भरकर वरारुचि ने फिर से पूर्व दिशा की ओर रुख किया। क्षिप्रा नदी के पार स्थित उज्जैनी तक की दो घंटे की वापसी यात्रा कड़वी यादों से भरी होगी।
***

हल्दी और सिंदूर से बना तांत्रिक मंडल, डिजाइन में भले ही सरल था, लेकिन स्वरूप में जटिल था। खुरदुरे ग्रेनाइट से बनी मेज की लगभग पूरी सतह पर फैला यह मंडल, एक छह-नुकीले तारे के भीतर संकेंद्रित वृत्तों और उन्हें विभाजित करने वाली रेखाओं की एक जटिल जाली से बना था। जाली के बीच के कक्षों में अस्पष्ट चिह्न और चित्रलिपि उकेरी गई थीं, और तारे के छह शीर्षों पर सफेद कौड़ी के छोटे-छोटे ढेर रखे थे। इसके केंद्र में, जहाँ रेखाएँ मिलती थीं, मानव कशेरुकाओं के छह टुकड़े बेतरतीब ढंग से बिखरे पड़े थे।
ये हड्डियाँ ही थीं जिन्होंने ऋषि शुक्राचार्य की रुचि को आकर्षित किया। वे मेज पर झुक गए, फैली हुई उंगलियों से सहारा लेते हुए, और कशेरुकाओं को बारीकी से देखते हुए, उनके बीच की सापेक्ष दूरी और उनके और कौड़ी के खोलों के बीच की दूरी का आकलन करने लगे।
हालांकि वे वंश से देव थे, ऋषि कद में बहुत लंबे नहीं थे, फिर भी उनका शरीर सुगठित था, चौड़े कंधे और भूरे बालों से भरी चौड़ी छाती थी। धुएँ वाले दीपक की

आकाश में बहुत ऊँची उठती थी। तारों की बिखरी हुई रोशनी मीनारों की चिकनी, सपाट सतहों से परावर्तित हो रही थी, जबकि उनके किनारे और कोणीय भाग रेज़र ब्लेड की तरह सफेद और तीखे चमक रहे थे।
महल पर निगाह गड़ाए शुक्राचार्य ने सामने फैली खतरनाक खाई की परवाह किए बिना चट्टान से कदम नीचे रख दिया। एक पल के लिए उनके पैर नदी की उफनती धारा से बहुत ऊपर हवा में लटके रहे। फिर अचानक उनके पैरों के नीचे एक मन सेतु प्रकट हुआ, जो रेशम की तरह पतला और धुंध की तरह नाजुक था, जिसने ऋषि को खाई पार करने में सहारा दिया। ऋषि के नदी के दूसरे किनारे पर स्थिर जमीन पर पहुंचते ही, वह रहस्यमय मन सेतु हवा के भंवर में विलीन हो गया।
महल के भीतर, शुक्राचार्य अनगिनत कक्षों और कक्षों से होकर गुजरे, जिनकी रखवाली पिशाच भूत और पिशाच कर रहे थे, जो उनके गुजरते समय उन्हें गहरी श्रद्धा से प्रणाम करते थे। अंत में, ऋषि स्वर्ण त्रिमूर्ति के दरबार में पहुँचे, जहाँ कई उच्च पदस्थ असुर पहले से ही काले क्रिस्टल से बने एक विशाल सिंहासन के चरणों में एकत्रित थे। असुर स्वामी हिरण्याक्ष सभा की अध्यक्षता कर रहे थे, जबकि उनकी बहन-पत्नी, डायन रानी होलिका, उनके दाहिनी ओर बैठी थीं। “नहीं, यह ठीक नहीं है,” हिरण्याक्ष की आवाज गुस्से से गूंज उठी। “देवों की दूरदराज की बस्तियों को परेशान करके हमें खुश नहीं होना चाहिए। हम क्या हैं? गिद्धों की तरह जूठे टुकड़े और जूठे खाने को कुतरने वाले? नहीं, हम दिति के वंशज शक्तिशाली असुर हैं। हमें देवलोक के केंद्र पर प्रहार करना होगा। हमारा लक्ष्य अमरावती पर कब्जा करना होना चाहिए।”
“महाराज, अमरावती की रक्षा अत्यंत सुदृढ़ है,” एकत्रित असुर सेनापतियों में से एक ने चेतावनी देते हुए कहा। “हमने इसे कई बार जीतने का प्रयास किया है और असफल रहे हैं।”
“तो क्या हमें यह मान लेना चाहिए कि देवों को हराया नहीं जा सकता?” होलिका का स्वर बर्फीला था, जब उसने अपनी ठंडी नीली आँखों से सेनापति को देखा, जो उसके मोहक और भयावह चेहरे में गहराई से धँसी हुई थीं। उसके लाल होंठ भरे हुए और आकर्षक थे, फिर भी उनमें एक सूक्ष्म खतरे का संकेत छिपा था। उसका रंग, उसके बाकी शरीर की तरह, चमकदार सुनहरा था, लेकिन उसके चेहरे की छाया में एक भयावह पहलू छिपा हुआ था।
डायन रानी की निगाहों के सामने असुर सेनापति कांप उठा। “देव और अजेय? बिलकुल नहीं!” हिरण्याक्ष ने सभा पर गुस्से से देखते हुए अपनी जांघ पर मुट्ठी मारी। “हम अमरावती को ईंट-ईंट तोड़ देंगे, चाहे इसके लिए हमें कुछ भी करना पड़े। मैं

चाहता हूँ कि आप सब देवलोक पर आक्रमण करने की योजना बनाएँ। जब मेरा प्रिय भाई तपस्या से लौटकर मेरे और होलिका के साथ अपना स्थान ग्रहण करेगा, तो मैं उसे अमरावती उपहार में देना चाहता हूँ। और उसके शासक को जंजीरों में जकड़ कर।” “सचमुच महान विचार हैं,” शुक्राचार्य ने दरबार में प्रवेश करते हुए कहा। “हिरण्यकशिपु इंद्र को पाताल में कैदी देखकर बहुत प्रसन्न होगा।”
“महागुरु को प्रणाम,” हिरण्याक्ष ऋषि को देखते ही अपने ऊँचे क्रिस्टल सिंहासन से उठ खड़ा हुआ। असुर स्वामी एक प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, लंबा और भारी-भरकम व्यक्ति था, जिसके माथे पर मेढ़े सींगों की एक जोड़ी उसकी शान को और बढ़ा रही थी। उसका काला, बालरहित चेहरा खुरदुरा लेकिन आकर्षक था, गालों पर गहरी रेखाएँ उसके मजबूत, कठोर जबड़े तक जाती थीं। उसकी आँखें सुनहरे रंग की थीं, होलिका की त्वचा के समान, लेकिन शुक्राचार्य को निहारते हुए उनमें एक गहरा, चिंतनशील भाव झलक रहा था।
“मुझे खुशी है कि आप इस बात से सहमत हैं कि देवलोक जाने का समय आ गया है,” हिरण्याक्ष ने अपने सिंहासन से उतरकर अपने महापुजारी से मिलने के लिए आगे बढ़ते हुए कहा। सिंहासन के बगल में खाली पड़ी एक सीट की ओर इशारा करते हुए उन्होंने आगे कहा, “महागुरु, कृपया चर्चा में शामिल हों। आपका ज्ञान और मार्गदर्शन हमेशा की तरह अमूल्य होगा।”
ऋषि ने आसन ग्रहण करने की कोई इच्छा नहीं जताई। “यद्यपि मुझे देवताओं के विरुद्ध जाने की आवश्यकता प्रतीत होती है, परन्तु अभी और भी महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करनी है,” शुक्राचार्य ने असुर राजा की आँखों में देखते हुए कहा, फिर सीढ़ियों से आधी नीचे उतर चुकी होलिका की ओर देखा। “हड्डियों ने कुछ बहुत महत्वपूर्ण समाचार प्रकट किए हैं।”
“जी महागुरु?” हिरण्याक्ष का चेहरा पत्थर की तरह भावहीन था, जबकि वह ऋषि के ऊपर खड़ा था।
“हलाहल...” शुक्राचार्य ने सिर हिलाया और कुछ देर रुके। दरबार में सन्नाटा छा गया, सभी उपस्थित लोगों ने गहरी साँस ली। “अब इसे सर्वज्ञ का संरक्षण प्राप्त नहीं है।”
“तो फिर वो कहाँ है?” हिरण्याक्ष ने चिंता से पूछा। “क्या देवताओं ने उसे...?” “नहीं,” प्रधान पुरोहित ने सिर हिलाते हुए कहा। “अभी नहीं। यह विक्रमादित्य नामक एक मानव राजा के अधिकार में है।”
“एक इंसान राजा...?” दरबार में हैरानी भरी फुसफुसाहट फैल गई। “यह इस इंसान के कब्जे में कैसे आया?”

“हड्डियों से मुझे पता चला है कि यह तलवार स्वयं सर्वज्ञानी ने उसे दी थी,” शुक्राचार्य ने उत्तर दिया। दरबार में आश्चर्य की लहर दौड़ गई, तो ऋषि ने आगे कहा, “हड्डियों के अनुसार, यह राजा एक शक्तिशाली योद्धा है। लेकिन अंततः वह भी मनुष्य ही है। मुझे भय है कि देवता शीघ्र ही उससे वैषाद की तलवार छीनने के लिए आगे बढ़ेंगे।”
“हमें ऐसा नहीं होने देना चाहिए,” हिरण्यक्ष ने गुस्से से कहा।
"क्या देवताओं को इस घटनाक्रम की जानकारी है, महागुरु?" चिंता से भरी नीली आँखों के साथ चुड़ैल रानी ने यह प्रश्न पूछा।
“हाँ,” प्रधान पुरोहित ने पुष्टि की। “यह खबर कुछ देर पहले इंद्र को दी गई थी।”
“तो फिर समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है, स्वामी,” होलिका ने अपने पति से गंभीर निगाहों से कहा। “इससे पहले कि वे ऐसा कर सकें, हमें इस मानव राजा से खंजर छीनना होगा।”
***

उज्जैन में शाम ढल चुकी थी और पहले तारे दिखाई देने लगे थे, दिन ढलने के साथ-साथ उनकी चमक बढ़ती जा रही थी, पश्चिमी आकाश का रंग नारंगी से राख जैसे गुलाबी और फिर बैंगनी होता जा रहा था। व्यस्त शहर में चारों ओर दीपक जल उठे थे, सड़कों पर खरीदारों की भीड़ उमड़ पड़ी थी, बाजारों और चौकों में अनाज, फल और मिठाई बेचने वाले फेरीवालों की कर्कश आवाजें गूंज रही थीं। गली के कोनों पर जादूगर और बाज़ीगर राहगीरों का मनोरंजन करने में एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगे थे, वहीं युवा लड़के-लड़कियों के छोटे-छोटे समूह सदियों पुरानी प्रेम-प्रसंग की रस्मों में इतराते और सजते हुए घूम रहे थे। बूढ़े लोग शामियानों के नीचे बैठकर कहानियां सुना रहे थे, तांबूलम चबा रहे थे और पासा फेंक रहे थे, वहीं दूसरी ओर, मंदिरों की घंटियों की झंकार भक्तों को उनके घरों से बाहर खींच रही थी। नदी किनारे, जहां नावों को उनके घाटों से बांधा जा रहा था, शराबखाने पूरी तरह से भरे हुए थे।
इसके विपरीत, शाही महल में सन्नाटा पसरा हुआ था, महल के पीछे स्थित एक कक्ष से केवल शाम के राग की उदास धुन ही सुनाई दे रही थी।
विक्रमदित्य और वरारुचि द्वारा बजाई जा रही रुद्र वीणाओं से संगीत की धुनें गूंज रही थीं। दोनों भाई एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे थे और सुरों का पूर्ण सामंजस्य था। कई जटिल अलंकारों के बीच संगीत की धुन चरम पर पहुंच गई, और दोनों लगभग सामंजस्य के जादू में डूब गए।

अंत में जब दोनों वीणाओं के तार शांत हुए, तो उन्होंने सिर उठाकर एक-दूसरे को देखा और खुशी और आपसी प्रशंसा से मुस्कुरा उठे।
“विक्रमा, यह तो सचमुच बहुत सुंदर था,” रानी उपश्रुति ने कहा, जो भाइयों के खेलते समय कक्ष में आई थीं। विक्रमादित्य को प्रशंसा से देखते हुए उनकी आँखें चमक उठीं।
“धन्यवाद, माताजी,” राजा ने वीणा नीचे रखते हुए और खड़े होते हुए उत्तर दिया। “लेकिन मुझे लगता है कि वरारुचि मुझसे बेहतर बजाते हैं। वे हमेशा बेहतर बजाते हैं।” उन्होंने एक तरफ सम्मानपूर्वक खड़े अपने भाई की ओर मुस्कुराते हुए देखा। “उन्होंने ही मुझे यह अद्भुत राग सिखाया है, जो उन्होंने दक्षिणी राज्यों की यात्रा के दौरान सीखा था।”
रानी ने वरारुचि पर सरसरी नज़र डाली और बड़ी मुश्किल से अपने चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान लाई, जो मुश्किल से उसके होंठों के कोनों तक ही फैली थी। जब उसने बोलना शुरू किया, तो उसने अपनी प्रशंसा अपने बेटे के लिए ही रखी। “तो तुमने इसे बहुत अच्छे से सीख लिया है, विक्रम।”
वरारुचि, जिनके चेहरे से मानो खुशी गायब हो गई थी, ने विक्रमादित्य की ओर मुड़ने से पहले एक टूटी हुई मुस्कान दी। मुश्किल से निगलते हुए, उन्होंने झुककर कहा, "सम्राट, मुझे विदा करने की अनुमति दीजिए," उनकी आवाज और हावभाव सख्त और औपचारिक थे। "कल सुबह आपसे फिर मुलाकात होगी।"
“तुम इतनी जल्दी क्यों जा रही हो?” राजा ने विरोध जताया, जबकि रानी उपश्रुति खामोश रहीं, उन्होंने वरारुचि से नज़रें मिलाने से इनकार कर दिया और बातचीत में शामिल होने से भी मना कर दिया। “मैं सोच रही थी कि हम एक और राग बजा सकें।” “मुझे… कुछ काम है,” वरारुचि ने बहाना ढूंढते हुए जवाब दिया। “मुझे अमारा सिम्हा से… घटाकरपारा के बारे में बात करनी है। बस यह सुनिश्चित करना है कि वह लड़के का ख्याल रखे।”
“ज़रूर वह करेगा,” विक्रमादित्य ने उलझन भरी आवाज़ में कहा, लेकिन वरारुचि का दृढ़ निश्चय देखकर उन्होंने सिर झुकाया। “लेकिन अगर आपको लगता है कि यह ज़रूरी है, तो मैं आपको नहीं रोकूंगा। प्रिय भाई, चैन से सोइए।”
वररुचि ने मुड़कर रानी उपश्रुति को प्रणाम किया। उन्होंने कहा, "महारानी, मुझे जाने की अनुमति दीजिए।"
अपना चेहरा दूसरी ओर रखते हुए, रानी ने सिर हिलाया, लेकिन वरारुचि की ओर कोई और प्रतिक्रिया नहीं दी। उन्होंने अपने सौतेले बेटे के कमरे से बाहर जाने का इंतजार किया और फिर विक्रमादित्य के पास गईं।

"क्या आपको यकीन है कि घटाकरपारा को भेजना बुद्धिमानी भरा कदम है?" उसने दादी की चिंता से भरी आवाज में पूछा।
“हम्म? जी हां, माताजी,” राजा ने उत्तर दिया। उनका चेहरा अचानक विचलित हो गया। “वह अब बच्चा नहीं है, और वह अकेला भी नहीं है। अमर सिंह उसके साथ होंगे।” रानी उपश्रुति ने देखा कि उनका बेटा मुड़कर बालकनी की ओर गया, जहाँ वह चुपचाप रेलिंग से टेक लगाकर खड़ा हो गया। वह उसके पीछे गईं और उसके चेहरे पर उदासी की छाया देखकर आश्चर्यचकित रह गईं।
“क्या बात है?” उसने घबराकर पूछा।
विक्रमादित्य ने आह भरी और सिर हिलाया। “कुछ खास नहीं, माँ,” उन्होंने उदास स्वर में कहा। “बस बात यह है कि हम जो राग बजा रहे थे, वह... विशाखा का पसंदीदा राग है।”
रानी का चेहरा उतर गया और उन्होंने नज़रें फेर लीं। जब वे अपने बेटे की ओर मुड़ीं, तो उनकी आवाज़ कोमल थी, लेकिन दृढ़ थी। “विक्रमा, लगभग दो साल हो गए हैं,” उन्होंने उसके हाथ पर हाथ रखते हुए कहा। “तुम और कितने दिन इंतज़ार करोगे?”
राजा बिना कोई जवाब दिए रात के अंधेरे में घूरता रहा।
“किसी को विश्वास नहीं है कि वह ठीक हो जाएगी,” रानी उपश्रुति ने जोर देकर कहा। “अपने मन में, तुम भी यह जानती हो। तुम सच्चाई से मुंह क्यों मोड़ रही हो? तुम्हारे सामने पूरा जीवन पड़ा है – तुम्हें आगे बढ़ना होगा।”
राजा ने हठपूर्वक चुप्पी साधे रखी।
“कल राजा हरिहारा मेरे पास आए थे,” रानी ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा। “उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या आप राजकुमारी रुकमा का हाथ विवाह के लिए स्वीकार करेंगे। वह एक अच्छी लड़की है और मैं...”
“राजा हरिहर ऐसा क्यों कर रहे हैं?” विक्रमादित्य ने क्रोध और झुंझलाहट से अपनी माँ का हाथ झटक दिया। “उन्हें क्या हो गया है? वे विशाखा के बारे में जानते हैं, फिर भी इतनी धृष्टता कर रहे हैं... मुझे लगा था कि वे यज्ञ के लिए उज्जैन आए हैं।”
“हरिहारा के प्रस्ताव पर विचार करने में कोई हर्ज नहीं है,” रानी ने दृढ़ता से कहा। “आखिरकार, क्षत्रिय राजाओं में एक से अधिक पत्नियां रखने की परंपरा है, इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है...”

“नहीं माँ, ऐसा नहीं होगा,” विक्रमादित्य ने दृढ़ता से कहा। “आप यह सोच भी कैसे सकती हैं कि मैं ऐसा कुछ सोचूंगा, जबकि आप जानती हैं कि विशाखा महल में है – बस छह कमरे दूर?”
मुड़कर राजा वापस कमरे में चले गए। रानी उपश्रुति अपने बेटे के पीछे-पीछे गईं, उनका इरादा कुछ सुलह भरी बात कहने का था, लेकिन राजा ने पहले ही बोलना शुरू कर दिया।
“माँ, मुझे जहाँ तक होश है, मैं विशाखा से प्रेम करता आया हूँ। शायद उसी दिन से जब दिवंगत राजा वल्लभ उसे और क्षपणक को अवंती लाए और इस महल की सुरक्षा में छोड़ गए। मैं उस स्त्री से मुँह नहीं मोड़ सकता जिससे मैंने प्रेम किया और विवाह किया, केवल उसकी इस हालत के कारण। चाहे दो साल बीत गए हों या पाँच, मैं उसका इंतज़ार करूँगा।”
रानी ने एक बार फिर बोलना शुरू किया, लेकिन विक्रमादित्य ने एक बार फिर उन्हें बीच में ही रोक दिया। इस बार उनकी आवाज़ नरम और ज़्यादा असरदार थी। “और हमें कैसे पता चलेगा कि वह ठीक नहीं होंगी? धनवंतरी, क्षपणक और दाईयाँ उनकी देखभाल कर रही हैं, और धनवंतरी ने इलाज ढूंढने के लिए हर संभव प्रयास करने का वादा किया है।” रानी के पास आकर उन्होंने कहा, “माँ, हमें विश्वास रखना होगा कि विशाखा ठीक हो जाएँगी। उन्हें हमारे विश्वास की ज़रूरत है।”
रानी उपश्रुति ने अपने बेटे की आंखों में देखा और सिर हिलाया, वह जानती थी कि वह तर्क को मानने वाला नहीं है।
“राजा हरिहारा निराश होंगे,” उसने उदास स्वर में कहा।
“माँ, मुझे पूरा यकीन है कि वह हेहेया की राजकुमारी के लिए अन्य उपयुक्त रिश्ते ढूंढ लेगा।”
उसी क्षण, दरवाजा खुलने की आवाज से वे चौंक गए। चारों ओर देखने पर उन्होंने राजकुमारी प्रलूपी को कमरे में इतराते हुए प्रवेश करते देखा।
"आओ, बच्ची," रानी उपश्रुति ने अपनी बेटी का स्वागत करने के इरादे से उसके पास आते हुए कहा, लेकिन राजकुमारी अपनी माँ को धक्का देकर आगे बढ़ी और क्रोध से भरी आँखों से विक्रमादित्य के पास चली गई।
“मैंने सुना है कि आपने घटाकरपारा को सीमा पर भेजने का फैसला किया है?” उसने पूछा। “क्यों?”
“खैर, वह निश्चित रूप से उदयपुरी जा रहा है,” राजा ने शांत भाव से उत्तर दिया। “लेकिन उसे वहाँ भेजने की बात मायने नहीं रखती क्योंकि उसने स्वयं स्वेच्छा से जाने की इच्छा जताई थी।”

“घटकरपारा अभी बच्चा है और उसे सही-गलत का फर्क नहीं पता,” प्रलूपी ने झट से जवाब दिया। “उसके चाचा होने के नाते, आपको ही उसे बताना होगा कि उसके लिए क्या अच्छा है।”
“इसके विपरीत, आपका बेटा इतना बड़ा हो चुका है कि वह अपने लिए खुद सोच सकता है,” विक्रमादित्य ने उत्तर दिया। “अब समय आ गया है कि हम सब उसके लिए फैसले लेना बंद कर दें।”
“घटकरपारा का स्थान महल में है,” राजा की बहन ने हठपूर्वक अपनी बात पर जोर दिया।
“एक युवा राजकुमार का स्थान वही होता है जहाँ उसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है और जहाँ वह राज्य के प्रशासन की कला सीख सकता है। सीमावर्ती क्षेत्र उसे ऐसी चीजें सिखाएगा जो वह अन्यथा कभी नहीं सीख पाएगा।”
"अगर वहां उसे कुछ हो गया तो क्या होगा?"
“ऐसे समय में, किसी के साथ भी कहीं भी कुछ भी हो सकता है। लेकिन आपके सवाल का जवाब यह है कि अवंती के लिए तलवार उठाने वाले हर व्यक्ति को इस जोखिम के साथ जीना पड़ता है।”
राजकुमारी प्रलूपी ने अपने भाई को चुनौती भरी निगाहों से देखा। फिर, कुछ क्षण रुकने के बाद, उसने पूछा, "और आपने मेरे बेटे के भविष्य के बारे में क्या निर्णय लिया है?"
“तुम्हारा क्या मतलब है?” राजा हड़बड़ाया। “मैंने अभी तुम्हें बताया कि उसने सीमावर्ती क्षेत्र में जाने की इच्छा व्यक्त की है और मैंने उसकी इच्छा मान ली है।”
राजकुमारी ने रानी उपश्रुति की ओर अचानक मुड़कर आरोप लगाते हुए पूछा, “माँ, आपने अभी तक इस बारे में बात नहीं की है?” “आपने कहा था कि आप करेंगी।”
रानी आगे बढ़ीं, उनका चेहरा व्याकुल लग रहा था। “हम इस बारे में बाद में बात करेंगे, प्रिय। अभी समय नहीं है...”
“ये सब क्या है, माँ?” विक्रमादित्य ने संदेह भरी निगाहों से देखते हुए बीच में ही टोकते हुए कहा।
बाद में... मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा...
लेकिन रानी अपना वाक्य पूरा कर पातीं, उससे पहले ही प्रलूपी अपने भाई की ओर मुड़ गई।
"मैं चाहता हूं कि चंद्रवर्धन घटकर्पर को वत्स का अगला राजा बनायें।" “क्या?” विक्रमादित्य के चेहरे पर घोर आश्चर्य के भाव थे।

“हां, और आपको चंद्रवर्धन को इसके लिए मनाना होगा। वह आपकी बात सुनेगा। उसे आपकी बात सुननी ही होगी।”
“नहीं,” राजा ने सिर हिलाते हुए और भौंहें चढ़ाते हुए कहा। “मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगा। चंद्रवर्धन का पुत्र शशिवर्धन ही वैध उत्तराधिकारी है...” “शशिवर्धन एक शराबी और जुआरी है,” प्रलूपी ने फुफकारते हुए कहा।
“यह बात सच हो भी सकती है और नहीं भी, लेकिन इससे मुझे चंद्रवर्धन को यह कहने का अधिकार नहीं मिल जाता कि वह घातकपारा को अपना उत्तराधिकारी बनाएँ। चंद्रवर्धन अवंती के भरोसेमंद मित्र और सहयोगी रहे हैं और उन्होंने मेरा साथ दिया है। मैं आपके कहने पर ऐसा करके उस भरोसे और दोस्ती का दुरुपयोग नहीं करूँगा।”
"भले ही इसका मतलब यह हो कि वत्स को शशिवर्धन जैसा अयोग्य राजा मिले?"
“बहन, वत्सा एक स्वतंत्र राज्य है,” विक्रमादित्य ने धैर्यपूर्वक समझाया। “यह हमारा अधीन राज्य नहीं है, जैसा कि कुछ लोग मानते हैं। और अवंती हमारे सहयोगियों के राज्यों के कामकाज में हस्तक्षेप नहीं करती। यह हमारे पिता के जीवन के सिद्धांतों में से एक था। हमें इस नियम का उल्लंघन करके राजा महेंद्रादित्य की आत्मा को दुखी नहीं करना चाहिए।”
प्रलूपी हताशा से फर्श की ओर घूर रही थी, उसकी मुट्ठियाँ भींची हुई थीं। जब उसने ऊपर देखा, तो उसकी आँखों में आँसू भर आए थे।
“तुम अपने भतीजे से प्यार नहीं करते, और तुम नहीं चाहते कि वह राजा बने,” उसने द्वेषपूर्ण लहजे में कहा। “तुम बस यही चाहते हो कि वह इस महल में तुम्हारे वफादार सलाहकारों में से एक बनकर रहे, तुम्हारे पीछे-पीछे घूमे और कुत्ते की तरह तुम्हारे आदेशों का पालन करे।”
वह मुड़ी और आंसू बहाते हुए कमरे से बाहर निकल गई।

दूत

मैं आपको चेतावनी देना चाहता हूँ कि मैं आपके इस व्यवहार की शिकायत उज्जैन के शाही दरबार में करूँगा। मलावा के राज्यपाल के पद का इस तरह से घोर अपमान मैं बर्दाश्त नहीं करूँगा।
ऊँची, नाक से निकलने वाली आवाज़ उदयपुरी किले के एक आलीशान कमरे में बैठे दो आदमियों में से एक की थी। बोलने वाला दुबला-पतला और लंबा था, और उसका सिर बड़ा था जो बोलते समय आगे की ओर झुक जाता था, जिससे वह गिद्ध जैसा दिखता था। उसके काले, साफ़-सुथरे चेहरे पर बुढ़ापे के निशान दिख रहे थे, और उसके राजसी पगड़ी के नीचे उसके सफ़ेद बाल कम होते जा रहे थे।
इसके ठीक विपरीत, सामने बैठा व्यक्ति लगभग बीस वर्ष का था, जिसका चेहरा खुला और गंभीर था, और रंग गुलाबी था। उसके चौड़े कंधे उसके सैन्य पृष्ठभूमि का संकेत दे रहे थे, और उसने छोटे बाल रखे हुए थे, जो उसकी कटी हुई काली मूंछों के साथ मेल खा रहे थे।
“मेरा इरादा कभी भी आपका या आपके पद का अनादर करने का नहीं था, महोदय...” युवक ने कहना शुरू किया, लेकिन दूसरे ने तुरंत उसे बीच में ही रोक दिया।
“तो फिर आप महल में सीधे दूत भेजने के अपने फैसले को कैसे समझाएंगे, कमांडर?” बूढ़े आदमी ने गुस्से से कहा। “आपको पता है कि प्रोटोकॉल के अनुसार मलावा प्रांत में एकत्रित सभी रिपोर्टें पहले मेरे सामने पेश की जानी चाहिए। मैं मलावा का राज्यपाल हूँ, और मुझे ही अपने प्रांत और उसके आसपास की घटनाओं की जानकारी महल को देनी चाहिए। लेकिन आपकी धृष्टता के कारण, महल मुझे यह खबर

भेजता है कि हमारी सीमा पर हूणों से खतरा मंडरा रहा है। क्या आपको पता है कि आपने मुझे कितना मूर्ख बना दिया है?”
“माफ़ कीजिए, राज्यपाल सत्यवेद... यदि आप उस समय उदयपुरी में उपस्थित होते, तो मैं निश्चित रूप से आपको रिपोर्ट सौंप देता। लेकिन दुर्भाग्यवश आप अपने शिकार अभियान पर घने जंगलों में थे...”
"तो फिर आपको मुझे दरकिनार करने के बजाय मेरे लौटने का धैर्यपूर्वक इंतजार करना चाहिए था," राज्यपाल आक्रोश से भड़क उठे।
“महाराज, जैसा कि आप देख सकते हैं, मामला अवंती पर हूणों के आक्रमण से संबंधित था,” युवक ने जोर देकर कहा। “उन्होंने हमारी एक चौकी पर हमला किया, मेरे सत्रह सैनिकों को मार डाला और हमारे सम्राट के लिए चेतावनी छोड़ दी। इस चौकी के प्रभारी होने के नाते, मैंने अनुमान लगाया कि यह खबर बिना किसी देरी के उज्जैनी तक पहुंचनी चाहिए।”
सत्यवेद ने अहंकारवश पीछे हटते हुए कहा, “आप सीमा रक्षक बल के सिपाही हैं, शाही सेना के नहीं। सीमा रक्षक बल राज्यपाल को रिपोर्ट करता है, और आपने मुझे रिपोर्ट न करके अपनी सीमा का उल्लंघन किया है। इससे भी बुरा यह है कि जब मैंने आपको मुझसे मिलने के लिए संदेश भेजा, तो आप दो दिन तक नहीं आए।”
“सर, मैं सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था देख रहा था। मैं आज सुबह ही लौटा हूँ और यहाँ हूँ।”
“कमांडर, आपका समग्र आचरण संतोषजनक नहीं रहा है,” राज्यपाल ने नाराज़गी जताते हुए कहा। “आपने उचित रिपोर्टिंग प्रक्रियाओं का पालन न करके नियमों का उल्लंघन किया है...”
“यदि प्रक्रियाओं का पालन किया गया होता, तो पूरी संभावना थी कि महल को उस चौकी, सत्यवेदा पर हूणों के हमले की जानकारी ही न होती,” एक गरजती आवाज ने राज्यपाल को चुप करा दिया।
चौंककर मेज पर बैठे लोग मुड़कर देखने लगे तो उन्होंने देखा कि अमरा सिंह तेजी से अंदर आ रहे हैं, उनके पीछे घटकरपारा भी आ रहे हैं। सत्यवेद उछलकर खड़े हो गए, उनकी कुर्सी पथरीले फर्श पर घिसटती हुई चली गई।
“आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई, पार्षद अमरा सिंह,” उन्होंने विनम्रतापूर्वक चहकते हुए उस विशालकाय योद्धा से मिलने के लिए आगे बढ़े। “आपको भी नमस्कार, राजकुमार। क्षमा कीजिए, मुझे सूचित नहीं किया गया था कि आप दोनों उदयपुरी आ रहे हैं। अन्यथा, मैं स्वयं आपका स्वागत करने आता। पार्षद जी, आपने सूचना क्यों नहीं भेजी?”

"जाहिर है, प्रक्रियाओं और प्रोटोकॉल के मामले में तो हम भी पीछे हैं," अमारा सिम्हा ने व्यंग्य करते हुए कहा और गैरीसन कमांडर को घूरकर देखा, जो अपनी मुस्कान को दबाने की कोशिश कर रहा था।
“ऐसा मत कहिए,” सत्यवेद ने घबराए हुए स्वर में कहा। “आइए, कृपया बैठ जाइए…” "क्या आप यही चाहेंगे कि हर प्रक्रिया का पालन किया जाए, भले ही इसका मतलब अवंती को अप्रस्तुत और अचानक हुना हमले के प्रति असुरक्षित छोड़ना हो?" अमारा सिम्हा ने राज्यपाल के आमंत्रण को अनदेखा करते हुए और अपने बड़े हाथों को अपनी कमर पर रखते हुए पूछा।
“नहीं, नहीं, बिलकुल नहीं,” सत्यवेद हकलाते हुए बोला। “मेरा मतलब वो नहीं था, बिलकुल नहीं।”
"तो क्या आप इस बात से सहमत हैं कि कमांडर अतुल्यातेजा ने अवंती की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर सही काम किया?"
“ओह हाँ, बिल्कुल। मेरा मतलब है...”
“अच्छा। इससे पता चलता है कि हम सब एक ही पक्ष में हैं,” अमारा सिम्हा ने दृढ़ता से कहा। “तो चलिए अब काम शुरू करते हैं।”
जैसे ही अमरा सिंह कुर्सी पर बैठे, राज्यपाल घबराकर घटकरपारा को अतुल्यातेजा की ओर मुस्कुराते हुए आते हुए देखने लगे। दोनों युवकों को एक-दूसरे को गले लगाते देख उनकी भौंहें चिंता से तन गईं।
"कैसे हो मेरे भाई?" घटाकरपारा ने अतुल्यातेजा की पीठ थपथपाते हुए पूछा। “राजकुमार, आप ठीक होंगे,” कमांडर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया और खुद को अलग कर लिया।
“उज्जायिनी में हमें आपकी बहुत याद आती है, खासकर जब हम पवित्र क्षिप्रा नदी में तैरने जाते हैं,” घटाकरपारा ने चमकती आँखों से कहा। “पिछले ही हफ्ते, जयाति और मैं इस बारे में बात कर रहे थे कि कैसे बूढ़ी माँ जाला ने हम तीनों को बाँधकर नगर सुरक्षा अदालत में ले गई थीं, जब उन्होंने हमें अपनी शराब की भट्टी से शराब चुराते हुए पकड़ा था। आपको उनकी दूसरी बेटी से खास लगाव था, याद है?”
बड़े-बुजुर्गों की निगाहें उन पर टिकी होने के कारण अतुल्यातेजा शर्मिंदा होकर मुस्कुराए। यह महसूस करते हुए राजकुमार ने भी खुद को संभाला। मेज पर बैठने के लिए आगे बढ़ते हुए उन्होंने कहा, "भाई, हुना हमले की रिपोर्ट लेकर घुड़सवार को भेजने के लिए धन्यवाद।"

[illegible]
Satyaveda looked uncertainly from Amara Simha to Ghatakarpara. “Plans…?”
[illegible]
“[illegible]
[illegible]
“[illegible]
[illegible]
“[illegible]
[illegible]
“[illegible]
[illegible]
“[illegible]
[illegible]
[illegible]
“[illegible]
[illegible]
“[illegible]
[illegible]
[illegible]
“[illegible]
[illegible]
“[illegible]
[illegible]
[illegible]
“[illegible]
[illegible]
[illegible]
“[illegible]

वनस्पतियों के समूह बिखरे हुए थे। क्षितिज की धुंधली सी झिलमिलाहट के अलावा, कुछ भी हिलता-डुलता नहीं था।
फिर भी, राजा जानता था कि झाड़ियों वाले इलाके में कहीं शाही सेना के पांच युवा सैनिक मौजूद थे - मूल बत्तीस कैडेटों में से अंतिम पांच बचे हुए कैडेट, जिन्होंने संसप्तकों की सेवा में शामिल होने के लिए स्वेच्छा से भाग लिया था।
“क्या तुम उनमें से किसी को देख सकते हो?” विक्रमादित्य ने कालिदास की ओर देखा।
“नहीं,” उस विशालकाय व्यक्ति ने संतुष्टि भरी हल्की मुस्कान के साथ उत्तर दिया। “ये पाँचों बहुत अच्छे हैं। ये सभी शपथ के योद्धाओं में शामिल होने के योग्य हैं।”
कुछ मिनट बीतने के बाद अंगामित्र, जो संसप्तकों का एक युवा सेनापति और कालिदास का विश्वसनीय प्रतिनिधि था, तम्बुओं के पास समूह से अलग होकर टीले की तलहटी की ओर बढ़ा। कालिदास की ओर देखते हुए उसने बात की।
"हमें लगता है कि अब समय आ गया है, कमांडर।"
कालिदास को सहमति में सिर हिलाते देख सेनापति तम्बुओं की ओर वापस लौटा और आदेश दिया। पाँच संसप्तक तुरंत कुछ दूर झाड़ियों में चले गए, प्रत्येक ने अपनी भुजा में एक ढाल ले रखी थी। सम्राट और कालिदास उत्सुकता से देख रहे थे कि तभी अचानक एक संसप्तक ने ज़ोर से आदेश दिया।
"शुल्क!"
अचानक, झाड़ियों की जलती हुई धूल के नीचे से पाँच अस्त-व्यस्त आकृतियाँ भूत की तरह उभर आईं, और कांटेदार झाड़ियों का अपना आवरण उतार फेंका। वे चौड़ी तलवारों से लैस थे, जिन्हें वे बेतहाशा लहराते हुए चीखते-चिल्लाते प्रतीक्षारत संसप्तकों की पंक्ति की ओर दौड़ पड़े।
चार कैडेट समसप्तकों तक पहुँच गए और उन पर बड़े ही उग्रता से आक्रमण करने लगे, लेकिन समसप्तकों ने अपनी ढालों का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए घातक तलवारों को रोक दिया। हालाँकि, पाँचवाँ कैडेट अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही लड़खड़ाकर गिर पड़ा। खुद को संभालते हुए वह कुछ पल तक लड़खड़ाता रहा, फिर थकान से चूर होकर ज़मीन पर गिर पड़ा।
“रुको,” अंगामित्र ने आदेश दिया, और चारों कैडेटों ने अपना हमला रोक दिया। इसी बीच, तंबुओं से दो संसप्तक गिरे हुए कैडेट के पास दौड़े। उसे धीरे से उठाकर वे उसे छाया में ले गए।

“लगता है कि सिर्फ चार कैडेट ही मृत्यु शपथ लेंगे, पाँच नहीं,” राजा ने सिर हिलाते हुए कहा। “मुझे उस लड़के पर तरस आता है। वह लगभग सफल हो ही गया था।” “मुझे यही उम्मीद करनी चाहिए थी,” कालिदास ने मुंह बनाते हुए कहा। “आखिरी पड़ाव पर कुछ लोग हमेशा गिर जाते हैं।”
“इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है,” विक्रमादित्य मुड़े और मंडप की आरामदायक छांव में प्रवेश कर गए। “वे मुश्किल से ही सो पाते हैं, और हफ्तों तक लगभग कुछ खाते-पीते नहीं हैं। और हां, व्यायाम तो बहुत ही कठिन होते हैं। शरीर की भी एक सीमा होती है।”
“मजेदार बात तो यह है कि कैडेटों को संसप्तकों में स्थान मिलने के बाद ही असली सजा शुरू होती है,” कालिदास ने राजा के पीछे मंडप में जाते हुए कहा। “एक साल का सबसे कठिन प्रशिक्षण... मुझे कभी-कभी लगता है कि जो कैडेट इसमें सफल नहीं होते, वे ही भाग्यशाली हैं।”
विक्रमादित्य भोजन से लदी मेज पर बैठते हुए मुस्कुराए। “फिर भी, अवंती में ऐसा कोई सैनिक नहीं है जिसने संसप्तक बनने और शपथ के योद्धाओं के सेनापति के अधीन सेवा करने का सपना न देखा हो।”
"ऐसे निडर और सक्षम पुरुषों का नेतृत्व करना मेरे लिए सम्मान की बात है," कालिदास ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया और राजा के साथ भोजन की मेज पर बैठ गए। दोनों व्यक्ति भोजन चबा रहे थे और चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। अंत में, कालिदास ने सम्राट की ओर देखा।
उन्होंने कहा, "मैंने जो बात आपके साथ साझा की है, उस पर आपने अभी तक अपनी राय नहीं दी है।"
विक्रमादित्य ने कालिदास को भावहीन चेहरे से देखा, यह समझने की पूरी कोशिश करते हुए कि कालिदास किस ओर इशारा कर रहे हैं। फिर उनकी आँखें चमक उठीं और उन्होंने मेज पर हाथ पटका।
“वाह, आपने कितनी नई कविता लिखी है!”
“तो आप इसे पूरी तरह से भूले नहीं हैं,” कालिदास ने शरारती मुस्कान के साथ कहा।
“बिल्कुल नहीं... मैं उस रात उसी के बारे में सोच रहा था जब सर्वज्ञानी ने खंजर लाया था।” राजा रुका और आह भरी। “तब से इतना कुछ घट चुका है कि मैं भूल ही गया था।”
कालिदास ने सिर हिलाया। "तो आप इसके बारे में क्या सोचते हैं?"

“मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने इसे पूरा नहीं पढ़ा है,” विक्रमादित्य ने उत्तर दिया। “लेकिन जितना मैंने पढ़ा है, हमेशा की तरह यह समृद्ध और बेहद खूबसूरत है। मैं तो यह भी कहूँगा कि शायद यह अब तक की आपकी सबसे बेहतरीन रचना है।”
"अमरा सिंह भी यही सोचते हैं," कालिदास ने प्रशंसा सुनकर थोड़ा संकोच के साथ मुस्कुराते हुए कहा।
“ये लीजिए – सीधे उस आलोचक की राय, जिसकी राय वाकई मायने रखती है,” सम्राट ने अपने हाथ फैलाते हुए कहा, मानो अपनी बात को साबित करना चाह रहे हों। “अमरा सिंह की तरह संस्कृत व्याकरण और श्लोक का अध्ययन बहुत कम लोगों ने किया है। अगर वे कहते हैं कि आप सिंधुवर्त के सबसे प्रतिभाशाली कवि और नाटककार हैं, तो बहस यहीं खत्म हो जाती है।”
“इसके लिए मैं तुम्हारा शुक्रगुजार हूँ, विक्रमा। आज मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब तुम्हारा ही है – यहाँ तक कि मेरा नाम भी।”
“तुम पर मेरा केवल भाईचारा और मित्रता का ऋण है,” सम्राट ने स्नेहपूर्वक मुस्कुराते हुए कहा। “और मैं भी तुम पर यही ऋणी हूँ। और जहाँ तक तुम्हारे लेखन की बात है, इसका श्रेय केवल तुम्हारे जुनून और इस कला के प्रति तुम्हारे समर्पण को जाता है।”
पुरुषों का ध्यान भोजन पर लौट आया, लेकिन राजा अपने सामने बैठे उस विशालकाय व्यक्ति को देखकर अचंभित हुए बिना नहीं रह सके। उन्हें अभी भी लावा कस्बे के बाहर की वह तूफानी शाम याद थी, जब जंगल के किनारे स्थित पुराने काली मंदिर के ऊपर लाल झंडा लहरा रहा था। लड़का लगभग आठ साल का था और मंदिर के अंदर दुबका हुआ मिला था, उसकी आँखों में एक डरावनी झलक थी। जब पहरेदार उसे विक्रमादित्य के पास लाए थे, तब वह मुश्किल से ही कुछ बोल पाया था, और जब आखिरकार उसने बोलना शुरू किया, तो यह स्पष्ट था कि उसे याद नहीं था कि वह कौन है और वह मंदिर तक कैसे पहुँचा।
उस पर दया करके विक्रमादित्य - जो स्वयं चौदह वर्ष से अधिक आयु के नहीं थे - उस बालक को उज्जैन ले आए थे। वहाँ उस बालक का नाम विक्रमादित्य ने देवी काली के नाम पर कालिदास रखा। वह बालक महल के परिवार का सदस्य बनकर पला-बढ़ा, वेताल भट्ट और अमर सिंह के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त किया और युद्ध कला तथा काव्य कला में समान निपुणता से निपुण हो गया। इन्हीं वर्षों के दौरान कालिदास और विक्रमादित्य के बीच मित्रता और वफादारी का गहरा बंधन स्थापित हो गया।

दोनों व्यक्ति कुछ देर तक चुपचाप भोजन करते रहे, फिर विक्रमादित्य ने अपने मित्र की ओर देखा। उन्होंने कहा, "तुम्हारी कविता में उज्जैन की सुंदरता का वर्णन मुझे बहुत पसंद आया।"
“यह तो बहुत मुश्किल नहीं था,” कालिदास ने कंधे उचकाते हुए तारीफ को टाल दिया। “उज्जायिनी धरती का सबसे खूबसूरत शहर है, इसलिए यह तो स्वाभाविक ही था।” राजा ने सिर हिलाया। “आपने उज्जैन की स्त्रियों की सुंदरता का भी बहुत विस्तार से वर्णन किया है।” वे कालिदास की ओर देखने के लिए रुके, उनकी आँखों में शरारत भरी चमक थी। “क्या आपका तात्पर्य सामान्य रूप से स्त्रियों से था या लिखते समय आपके मन में कोई विशेष स्त्री थी?”
उस विशालकाय व्यक्ति ने राजा की ओर देखा, फिर अपनी निगाहें अपनी थाली पर झुका लीं, उसके होठों पर एक शर्मीली मुस्कान थी।
“तुम दोनों शादी क्यों नहीं कर लेते?” विक्रमादित्य ने अचानक कहा। “तुम शंकु को बहुत पसंद करते हो, और भले ही वह अपनी भावनाओं को छुपाने में माहिर हो, मैं जानता हूँ कि वह तुम्हें बहुत प्यार करती है। तुम्हें उससे पूछना चाहिए।” वह अचानक रुक गया, उसका चेहरा गंभीर हो गया। “या फिर, क्या उसके पिता के धोखे का ख्याल तुम्हें परेशान करता है?”
“नहीं, इसका इससे कोई लेना-देना नहीं है,” कालिदास ने तीखे स्वर में कहा, जिससे उस लड़की के प्रति उनकी भावनाएँ स्पष्ट हो गईं। “मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि उसके पिता के किए की वजह से उसे कष्ट सहना पड़े।”
तो फिर समस्या कहाँ है?
“मैं संसप्तक हूँ, विक्रम,” कालिदास ने आह भरी। “मैंने मृत्यु शपथ ली है – युद्ध से या तो विजयी होकर या मृत होकर लौटने की शपथ। मैं शंकु से विवाह नहीं कर सकता, यह जानते हुए कि हर बार जब मैं युद्ध में जाता हूँ, तो मृत्यु ही मेरा एकमात्र साथी होती है।”
राजा अभी जवाब देने ही वाले थे कि मंडप के दरवाजे के पर्दे खुले और एक घुड़सवार अंदर आया।
“सम्राट विक्रमादित्य को प्रणाम,” उन्होंने झुकते हुए कहा। “मैं आचार्य वेताल भट्ट का संदेश लेकर आया हूँ।”
“संदेश क्या है?” सम्राट ने पूछा।
जवाब में, दूत ने अपने हाथों में पकड़ी हुई ताड़ के पत्तों की एक मुड़ी हुई पांडुलिपि आगे बढ़ा दी। राजा ने पांडुलिपि ले ली और उस पर लगी मोम की मुहर, जिस पर अवंती का सूर्य-चिह्न अंकित था, को देखकर उनकी भौंहें तन गईं।

उन्होंने अनुमान लगाया कि राजगुरु का संदेश महत्वपूर्ण, अत्यावश्यक और गोपनीय था।
सील तोड़कर विक्रमादित्य ने अंदर रखा छोटा सा पत्र पढ़ा। फिर उन्होंने घुड़सवार को इशारा किया और कालिदास से तेज़ी से बोले, “हमें तुरंत उज्जैन के लिए निकलना होगा।”
कुछ ही मिनटों में राजा और कालिदास घोड़ों पर सवार होकर झाड़ियों वाले इलाके को पार करते हुए आगे बढ़ रहे थे, उनके पीछे कुछ दूरी पर आठ घुड़सवारों का एक दल चल रहा था।
“आचार्य का संदेश क्या था?” अंततः कालिदास की जिज्ञासा उन पर हावी हो गई। विक्रमादित्य ने अपने घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए उत्तर दिया, “महल में एक अतिथि आए हैं। देवलोक से आए एक अतिथि, देवताओं के दूत।”
***

“देरी के लिए क्षमा करें, देव,” विक्रमादित्य ने सभा की मेज के पास आते हुए कहा। “मैं उज्जैन से बाहर था और महल तक वापस आने में एक घंटे का समय लगता है।” “माफ़ी मांगने की कोई ज़रूरत नहीं है, सम्राट,” देवता ने हाथ हिलाते हुए और मनमोहक मुस्कान के साथ उत्तर दिया। “आपको ज़रूरी काम निपटाने हैं, और मैं बिना बताए आ गया। लेकिन आचार्य और आपके बाकी साथियों ने मेरी बहुत अच्छी तरह से देखभाल की – वास्तव में, अवंती का आतिथ्य अद्वितीय है।”
“धन्यवाद, हे देव।” राजा का स्वर संभला हुआ था, क्योंकि उन्हें देव की चापलूसी करने की कोशिश का आभास था। उन्होंने आगंतुक के भव्य वस्त्रों और उनके सुंदर, आकर्षक चेहरे को निहारा, जिसमें नुकीली नाक और चौड़ा माथा था, जो चांदी जैसे सुडौल बालों से सुशोभित था।
“कृपया मुझे नारद कहकर संबोधित करें। मित्रों के बीच कोई औपचारिकता नहीं होनी चाहिए।” मेज के चारों ओर बैठे चेहरों को देखते हुए देव की भूरी आँखें सौहार्दपूर्ण ढंग से चमक उठीं।
जब उनके सलाहकारों ने एक-दूसरे की ओर देखा, तो राजा मेज के शीर्ष पर स्थित अपनी कुर्सी पर बैठ गए और अपना सिर झुकाया। "अब अगर मैं पूछ सकता हूँ, तो हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?"
नारद की मुस्कान और चौड़ी हो गई जब वे मेज के करीब आए। “मैं देवताओं की ओर से मित्रता का प्रस्ताव लेकर आया हूँ – ऐसी मित्रता जो हम दोनों के लिए लाभकारी होगी।”

“इससे पहले कभी किसी देवता ने हमारे यहाँ आकर मित्रता की बात नहीं की, इसलिए आपके आगमन का समय बिल्कुल अनोखा है,” विक्रमादित्य ने हल्की सी मुस्कान के साथ जवाब दिया। “अगर मैं सही हूँ, तो आपका प्रस्ताव कटार से संबंधित है, है ना?”
एक पल के लिए नारद प्रश्न की स्पष्टता से स्तब्ध रह गए। लेकिन उन्होंने तुरंत खुद को संभाल लिया। “सम्राट, बात सिर्फ कटार की नहीं है। जैसा कि मैंने कहा, मैं मित्रता का हाथ बढ़ाने आया हूँ। हम दोनों को यह समझना होगा कि असुरों की बुरी योजनाओं को विफल करने के लिए हमें मिलकर काम करना चाहिए। यदि देवलोक और पृथ्वी पर शांति और समृद्धि कायम रखनी है, तो हमारा सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है।”
विक्रमादित्य की प्रतिक्रिया की उम्मीद में, देवता कुछ देर रुके। लेकिन जब उन्हें कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली, तो उन्होंने अपना पूर्वनिर्धारित भाषण फिर से शुरू कर दिया।
“मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि हमसे मित्रता करने से आपको बहुत लाभ होगा,” उन्होंने कहा। “हम जानते हैं कि सिंधुवर्त के पश्चिम में स्थित बर्बर जनजातियों से आपको और आपके सहयोगियों को गंभीर खतरा है। हम उस खतरे से निपटने में आपकी मदद कर सकते हैं। पूर्व में भी संकट मंडरा रहा है – हम उसमें भी आपकी सहायता कर सकते हैं। हमारी मित्रता स्वीकार कीजिए, सम्राट।” अंत में उन्होंने कहा, “आपको यह जानना चाहिए कि हम देवता आपकी मित्रता इसलिए चाहते हैं क्योंकि हम आपको असुरों के विरुद्ध एक योग्य सहयोगी मानते हैं।”
"हमें नए दोस्त बनाने में हमेशा खुशी होती है," विक्रमादित्य ने दूत की बातों पर कुछ विचार करने के बाद कहा।
“बहुत बढ़िया,” नारद ने परिषद के सदस्यों की ओर मुस्कुराते हुए कहा। “भगवान इंद्र यह सुनकर प्रसन्न होंगे।” उन्होंने आशा भरी निगाहों से मेज के चारों ओर देखा, लेकिन राजा और उनके सलाहकारों ने कुछ नहीं कहा।
“तो क्या मैं समझ लूँ कि तुम हमें कटार सौंपने को तैयार हो?” देव ने पूछा। “तो देवता मित्रता के बदले कटार चाहते हैं?” विक्रमादित्य के व्यंग्य से भरी आवाज़ में सभा कक्ष गूंज उठा। “इसका मतलब है कि आपकी मित्रता की पेशकश सशर्त है। आपने यह बात पहले क्यों नहीं बताई?”
“यह... यह महज़ एक प्रतीक है... हमारे गठबंधन को पक्का करने के लिए।” पहली बार नारदा लड़खड़ा गया, शब्दों को ढूंढने में उसे कठिनाई हुई। “इसे एक पूर्व शर्त के रूप में मत देखो।”

“तो फिर, हम आपको अपनी मित्रता के प्रतीक के रूप में कुछ और दे सकते हैं। वह भी खंजर की तरह ही काम करेगा, है ना?”
आगंतुक चुपचाप अपने आसपास के लोगों के मिजाज का जायजा ले रहा था। अंत में उसने सिर हिलाया। "मुझे लगता है कि यह खंजर ही होगा, सम्राट।"
विक्रमादित्य ने पूछा, "अगर हम सहयोगी बनने वाले हैं, तो इससे क्या फर्क पड़ता है कि खंजर किसके पास है?"
“हम देवता इसे दुष्ट असुरों से बेहतर ढंग से बचा सकते हैं,” नारद ने कहा। “हम आपको इसकी रक्षा करने के दायित्व से मुक्त करना चाहते हैं।”
राजा ने कुछ देर तक दूत का आकलन किया। अंत में, सीधे खड़े होकर उन्होंने कहा, “हे देव, इस दायित्व से हमें मुक्त करने वाला एकमात्र वही है जिसने हमारे हाथों में कटार रखी है। हमने सर्वज्ञ को वचन दिया है – और हम उसे निभाने का इरादा रखते हैं।”
“सम्राट, जल्दबाजी में निर्णय न लें,” नारद ने बड़ी मुश्किल से अपनी आवाज में निराशा छिपाते हुए विनती की। “मैं प्रतीक्षा करने के लिए पूरी तरह से तैयार हूँ।”
“जल्दबाजी में लिया गया फैसला, चाहे वह हो या नहीं,” विक्रमादित्य मुस्कुराते हुए बोले। “मुझे इसमें कुछ और जोड़ना नहीं है।”
नारद अपने आसन से उठे। उनके चेहरे से पहले वाली सारी रौनक गायब हो गई थी और उनका संयम भी लुप्त हो गया था। “सिंधुवर्त और उसके आसपास युद्ध का तूफान मंडरा रहा है,” उनकी आवाज कर्कश हो गई थी, मानो किसी अंधेरी गुफा से धीमी गुर्राहट आ रही हो। “जल्द ही असुर भी तुम्हारे दरवाजे पर आ जाएंगे। सम्राट, आपको देवताओं से मित्रता करने का अवसर नहीं गंवाना चाहिए था।”
“जिस तरह से आपने बताया, ऐसा लगता है कि अब हमें इंद्र को हलाहल का अधिकार देने से इनकार करने के परिणाम भुगतने पड़ेंगे,” विक्रमादित्य ने अपनी कुर्सी से उठते हुए उत्तर दिया। “लेकिन हम इसके लिए तैयार हैं। अपने राजा को यह बात बता दीजिए।”
***

हिरण्याक्ष के चेहरे पर अधीरता स्पष्ट झलक रही थी, जब वह मेहराबदार, कंगूरेदार खिड़की से बाहर, उफनती पाताल गंगा की धारा को निहार रहा था। वह बीच-बीच में अपने कंधे के ऊपर से कक्ष में उस विशाल क्रिस्टल की मेज की ओर देखता, जहाँ शुक्राचार्य मंडल पर झुके हुए थे। मेज के पार, कक्ष के दूसरे छोर पर एक

दीवान पर होलिका एक शिशु को दूध पिला रही थी और उसकी पैनी निगाहें महायाजक को देख रही थीं, जो मंडल में कशेरुकाओं के छह टुकड़ों को व्यवस्थित कर रहे थे।
“आहा!” शुक्राचार्य ने अंततः चुप्पी तोड़ी, उनकी आवाज में विजय का भाव था।
“क्या बात है, महागुरु?” हिरण्याक्ष चार लंबे कदम बढ़ाते हुए मेज की ओर बढ़ा।
ऋषि ने अपना सिर उठाया, उनकी एक आंख उत्साह से चमक रही थी। असुर स्वामी का काला चेहरा उन्हें घूरता हुआ देखकर, भौंहें प्रश्नवाचक भाव से उठी हुई थीं, शुक्राचार्य के होंठ एक चौड़ी मुस्कान में खुल गए।
“बृहस्पति का मिशन पूरी तरह विफल हो गया। नारद खाली हाथ देवलोक लौट रहे हैं – जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था,” उसने प्रसन्नता जताते हुए कहा। “उस मूर्ख ने विक्रमादित्य से कटार छीनने के लिए हमेशा की तरह हथकंडे अपनाए, लेकिन वह मानव राजा के संकल्प को डिगाने में पूरी तरह असफल रहा।”
“और क्या वो कटार उज्जैन में अभी भी सुरक्षित है?” डायन रानी ने दीवान से पूछा। उसकी उत्सुकता ने उसकी आवाज़ में तीखापन भर दिया, जिससे उसकी गोद में सो रहा बच्चा परेशान हो गया। उसने अपना मुँह सिकोड़कर अपनी बड़ी-बड़ी सुनहरी आँखों से उसका चेहरा निहारा, जो हिरण्यक्ष की आँखों की हूबहू नकल थीं। "बिल्कुल," ऋषि ने उत्तर दिया, और पूरी तरह से आश्वस्त होने के लिए छह हड्डियों के टुकड़ों को देखा।
"पूरे सम्मान के साथ कहूँ तो, मुझे अब भी लगता है कि देवताओं को पहला कदम उठाने देना एक बड़ा जोखिम था," हिरण्याक्ष ने मेज से दूर हटते हुए और खिड़की की ओर वापस जाते हुए कहा।
“बिल्कुल नहीं,” शुक्राचार्य ने ज़ोर देकर कहा। “यह एक सोची-समझी चाल थी। मेरा यह निष्कर्ष सही निकला कि विक्रमादित्य को प्रलोभनों और धमकियों से हलाहल सौंपने के लिए राजी नहीं किया जा सकता था। लेकिन मुझे पता था कि बृहस्पति यह चाल चलेंगे, इसलिए मैंने उन्हें नाकाम होने दिया। अब देवताओं का समय और मेहनत व्यर्थ गई है, और उन्हें कुछ भी हासिल नहीं हुआ है।”
“लेकिन अब हमें तुरंत कार्रवाई करनी होगी,” असुर स्वामी ने उग्र नदी के शोर के बीच अपनी आवाज बुलंद करते हुए कहा। “इंद्र इस अस्वीकृति को हल्के में नहीं लेंगे।”
“जी हां, महागुरु,” होलिका ने आग्रह किया। नन्हे-मुन्ने शिशु को दीवान पर लिटाकर वह उठी और मुख्य पुजारी के पास गई। “देवता अपने प्रयासों को और भी बढ़ा देंगे, और अगली बार वे निश्चित रूप से बल का प्रयोग करेंगे। हमें उन्हें पहले ही रोकना होगा।”

“जी हां, अब आगे बढ़ने का समय आ गया है,” शुक्राचार्य ने मेज साफ करते हुए सहमति जताई। असुर स्वामी की ओर देखते हुए उन्होंने कहा, “आप युद्ध की तैयारी का आदेश दे सकते हैं।”
“महागुरु, तैयारियां पहले से ही चल रही हैं,” हिरण्याक्ष की सुनहरी आंखें उसके कठोर चेहरे पर चमक उठीं। “पिशाचों की एक सेना एकत्रित की जा रही है, और मैंने निर्मम आंखों वाले राक्षस अंधक को आपका आशीर्वाद लेने और उज्जैन पर आक्रमण का नेतृत्व करने के लिए बुलाया है।”

Andhaka

राजा सिद्धसेना ने अपनी आंखें बंद कीं और गहरी सांस ली, चमेली और फ्रैंगिपानी की मीठी सुगंध से सराबोर ठंडी, सुबह की हवा से अपने वृद्ध फेफड़ों को भर लिया। वह एक विशाल, हरे-भरे बगीचे के बीचोंबीच एक पत्थर की बेंच पर बैठे थे, उनके साथ उनके वफादार अंगरक्षक सजय के अलावा कोई नहीं था, जो उनसे कुछ कदम बाईं ओर खड़ा था। अंगरक्षक से कुछ दूरी पर बाईं ओर एक अलंकृत मंडप था, जिसमें एक केंद्रीय फव्वारे के चारों ओर लोहे के पाँच झूले लगे थे। सिद्धसेना के चरणों के पास का रास्ता मंडप से निकलकर बगीचे से होते हुए मगध के राजमहल की ओर जाता था, जो फूलों से भरी झाड़ियों और पेड़ों के बीच से आंशिक रूप से दिखाई दे रहा था। कुछ देर तक राजा शांति और सन्नाटे में डूबे चुपचाप बैठे रहे। फिर आँखें खोलकर उन्होंने अपनी लकड़ी की छड़ी उठाई और अपने अंगरक्षक की ओर बायाँ हाथ उठाकर उठने की गुहार लगाई।
गार्ड ने एक कदम आगे बढ़ाया, लेकिन सुबह की शांति को भंग करती हुई एक अधिकारपूर्ण आवाज ने उसे रोक दिया।
“रहने दो, सिपाही। मैं राजा की सहायता करूंगा।”
सिद्धसेना ने जब मार्ग की ओर देखने के लिए अपना सिर उठाया, तो उस जानी-पहचानी आवाज़ से उनका चेहरा उदास हो गया, और उनकी बूढ़ी आँखों में थकान झलक रही थी। शूरसेना को आते देख राजा के होंठ ऐसे सिकुड़ गए मानो किसी कड़वी अनुभूति से भरे हों। फिर भी, उन्होंने अपने अंगरक्षक की ओर मुड़कर सिर हिलाया। शूरासेना ने अपने पिता को हाथ बढ़ाते हुए कहा, "आओ।"

राजा के संभलकर खड़े होते ही शूरसेना ने बूढ़े व्यक्ति का हाथ मजबूती से थाम लिया। अपने पिता के कंधों पर सुरक्षात्मक भाव से दूसरा हाथ रखते हुए राजकुमार आगे-आगे चलने लगा, और रक्षक दल सम्मानजनक दूरी पर उनके पीछे-पीछे चलने लगा।
कुछ दूर चलने के बाद, शूरासेना ने अपने बगल में झुके हुए व्यक्ति की ओर देखा। “पिताजी, मैंने सुना है कि कल रात आपने मत्स्य पर तीन हजार मगध सैनिकों और हमारे तीन हजार धनुर्धारियों को भेजने का आदेश जारी किया है। क्या यह सच है?” सिद्धसेना ने मन ही मन आह भरी। यह सवाल उनके लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी; मत्स्य को अतिरिक्त सेना भेजने का आदेश देते ही उन्हें इसकी अनिवार्यता का पूर्वाभास हो गया था। लेकिन जिस तेज़ी से यह खबर उनके बेटे तक पहुंची, वह चौंकाने वाली थी।
अंत में उसने उत्तर दिया, "हाँ।"
“क्यों?” राजकुमार ने धीमी आवाज़ में पूछा। “हमने इस मामले पर चर्चा की थी, और मुझे लगा था कि हमने मगध से कोई सेना न भेजने का फैसला किया था।”
“नहीं बेटे, तुम गलत समझ रहे हो,” सिद्धसेना ने सुधार करते हुए कहा। “सच तो यह है कि हमने केवल इस मामले पर चर्चा की थी – हमने अभी तक यह निर्णय नहीं लिया था कि हमें अपनी सेना भेजनी है या नहीं।”
शूरासेना ने तुरंत कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, लेकिन बूढ़े राजा को अपने बेटे के जबड़े में गुस्से की वजह से अकड़न महसूस हो गई।
"तो अब आपने शाही परिषद में किसी से भी विश्वास लिए बिना आदेश जारी करने का फैसला कर लिया है," राजकुमार ने बुदबुदाते हुए कहा।
राजा को अच्छी तरह पता था कि उसके बेटे का 'राज परिषद में कोई भी' कहने का क्या मतलब है। शूरसेना के लिए, राज परिषद में केवल वही व्यक्ति महत्वपूर्ण था।
“मगध के राजा होने के नाते मुझे यह करना ही पड़ा,” सिद्धसेना ने उत्तर दिया। “शक मत्स्य की जासूसी कर रहे हैं और राजा बाणहस्त संकट में हैं।”
“बानहस्त को वत्स और कोसल राज्यों से पर्याप्त सहायता मिल रही है,” शूरसेना ने पलटवार किया।
“यदि हूण और शक सिंधुवर्त पर आक्रमण करने लगें, तो कितनी भी मदद काफी नहीं होगी, पुत्र,” बूढ़े राजा ने सिर हिलाते हुए कहा। “इसके अलावा, राजा बाणहस्त पुराने सहयोगी रहे हैं, और मगध संकट के समय उनका साथ नहीं छोड़ सकता।”

शूरासेना ने अपने पिता को उस रास्ते से ऊपर चढ़ने में मदद करते हुए एक ठंडी चुप्पी बनाए रखी, जो महल के बगीचे के उत्तरी छोर पर स्थित एक चौड़े चबूतरे की ओर जाता था।
“और सबसे महत्वपूर्ण बात, मैंने सम्राट विक्रमादित्य को वचन दिया था कि हम सिंधुवर्त की रक्षा के लिए सेना भेजेंगे,” राजा ने आगे कहा। “उस वचन का पालन करना मेरा कर्तव्य है।”
चबूतरे पर चलते हुए, राजकुमार ने अपने पिता को ऊँची पत्थर की दीवार से घिरे चबूतरे के किनारे तक ले गए। चबूतरे से ज़मीन नीचे की ओर ढलानदार होती गई, छोटी-छोटी पहाड़ियों से होते हुए नीचे मैदान में मिल जाती थी, जहाँ मगध की राजधानी गिरिव्रज स्थित थी। दोनों व्यक्ति कुछ देर तक शहर के मनोरम दृश्य को निहारते रहे, फिर शूरसेना ने चुप्पी तोड़ी।
“पिताजी, आपका हालिया निर्णय वांगा के विरुद्ध हमारे अभियान की योजनाओं के लिए एक बड़ा झटका है। उज्जैन जाने और हूणों और शकों से उत्पन्न खतरे की सूचना मिलने से पहले ही, आपने मगध की राजसभा को आश्वासन दिया था कि आप उस अभियान में सहयोग करेंगे। ऐसा लगता है मानो अब उस वादे का आपके लिए कोई महत्व नहीं रह गया है।”
“मुझे वांगा के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का तुम्हारा जुनून समझ नहीं आता,” सिद्धसेना ने तीखी आवाज में कहना शुरू किया, लेकिन जब उन्होंने अपने बेटे का हाथ अपने कंधे पर कसते हुए महसूस किया तो उनकी आवाज धीमी होकर बुदबुदाहट में बदल गई। “गणतंत्र ने हमें कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया,” बूढ़े राजा ने अपने कमजोर शरीर पर पड़ रहे दबाव से दर्द से कराहते हुए कहा।
“पिताजी, वे किकाता विद्रोह का समर्थन कर रहे हैं। उन्हें सबक सिखाने की जरूरत है।”
“कृपा करके मुझे इस झूठ से बख्श दीजिए,” सिद्धसेना ने कंधे उचकाते हुए अपने बेटे की मज़बूत पकड़ से खुद को छुड़ाने की कोशिश की। “मैं जानता हूँ कि किकाटाओं की ओर से संगठित विद्रोह का दूर-दूर तक कोई खतरा नहीं है। हाँ, जैसा कि हमने जिन अधिकांश जनजातियों को अपने अधीन किया है, उनमें से कुछ किकाटा हमसे नाराज़ हो सकते हैं। लेकिन अधिकांश किकाटा मगध के शासन में पूरी तरह से खुश हैं। वे मगध के प्रति काफी वफादार भी हैं। सजय को ही देख लीजिए...”
राजा ने अपना सिर अंगरक्षक की ओर झुकाया, जो अब चुपचाप चबूतरे के दूसरे छोर पर खड़ा था। “वह दो दशकों से अधिक समय से मेरे साथ है। उसका आचरण बेदाग है, मगध के प्रति उसकी निष्ठा पर कोई संदेह नहीं है।”

शूरासेना एक बार फिर चुप हो गए और नीचे गिरिव्रजा को देखने लगे, जो धीरे-धीरे चहल-पहल से भर रहा था, उसकी गलियाँ बाज़ारों की ओर जाने वाले बैलगाड़ियों और कारवां से भर गई थीं। आकाश की ओर देखते हुए, राजकुमार ने फिर सहज भाव से चबूतरे और उसके आगे फैले बगीचों का जायजा लिया।
अंत में उसने कंधे उचकाते हुए कहा, "जैसी आपकी इच्छा, पिताजी। सूरज की ऊंचाई और गर्मी दोनों बढ़ रही है। चलिए महल लौट चलते हैं।"
राजकुमार ने उसका हाथ पकड़कर सिद्धसेना को एक चौड़ी सीढ़ी की ओर ले जाना शुरू किया, जो चबूतरे से महल के निचले स्तरों तक जाती थी।
ऊँची सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुँचते ही शूरासेना ने पूछा, "मत्स्य के लिए सेना कब रवाना होगी?"
“शाम तक,” राजा ने राजकुमार का हाथ पकड़ते हुए और बड़ी मुश्किल से नीचे उतरना शुरू करते हुए उत्तर दिया। “ये सीढ़ियाँ बहुत खड़ी हैं। हमें दूसरा रास्ता लेना चाहिए था।”
"यह महल तक जल्दी पहुंचता है," शूरासेना ने बेपरवाही से कहा।
सिद्धसेना ने अभी ऊपर की पाँच सीढ़ियाँ ही चढ़ी थीं कि राजकुमार ने अचानक बूढ़े व्यक्ति की पकड़ से अपना हाथ छुड़ा लिया। राजा ने आश्चर्य से अपने पुत्र की ओर देखा तो शूरसेना ने उसे ज़ोर से धक्का दे दिया।
राजा बुरी तरह लड़खड़ाया और संतुलन बनाए रखने के लिए अपने हाथों को इधर-उधर पटकता रहा। तभी, जब ऐसा लगा कि सिद्धसेन ने अपना संतुलन वापस पा लिया है, शूरासेन ने उसे फिर से धक्का दिया, इस बार और भी अधिक बल के साथ।
सिद्धसेना ने अपने बेटे को हैरानी और भय से देखा, जैसे ही उसे सच्चाई का एहसास हुआ, उसने कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोला। लेकिन शब्द राजा के बूढ़े, दुखी हृदय में कहीं अटक गए, और उसके गले से केवल एक कराह भरी, सिसकती हुई आवाज निकली
- एक पिता के रूप में असफल होने की अंतिम विलाप।
धीरे-धीरे, मानो अनंत काल तक सीढ़ियों पर लड़खड़ाते रहने के बाद, सिद्धसेना लड़खड़ाकर सीढ़ियों से नीचे लुढ़क गए। उनका दुर्बल शरीर इधर-उधर लुढ़कता रहा, हर बार पत्थर की सीढ़ियों पर टकराने से उनकी हड्डियाँ चटकने की आवाज़ आती रही। सीढ़ियों के तल पर पहुँचकर, बूढ़े राजा का शरीर विकृत अंगों के ढेर में बदल गया, दुबली-पतली गर्दन एक असामान्य कोण पर मुड़ी हुई थी, और सिर के नीचे तेज़ी से खून जमा हो रहा था।

शूरासेना को पीछे से कदमों की आहट सुनाई दी। मुड़कर देखा तो अंगरक्षक सजय सीढ़ियों के ऊपर दिखाई दिया। घबराकर उसने कुछ दूर नीचे पड़े शव की ओर इशारा किया।
“पिताजी…” उसने कांपती हुई आवाज़ में कहा। “वह फिसलकर गिर गया।”
सदमे से व्याकुल होकर, वह भोला-भाला रक्षक राजा के क्षत-विक्षत शरीर को देखता रह गया। फिर, मानो किसी सम्मोहन में हो, वह सीढ़ियों से नीचे उतरकर शूरसेना के पास खड़ा हो गया। "अच्छे राजा अब हमारे बीच नहीं रहे," रक्षक के होंठ फुसफुसाते हुए हिले।
अपने मृत स्वामी का दृश्य इतना भयावह था कि रक्षक राजकुमार को म्यान से भारी तलवार निकालते हुए देख ही नहीं पाया। शूरासेना द्वारा पेट में वार करने से कुछ ही क्षण पहले, सजय को एहसास हुआ कि उस पर हमला हो रहा है – लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। पेट पकड़कर झुकते हुए उसने आश्चर्य से शूरासेना की ओर देखा। “क्यों... मेरे स्वामी,” उसने दर्द से कराहते हुए, लड़खड़ाती आवाज में कहा। इसके जवाब में, शूरासेना ने तलवार को सजय के पेट से झटक दिया, जिससे और अधिक मांस और ऊतक फट गए। रक्षक दर्द से चीख उठा और उसकी उंगलियों के बीच से खून बहने लगा। वह एक कदम पीछे हटा और सीधा होने की कोशिश की, तभी शूरासेना ने तलवार घुमा दी।
घातक तलवार हवा में लहराती हुई सजय की गर्दन को चीरते हुए उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया। रक्षक का शरीर सीढ़ियों पर धड़ाम से गिर पड़ा, लेकिन उसका सिर लुढ़कते हुए सिद्धसेना के पैरों के पास आकर रुका, और उसकी दृष्टिहीन आँखें आश्चर्य से मृत राजा को निहारती रहीं।
सजाया की चीख ने सबका ध्यान खींचा और पल भर में पहरेदार और महल के कर्मचारी सीढ़ियों की ओर दौड़ पड़े। नीचे खड़े लोग सिद्धसेना के शव और पहरेदार के सिर के पास जमा हो गए, जबकि बगीचे की तरफ से आने वाले लोग सीढ़ियों के ऊपर अर्धवृत्त बनाकर खड़े हो गए। चारों ओर सन्नाटा छा गया, सब लोग मृत राजा से लेकर सजाया के सिर कटे शरीर और खून से सनी तलवार लिए सीढ़ियों पर खड़े शूरसेना को घूर रहे थे।
“किकाता के अंगरक्षक ने मेरे पिता को सीढ़ियों से नीचे धकेल दिया,” राजकुमार ने सजाया के शव की ओर इशारा करते हुए गरजते हुए कहा। “मैंने उसे ऐसा करते देखा और मैंने उसे मार डाला।”
सीढ़ियों के चारों ओर से भय का शोर उठने लगा, तभी शूरासेना ने अपनी तलवार आकाश की ओर उठाई। “किकाटाओं ने मगध के दयालु और प्रिय राजा को हमसे छीन लिया है,” वह

प्रतिशोध की भावना से चीखा। “मैं कसम खाता हूँ कि मैं उन्हें और उनके साथियों को खून से इसका बदला चुकाऊँगा।”
कुछ ही सेकंड में, एकत्रित पहरेदारों और महल के कर्मचारियों के बीच एक नारा गूंज उठा, एक ऐसा नारा जो क्रोध और शोक से भरा हुआ था, और जिसकी तीव्रता और आकार तेजी से बढ़ता गया।
“किकातास का नाश हो,” वे रक्तपिपासा के बढ़ते उन्माद में दहाड़ रहे थे। “वांगा का नाश हो।”
***

बारिश मूसलाधार बरस रही थी, मानो धरती पर अपना पुराना दबा हुआ क्रोध निकाल रही हो। फिर भी शंकु उस मूसलाधार बारिश में आगे बढ़ती रही, उसके घोड़े के खुर गीली कीचड़ में धंस रहे थे और घोड़ा संभलने के लिए संघर्ष कर रहा था। भारी बूँदें बार-बार उसके चेहरे पर चुभ रही थीं, जिससे उसकी आँखों के सामने अंधेरा छा रहा था; फिर भी, लड़की ने हिम्मत नहीं हारी, अपने घोड़े की गर्दन पर झुककर और अपने लबादे का हुड अपने सिर पर खींचकर थोड़ी-बहुत सुरक्षा की कोशिश की। उसकी दादी ने बात की थी, और जो कुछ उसने सुना था, उससे शंकु जानती थी कि उसे बिना देरी किए अपने राजा को यह खुशखबरी देनी होगी।
उज्जैनी में प्रवेश करने के बाद भी लड़की ने अपनी गति धीमी नहीं की, और अवंती की प्रजा आश्चर्य से देखती रही कि घोड़ा भीगी हुई सड़कों से महल की ओर गरजता हुआ, कीचड़ उछालता हुआ और धूल उड़ाता हुआ आगे बढ़ रहा था। महल पहुँचते ही घोड़ा पूरी रफ्तार से महल के पुल पर दौड़ पड़ा, जिससे महल के पहरेदार घबराकर द्वार बंद करने पर मजबूर हो गए।
“मैं ही हूँ,” शंकु ने अपने घोड़े की लगाम खींचते हुए और पहचान के लिए अपना हुड उतारते हुए संक्षिप्त स्वर में कहा। “मुझे जाने दो।”
कुछ ही मिनटों में वह परिषद कक्ष में पहुँच गई, जहाँ विक्रमादित्य, वरारुचि, वेताल भट्ट और धनवंतरी कर अभिलेखों का अध्ययन कर रहे थे। शंकु दरवाजे के अंदर खड़ी रही, संकोच से भरी और असमंजस में कि क्या उसे परिषद के सदस्यों के बीच हस्तक्षेप करना चाहिए, जो शाही खजाने के लिए धन जुटाने हेतु अतिरिक्त कर लगाने पर चर्चा कर रहे थे।
वररुची कह रहे थे, “अगर हमें हूणों और साकों के खिलाफ एक लंबा और जटिल युद्ध लड़ना पड़े, तो हमारे पास कर बढ़ाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। या फिर हमें कुछ सब्सिडी खत्म करनी होंगी।”

“सब्सिडी खत्म करने का मतलब है कि गरीबों और वंचितों को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा,” सम्राट ने असहमति जताते हुए सिर हिलाया। “अगर जरूरत पड़ी तो अमीरों से कर बढ़ाना बेहतर होगा।”
आचार्य ने कहा, “हमें लोहे, कांसे और लकड़ी पर शुल्क अवश्य बढ़ाना चाहिए। कम से कम इससे मांग में कमी तो आएगी, जिससे हमारे शस्त्रागारों में कमी नहीं होगी।”
जब बाकी सबने सहमति में सिर हिलाया, तो धनवंतरी ने बीच में कहा, “हम जुर्माने और दंड की दरें भी बढ़ाना शुरू कर सकते हैं। हमने पिछले युद्ध के दौरान ऐसा ही किया था। कोई न कोई हमेशा कहीं न कहीं कानून तोड़ता ही है...”
चारों पुरुष चर्चा में इतने मग्न थे कि अगर शंकु को अचानक छींक न आती तो वे छाया में खड़ी शंकु को देख भी नहीं पाते।
“बच्ची, तुम वहाँ क्या कर रही हो?” आचार्य ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। “तुम अंदर क्यों नहीं आई?”
जैसे ही शंकु परिषद की मेज के पास पहुंची, पुरुषों ने देखा कि वह पूरी तरह भीगी हुई थी।
“तुम्हें क्या हुआ?” राजा ने सीधा होते हुए पूछा।
“मैं बारिश में भीग गया था, सम्राट,” शंकु ने उत्तर दिया।
मैं समझ सकता हूँ, लेकिन आप इस मौसम में बाहर क्या कर रहे थे?
“मैं देवी ओरेकल से मिलने गई थी, सम्राट। उनके पास आपके लिए कुछ खबर है।” “कोई बात नहीं, लेकिन यहाँ आने से पहले आपने खुद को सुखा क्यों नहीं लिया?” वेताला भट्टा ने नरमी से कहा। “आप पूरी तरह भीगे हुए हैं और आपको ठंड लग सकती है।”
"मुझे लगा कि सबसे पहले खबर देना जरूरी है, राजगुरु।"
विक्रमादित्य ने सहमति में सिर झुकाया और पूछा, "देवी ओरेकल क्या कहती हैं?" वह कहती है कि पक्षी पश्चिम में दूर से उठती हुई धूल की एक विशाल दीवार के बारे में बात करते हैं।
“धूल की दीवार...” वरारुचि ने अपने भाई से आचार्य की ओर देखा। “मदर ओरेकल का मतलब उस धूल से है जो रेगिस्तान की ज़मीन से उठती है जब कोई विशाल सेना पूर्व की ओर बढ़ती है।”
जब पांचों पार्षदों ने एक-दूसरे को खतरे भरी निगाहों से देखा, तो विक्रम-आदित्य ने शंकु को सिर हिलाकर कहा, “हम आपकी दादी के आभारी हैं। धन्यवाद।”

राजा कर अभिलेखों पर दोबारा ध्यान देने ही वाले थे कि लड़की फिर बोली, “एक बात और है, सम्राट। देवी ने अवंती के लिए एक और गंभीर खतरे की सूचना दी है।”
“यह क्या है?” चारों ने सिर घुमाकर उसकी ओर देखा।
“उसने एक अदृश्य बुराई के बारे में चेतावनी दी है जो उज्जैन में आतंक फैलाने के लिए उत्तर की ओर बढ़ रही है।”
जब वे लोग घबराहट से एक-दूसरे की ओर देखने लगे, तभी धनवंतरी ने पूछा, "कहाँ से उत्तर की ओर?"
“देवी ने कुछ नहीं कहा,” शंकु ने उत्तर दिया। “उन्होंने केवल इतना बताया कि उन्होंने दक्षिण से आ रहे वर्षा बादलों में संकेत पढ़ लिए थे।”
“क्या उसने तुम्हें इस… दृष्टिहीन बुराई के बारे में कुछ और बताया?” विक्रमादित्य ने पूछा।
यह देखकर कि चारों पुरुषों का पूरा ध्यान उस पर है, शंकु ने सिर हिलाया। "उसने कहा कि दृष्टिहीन बुराई को कुछ वापस पाने के लिए छोड़ा गया है - कुछ ऐसा जो एक प्राचीन देवता द्वारा राजा को उपहार में दिया गया था।"
***

पायोशनी नदी के उत्तरी किनारे पर पहरा दे रहे उस बेचारे नौजवान सिपाही के जीवन का वह सबसे दुखद दिन था। कम से कम, विशाल बरगद के पेड़ के नीचे शरण लेते हुए और कोसते हुए सिपाही की यही राय थी।
ऊपर धूसर आसमान से बरसती बारिश को उसने कोसा। अपने अकड़े हुए जोड़ों में घुसती नमी भरी ठंड को उसने कोसा। अपने सिर के ऊपर मंडराते, कानों में भिनभिनाते और उसकी खुली बाहों, टखनों, गर्दन और चेहरे को नोचते मच्छरों को उसने कोसा। और हेहेया की सेना में भर्ती होने के अपने फैसले को भी उसने कोसा। लेकिन उस सुबह सैनिक ने जिन चीजों को कोसा, उनमें से सबसे ज्यादा उसने उस मनहूस दिन को कोसा जब उसे पायोशनी की चौकी में ड्यूटी के लिए रिपोर्ट करने का आदेश दिया गया था।
मच्छर को मारने की व्यर्थ कोशिश में अपने दाहिने गाल पर थप्पड़ मारते हुए, सिपाही ने बारिश की चादर के बीच से दक्षिण की ओर देखा। कुछ ही दूरी पर पायोशनी नदी बह रही थी, जो एक सुस्त दलदल जैसी नदी थी, जिसकी सतह जलीय पौधों और कीचड़ से हरी थी - कीचड़ इतनी गाढ़ी थी कि भारी बारिश की बूंदें उसमें समा जाने के बजाय उससे टकराकर वापस उछल रही थीं।
और चौड़ी नदी के उस पार, हेहेया की सीमा के दूसरी ओर, पेड़ों की एक घनी, काली दीवार खड़ी थी, जो दक्षिण की ओर क्षितिज तक और उससे भी आगे तक फैली हुई थी।

दंडक, निर्वासितों का वन।
घने, उमस भरे जंगल का एक असीमित विस्तार, दंडका सिंधुवर्त का सबसे दुर्गम क्षेत्र था, जो सबसे खूंखार जंगली जानवरों, सबसे भयानक महामारियों और दानवों की लुप्त जाति का घर था, जिनके बारे में माना जाता था कि वे जनस्थान के पौराणिक किले से जंगल पर शासन करते थे।
दंडका मानव समाज के सबसे निचले तबके के लोगों के लिए एक कारागार भी था। सिंधुवर्त के राज्य अपने सबसे जघन्य अपराधियों – देशद्रोहियों, हत्यारों, बलात्कारियों और बाल यौन शोषण करने वालों – को हमेशा इसी जंगल में निर्वासित करते थे। ऐसा माना जाता था कि जहाँ तक दोषियों के लिए फाँसी पर मौत को चकमा देना संभव था, दंडक के भयानक जंगल से बचना नामुमकिन था। या यूँ कहें कि यह वह जंगल था जहाँ से कोई वापसी नहीं होती थी।
वास्तव में, यह एक अतिशयोक्ति थी। अतीत में दो बार निर्वासित अपराधियों ने दंडका से भागने की कोशिश की थी – उन्होंने जीवित बचने की संभावना बढ़ाने के लिए समूह बनाकर सभ्यता में वापस आने का प्रयास किया था। इनमें से कुछ भगोड़ों को पकड़ लिया गया और वापस भेज दिया गया, जबकि अन्य को प्रतिरोध करने पर मार दिया गया। फिर भी, यह अफवाह फैली हुई थी कि कुछ मुट्ठी भर लोग सफलतापूर्वक पकड़े जाने से बच निकले और सिंधुवर्ता के पार जाकर बस गए।
इस तरह की घटनाओं को नियमित होने से रोकने के लिए ही पायोशनी दर्रे के शीर्ष पर पायोशनी चौकी स्थापित की गई थी। यह नदी के चट्टानी उत्तरी तट पर एकमात्र ऐसा बिंदु था जहाँ से हेहेया राज्य और दंडक वन के बीच मार्ग मिलता था। इसी कारण इस चौकी को 'प्रवेश द्वार चौकी' का उपनाम मिला; हालाँकि दक्षिण की ओर जाने वाले यातायात की प्रकृति को देखते हुए इसे आमतौर पर 'सिंधुवर्त का द्वार' भी कहा जाता था।
बरगद के पेड़ के नीचे पहरा दे रहा सिपाही उस जगह के वर्णन से पूरी तरह सहमत था। अपनी कोहनी के नीचे की नाजुक जगह पर बैठे एक मोटे मच्छर को भगाते हुए, उसने फिर से गाली दी और अपने आसपास का जायजा लिया।
उसके सामने दलदली नदी का किनारा फैला हुआ था, जिस पर एक पुरानी नाव खड़ी थी जिसका इस्तेमाल निर्वासितों को नदी पार कराने के लिए किया जाता था। उसके दाएं और बाएं, ज़मीन तेज़ी से ऊपर उठती हुई खड़ी चट्टानों का रूप ले लेती थी जो उत्तरी किनारे के साथ मीलों तक फैली हुई थीं - एक दुर्जेय दीवार जो दंडका से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ रहे सबसे साहसी निर्वासितों को भी रोक सकती थी। उसके पीछे पायोशनी दर्रे की संकरी घाटी थी, जो एक प्राकृतिक अवरोध थी।

दर्रे के दूसरी ओर, सैनिक उस वीरान चौकी की इमारतों को देख सकता था, जो एक घने जंगल में छिपी हुई थीं। यह जंगल कभी दंडका का हिस्सा हुआ करता था, सदियों पहले जब पायोष्णि लोगों ने इस भूभाग को काटकर इसे मुक्त किया था। अब यह उत्तर की ओर कुछ मील तक फैला हुआ था, जिसके बाद हेहेया की समतल, कृषि योग्य भूमि शुरू हो जाती थी।
पहरेदार ने अपनी निगाहें नदी पर टिका दीं और आलस से सोचने लगा कि उसका स्थान लेने के लिए उसका उत्तराधिकारी कब आएगा। चौकी की अपेक्षाकृत गर्म और शुष्क हवा में लौटने की इच्छा ने सैनिक का ध्यान इतना भटका दिया कि वह पायोशनी नदी के दूसरी ओर जंगल के किनारे रेंगते हुए लोगों को देख ही नहीं पाया। संयोगवश, अंतिम क्षण में उसकी नज़र एक हलचल पर पड़ी, जब अंतिम व्यक्ति नदी में समा गया। अचानक सतर्क होकर, सैनिक ने धूसर-हरे पानी को ध्यान से देखना शुरू कर दिया। हालांकि यह बहुत दूर था और बारिश इतनी तेज़ थी कि दृश्यता कम हो रही थी, फिर भी उसे जलकुंभी के बीच पानी में कुछ सिर तैरते हुए दिखाई दिए। यह जानते हुए कि पायोशनी नदी मगरमच्छों से भरी हुई है, वह इस बात को पूरी तरह से नकारने ही वाला था कि तभी उसने देखा कि वह कतार उत्तरी किनारे की ओर बढ़ने लगी है।
कुछ ही क्षण बाद, जैसे ही बारिश अप्रत्याशित रूप से रुकी, उसने पानी में हाथों की छपछपाहट की स्पष्ट हलचल देखी, क्योंकि आकृतियाँ तैरने लगीं।
पेड़ के नीचे से निकलकर, सिपाही तेजी से चौकी की ओर भागा। कुछ सिपाही इमारतों के बाहर पहरा दे रहे थे, और जैसे ही वह उनकी आवाज की दूरी तक पहुंचा, सिपाही ने उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया।
“अलार्म बजाओ, अलार्म बजाओ,” वह घबराकर चिल्लाया। “कुछ निर्वासित जंगल से भागने की कोशिश कर रहे हैं।”
हालांकि चौकी पर ऐसा होना आम बात नहीं थी, फिर भी कुछ ही मिनटों में लगभग पचास सैनिक और एक दर्जन घुड़सवार इकट्ठा हो गए और नदी की ओर तेज़ी से बढ़ने लगे। जैसे ही वे पायोशनी दर्रे को पार करके नदी के पास पहुँचे, सैनिकों ने अपने हथियार निकाल लिए और अभ्यास की तरह सटीक रूप से फैल गए।
हालांकि, नदी पार करने के स्थान पर पहुंचने पर, सैनिकों को मानव गतिविधि का कोई संकेत नहीं मिला - न तो सुस्त नदी में, न ही उसके दोनों किनारों पर।
“तुरंत आत्मसमर्पण करो,” घुड़सवारों में से एक युवा सेनापति ने आदेश दिया।
आसपास के इलाके का जायजा लेते हुए उसने कहा, “विरोध करना व्यर्थ है। तुम हेहेया की सेना से घिरे हुए हो – भागने की कोई जगह नहीं है। सामने आ जाओ।”
कुछ नहीँ हुआ।

बारिश अब हल्की फुहार में बदल गई थी। कुछ सैनिक आस-पास के पेड़ों का जायजा ले रहे थे, जबकि कमांडर के नेतृत्व में कुछ अन्य सैनिक सावधानीपूर्वक नदी के किनारे की ओर बढ़े और पानी तथा किनारे पर खड़ी नाव का निरीक्षण किया। इसके बाद कमांडर ने कुछ देर तक नदी के दूसरे किनारे का जायजा लिया और फिर सिर हिला दिया।
“यहाँ कुछ नहीं है। अलार्म बजाने वाला सैनिक कहाँ है?”
कमांडर का घोड़ा अचानक हिनहिनाया और बेचैनी से इधर-उधर हिलने लगा, लेकिन किसी ने उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। संतरी आगे बढ़ा।
“क्या आपको यकीन है कि आपने किसी को नदी पार करने की कोशिश करते देखा था?” कमांडर ने अपने घोड़े को काबू में करने के लिए लगाम खींचते हुए पूछा। “या फिर आपको सिर्फ भ्रम हो रहा था?”
“मैंने नदी में कुछ आकृतियों को तैरते हुए देखा, महोदय। मुझे पूरा यकीन है।” “खैर, यहाँ कोई नहीं है, सिपाही,” कमांडर ने हाथ से इशारा करते हुए कहा। “यहाँ से निकलने का एकमात्र रास्ता चौकी की ओर जाना था। हम जानते हैं कि ऐसा नहीं हुआ क्योंकि हम उसी रास्ते से आए थे।”
“हो सकता है कि वे वापस जंगल में चले गए हों,” सैनिक ने अपना बचाव करने की कोशिश की।
“शायद...” घुड़सवारों में से एक ने हंसते हुए कहा। “या शायद तुमने कल रात कुछ ज्यादा ही शराब पी ली थी और उसका असर अभी पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ है।” सैनिकों ने उस टिप्पणी पर हल्की हंसी हंसना शुरू ही किया था और अपने हथियार नीचे कर रहे थे कि तभी नदी में एक जोरदार, उथल-पुथल भरी छपछपाहट हुई, जिसके बाद एक बेहद भयानक गर्जना सुनाई दी।
अगले ही पल, पायोशनी से एक विशाल, सींगों वाला राक्षस प्रकट हुआ, जिसने अपने काले, बालों वाले शरीर से जलीय पौधों को झाड़ दिया। जैसे ही सैनिक भय से जड़वत खड़े रह गए, उस जानवर ने कमांडर पर झपट्टा मारा और उसे कंधों से पकड़कर घोड़े से नीचे खींच लिया।
फिर, एक ही झटके में, उसने अपना बड़ा, चौड़ा मुंह खोला, जो नुकीले, दांतेदार दांतों से भरा हुआ था, और कमांडर का सिर उसके धड़ से अलग कर दिया।
उसी क्षण, सिर पर सींग वाले लगभग तीस सरीसृप जैसे जीव, जो आकार में राक्षस से छोटे लेकिन अधिक फुर्तीले थे, कीचड़ भरे पानी से चीखते हुए बाहर निकले।
दौड़ते, कूदते और चारों पैरों पर भागते हुए, छोटे जानवरों ने अचंभित सैनिकों

पर हमला कर दिया, अपने लंबे, पीछे हटने वाले पंजों से उन पर वार किए और अपने दांतों से उनकी गर्दन और कंधों को काट डाला।
आत्मरक्षा की भावना जागृत होते ही, हेहेया के कुछ सैनिक भाग गए, जबकि साहसी सैनिकों ने आत्मरक्षा के लिए अपने हथियार निकाल लिए। जो सैनिक डटे रहे, उन्होंने छोटे जानवरों को कुछ चोटें पहुँचाईं, लेकिन जब उनके सेनापति को मारने वाला राक्षस तट पर उतरा, तो वे डर के मारे काँप उठे।
बारह फीट से भी अधिक ऊँचा, उस दैत्य के पैर, शरीर और सिर बकरी जैसे थे, सिर पर पीछे की ओर मुड़े हुए दो बड़े सींग थे। लेकिन उसकी बड़ी, मांसल भुजाएँ और चेहरा कम से कम आंशिक रूप से मानव जैसे थे। उस राक्षस का मुँह बेहद बड़ा था, जो जबड़े और गालों से अलग होकर चौड़ा खुलता था। दो छोटे नथुने एक न के बराबर नाक की ओर इशारा करते थे, जिसके ऊपर दो निर्जीव आँखें थीं, जिनमें पुतलियाँ नहीं थीं। संगमरमर की तरह सफेद और चिकनी दोनों पुतलियाँ, बिना कुछ देखे, सामने घूर रही थीं।
फिर भी, अंधापन उस उत्पात मचाने वाले बूढ़े जानवर के लिए कोई समस्या पैदा नहीं करता प्रतीत होता था।
क्योंकि असुर स्वामी हिरण्याक्ष द्वारा सिंधुवर्त भेजे गए राक्षस अंधका ने तबाही मचाने के लिए सूंघने, छूने और सुनने की तीव्र इंद्रियों पर भरोसा किया था।
सेनापति के सिर का चूर-चूर मांस मुंह से थूकते हुए, अंधका ने शव को अपने कंधे पर उठाकर पायोष्ण नदी में फेंक दिया। फिर उसने कुछ सैनिकों को अपने हाथों में पकड़ा और जोर से दबाया, जिससे सैनिकों की हड्डियाँ दबाव से चटक गईं और चूर-चूर हो गईं। एक घुड़सवार सैनिक ने तुरंत राक्षस पर हमला किया, लेकिन उसका सिर मरोड़कर उसके कंधों से अलग कर दिया गया। और एक धनुर्धारी, जिसने राक्षस पर दो व्यर्थ तीर चलाए, उसे एक चट्टान से टकराकर दंडित किया गया, जिससे उसका सिर टकराते ही फट गया।
किले के साहसी सैनिकों ने जमकर लड़ाई लड़ी, लेकिन अंधका के नेतृत्व में हुए क्रूर हमले के आगे वे जल्दी ही कमजोर पड़ने लगे। और जब उन्होंने दंडका वन से जानवरों का एक नया झुंड निकलते और नदी में कूदते देखा, तो उनकी लड़ने की आखिरी ताकत भी खत्म हो गई।
बचे हुए सैनिक इधर-उधर भागते हुए, सहायता के लिए चीखते-चिल्लाते हुए, चौकी की किलेबंदी की ओर शरण लेने लगे। लेकिन अंधका और उसके पिशाचों की सेना ने उनका

पीछा किया और नदी पार करने के स्थान से लेकर पायोशनी की चौकी के अंदर तक तबाही मचा दी।
***

प्रांगण में पाँच सौ देव घोड़े पर सवार होकर पाँच पंक्तियों में व्यवस्थित रूप से खड़े थे। दोपहर की धूप उनके कांसे के कवच और ढालों पर चमक रही थी, जबकि हल्की हवा उनके हेलमेटों के पंखों को फड़फड़ा रही थी और उनमें से एक के हाथों में देवलोक का झंडा लहरा रहा था। केवल घोड़ों के खुरों की पत्थर पर बजने की बेचैन आवाज़ और प्रांगण की ओर देखने वाली दीर्घाओं में बैठे महल के सलाहकारों की कभी-कभार फुसफुसाहट ही सुनाई दे रही थी।
पांच स्तंभों के सबसे आगे दो देव अपने काले घोड़ों पर सवार थे, दोनों घोड़े अपने पीछे के जानवरों से आकार में काफी बड़े थे। आंगन में मौजूद बाकी देवों के विपरीत, दोनों सेनापति नंगे सिर थे - और उनके सीधे सुनहरे बालों, नुकीली नाक और झुकी हुई आंखों को देखकर स्पष्ट था कि वे जुड़वां थे।
महल के भीतर कहीं बजते हुए घंटे की खोखली ध्वनि से सन्नाटा टूट गया। जैसे ही भारी ध्वनि महल के चारों ओर की चट्टानों से टकराई, आंगन के ऊपर एक खाली बालकनी पर एक अधिकारी प्रकट हुआ।
"देवलोक के राजा इंद्र अश्विनी संघ को दर्शन देने के लिए यहाँ आए हैं," उन्होंने जाने से पहले घोषणा की।
कुछ क्षण बाद, इंद्र की विशाल आकृति बालकनी पर आ पहुँची। उनके पीछे एक अत्यंत सुंदर, सुडौल अप्सरा आई, जो लंबी और आकर्षक रूप से सुडौल थी, जिसका गोरा चेहरा उसकी जीवंत काली आँखों और उसके नंगे कंधों पर मोहक ढंग से गिरे हुए घने भूरे बालों के विपरीत था।
जैसे ही अप्सरा आकर उनके बगल में खड़ी हुई, इंद्र ने अपने विशाल हाथ पत्थर की दीवार पर टिका दिए और आंगन की ओर देखने लगे। तुरंत ही, घुड़सवार सेना के अग्रभाग पर मौजूद दोनों देवता घोड़ों से उतर गए और उन्होंने अपने सिर झुका लिए।
“हे महामहिम, अश्विनों का भाईचारा सिंधुवर्त जाने के लिए आपकी अनुमति की प्रतीक्षा कर रहा है,” जुड़वा भाइयों में से एक ने सिर उठाते हुए कहा। “सेनापतियों, मेरी अनुमति है,” इंद्र की आवाज़ प्रांगण में गूंज उठी। “उज्जायिनी जाओ और मेरे लिए वीषाद का खंजर ले आओ।” वह रुका, फिर गुस्से से बोला, “और याद रखना... अगर ज़रा सा भी विरोध हुआ, तो दया मत दिखाना। मनुष्य राजा दया का पात्र नहीं है।”

एक बार फिर झुककर, जुड़वा भाई अपने घोड़ों पर सवार हो गए। फिर, हेलमेट पहनकर, वे मुड़े और प्रांगण के दूसरे छोर पर स्थित विशाल द्वार से बाहर निकल गए। शेष घुड़सवार सेना उनके पीछे-पीछे चली और महल से दूर जाते हुए अपनी गति बढ़ा दी। इंद्र ने सवारों को जाते हुए देखा, उनके चौड़े, दाढ़ीदार चेहरे पर मुस्कान फैल गई। “मेरी प्रिय, मेरे लिए थोड़ा सोमा लाओ,” उन्होंने अप्सरा से कहा। “अश्विन बंधुत्व की सफलता के लिए मैं भी पी लूँ।”
“जैसा आप चाहें, स्वामी,” अप्सरा ने उत्तर दिया। वह बालकनी से सटे कमरे में गई और थोड़ी देर में एक प्याला लबालब लदे हुए स्वादिष्ट शराब के साथ लौट आई। इंद्र ने प्याले का आधा पेय गटक लिया और संतुष्टि की एक गहरी साँस ली। "जल्द ही हलाहल हमारा होगा," उसने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा। "हजारों वर्षों से मैं इस दिन, इस पल का इंतजार कर रहा था।"
“पर स्वामी, क्या अश्विनों की सफलता की उम्मीद करना अभी जल्दबाजी नहीं होगी?” अप्सरा ने शरारती अंदाज़ में अपना सिर झुकाया, उसकी रहस्यमयी निगाहें इंद्र पर टिकी थीं। “आपको ऐसा क्यों लगता है कि मानव राजा बिना लड़ाई के हार मान लेगा?”
“मेरी प्रिय उर्वशी, उसकी और उसके अनमोल छोटे राज्य की खातिर, मैं आशा करता हूँ कि वह इतनी मूर्खता न करे कि उनके रास्ते में आए,” इंद्र ने तिरस्कार से भरी आवाज में उत्तर दिया। वह कुछ देर रुका, क्योंकि दक्षिणी पुल से घोड़ों के खुरों की गर्जना हवा में गूंज रही थी, जो महल के चारों ओर फैली खाई से प्रतिध्वनित हो रही थी।
“क्या तुम्हें वो आवाज़ सुनाई दे रही है?” इंद्र ने अप्सरा का कंधा पकड़कर उसे अपने करीब खींचते हुए पूछा। “देवलोक की भयानक अश्विनी घुड़सवार सेना, जिसका नेतृत्व कुशल नासत्य और दसरा कर रहे हैं। उनके घोड़ों के खुर अवंती की धरती को बंजर धूल में मिला सकते हैं, और उनके सवार उज्जैनी नगर को चूर-चूर कर सकते हैं।”
“पर मुझे तो लगता है कि मानव राजा आसानी से डरने वाला नहीं है,” उर्वशी ने शरारती अंदाज़ में पलकें झपकाते हुए कहा, उसकी आवाज़ में चिढ़ाने का भाव था। “बेचारे नारद के मुंह पर तो महल का दरवाज़ा ही पटक दिया गया था।”
देवराज ने अपना सिर पीछे झुकाया और प्याला खाली कर दिया। फिर, अपना चेहरा उर्वशी के करीब लाकर, उन्होंने धीरे से उसके कान में फुसफुसाया, “यदि मनुष्य राजा ने फिर से मुझे रोकने की कोशिश की, तो मैं उसके हृदय में असहनीय भय उत्पन्न करने का वचन देता हूँ।”

उसका हाथ नीचे आया और अप्सरा की पतली कमर पर जाकर, उत्तेजना में उसके नंगे पेट को सहलाने और दबाने लगा। "उसने मेरी मित्रता के प्रस्ताव को ठुकराने की हिम्मत कैसे की - अब मैं उसे इंद्र की शत्रुता की भीषण शक्ति और क्रोध का अनुभव कराऊंगा।"

अँधेरा

सूर्यास्त में अभी एक घंटा बाकी था, लेकिन उज्जैन पर छाए घने बादलों ने शहर को अंधेरा कर दिया था, जिससे निवासियों को जल्दी ही दीपक जलाने पड़े। रुक-रुक कर हो रही बारिश और तेज हवाओं ने राजधानी को लगातार प्रभावित किया, जिससे अधिकांश नागरिक सड़कों से दूर रहे।
परिषद कक्ष के भीतर, दो महल सेवक छोटी मशालें लिए चुपचाप कदमों से चलते हुए दीवारों में बने आले में रखे दीपों को प्रज्वलित कर रहे थे। तीसरा सेवक कमरे में घूमकर खिड़कियाँ बंद कर रहा था ताकि ठंडी हवा से नए जलाए गए दीप बुझ न जाएँ।
विक्रमादित्य और उनके सलाहकार मेज के चारों ओर बैठे, सेवकों के काम समाप्त होने की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे। दीपों की रोशनी से धीरे-धीरे अंधकार छंट गया, और उनकी रोशनी में सिंधुवर्त का एक विशाल मानचित्र दिखाई देने लगा, जो लाल साटन में बुना हुआ था और सोने के धागों से कढ़ाई किया हुआ था, और परिषद की मेज पर फैला हुआ था।
अंत में, जब सभी दीपक जल उठे और सभी खिड़कियाँ बंद हो गईं, तो तीनों सेवकों ने झुककर प्रणाम किया और कक्ष से बाहर निकल गए। राजा ने भारी द्वार के बंद होने का इंतजार किया, फिर वरारुचि की ओर देखा।
“हां,” उसने गहरी सांस लेते हुए कहा। “आप लोग बीच में टोकने से पहले कुछ कह रहे थे...”

“मैं यह कह रहा था कि राजा हरिहर ने हमें जिन चार हजार सैनिकों और एक हजार घुड़सवारों का वादा किया था, वे पहले से ही अवंती में हैं और उदयपुरी की ओर जा रहे हैं,” वरारुचि ने उत्तर दिया। “इसलिए अब हम अपने कुछ सैनिकों को दक्षिण की ओर भेज सकते हैं।”
“हम इस पर विचार कर सकते हैं,” सम्राट ने सिर हिलाते हुए कहा, हालांकि यह विचार उन्हें परेशान करता हुआ प्रतीत हुआ।
“हाँ, लेकिन सवाल यह है कि हम उन्हें कहाँ तैनात करें?” धनवंतरी ने पूछा। मेज पर रखे नक्शे की ओर इशारा करते हुए उन्होंने आगे कहा, “देवी ने केवल इतना कहा है कि यह... अदृश्य बुराई, जो भी हो, दक्षिण से आएगी। भौगोलिक दृष्टि से, दक्षिण एक बहुत बड़ा क्षेत्र है – यह उज्जैन के दक्षिण में किसी भी बिंदु पर लागू हो सकता है। अगर हमें यह नहीं पता कि यह चीज कहाँ से आएगी, तो हम अपनी सेना को कहाँ तैनात करें?”
"और तो और, हमें यह भी नहीं पता कि यह कब आएगा," वराहमिहिर ने उदास भाव से अपनी चेचक के निशानों से भरी ठुड्डी को रगड़ते हुए कहा।
विक्रमादित्य ने दृढ़ता से कहा, “उज्जायिनी की चौकी में सैनिकों को तैयार रहना चाहिए। अगर वे यहाँ मौजूद हैं, तो जैसे ही हमें इस मामले के बारे में कोई ठोस जानकारी मिलेगी, उन्हें तुरंत आवश्यकतानुसार भेजा जा सकता है।”
"यह व्यावहारिक सोच है," वेताला भट्टा ने मेज के चारों ओर देखते हुए सहमति जताई। "दक्षिण की ओर जाने वाले सभी संभावित प्रवेश बिंदुओं को बंद करने की कोशिश में खुद को बिखेरने से बेहतर यही है।"
जब सभी ने सहमति में सिर हिलाया, तो क्षपनाका ने बोलना शुरू किया, "शाही सेना के कितने सैनिकों को हमें तैयार रखना चाहिए?"
पार्षद अनिर्णय की स्थिति में एक-दूसरे को देखने लगे।
“जैसा कि वरारुचि ने कहा, हेहेया से चार हज़ार सैनिक और एक हज़ार घुड़सवार सीमा की ओर आ रहे हैं,” धनवंतरी ने अपने चौड़े कंधों को उचकाते हुए कहा। “शायद इतनी ही संख्या पर्याप्त होगी?”
आचार्य ने कहा, “हमें पश्चिम में त्वरित तैनाती के लिए पर्याप्त सैनिक तैयार रखने की भी आवश्यकता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि माता ओरेकल ने धूल की दीवार के बारे में क्या कहा था।”
“तो शायद आधी संख्या?” वरारुची ने अपने भाई की ओर जिज्ञासा भरी निगाहों से देखा। “शायद पाँच सौ तीरंदाजों के साथ जो उन्हें सहायता प्रदान कर सकें?”

जब विक्रमादित्य इस पर विचार कर रहे थे, तभी कालिदास ने अपना गला साफ किया। “शपथ के योद्धा भी हमारे अधीन हैं, सम्राट,” उन्होंने याद दिलाया।
“जी हां, लेकिन इन्हें आरक्षित रखें,” राजा ने उत्तर दिया। “संसप्तक ही अंतिम रक्षा पंक्ति होने चाहिए – जब बाकी सभी उपाय विफल हो जाएं।”
वरारुची की ओर मुड़ते हुए उन्होंने कहा, “इस दृष्टिहीन शक्ति का मुकाबला करने के लिए हमें कितने सैनिकों की आवश्यकता होगी, इसका अनुमान लगाना मुश्किल है। लेकिन फिलहाल, एक हजार पैदल सेना और पांच सौ घुड़सवार और तीरंदाजों की टुकड़ियां काफी होंगी। जरूरत पड़ने पर हम नगर रक्षक दल की दो-तीन टुकड़ियां भी शामिल कर सकते हैं। और वैसे भी, हममें से कुछ - या शायद हममें से अधिकांश - को रक्षा का नेतृत्व करना होगा।”
मामला सुलझ जाने पर वेताला भट्ट ने वरारुचि और वराहमिहिर को संबोधित करते हुए कहा, “यदि उज्जैन में सैनिकों की तैनाती की जा रही है, तो हमें दक्षिण से संदेशों को शीघ्रता से संप्रेषित करने के लिए एक व्यवस्था की आवश्यकता होगी।”
“राजगुरु, मैंने पहले ही दक्षिण की ओर संदेशवाहकों का एक नेटवर्क तैनात कर दिया है,” वरारुचि ने कहा। “मुझे एहसास हुआ कि बारिश के कारण हम संकेतों के प्रसारण के लिए सूर्ययंत्रों पर निर्भर नहीं रह सकते। और नमी और कम दृश्यता को देखते हुए, इस मौसम में फ्लेयर्स भी पूरी तरह से भरोसेमंद नहीं हैं।” “घुड़सवारों का विचार तर्कसंगत है,” आचार्य ने संतुष्टि से सिर हिलाया।
उसी क्षण, परिषद कक्ष के दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। जैसे ही पार्षदों ने मुड़कर देखा, दरवाजा खुला और एक राजमहल का कर्मचारी अंदर आया।
“सम्राट और नौ सदस्यों की परिषद को प्रणाम,” सेवक ने आचार्य को संबोधित करने से पहले कहा। “क्षमा करें, लेकिन राजगुरु, आपके निजी कक्ष में एक घुड़सवार आपका इंतजार कर रहा है। वह कहता है कि उसे एक महत्वपूर्ण संदेश देना है।” वेतला भट्ट ने विक्रमादित्य से एक नज़र का आदान-प्रदान किया, जिन्होंने सिर हिलाकर सहमति दी। मुख्य सलाहकार मेज से उठे और कमरे से बाहर चले गए। इसी बीच, सम्राट ने वरारुचि की ओर रुख किया।
“सीमा पर हालात कैसे हैं? राजा चंद्रवर्धन ने कहा था कि वह पांच हजार सैनिक भेजेंगे...”
“मैंने इसकी पुष्टि कर ली है,” वरारुची ने राजा को आश्वस्त करते हुए कहा। “कुछ देरी हुई है, लेकिन इस समय उनकी सेना वत्सा से सीमा पार कर रही है।”
"अनर्ता फेडरेशन से आने वाली अतिरिक्त सेना का क्या होगा?"

“प्रधान युगंधरा ने पंद्रह हजार सैनिकों का वादा किया था, जिनमें से नौ हजार आ चुके हैं। दुर्भाग्य से, मैंने उन सभी नौ हजार सैनिकों को विराटपुरी में राजा बाणहस्त के दरबार में भेज दिया है – मैंने सोचा कि किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए मत्स्य की सीमाओं को मजबूत करना बेहतर होगा।” वरारुचि ने खेद से अपने बालों में उंगलियां फिराईं। “शायद मुझे आधे सैनिकों को अपने पास ही रखना चाहिए था और उन्हें उदयपुरी भेज देना चाहिए था। तब हम यहाँ और अधिक सैनिकों को तैयार रख सकते थे ताकि किसी भी आपात स्थिति से निपट सकें…” “नहीं! हमारे सैनिकों को अग्रिम पंक्ति में होना चाहिए,” विक्रमादित्य ने अपने भाई के विचारों को समझते हुए बीच में ही टोकते हुए कहा। “वत्स, हेहेया और अनर्तों ने इस समझ के साथ अपना समर्थन देने का वादा किया है कि अवंती की शाही सेना सीमा पर उनकी अपनी सेनाओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सिंधुवर्त की रक्षा करेगी। उन्होंने जो सेना भेजी है, वह अतिरिक्त सैनिक हैं, हमारे सैनिकों का विकल्प नहीं। आक्रमणकारियों को रोकना हम सबकी साझा ज़िम्मेदारी है, इसलिए चाहे कुछ भी हो जाए, हमें अवंती की थोड़ी सी जीत के लिए अपनी और सेना को पीछे नहीं रोकना चाहिए। दक्षिण से जो भी आ रहा है, वह सिरदर्द है, लेकिन हमें उन दो हज़ार सैनिकों से ही काम चलाना होगा जिनका हमने पहले ही निर्णय ले लिया है। आइए, अपने सहयोगियों के भरोसे को तोड़े बिना इसका सामना करें।” राजा के शब्दों से आहत और आहत होकर, कुछ देर तक कोई नहीं बोला। राजचिकित्सक ने विषय बदलते हुए मौन को तोड़ा। "अमारा सिंह से कोई खबर मिली?"
“आज तो कुछ नहीं हुआ, इसलिए मुझे लगता है कि सब कुछ नियंत्रण में है। लेकिन कल उनके संदेश में यह ज़रूर लिखा था कि उन्होंने सीमा पर सैनिकों की तैनाती की निगरानी शुरू कर दी है।” वरारुचि ने बाद में यह भी जोड़ा, “संदेश में सत्यवेद को एक घमंडी, कायर और मूर्ख भी बताया गया था।”
मेज के चारों ओर मुस्कुराते हुए पार्षदों के चेहरे दिखाई दिए, जिन्होंने निराशा में सिर हिलाया। यहां तक कि शंकु ने भी अपनी आदत के अनुसार संकोच छोड़ दिया और हल्की सी हंसी हंस पड़ी।
"राज्यपाल ने अमरा सिम्हा को ज़रूर नाराज़ कर दिया होगा और उसी वजह से उसका सिर काट दिया गया होगा," धनवंतरी ने हंसते हुए कहा।
“अमरा सिंह को उससे और क्या उम्मीद थी!” वराहमिहिर ने विस्मय से कहा। “हम भली- भांति जानते हैं कि सत्यवेद कितना असहनीय हो सकता है। मुझे यह विश्वास करना कठिन लगता है कि राज्यपाल आचार्य वेदविद्या और पार्षद सगोपना के ही कुलीन वंश से आते हैं – ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।” एक अतिरंजित सिहरन के साथ

उन्होंने आगे कहा, “कल्पना कीजिए हमारी क्या हालत होती अगर हमें हर दिन इस मेज पर सत्यवेद सहना पड़ता?”
“उन्हें मलावा भेजे जाते देखना बहुत राहत की बात थी,” वररुचि ने सहमति जताते हुए कहा। “इसके लिए हम आचार्य के जितने भी आभारी हों, कम है।”
विक्रमादित्य ने मुस्कुराते हुए बीच में दखल देते हुए कहा, "उस आदमी पर ज्यादा सख्ती मत बरतो। मैं मानता हूँ कि वह थोड़ा अहंकारी और कुछ हद तक अक्षम है, लेकिन इसके अलावा वह बिल्कुल हानिरहित है।"
“अभिमान और अक्षमता – इससे अधिक अपने साथी मनुष्यों को और क्या नुकसान पहुँचाना चाहिए, मेरे महाराज?” धनवंतरी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।
हंसी की गूंज थमने के बाद सम्राट ने अपने भाई से फिर पूछा, “अमारा सिंह ने घटकरपारा के हालचाल के बारे में कुछ बताया क्या?” राजा की आवाज में चाचा जैसी चिंता का हल्का सा भाव था।
“नहीं, उन्होंने ऐसा नहीं किया,” वरारुचि ने उत्तर दिया। “लेकिन उन्होंने घटाकरपारा के मित्र अतुल्यातेजा – जो उदयपुरी में छावनी कमांडर थे – की प्रशंसा की थी। उन्होंने कहा था कि लड़का बहुत ही होशियार और कुशल था, और सैनिकों की आवाजाही के समन्वय में बहुत मददगार साबित हो रहा था।”
"तो शायद उन्हें शाही सेना में तबादला करके पुरस्कृत किया जाना चाहिए," वराहमिहिर ने सुझाव दिया।
मेज के चारों ओर बैठे लोगों को सहमति में सिर हिलाते देख क्षपनाका ने बोलना शुरू किया, “वराहमिहिर, आपकी मंशा नेक है, लेकिन मैं असहमत हूँ। अगर सभी सर्वश्रेष्ठ सैनिकों को शाही सेना में भर्ती कर लिया जाए, तो सीमा रक्षक दल का क्या होगा? अपने पैरों पर खड़े रहने के लिए सीमा रक्षक दल को भी प्रतिभाशाली और योग्य नौजवानों की ज़रूरत है।”
वराहमिहिर ने इस पर गंभीरता से विचार किया। अंत में उन्होंने कहा, “आप सही कह रहे हैं। शाही सेना को सर्वश्रेष्ठ बुद्धिजीवियों से भरना एक मजबूत सीमा रक्षक दल बनाने के उद्देश्य को ही विफल कर देता है। हमें...” वे रुक गए और उनकी नज़र दरवाजे की ओर गई, जहाँ वेताला भट्टा ने अभी-अभी प्रवेश किया था। “क्या हुआ, राजगुरु? कोई समस्या है?”
आचार्य चुपचाप मेज पर लौट आए, अपनी कुर्सी पर बैठ गए और अपने सामने खड़े लोगों के चेहरों को गौर से देखने लगे। जब उन्होंने सम्राट की ओर रुख किया, तो उनकी आवाज़ गंभीर और संयमित थी। “घुड़सवार हमारे पूर्वी जासूसों से खबर लाया है। राजा सिद्धसेन की मृत्यु हो गई है।”

कमरे में सन्नाटा छा गया, जिसे धनवंतरी ने तोड़ा। “बेचारा, जब वह राजसूय यज्ञ के लिए यहाँ आया था, तब वह मुझे ठीक नहीं लग रहा था। मेरा इरादा उसे कुछ दवा देने का था...”
राजगुरु ने राजचिकित्सक की बात काटते हुए कहा, “सिद्धसेना की मृत्यु बीमारी या वृद्धावस्था से नहीं हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी हत्या की गई थी – उन्हें गिरिव्रज के महल की सीढ़ियों से धक्का देकर गिरा दिया गया था।” पार्षदों के चेहरों पर सदमे और घृणा के भाव उभर आए।
“उसे किसने धक्का दिया?” विक्रमादित्य ने पूछा।
"ऐसा लगता है कि यह उसका अंगरक्षक, सजाया था।"
“यह असंभव है,” वररुचि चिल्लाया। “मैंने सिद्धसेना के साथ युद्ध में सजय को देखा है। वह ऐसा सैनिक है जो अपने राजा के लिए अपनी जान देने को तैयार रहता है। वह सिद्धसेना के प्रति विश्वासघाती नहीं हो सकता।”
“फिर भी, इसे मगध के खिलाफ किकाटा जनजाति की साजिश के रूप में पेश किया जा रहा है,” आचार्य ने कंधे उचकाते हुए कहा। “सजय किकाटा जनजाति से था।”
“क्या गार्ड की इस हरकत का कोई गवाह था?” सम्राट आगे झुके और वेताल भट्ट के चेहरे को गौर से देखा। “एक गवाह था – स्वयं शूरसेना।”
राजा ने आश्चर्य से अपनी भौहें ऊपर उठाईं। "और क्या पहरेदार ने राजा की हत्या करने की बात कबूल कर ली है?"
राजगुरु ने धीरे से अपना सिर हिलाया। "ऐसा लगता है कि शूरसेना ने बदला लेने के लिए उसकी हत्या कर दी।"
पार्षदों ने इस खबर को पचा ही लिया था कि सम्राट अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गए। उन्होंने दूर देखते हुए कहा, "मगध में हालात ठीक नहीं हैं।"
“ठीक नहीं, मतलब...?” वरारुची ने सावधानी से पूछा।
“मेरा मतलब है, मगध में जो हो रहा है, वह सिंधुवर्त में हम सबके लिए बुरी खबर है।” विक्रमादित्य ने अपने सामने खड़े हैरान चेहरों को देखा। “मैं समझाता हूँ... जब देव नारद यहाँ आए थे, हमारी मित्रता खरीदने और कटार के लिए समझौता करने की कोशिश कर रहे थे, तब उन्होंने कुछ ऐसा कहा था जिसने मुझे झकझोर दिया।” राजा ने सांस लेने के लिए विराम लिया, और कालिदास ने बीच में ही कहा, "मुझे याद है कि उन्होंने कहा था कि पूर्व में कुछ गड़बड़ होने वाली है।"
विक्रमादित्य ने उंगलियां चटकाते हुए कहा, "बिल्कुल सही। शायद नारद इसी बात का जिक्र कर रहे थे।"

पार्षदों ने एक-दूसरे की ओर देखा, उनके चेहरे गंभीर थे। अंत में वराहमिहिर बोले।
पश्चिम में हूण और शक, दक्षिण से एक अदृश्य, नामहीन बुराई, और अब पूर्व में मगध... मुझे आश्चर्य है कि उत्तर ने हमारे लिए कौन-कौन से भयानक आश्चर्य छिपा रखे हैं।
***

नकाबपोश आकृति के दबे कदमों की आहट सुनाई दे रही थी, जो उदयपुरी की अंधेरी गलियों से सरकती हुई यथासंभव छाया में छिपी हुई थी। वह आकृति उत्तर दिशा में, किले और शहर के केंद्र से दूर, उदयपुरी के उन इलाकों की ओर बढ़ रही थी, जहाँ घर उत्तरोत्तर छोटे होते जा रहे थे और गलियाँ संकरी और अधिक गंदी होती जा रही थीं।
इस घनी आबादी वाले कस्बे में केवल एक ही चीज बढ़ती हुई दिखाई दी, और वह थी गरीबी और संगठित अपराध।
फिर भी, वह आकृति बिना किसी भय के आगे बढ़ती रही, खुले, उफनते नालों को पार करती हुई और दुर्गंध से भरी उस भूलभुलैया में सहजता से इधर-उधर घूमती रही।
अंततः, एक छोटी, सुनसान गली में चढ़कर, वह आकृति एक अज्ञात इमारत के सामने रुक गई, जिसका दरवाज़ा खुरदरा और लकड़ी का था।
आस-पास का जायजा लेते हुए, उस व्यक्ति ने दरवाजे पर चार बार तेजी से दस्तक दी। लगभग तुरंत ही, अंदर से कुंडी की आवाज आई और दरवाजा कुछ इंच खुल गया। दरार से हल्की रोशनी अंदर आई, और दरवाजे के पीछे से एक कर्कश आवाज सुनाई दी।
"कौन है भाई?"
"यह मैं हूँ," उस आकृति ने बुदबुदाते हुए कहा और अपने सिर और चेहरे को दिखाने के लिए हुड को पीछे धकेल दिया।
अंदर मौजूद व्यक्ति ने निरीक्षण के लिए एक लैंप उठाया। अगले ही पल, दरवाजा खुल गया और आगंतुक अंदर आ गया।
"स्वागत है महोदय," उस व्यक्ति ने कहा और अतिथि को एक प्रतीक्षालय में ले जाकर उसके पीछे दरवाजा बंद कर दिया।
"उम्मीद है, यह शुरू नहीं हुआ है?" आगंतुक ने अपना लबादा उतारते हुए पूछा। “जी नहीं महोदय। अभी थोड़ा और समय है।” कुछ देर रुकने के बाद, कर्मचारी ने कहा, “आपका दोस्त आखिरी कमरे में आपका इंतजार कर रहा है।”

आगंतुक प्रतीक्षालय से आगे बढ़कर दोनों ओर दरवाजों वाले एक लंबे गलियारे में प्रवेश कर गया। गलियारे के अंतिम छोर पर पहुँचकर उसने बिना दस्तक दिए एक दरवाजा खोल दिया।
कमरे के अंदर एक मोटा, अधेड़ उम्र का आदमी एक जर्जर दीवान पर बैठा था। यह आत्रेय था, जो मलावा प्रांत में बाजरा और हल्दी के सबसे बड़े व्यापारियों में से एक था।
“आइए, आइए,” आत्रेय ने मुस्कुराते हुए ऊपर देखते हुए कहा। दीवान पर खाली जगह पर हाथ फेरते हुए उन्होंने आगे कहा, “बैठ जाइए। एक पल के लिए तो मुझे लगा कि आप आज नहीं आएंगे – मैं आधे घंटे से इंतज़ार कर रहा हूँ। आपको इतनी देर क्यों लगी, राज्यपाल जी?”
सत्यवेद ने गुनगुनाते हुए जवाब दिया, “ऐसा हो ही नहीं सकता था कि मैं न आता।” उन्होंने अपने कुछ बिखरे बालों को समेटते हुए कहा, “आखिर आज का युद्ध खास है। बस राजमहल से कुछ मेहमान आए हुए हैं, जिनका मुझे स्वागत करना था – इसी वजह से मुझे देर हो गई।” राज्यपाल के आराम से बैठते ही आत्रेय उनके करीब झुक गए। उन्होंने धीमी आवाज़ में पूछा, “तो क्या आपके पास मेरे लिए कुछ उपयोगी जानकारी है?”
सत्यवेद ने अपने वस्त्र की तहों में खोजबीन की और ताड़ के पत्तों पर लिखा एक मोटा-सा स्क्रॉल निकाला। व्यापारी को देते हुए उन्होंने कहा, “इसमें मलावा की सीमा पर तैनात सैनिकों के बारे में सारी जानकारी है। महत्वपूर्ण स्थानों पर सैनिकों की संख्या, रक्षा प्रतिष्ठान, स्थापित संकेत प्रणालियाँ... सब कुछ।”
“बहुत बढ़िया,” आत्रेय ने मुस्कुराते हुए कहा। “मैं इसे कल भिजवा दूंगा।” “ध्यान रखना, कहीं यह खो न जाए – मैंने इसे बड़ी मुश्किल से हासिल किया है। साथ ही, संदेशवाहक को बता देना कि अब यह चौकी पार्षद अमारा सिम्हा के नेतृत्व में है, जो स्वयं सैनिकों की गतिविधियों की निगरानी कर रहे हैं। मुझे यकीन है कि रेगिस्तान में रहने वाले तुम्हारे दोस्त उन्हें याद रखेंगे।”
“हमारे रेगिस्तान से आए दोस्त,” आत्रेय ने सुधार करते हुए कहा। “मेरा मानना है कि पार्षद उज्जैन से आए उन मेहमानों में से एक हैं जिनका आप स्वागत करने में व्यस्त हैं?”
“जी हां,” सत्यवेद ने उत्तर दिया। “दूसरा व्यक्ति घटकरपारा है, जो राजा का भतीजा है।”

“वाह, वाह... इस जानकारी से हमें बोनस मिलेगा।” आत्रेय ने अपने थैले में हाथ डाला और डोरी से बंधी एक छोटी थैली निकाली। उसने थैली को हिलाया और सिक्कों की खनक सुनकर मुस्कुराया। “पिछली जानकारी के लिए ये लो तुम्हारा हिस्सा।” थैली लेते हुए राज्यपाल मुस्कुराए। "चलो अब चलते हैं। हमें लड़ाई नहीं चूकनी चाहिए," उन्होंने उठते हुए कहा।
दोनों आदमी गलियारे से वापस लौटे और बाईं ओर एक गंदे भंडारगृह में मुड़ गए, जहाँ सत्यवेद को अंदर लाने वाला व्यक्ति एक स्टूल पर बैठा था। मेहमानों को देखकर वह उठा और एक कोने में रखे एक बड़े धातु के संदूक के पास गया। संदूक को एक तरफ धकेलकर उसने फर्श पर बने एक गुप्त दरवाजे को खोल दिया।
सत्यवेद और आत्रेय छिपे हुए दरवाज़े से फिसलकर अंदर गए और एक खुरदरी लकड़ी की सीढ़ी से नीचे उतरे। सीढ़ी के नीचे एक छोटा सा कमरा था, जिसकी दूर वाली दीवार में एक खिड़की बनी हुई थी। खिड़की तार की जाली से ढकी हुई थी, जिससे दीपक की रोशनी अंदर आ रही थी। खिड़की की तरफ से बातचीत की हल्की-हल्की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी।
सत्यवेद खिड़की के पास पहुंचा और बाहर देखने लगा, उसकी आँखों में आशा की चमक थी। खिड़की से एक कीचड़ का गड्ढा दिखाई दे रहा था, जिसके चारों ओर लकड़ी की कुर्सियाँ ऊँची-ऊँची कतारों में लगी हुई थीं। वह कच्चा अखाड़ा मज़दूर वर्ग के लोगों से खचाखच भरा था, जो आपस में बातें कर रहे थे और खुशी से चिल्ला रहे थे। कीचड़ के गड्ढे के दोनों ओर दो आदमी बैठे थे, दोनों के हाथों में एक-एक बड़ा मुर्गा था। एक मुर्गा काला था और दूसरा लाल-भूरा।
"वह कौन सा होगा, महोदय?"
राज्यपाल ने पीछे मुड़कर देखा तो उनके और आत्रेय के पीछे दरबारी खड़ा था। सत्यवेद ने व्यापारी से मिली थैली दरबारी की ओर फेंकते हुए कहा, "मैं रक्षक के साथ ही चलूँगा, बिल्कुल।"
“दोस्त, यह एक बहुत बड़ी गलती होगी,” आत्रेय ने मुस्कुराते हुए कहा और एक और थैली कर्मचारी को दे दी। “आज रात तो मेरी शर्त काले रंग के प्रतियोगी पर है। मैंने सुना है कि वह गोश्रृंगा प्रांत में एक बड़ा चैंपियन है।”
लेकिन मलावा में केवल एक ही चैंपियन है और वह है मेरा लाल राजा।
“सचमुच लाल राजा... आज रात अपने ही खून से लाल, मैं तो यही कहूंगा,” आत्रेय ने खिड़की पर सत्यवेद के साथ शामिल होते हुए हंसते हुए कहा।
“उसका खून या प्रतिद्वंद्वी का... देखते हैं,” राज्यपाल ने पलटवार किया।

दोनों व्यक्ति अपने निजी कक्ष से कीचड़ के गड्ढे को देख रहे थे, जो घर के विशेष मेहमानों के लिए आरक्षित तीन कक्षों में से एक था। ये मेहमान कुलीन परिवार में जन्मे या उच्च पद और विशेषाधिकार प्राप्त लोग थे; ऐसे लोग जिन्हें उदयपुरी की आम जनता के साथ घुलना-मिलना पसंद नहीं था। फिर भी, वे इतने धनी थे कि मुर्गे की लड़ाई के अवैध खेल पर भारी रकम दांव पर लगा सकते थे।
रेफरी कीचड़ के गड्ढे में उतरा और नियम पढ़ने लगा, लेकिन अखाड़े के चारों ओर मौजूद लोगों के शोर में उसकी आवाज़ लगभग दब गई। आखिरकार, रेफरी पीछे हटा और लड़ाई शुरू करने का इशारा किया। देखते ही देखते, मुर्गे अपने मालिकों की पकड़ से छूटकर एक-दूसरे के चारों ओर चक्कर लगाने लगे, उनके बाल खड़े हो गए।
मिट्टी के गड्ढे के चारों ओर गर्जना गूंज उठी, सत्यवेद ने अपने होंठ चाटे और पक्षियों को निहारा, उसकी आँखें फटी रह गईं और माथे पर पसीना आ गया। और जब मुर्गे एक-दूसरे पर जानलेवा क्रोध से झपटे, तो राज्यपाल की आँखें आनंद से आंशिक रूप से बंद हो गईं।
सत्यवेद को शर्त जीतने की उम्मीद से उत्साह नहीं था। एक तरह से, उसे इस बात की खास परवाह नहीं थी कि उसका पसंदीदा लाल राजा काले चिड़िया के हाथों मारा जाए और उसे गुप्त अखाड़े से खाली हाथ लौटना पड़े। असल में, उसकी धड़कनें तेज़ करने वाली बात थी चिड़ियों को एक-दूसरे पर हमला करते और चोंच मारते देखना, पंख चारों ओर उड़ रहे थे क्योंकि वे जीवित रहने के लिए बेताब होकर एक-दूसरे को नोच रही थीं।
इन खूनी लड़ाइयों से मिलने वाला रोमांच ही उन दिनों राज्यपाल के जीवन का एकमात्र लक्ष्य था।
बदले की गहरी, अथाह लालसा के अलावा, और भी बहुत कुछ है।
***

Dhanavantri awoke with a start.
एक-दो पल के लिए, भ्रमित होकर, वह अपने चारों ओर के धुंधलेपन को घूरता रहा। फिर धीरे-धीरे उसके दिमाग में एक कम रोशनी वाले लैंप की हल्की चमक, उसके पैर को हिलाते हुए किसी हाथ का लगातार दबाव और उसके बिस्तर के पास से आती हुई एक महिला की आवाज़ का एहसास हुआ।
"उठना..."
चिकित्सक ने एक कोहनी के बल खुद को ऊपर उठाने की कोशिश की। "क्या हुआ?" उसने बुदबुदाते हुए अपनी पत्नी मदारी की छोटी, मोटी आकृति को देखा जो बिस्तर के पास खड़ी थी।

“सम्राट ने तुम्हें बुलवाया है,” मदारी ने उत्तर दिया। “राजमहल तक ले जाने के लिए बाहर एक रथ इंतज़ार कर रहा है। लगता है रानी के शयनकक्ष में तुम्हारी ज़रूरत है।”
“क्यों? क्या हुआ?” चिकित्सक की आवाज घबराहट से तेज हो गई और वह बिस्तर से नीचे उतर गया। “क्या रानी ठीक हैं?”
"रथ के साथ आए दूत ने कहा कि विशाखा बोलीं... और उन्होंने अपनी आँखें हिलाईं।" "क्या!"
धनवंतरी अचानक रुक गया और आश्चर्य से अपनी पत्नी की ओर देखने लगा।
"ऐसा लगता है कि उसे इससे ज्यादा कुछ पता ही नहीं है," मदारी ने कंधे उचकाते हुए कहा।
चिकित्सक ने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला। उन्होंने कहा, "संदेशवाहक को बता दीजिए कि मैं एक पल में उनके पास आ रहा हूँ।"
दस मिनट बाद जब धनवंतरी जल्दी से विशाखा के कक्ष में पहुँचे, तो महल के सभी लोगों के चेहरे चिंतित और आशा से भरे हुए थे। विक्रमादित्य विशाखा के पलंग के एक तरफ खड़े थे, जबकि दूसरी तरफ क्षपणक अपनी बहन का हाथ धीरे से सहला रही थीं। महारानी उपश्रुति क्षपणक के बगल में एक स्टूल पर बैठी नर्स से धीमी आवाज़ में बातें कर रही थीं। आचार्य, वरारुचि और कालिदास राजा से थोड़ा पीछे बैठे थे। लेकिन विशाखा स्वयं अपने बिस्तर पर बेजान पड़ी रही और खाली निगाहों से अंतरिक्ष को घूरती रही।
बिस्तर के पास पहुँचकर चिकित्सक ने कमरे में चारों ओर देखा। "मुझे कौन बता सकता है कि वास्तव में क्या हुआ था?" उसने धीमी आवाज़ में पूछा।
"उन्होंने कहा कि उसने बात की," क्षपनाका ने ऊपर देखते हुए कहा, उसके होंठ कांप रहे थे और आंखें खुशी से नम थीं। "वह ठीक हो रही है।"
धनवंतरी ने क्षपणका के प्रति अचानक उमड़ी करुणा से सिर हिलाया। एक कनिष्ठ चिकित्सक के रूप में, उन्हें राजा वल्लभ का गठिया का इलाज करने का अवसर मिला था, और निषाद राज्य की उन यात्राओं के दौरान ही उन्होंने पहली बार दोनों बहनों को छोटी बच्चियों के रूप में देखा था। तब भी, क्षपणका और विशाखा के बीच गहरा संबंध था, जो उनके पिता द्वारा उन्हें अवंती की शरण में छोड़ने के बाद और भी मजबूत हो गया, ताकि वे उनकी सुरक्षा की चिंता किए बिना हूणों से लड़ सकें। लड़कियों के इस लगाव और परस्पर निर्भरता ने ही उन्हें वल्लभ के दरबार में हुए नरसंहार के सदमे से उबरने में मदद की थी, और इस त्रासदी ने आने वाले वर्षों में बहनों को और भी करीब ला दिया था।

और फिर वह भयानक हादसा हो गया। धनवंतरी जानती थी कि विशाखा की हालत ने क्षपणका को न केवल उसकी सबसे करीबी साथी से वंचित कर दिया था, बल्कि उसे भावनात्मक रूप से भी तोड़ दिया था। इसीलिए, दो वर्षों तक उसने विशाखा की पूरी देखभाल और ध्यान रखा, रानी को पहले जैसा बनाने के लिए अपनी पूरी क्षमता से प्रयास किया। इसलिए, यह स्वाभाविक ही था कि अब छोटी बहन के दिल में आशा की एक छोटी सी किरण जग उठी थी।
"रानी को बोलते हुए किसने सुना?" उसने शयनकक्ष में चारों ओर देखा, और गले में अटकी छोटी सी गांठ को निगलने की कोशिश की।
सवाल के जवाब में दो नौकरानियां आगे आईं। धनवंतरी ने पूछा, "उसने क्या कहा?" "मुझे सब कुछ विस्तार से बताओ।"
"माननीय महोदय, हमेशा की तरह मैं रानी के बगल में बैठी थी, तभी मैंने देखा कि कमरे में ठंडी हवा चलने लगी है," एक नौकरानी ने उल्लेखनीय स्पष्टता के साथ कहा।
“यह कब हुआ था?” चिकित्सक ने बीच में ही टोकते हुए पूछा।
“लगभग पंद्रह मिनट पहले, महोदय। मुझे लगा कि रानी को ठंड लग रही होगी, इसलिए मैंने उनसे रजाई लाने को कहा।” नौकरानी ने अपने बगल में खड़ी लड़की की ओर इशारा करते हुए कहा, “जब हम रानी को रजाई ओढ़ा रहे थे, तभी उन्होंने बात की।” "क्या आपको यकीन है?"
जी हां, माननीय न्यायाधीश। हम दोनों ने उनकी बात सुनी।
दूसरी लड़की ने बड़ी-बड़ी गोल आंखों से धनवंतरी की ओर देखा और सिर हिलाया। रानी ने क्या कहा?
“माननीय न्यायाधीश, हमें यकीन नहीं है, क्योंकि उसके शब्द कराहने की आवाज में निकले। लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे ‘बारिश का पानी’।”
दूसरी लड़की ने भी सहमति में सिर हिलाया।
चिकित्सक ने आसपास के चेहरों पर सरसरी नजर डाली। "बस इतना ही? मुझे बताया गया था कि उसने अपनी आंखें भी हिलाई थीं।"
“जी हां, महाराज। हम चौंक गए थे, इसलिए हमने रानी की ओर देखा। और ऐसा लगा जैसे वह सीधे हमारी ओर देख रही हों। मतलब, सामान्य तरीके से नहीं। फिर उनकी नज़रें घूमीं। पहले बाईं ओर हल्की सी झपकी, फिर उन्होंने उस तरफ देखा।” नौकरानी ने कमरे के आखिरी छोर पर स्थित खिड़की की ओर इशारा किया। “उन्होंने कुछ देर तक उस तरफ देखा। फिर उन्होंने हमारी ओर देखा और...”
नौकरानी का चेहरा निराशा से उतर गया। "...और वह इस हालत में वापस आई।"

“ठीक है, मैं चाहता हूँ...” धनवंतरी कुछ निर्देश देने ही वाला था कि वेतला भट्टा ने एक कदम आगे बढ़ाया।
“मैं रानी के मन की बात जानने की दोबारा कोशिश कर सकता हूँ,” उसने कहा। थोड़ी देर रुककर उसने आगे कहा, “अगर यहाँ मौजूद सभी लोग मुझे अनुमति दें, तो। खासकर आप।” राजगुरु ने धनवंतरी की ओर देखा।
चिकित्सक के उत्तर देने से पहले ही विक्रमादित्य आचार्य की ओर मुड़ गए। उन्होंने उत्सुकता से पूछा, “क्या आप हमारे लिए यह करेंगे? आपको पता चल जाएगा कि उसके मन में क्या चल रहा है?”
"मैं कोशिश कर सकता हूँ... अगर हमारे डॉक्टर अनुमति दें तो।"
“मुझे इसमें कोई बुराई नहीं दिखती, तो क्यों नहीं?” मुख्य सलाहकार के लिए जगह बनाने के लिए धनवंतरी पीछे हट गए।
“मेरा भाला लाओ,” आचार्य ने आदेश दिया।
कुछ मिनट बाद, वेताला भट्ट पलंग के चरणों में आँखें बंद करके खड़े थे, एक हाथ में भाला था, जिसकी नुकीली नोक के पास दो मानव खोपड़ियाँ बनी हुई थीं। उनका दूसरा हाथ मुट्ठी में बंद था और छाती से लगा हुआ था। राजगुरु ने अपने होंठ हिलाते हुए फुसफुसाहट की, मंत्रों की आवाज़ भारी सन्नाटे में मुश्किल से सुनाई दे रही थी। भाले पर बनी खोपड़ियाँ मंद लाल रंग से चमक रही थीं, उनके छिद्रों से प्रकाश निकल रहा था, मानो अंदर से प्रकाशित हो रही हों। चमकती खोपड़ियों को देखकर दोनों दासियाँ भय से पीछे हट गईं।
काफी समय बीतने के बाद—शायद कुछ मिनट ही बीते होंगे, लेकिन शयनकक्ष में मौजूद लोगों को घंटों का समय लगा—राजगुरु ने अपनी आँखें खोलीं और अपना हाथ नीचे किया। उन्होंने एक पल के लिए विशाखा के चेहरे को निहारा, फिर ऊपर आशा भरी निगाहों से घिरे लोगों की ओर देखा।
“मैं कुछ भी देख या पढ़ नहीं पा रहा था,” उसने एक गहरी आह भरते हुए कहा। “मुझे बस घोड़ों के खुरों की सरपट दौड़ने की आवाज़ सुनाई दे रही थी, पिछली कुछ बार की तरह। उसका दिमाग पूरी तरह से सुन्न है। कुछ भी नहीं बदला है – मुझे खेद है कि मैंने आपकी उम्मीदें जगा दीं।”
आचार्य के जाते ही क्षपणका की आँखों में आँसू भर आए और एक आँसू उसके गाल पर लुढ़क गया। रानी उपश्रुति ने तुरंत उसे दिलासा देते हुए अपने कंधे पर हाथ रख दिया। धनवंतरी ने सम्राट की ओर एक नज़र डाली, जो निराशा से बिस्तर से नज़रें हटाकर दूसरी ओर देखने लगे।

“ठीक है... अब से रानी पर लगातार नज़र रखी जाएगी,” चिकित्सक ने आगे बढ़कर उम्मीद जगाते हुए कहा। विशाखा की जाँच करने के लिए झुकते हुए उन्होंने आगे कहा, “अगर ऐसी घटना दोबारा होती है, तो हमें इसे नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। अब मेरा सुझाव है कि हम रानी को आराम करने दें।”
जैसे ही कमरा खाली होने लगा, क्षपणका ने विक्रमादित्य और धनवंतरी की ओर विनती भरी निगाहों से देखा। “मैं थोड़ी देर रुकना चाहती हूँ,” उसने कहा। “क्या मैं रुक सकती हूँ?”
राजा और वैद्य ने सिर हिलाया और बाकी लोगों के साथ कमरे से बाहर निकल गए। कमरे से बाहर निकलते ही सब लोग धनवंतरी के चारों ओर जमा हो गए।
“इस बारे में आपकी क्या राय है?” रानी उपश्रुति ने पूछा।
"कहना मुश्किल है, महारानी जी," चिकित्सक ने कंधे उचकाते हुए कहा। विक्रमादित्य ने कहा, "पिछले दो वर्षों में ऐसा कभी नहीं हुआ। यह निश्चित रूप से सुधार का संकेत है।"
"शायद चेतना की आंशिक वापसी हो रही है," धनवंतरी ने सहमति जताते हुए कहा। "हमें निश्चित रूप से तभी पता चलेगा जब हम इसे कुछ और बार होते हुए देखेंगे।" “क्या आपने हाल ही में उसे कोई नई दवा दी है?” राजगुरु ने पूछा।
“वैसे, यह हाल की बात नहीं है, लेकिन मैं पिछले पांच महीनों से उसे अश्वगंधा की खुराक दे रहा हूँ। मुझे हाल ही में पता चला है कि अश्वगंधा में स्मृति विकारों के लिए कुछ औषधीय गुण होते हैं। शायद दवा धीरे-धीरे असर दिखा रही है।”
“तो क्या इस प्रक्रिया को तेज नहीं किया जा सकता?” राजा ने धनवंतरी की ओर आशा भरी निगाहों से देखा। “शायद आप इसकी शक्ति बढ़ा सकते हैं या कुछ और कर सकते हैं...”
“शायद,” चिकित्सक ने कोई निश्चित जवाब नहीं दिया। “लेकिन पहले हमें यह देखना होगा कि क्या आज रात जो हुआ, वह दोबारा होता है। जब तक हमें निश्चित रूप से पता नहीं चल जाता, तब तक सब कुछ अनुमान ही होगा।”
***

वररुचि ने रात को सोने के इरादे से बिस्तर पर लेटते ही थे कि दरवाजे पर दस्तक हुई।
एक गहरी आह भरते हुए, उसने खुद को सहारा देकर उठाया। "कौन है?" उसने पूछा। उसके शयनकक्ष का दरवाजा खुला और बाहर के गलियारे से रोशनी अंदर आई। रोशन दरवाजे पर एक महल का सेवक खड़ा था।

“माननीय महोदय, एक घुड़सवार आपसे मिलना चाहता है,” सेवक ने क्षमा याचना करते हुए कहा। “उसका कहना है कि वह दक्षिण से एक अत्यावश्यक संदेश लेकर आया है।” वररुची बिजली की तरह उठ खड़ा हुआ। "उसे अंदर आने दो," उसने आदेश दिया।
अपने पैर बिस्तर से नीचे उतारकर वह कमरे के एक कोने में गया, जहाँ एक आले में एक छोटा सा दीपक जल रहा था। उस दीपक को उठाकर वरारुचि पाँच बत्तियों वाले एक बड़े दीपक को जलाने ही वाला था कि तभी घुड़सवार वहाँ आ गया। वरारुचि ने देखा कि वह व्यक्ति बारिश में काफी दूर तक घुड़सवारी कर चुका था, उसके कपड़े भीगे हुए थे और उन पर कीचड़ के धब्बे थे।
“माननीय महोदय, नमस्कार,” उन्होंने कहा।
“तुम्हें भी, सिपाही। अब बताओ...” वरारुची अधीरता से रुक गया।
"माननीय न्यायाधीश महोदय, दक्षिण से कुछ विचित्र खबरें आ रही हैं, जो अजीबोगरीब गड़बड़ियों का संकेत दे रही हैं..."
“दक्षिण में कहाँ से?” वरारुची ने तीखे स्वर में पूछा। “मेरा मतलब है कि दक्षिणी अवंती के किन हिस्सों में अशांति हो रही है?”
घुड़सवार एक पल के लिए संशय में रुका। "महाराज, अवंती में नहीं," उसने अंत में कहा। "खबरें हेहेया राज्य से आ रही हैं।"
वरारुची ने कुछ पल तक उस घुड़सवार को हैरानी से देखा। "हेहेया?"
"जी हां, माननीय। आपने दक्षिण से आने वाली सभी रिपोर्टों के बारे में पूछा था, इसलिए मेरे कप्तान ने यह भी आपके ध्यान में लाने का फैसला किया। इसकी... विचित्रता के कारण।"
वररुची ने सिर हिलाया। "हेहेया से क्या खबरें आ रही हैं?"
“माननीय महोदय, ऐसा प्रतीत होता है कि हेहेया में सुबह से ही सिलसिलेवार हमले हुए हैं। कुछ चौकियों पर बेरहमी से हमला किया गया और दो-तीन गाँव पूरी तरह से नष्ट हो गए हैं। मृतकों की अपुष्ट संख्या लगभग तीन सौ है।”
“ये हमले कौन कर रहे हैं?” वरारुची ने हैरानी और असमंजस से सवार की ओर देखा। “यही तो मज़ेदार बात है, महाराज,” घुड़सवार ने आगे कहा। “खबरों के मुताबिक, हमलावर इंसान नहीं हैं... बल्कि दंडक वन से निकले अजीब जानवर हैं। एक रिपोर्ट में तो यहाँ तक कहा गया है कि हमलावर राक्षसी पिशाचों की सेना थी।”
"क्या?"
"जी हां, माननीय न्यायाधीश। रिपोर्ट में कहा गया है कि कुछ बचे हुए लोगों ने पिशाचों के बारे में भी बताया है जिनका नेतृत्व एक विशालकाय, राक्षसी प्राणी

कर रहा था जो बकरी और मनुष्य का मिश्रित रूप था। ऐसा लगता है कि यह प्राणी अंधा है, लेकिन निर्दयता से हत्या करता है..."
“रुको, रुको, रुको...” वरारुची का चेहरा अचानक तनावपूर्ण हो गया। “क्या यह प्राणी अंधा है?”
“एक रिपोर्ट के अनुसार,” सवार ने हैरानी से सिर हिलाया।
एक दृष्टिहीन बुराई जो उत्तर की ओर बढ़ रही है...
वररुची एक बड़ी मेज के ऊपर बने शेल्फ की ओर बढ़ा। उसने ऊपर हाथ बढ़ाकर नीले रेशम का एक बंडल उतारा, जिसे उसने खोलकर मेज पर फैला दिया। फिर उसने घुड़सवार को अपने पास आने का इशारा किया।
"क्या हमें इस बात का कोई अंदाजा है कि हमले कहाँ हुए थे?"
घुड़सवार ने सिंधुवार्ता के नक्शे पर नज़र डाली और सिर हिलाया। “पहला हमला पायोशनी की चौकी पर हुआ था, महाराज,” उसने पायोशनी दर्रे की ओर उंगली से इशारा करते हुए कहा। “अगला हमला इस गाँव पर हुआ, फिर यहाँ वाले पर। दोपहर में, इस स्थान पर दूसरी चौकी पर हमला हुआ...”
जैसे ही सवार ने हेहेया में हुए हमलों के मार्ग का अनुसरण किया, वरारुचि की सांसें लगभग रुक गईं। सवार की उंगली हेहेया के पार उत्तर की ओर एक सीधा मार्ग दिखा रही थी - और यदि उंगली इसी मार्ग का अनुसरण करते हुए आगे उत्तर की ओर अवंती तक जाती, तो वह अंततः उज्जैन पहुँच जाती।
... उज्जायिनी में आतंक फैलाने के लिए उत्तर की ओर बढ़ रहे हैं...

गिरना

महिष्मती के ऊपर आसमान अब भी घोर अंधकारमय था, घने बादलों ने पूरब में भोर की हल्की रोशनी को ढक लिया था। शहर में तेज़ हवा के झोंके चल रहे थे, जिससे बारिश और भी तेज़ हो रही थी। महल की दीवारों और नीचे की गलियों में गश्त कर रहे सैनिक ठंड से बचने और गर्मी पाने के लिए दरवाजों के अंदर और गहरे छिपने को मजबूर हो रहे थे। कभी-कभार, उनमें से एक-दो लोग छज्जे के नीचे से अपना सिर बाहर निकालते और अंधेरे में नज़र घुमाते, फिर वापस आश्रय में चले जाते।
बारिश और अंधेरे के बावजूद, सैनिकों के हावभाव में बेचैनी स्पष्ट झलक रही थी। उनके एक साथ huddled होने का तरीका यह दर्शाता था कि वे केवल हवा और बारिश से ही नहीं, बल्कि किसी और चीज से भी सुरक्षा की तलाश कर रहे थे। जहां मशाल की रोशनी उनके चेहरों पर पड़ रही थी, वहां उनकी आंखों में भय और अनिश्चितता के भाव स्पष्ट थे।
“क्या हमें अभी तक कोई और खबर नहीं मिली?” राजा हरिहारा ने थोड़ी झुंझलाहट से पूछा। “मैंने हर पंद्रह मिनट में रिपोर्ट मांगी थी। पिछली रिपोर्ट के बाद लगभग पौने घंटे बीत चुके हैं – क्या हो रहा है?”
राजा ज़मीन से काफ़ी ऊपर दक्षिण की ओर वाली खिड़की के पास खड़े थे, और अपने महल के चारों ओर छाए नम अंधेरे को देख रहे थे। उनके हाथों में बैंगनी रेशम से कढ़ाई किया हुआ हेहेया का नक्शा था, जिसे वे अनमने ढंग से मोड़ते और निचोड़ते रहे। उनका बूढ़ा चेहरा मुरझाया हुआ था, और नींद की कमी से थकी हुई आँखों के नीचे काले घेरे पड़ गए थे।

“अगली रिपोर्ट किसी भी क्षण यहाँ आ जाएगी, महोदय,” मंत्री ने बिना किसी विश्वास के उत्तर दिया। फिर मंत्री ने एक परिचारक की ओर मुड़कर धीमी आवाज़ में कहा, “जाँच कर लो कि कुछ खबर आई है या नहीं। जल्दी करो।”
हरिहारा खिड़की से मुँह फेरकर अपने मंत्रिपरिषद की ओर मुड़े। “क्या हमें यकीन है कि महिष्मती की दक्षिणी और पूर्वी दीवारें पूरी तरह से किलेबंद हैं?” “जी हां, महाराज।” अब दूसरे मंत्री की बारी थी जवाब देने की। “हमने दक्षिण और पूर्व दिशा में तीरंदाजों और तलवारबाजों की कई टुकड़ियां तैनात कर दी हैं और चारों द्वारों पर बैरिकेड लगा दिए हैं।”
"तो फिर इन पिशाचों के शहर में प्रवेश करने का कोई रास्ता नहीं है, है ना?" प्रथम मंत्री के बोलने से पहले कुछ देर तक चिंताजनक सन्नाटा छाया रहा। उन्होंने घबराते हुए कहा, “माननीय, हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की है। वैसे, हमने एहतियात के तौर पर पूरे शहर में और भी सैनिक तैनात कर दिए हैं...।” मंत्री के शब्द धीरे-धीरे मंद होते ही हरिहारा ने आह भरी और खिड़की की ओर मुड़ गया, उसकी उंगलियाँ नक्शे से खेल रही थीं। हालाँकि वह चाहता था कि उसके सलाहकार उसे आश्वस्त करें, राजा को इस बात का भलीभांति ज्ञान था कि हेहेया में ऐसा कोई नहीं था जो उसके राज्य में तबाही मचा रहे इस खतरे से निपटने का तरीका जानता हो। दो छावनियाँ और चार गाँव पूरी तरह से नष्ट हो चुके थे; मृतकों की संख्या लगभग पाँच सौ थी।
महिष्मती के द्वार टूटने की स्थिति में क्या हो सकता है, यह सोचकर हरिहारा कांप उठा।
“ये पिशाच क्या चाहते हैं?” उन्होंने पूछा, हालाँकि यह स्पष्ट था कि प्रश्न किसी विशेष व्यक्ति से नहीं पूछा गया था। पीछे मुड़कर उन्होंने अपने मंत्रियों की ओर देखा, उनके चेहरे पर तनाव स्पष्ट झलक रहा था। “और हेहेया – हमने उनका क्या बिगाड़ा है?”
मंत्रियों ने एक-दूसरे की ओर देखा, स्पष्ट रूप से वे भी जवाब देने में असमर्थ थे। लेकिन इससे पहले कि उनमें से कोई कुछ कह पाता, कक्ष का दरवाजा खुला और सेवक अंदर आया, उसके पीछे एक घुड़सवार भी था। उनके हावभाव से स्पष्ट था कि वे कोई महत्वपूर्ण समाचार लाए थे।
“माननीय न्यायाधीश महोदय, एक रिपोर्ट आई है...” सेवक ने कहना शुरू किया। “क्या खबर है?” हरिहारा ने उत्सुकता से घुड़सवार की ओर बढ़ते हुए पूछा। “जल्दी करो।”
“माननीय न्यायाधीश महोदय, महिष्मती पर मंडरा रहा खतरा टल गया है।”

सन्नाटा इतना गहरा था कि कुछ देर के लिए कमरा हवा की भयानक कर्कश आवाज और महल की दीवारों पर बारिश की बूंदों की फुहार से भर गया।
“तुम्हारा क्या मतलब है, सिपाही?” मंत्रियों में से एक ने पूछा, उसकी आवाज में तीखेपन के बावजूद राहत साफ झलक रही थी।
“महोदय, पिशाच सेना महिष्मती को पूर्व की ओर कुछ मील पार कर गई, लेकिन शहर की ओर मुड़ने के बजाय, वह उत्तर की ओर बढ़ती रही।”
“उत्तर की ओर?” राजा ने मेज पर रेशमी नक्शा फैलाया और एक दीपक पास खींचकर घुड़सवार को बुलाया। “मुझे दिखाओ कि तुम्हारा क्या मतलब है।”
जैसे ही मंत्रीगण इकट्ठा हुए, घुड़सवार ने नक्शे की ओर इशारा करते हुए कहा, "जानवर इस बिंदु पर महिष्मती से गुजरे थे, लेकिन शहर की ओर जाने के लिए रास्ता बदलने के बजाय, वे सीधे आगे बढ़ते रहे।"
"सचमुच?" हरिहारा ने कांपती हुई फुसफुसाहट में पूछा, मानो वह उस सौभाग्य के बुलबुले को फूटने से डर रहा हो जिसने जादुई रूप से इस राजधानी को घेर लिया था। “जी हां, महाराज। आपके सेनापतियों ने कुछ आदमियों को पिशाचों के पीछे भेजा था, ताकि उन्हें पूरी तरह से यकीन हो जाए। यह स्पष्ट है कि वे जानवर इस तरफ नहीं आ रहे हैं। वे सीधे उन पहाड़ियों की ओर जा रहे हैं जो हमारे और अवंती राज्य के बीच स्थित हैं।”
हरिहारा ने अचरज से अपने मंत्रियों की ओर देखा। “लेकिन उन बंजर पहाड़ियों में तो कुछ भी नहीं है... तो फिर ये जानवर आखिर चाहते क्या हैं?”
***

अमरा सिंह किले की छत की ओर जाने वाली सीढ़ियों पर दो-दो कदम बढ़ाते हुए तेजी से चढ़ गया।
हालांकि सीढ़ियाँ खड़ी और घुमावदार थीं - और उनके भारी-भरकम शरीर के बावजूद - पार्षद में सांस फूलने के कोई लक्षण नहीं दिखे, और जब वे किले की चौड़ी, सपाट छत पर पहुँचे, तो कठिन चढ़ाई का एकमात्र सबूत उनके बड़े, दाढ़ी वाले चेहरे पर हल्की लाली थी।
"क्या श्रीस्थली से कोई नई खबर मिली है?" उसने छत के एक कोने पर जमा सैनिकों के एक छोटे समूह की ओर बढ़ते हुए पूछा, जहाँ से चारों ओर से उदयपुरी का अबाधित दृश्य दिखाई देता था।
सैनिक सूर्ययंत्र के चारों ओर खड़े थे, जो उत्तोलकों, पहियों और यांत्रिक भुजाओं से सुसज्जित एक विशाल यंत्र था, जिसमें विभिन्न आकारों के टिन मिश्र धातु के दर्पण लगे हुए थे। समूह में घटकरपारा और अतुल्यतेज थे, जबकि सैनिकों

के थोड़ा बाईं ओर दो आकृतियाँ अनिश्चितता से मंडरा रही थीं - राज्यपाल सत्यवेद और उनका चापलूस चिरायु, दोनों स्पष्ट रूप से सैनिकों के कार्यों से अनभिज्ञ थे।
“नहीं महोदय,” अतुल्यातेजा ने पार्षद की ओर मुड़ते हुए उत्तर दिया।
“हम्म...” अमर सिंह ने सूर्ययंत्र के चारों ओर खड़े लोगों के बीच शामिल होते हुए मुँह बनाया। कमर पर हाथ रखकर, उन्होंने किले के पश्चिम में, हलचल भरे शहर के किनारे स्थित एक पहाड़ी को ध्यान से देखा। फिर, उन्होंने अपनी नज़रें ऊपर उठाईं और सुबह के आकाश में उत्तर की ओर तैरते हुए बिखरे बादलों का अध्ययन किया।
“इस हुना जासूस के बारे में हम निश्चित रूप से क्या जानते हैं?” उन्होंने काफी देर तक सवाल किया।
अतुल्यातेजा ने कहा, “हमें पता चला है कि उसे कल रात सीमावर्ती कस्बे श्रीस्थली के पास कहीं हमारे सैनिकों ने पकड़ लिया था। उसे एक कोठरी में रखा गया है और श्रीस्थली स्थित कमांड सेंटर में पहरेदारी में रखा जा रहा है। हमें यह भी पता चला है कि किसी तरह उसका दाहिना पैर टूट गया है और वह बेहोशी की हालत में है और काफी दर्द में है।”
"यह भी न भूलें कि अब तक उसने पूछताछ के सभी प्रयासों का विरोध किया है," घटाकरपारा ने बीच में कहा। "या तो वह बेहोशी की हालत में है, या फिर वह हमें समझ नहीं पा रहा है या समझने का नाटक कर रहा है।"
“अगर वो स्काउट है, तो ये मुमकिन ही नहीं कि उसे हमारी बात समझ न आए,” अमारा सिम्हा ने गंभीर स्वर में बुदबुदाते हुए कहा। “हर जगह स्काउट्स को बुनियादी भाषा का प्रशिक्षण दिया जाता है। और ये भ्रम भी महज़ दिखावा हो सकता है।” “बिल्कुल सही,” सत्यवेद ने बीच में टोकते हुए कहा, जो अमारा सिंह के पास आ गया था। “मैंने हमेशा कहा है कि इन हूणों पर जरा भी भरोसा नहीं किया जा सकता।” अमरा सिम्हा ने कुछ क्षण के लिए राज्यपाल को खाली निगाहों से देखा, यह सोचते हुए कि क्या इस निरर्थक बयान का कोई जवाब देना उचित है। अंत में, उन्होंने सिर हिलाकर अतुल्यातेजा की ओर रुख किया।
“खैर... क्या श्रीस्थली कमांड सेंटर में कोई अनुवादक है?”
"हमें नहीं पता, महोदय," चौकी के कमांडर ने कंधे उचकाते हुए कहा।
उसी क्षण, पश्चिम की ओर स्थित पहाड़ी से धुंधली रोशनी की कई किरणें निकलने लगीं। छत पर मौजूद लोगों ने तुरंत उन किरणों पर ध्यान केंद्रित किया। कुछ मिनटों बाद, किरणें निकलना बंद हो गईं।

"संदेश क्या कहता है?" अमारा सिम्हा ने ताड़ के पत्ते की एक पट्टी पर संकेतों को समझने में व्यस्त एक सैनिक से अधीरता से पूछा।
“सर... इसमें लिखा है... कि वे कैदी को उदयपुरी नहीं ले जा सकते... किसी कारणवश...” सैनिक ताड़ के पत्ते पर लिखे संदेश को समझने की कोशिश करते हुए रुक-रुक कर बोला। “संदेश स्पष्ट नहीं था, क्योंकि संदेश भेजते समय शायद सूरज बादलों में छिप गया था।”
"वराहमिहिर का शानदार आविष्कार है, लेकिन आज जैसे दिनों में यह बिल्कुल अविश्वसनीय है," अमर सिंह ने निराशा से छत पर रखे सूर्ययंत्र को घूरते हुए कहा।
अतुल्यातेजा ने आदेश दिया, "उनसे संदेश दोबारा भेजने के लिए कहो।"
एक सैनिक छत पर लगे हेलियोट्रोप के लीवर को चलाने लगा, लेकिन अमारा सिम्हा की आवाज ने उसे रोक दिया।
“नहीं, सूरज पूरी तरह से ढक जाने से पहले हम और समय बर्बाद ही करेंगे।” पार्षद ने एक बार फिर आसमान की ओर देखा और बादलों के लगातार बढ़ते जमाव को गौर से देखा। “अगर वे हुना स्काउट को यहाँ तक नहीं पहुँचा सकते, तो हम वहाँ जाएँगे।” अमरा सिम्हा ने सूर्ययंत्र चला रहे सिपाही को संबोधित करते हुए कहा, “श्रीस्थली कमांड सेंटर को सूचित कर दें कि मैं कैदी से पूछताछ करने आ रहा हूँ। उन्हें बता दें कि स्काउट को कड़ी सुरक्षा में रखा जाए और उसे पूछताछ के लिए उपयुक्त स्थिति में रखा जाए।” जैसे ही सिपाही ने सूर्य की किरणों को ग्रहण करने और परावर्तित करने के लिए विभिन्न दर्पणों को संरेखित करने हेतु लीवरों को समायोजित करना शुरू किया, पार्षद ने आगे कहा, “उन्हें यह भी बता दें कि एक अच्छा अनुवादक साथ रखें। और यह सुनिश्चित करें कि संदेश किसी भी कीमत पर श्रीस्थली तक पहुँच जाए।”
मशीन ने अमारा सिम्हा का संदेश पहाड़ी की ओर भेजना शुरू कर दिया, जहाँ सैनिकों का एक अन्य समूह एक गतिशील प्लेटफॉर्म पर दूसरे हेलियोट्रोप का संचालन कर रहा था। सौर संकेतों को फिर धीरे-धीरे दक्षिण की ओर भेजा जाता रहा, जब तक कि संदेश अंततः अपने गंतव्य तक नहीं पहुँच गया।
“कमांडर, मेरे लौटने तक आप यहाँ का सारा कार्यभार संभाल लीजिए,” अमारा सिम्हा ने अतुल्यातेजा से कहा। “मैं दो दिनों में वापस आ जाऊँगा।”
"बहुत बढ़िया, महोदय।"
“और तुम...” अमरा सिंह ने घटकरपारा से कहा। “तुम मेरे साथ सृष्टिस्थली चलोगे।”

“क्या मैं कर सकता हूँ?” इस अप्रत्याशित प्रस्ताव को सुनकर राजकुमार का चेहरा खुशी से चमक उठा।
“जी हां, बिल्कुल,” पार्षद ने छत से नीचे उतरते हुए जवाब दिया। “अब समय आ गया है कि आप सीमावर्ती इलाकों को थोड़ा और देखें।”
अमारा सिम्हा अभी दरवाजे तक आधा ही पहुंचा था कि उसे अपने पीछे कदमों की तेज आहट सुनाई दी। लगभग तुरंत ही, एक मीठी-मीठी आवाज़ ने उसे पुकारा।
"अगर आपको कोई आपत्ति न हो, तो क्या मैं आपसे थोड़ी देर बात कर सकता हूँ?" पार्षद रुका और मुड़कर देखा तो सत्यवेद उसकी ओर दौड़ता हुआ आ रहा था। "जी जी, राज्यपाल जी?"
सत्यवेद ने जल्दी से कहा, "मैं आपके और राजकुमार के साथ श्रीस्थली जाना चाहूंगा...", और फिर जोड़ा, "आपकी अनुमति से, बेशक।"
अमारा सिम्हा की भौंहें आश्चर्य से ऊपर उठ गईं। "किसलिए? मेरा मतलब है... तुम सृष्टिस्थली क्यों जाना चाहते हो?"
“वैसे भी मुझे नियमित निरीक्षण के लिए कस्बे का दौरा करना है,” राज्यपाल ने अपने हाथों को ऐसे मलते हुए कहा जैसे उन्हें धो रहे हों। “साथ ही, मैं उस अपराधी को भी देखना चाहता हूँ जिसे हमने पकड़ा है। यह हुना जासूस...”
पार्षद ने असमंजस में इधर-उधर देखा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे, और वह सोच रहा था कि दो पूरे दिन सत्यवेद की मूर्खता और बनावटी औपचारिकता की लगातार खुराक को वह कैसे सहन करेगा। अंततः, राज्यपाल को मना करने का कोई अच्छा बहाना न मिलने पर उसने सिर हिला दिया।
“आप चाहें तो आ सकते हैं। लेकिन अगर आप थोड़ी जल्दी करें तो मुझे अच्छा लगेगा। मैं जल्द से जल्द निकलना चाहता हूँ और सूर्यास्त से पहले श्रीस्थली पहुँचना चाहता हूँ।”
***

"माननीय न्यायाधीश महोदय, अस्तबल के मालिक का कहना है कि वह हमें तीन सौ तीस से अधिक नए घोड़े नहीं दे सकते।"
“उसका क्या मतलब है कि वह हमें घोड़े नहीं दे सकता?” वरारुची ने अपना घोड़ा घुमाते हुए उस युवा कप्तान को घूरते हुए पूछा, जिसने उससे बात की थी। “मैंने उससे कोई एहसान नहीं माँगा। उसे बता दो कि यह आदेश है – हमें कम से कम एक हज़ार ताज़े घोड़े चाहिए।”
“मैंने उन्हें बताया था, माननीय न्यायाधीश। लेकिन... उनका कहना है कि यह संभव नहीं है।”

“यह मूर्ख कौन है?” वरारुची गुस्से से भड़क उठा, उसकी आँखों में आक्रोश की आग जल रही थी। “उसे खुद पेश होने के लिए कहो...”
लेकिन इससे पहले कि वरारुचि अपनी बात पूरी कर पाते, कालिदास ने उन्हें रोकने के लिए हाथ उठाया और शांत स्वर में बोले, “भाई, मैं उनसे बात करके पता लगाऊंगा कि समस्या क्या है।” अपने घोड़े से उतरकर, उस विशालकाय ने सेनापति से कहा, “मुझे अस्तबल के स्वामी के पास ले चलो।”
कालिदास और सेनापति के चले जाने पर, वरारुचि ने चिड़चिड़ाते हुए अपना सिर हिलाया और दक्षिणी क्षितिज की ओर मुड़कर देखा। बारिश तीन घंटे पहले रुक गई थी, लेकिन आसमान अभी भी बादलों से घिरा था, हालांकि पश्चिम की ओर बादलों के छंटने से सूर्यप्रकाश की एक झलक दिखाई दे रही थी।
वररुचि, कालिदास और वराहमिहिर भोर होने से ठीक पहले उज्जैन से निकले और पंद्रह सौ घुड़सवारों और दस रथों की सेना के साथ दक्षिण की ओर अवंती-हेह्य सीमा की ओर बढ़े। हेह्य से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर, सभी इस बात पर सहमत थे कि उत्तर की ओर बढ़ रही राक्षसी सेना संभवतः उसी दोपहर बाद त्रही गाँव के पास अवंती में प्रवेश करेगी, और उससे यथासंभव सीमा के निकट और मानव बस्तियों से जितना दूर हो सके, मुकाबला करना ही सर्वोत्तम होगा।
सम्राट और उनके सलाहकारों ने गति को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकाला था कि सेना में केवल घुड़सवार ही होने चाहिए – इसलिए पैदल सेना और तीरंदाजों की टुकड़ियों को हटाकर घुड़सवारों की एक बड़ी टुकड़ी को शामिल किया गया था। हालांकि, वराहमिहिर के आग्रह पर, शाही सेना के लिए कुछ समय पहले उनके द्वारा निर्मित दस रथों को भी इस दल में शामिल कर लिया गया। लेकिन बाद में यह निर्णय गलत साबित हुआ – कीचड़ भरे और गीले इलाके में भारी रथों को संभालना मुश्किल हो रहा था।
अब टुकड़ी सीमा से लगभग आधे रास्ते पर स्थित एक अश्वारोही शिविर पर थी। सैनिक नाश्ता करने के लिए रुके थे, क्योंकि शेष यात्रा और आगामी युद्ध के लिए नए घोड़ों को तैयार किया जा रहा था। शिविर के ऊपर की शांत, नम हवा में खाना पकाने की आग से उठता हुआ धूसर धुआँ छाया हुआ था, और जहाँ वरारुची एक पहाड़ी पर बैठा था, वहाँ से उसे घोड़ों की हिनहिनाहट के बीच थालियों और बर्तनों की खड़खड़ाहट सुनाई दे रही थी। घोड़े के गोबर की गंध पूरे शिविर पर एक अदृश्य चादर की तरह फैली हुई थी।

“हमें दोपहर से पहले त्रेही गाँव को पार करने की कोशिश करनी चाहिए,” वररुचि के पास से एक आवाज़ आई। “नहीं तो, यह दानव सेना वहाँ पहले पहुँच जाएगी और त्रेही निश्चित रूप से नष्ट हो जाएगा।”
“मुझे उम्मीद है कि हम कर सकते हैं,” वरारुचि ने नीचे वराहमिहिर की ओर देखा, जो आश्चर्यजनक शांति से टीले पर चढ़ गया था। इंजीनियर वरारुचि के घोड़े के पास खड़ा था, अपनी लकड़ी की बैसाखी के सहारे। उसकी धोती के नीचे से टखने के ऊपर का एक ठूंठ लटका हुआ था – वर्षों पहले युद्ध में हूण कुल्हाड़ी लगने के बाद वराहमिहिर के दाहिने पैर का यही बचा हुआ हिस्सा था।
“मुझे पूरी उम्मीद है कि हम ऐसा कर पाएंगे,” वरारुची ने भावुक होकर दोहराया और क्षितिज की ओर देखने लगे। “लेकिन हम पहले ही समय से पीछे चल रहे हैं। हम बहुत धीमे हैं। हमें तेज़ी से आगे बढ़ना होगा।”
वराहमिहिरा ने वरारुचि के शब्दों में निहित जोर को समझा। उन्होंने कहा, "एक बार जब हमारे पास नए घोड़े आ जाएंगे, तो हम गति बढ़ा सकते हैं।"
“ठीक है,” वरारुची ने निगाहें झुकाए हुए कड़े स्वर में उत्तर दिया।
"आपको रथों का विचार पसंद नहीं है," इंजीनियर की आंखें चमक उठीं और वह मुस्कुराया।
"खैर, वे हमारी रफ्तार धीमी कर रहे हैं," वरारुची ने कंधे उचकाते हुए स्वीकार किया।
“सहमत हूँ, लेकिन हमें उनकी ज़रूरत है। हमारे पास कोई तीरंदाज नहीं है, इसलिए हमें किसी न किसी तरह के मारक हथियारों की ज़रूरत होगी।”
वररुचि ने वराहमिहिर की ओर मुड़कर कहा, “रथों ने अभी तक कोई खास परीक्षण तो नहीं झेला है। क्या आपको यकीन है कि वे ठीक से काम करेंगे?”
हमें आज पता चल जाएगा।
वररुचि असंतुष्ट भाव से भौंहें चढ़ाकर मुड़ गया जब उसने देखा कि कालिदास टीले पर आ रहे हैं। उसने जिज्ञासावश अपनी भौहें उठाईं, लेकिन दैत्य का गंभीर चेहरा देखकर निराश हो गया।
“अस्तबल के मालिक के पास हज़ार नए घोड़े नहीं हैं,” कालिदास ने कहा। “ज़्यादा से ज़्यादा वो हमें साढ़े तीन सौ, शायद साठ घोड़े दे सकते हैं। लेकिन सच कहूँ तो, यह भी मुश्किल लग रहा है, क्योंकि कुछ घोड़े अभी भी बीमारी से उबर रहे हैं।”
“लेकिन यह कैसे संभव है?” वरारुची ने हड़बड़ी में पूछा। “यह तो एक बड़ा स्टेशन है।”

“ऐसा लगता है कि यहाँ मौजूद अधिकांश घोड़ों को सीमावर्ती इलाकों में सैनिकों की आवाजाही के लिए पश्चिम की ओर भेज दिया गया है। अस्तबल के मालिक का कहना है कि अगर उन्हें एक दिन पहले सूचना दी गई होती, तो वे व्यवस्था कर सकते थे।” “अगर हमें एक दिन पहले सूचना मिल जाती, तो हमें नए घोड़ों की ज़रूरत ही नहीं पड़ती,” वरारुची ने उदास स्वर में कहा। “काश, सारी मुसीबतें आने से पहले एक दिन की सूचना दे देतीं।”
“मैंने अस्तबल के स्वामी से कहा है कि वह यथासंभव अधिक से अधिक घोड़ों को बदल दे,” कालिदास ने कहा। “और बाकी घोड़ों को चारा-पानी दे दे। उसके आदमियों ने काम शुरू कर दिया है। हम जल्द ही रवाना हो सकेंगे।”
वररुची ने सिर हिलाया और फिर दक्षिणी क्षितिज की ओर देखने लगा। तीन घंटे से अधिक की यात्रा बाकी थी और उसकी घुड़सवार सेना का एक चौथाई हिस्सा ही पुनः प्राप्त हुआ था। जब उसके सैनिक हेहेया से पार कर रहे पिशाचों से मिलेंगे, तब तक उनके घोड़े लगभग थक चुके होंगे।
वररुची को अचानक युद्ध की संभावनाएं और भी धूमिल लगने लगीं।
***

दूर से आती गड़गड़ाहट की आवाज ने क्षपनाका की नींद को झकझोर दिया, जिससे वह करवट बदलकर आंखें खोलने पर विशाखा की ओर मुड़ी। उसने कुछ पल इधर-उधर देखा, फिर बिस्तर पर सहारा लेकर बैठी विशाखा की ओर मुड़ी। अपनी बहन के भावहीन चेहरे को देखकर क्षपनाका ने कमरे में मौजूद एक दासी से बात की।
"रानी ने न तो कुछ बोला और न ही हिली-डुली, है ना?"
"नहीं, माननीय न्यायाधीश।"
“क्या आपको यकीन है?” क्षपनाका के चेहरे पर दिख रही चिंता उसकी आवाज में भी झलक रही थी।
“जी राजकुमारी,” बूढ़ी नर्स ने दासी की जगह जवाब दिया। “जब आप सो गई थीं, तब मैं रानी की देखभाल कर रही थी।” क्षपनाका के पास पहुँचकर नर्स ने विनम्रता से कहा, “आपको जाकर थोड़ी देर सो लेना चाहिए। आप पूरी रात सोई नहीं हैं।” क्षपणका ने आह भरी और अपनी गोद की ओर देखा, जहाँ एक आधा कढ़ाई किया हुआ रेशमी दुपट्टा, एक सुई और महीन ऊन का गोला पड़ा था। वह सुबह से दुपट्टे पर काम कर रही थी, लेकिन बहुत कम प्रगति हुई थी, क्योंकि उसका मन पिछली रात की घटनाओं में खोया रहता था। हर मिनट वह अपनी बहन को देखती रहती, इस उम्मीद में कि विशाखा हिलेगी या कुछ बोलेगी - उसने रानी से बात करने की भी कोशिश की, प्रतिक्रिया पाने की बेताब कोशिश में कई बार 'बारिश का पानी' शब्द दोहराया।

लेकिन विशाखा हठपूर्वक उदासीन बनी रही, दो वर्षों से एक ऐसी निजी दुनिया में खोई हुई थी जिसे कोई भी समझ या भेद नहीं पाया था... उस जानलेवा दुर्घटना के दिन से। वह दिन जब क्षपणक और विक्रमादित्य के जीवन से आनंद को इतनी बेरहमी से छीन लिया गया था, और उसकी जगह अपूरणीय दुःख के आवरण ने ले ली थी।
“मैं थोड़ी देर में आती हूँ,” क्षपनाका ने कढ़ाई उठाते हुए नर्स को जवाब दिया। हालाँकि उसे अपनी पलकों के नीचे थकान महसूस हो रही थी, फिर भी उसने कहा, “मुझे अभी इतनी नींद नहीं आ रही है।”
कुछ देर तक सुई रेशमी दुपट्टे में अंदर-बाहर होती रही, लेकिन जैसे ही यादें उमड़कर वापस आने लगीं, क्षपनाका की आँखों में आँसू आ गए और उसके हाथ थककर बेजान होकर उसकी गोद में गिर पड़े।
निषाद की यादें धुंधली सी थीं, हालांकि उन्हें महल के तालाब के किनारे इत्ती ताई द्वारा उन्हें और विशाखा को कहानियां सुनाने और अपने पिता द्वारा उन्हें अपने कंधों पर उठाकर शाही बागों में उगने वाले पके बेर तोड़ने की धुंधली यादें थीं। उज्जैन में उनका आगमन स्पष्ट था, महल का विशाल आकार और उसके चारों ओर फैली झील ने उनके मन में विस्मय पैदा कर दिया था। अवंती में शुरुआती साल चिंतामुक्त थे, महल बच्चों के शोर और हंसी से गूंजता था, जो महल की दीवारों के बाहर छिपे खतरों और अनिश्चितताओं से बेखबर थे। लेकिन क्षपणका की पहली दर्दनाक याद हूणों द्वारा निषाद राज्य को लूटने और राजा वल्लभ और पूरे महल के परिवार को बेरहमी से मार डालने की खबर थी। वह उस रात विशाखा को रानी उपश्रुति की गोद में सिसकते हुए देखकर अपनी बेबसी को कभी नहीं भूल सकती थीं...
कहीं और जाने की जगह न होने के कारण, अनाथ बहनें उज्जैन में ही रहती रहीं, जहाँ उस समय की कठोर वास्तविकताएँ धीरे-धीरे स्पष्ट होती गईं। एक भी दिन ऐसा नहीं गुजरता था जब कोई बुरी खबर न आती हो, क्योंकि एक-एक करके हमलावर हूणों और शकों ने निषाद जैसे छोटे राज्यों पर कब्जा कर लिया था। और यहाँ तक कि जब सिंधुवर्त के बड़े राज्य एकजुट हुए, तब भी हार और मृत्यु की खबरें आम थीं।
क्षपणका को वह दिन याद था जब राजा महेंद्रदित्य को युद्ध के मैदान से पेट में चाकू के गहरे घाव से बुरी तरह घायल अवस्था में वापस लाया गया था। उन्हें कुछ दिनों बाद उनके अंतिम संस्कार का जुलूस महल से निकलते हुए देखना और वरारुचि द्वारा विक्रमादित्य के राजा बनने की आयु तक अवंती पर शासन करने की शपथ लेना भी याद था।
समय के साथ, आचार्य वेताल भट्ट के कुशल मार्गदर्शन में, महल के बच्चे निपुण योद्धा बन गए – विशाखा को छोड़कर, जो किसी भी रूप में हिंसा से घृणा करती थी।

इसी बीच, पहले वरारुचि के उग्र नेतृत्व में, और फिर उनके राज्याभिषेक के बाद विक्रमादित्य के नेतृत्व में, सिंधुवर्त के राज्य फिर से संगठित हुए, और धीरे-धीरे आक्रमणकारियों को पीछे धकेलते हुए तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि बर्बर घुड़सवारों का अंतिम दल भी विशाल रेगिस्तान के कोहरे में गायब नहीं हो गया।
इसके बाद शांति के वर्षों में, विक्रमादित्य ने विशाखा से विवाह किया - यह एक पूर्व निर्धारित घटना थी, क्योंकि दोनों ने बहुत पहले ही एक-दूसरे को अपना प्रिय बना लिया था। उज्जैनी का महल शीघ्र ही अपार सुख और शांति का केंद्र बन गया, लेकिन एक धूप भरी सर्दी की सुबह सब कुछ बदल गया जब विपत्ति अपने चरम पर लौट आई।
वह सुबह क्षपणका के मन में अमिट छाप छोड़ गई थी, उस शानदार धूप की चुभन अब भी उसकी आत्मा को झुलसा रही थी, उसका दिल घोड़ों के खुरों की थाप पर धड़क रहा था और विशाखा की हंसी, ताज़ी पिघली बर्फ की तरह चमकती हुई, उसके कानों में गूंज रही थी...
उज्जैन के बाहर एक मैदान में बहनें घुड़सवारी कर रही थीं और आपस में हंसी- मजाक कर एक-दूसरे को चिढ़ा रही थीं, तभी क्षपणका ने विशाखा को अपने घोड़े की सवारी करने की चुनौती दी। हालांकि विशाखा घुड़सवारी में अधिक कुशल थी, लेकिन क्षपणका का घोड़ा अपने गुस्सैल स्वभाव के लिए कुख्यात था, जिसे काबू करना कुछ ही लोगों के बस की बात थी। फिर भी, विशाखा ने चुनौती स्वीकार कर ली। मैदान के कुछ चक्कर लगाने के बाद ऐसा लगा कि विशाखा घोड़े पर काबू पा चुकी है, इसलिए उसने अपनी रफ्तार बढ़ा दी और क्षपणका के आश्चर्य को देखकर खूब हंसी।
फिर अचानक, बिना किसी चेतावनी के, घोड़ा उछल पड़ा, लात मारने लगा और बेतहाशा पैर पटकने लगा। दोनों बहनों के संभलने से पहले ही, विशाखा घोड़े की पीठ से गिर पड़ी और उसका सिर घास से बाहर निकले एक पत्थर से टकरा गया। धनवंतरी ने बाद में निदान किया कि गिरने से विशाखा को संभवतः गंभीर मस्तिष्क क्षति हुई थी। क्षपणका को बस इतना ही पता था कि यही वह क्षण था जब उसकी बहन चली गई थी... “राजकुमारी, महारानी माँ यहाँ हैं,” नर्स ने धीरे से उनके कान में फुसफुसाया। क्षपणका अपने विचारों से बाहर निकलीं और नम आँखों को कुशलता से पोंछते हुए पलंग के निचले हिस्से की ओर मुड़ीं, जहाँ रानी उपश्रुति राजकुमारी प्रलूपी और धनवंतरी के साथ खड़ी थीं। राजकुमार हिमवर्धन अपनी पत्नी के पीछे खड़े थे, उनका मुँह खुला रह गया था क्योंकि वे विशाखा के बेजान शरीर को घूर रहे थे।

"बच्चे, तुम बहुत डरावने दिख रहे हो," महारानी माँ ने क्षपनाका के मुरझाए चेहरे को चिंता से देखते हुए कहा।
“कुछ नहीं, माँ,” क्षपनाका ने खड़े होते हुए मुस्कुराने की कोशिश की। “बस मुझे नींद कम आई है।”
“तुम रात भर जागती तो नहीं रही?” रानी उपश्रुति ने थोड़ी देर रुककर नर्स और दासियों को ध्यान से देखते हुए सिर हिलाकर पूछा, “तुमने राजकुमारी को सोने का मौका क्यों नहीं दिया?” उन्होंने तीखे स्वर में पूछा।
इससे पहले कि नर्स और दासियाँ अपने बचाव में कुछ कह पातीं, रानी पलंग के चारों ओर आईं और क्षपनाका को कोमलता से कंधों से पकड़ लिया।
“जाओ, थोड़ा आराम करो, बच्ची,” उसने कोमल, मातृत्वपूर्ण लहजे में कहा, जिससे क्षपणका की आँखों में लगभग फिर से आँसू आ गए। “हम सब यहाँ विशाखा की देखभाल के लिए हैं। मैं वादा करती हूँ कि अगर तुम्हारी बहन में सुधार का जरा सा भी संकेत दिखेगा, तो तुम्हें सूचित किया जाएगा।”
क्षमानाका ने रानी उपश्रुति को कृतज्ञतापूर्वक देखकर मुस्कुराया। उसी क्षण, हिमवर्धन प्रलूपी की छाया से निकलकर क्षमानाका के पास पहुँचा, उसकी निगाहें उसके हाथों में मौजूद कढ़ाईदार दुपट्टे पर टिकी थीं। उसने कुछ क्षण तक उस दुपट्टे को निहारा और फिर उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया।
“मैं चाहता हूँ,” उसने क्षपनाका की ओर असहजता से देखते हुए, दृढ़ स्वर में कहा। “मैं चाहता हूँ।”
क्षपनाका ने फीकी मुस्कान के साथ दुपट्टा खोला, लेकिन राजकुमार को नहीं दिया। "क्या आपको यह पसंद आया?" उसने पूछा।
उस व्यक्ति ने सिर हिलाया, उसकी आँखों में उत्सुकता की चमक थी।
“देखिए, यह अभी पूरी तरह से तैयार नहीं है?” क्षपनाका ने विनम्रता से समझाया और काम दिखाने के लिए दुपट्टे को घुमाया। “मुझे इसे पूरा करने दीजिए। फिर मैं वादा करती हूँ कि इसे आपको दे दूँगी। क्या यह ठीक रहेगा?”
हिमवर्धन मुस्कुराए और सहमति में सिर हिलाकर प्रलूपी के पास लौट गए, जिन्होंने क्षपणक के साथ प्रशंसा का एक छोटा सा अभिवादन किया। एक छोटा सा संकट टल गया था।
क्षपणका के चले जाने के बाद, सबका ध्यान विशाखा की ओर गया। धनवंतरी ने एक बार फिर उसकी नाड़ी और पुतलियों की जाँच की और नर्स को कुछ निर्देश दिए।

कुछ देर तक महारानी माँ विशाखा को देखती रहीं। जब उन्होंने देखा कि धनवंतरी का काम पूरा हो गया है, तो उन्होंने प्रलूपी को इशारा किया कि अब जाने का समय हो गया है। “मैं कुछ देर बच्चे के साथ रहूँगी। आप जा सकती हैं।”
जैसे ही प्रलूपी हिमवर्धन के साथ शयनकक्ष से बाहर निकली, तभी एक बार फिर गरजने की आवाज आई, इस बार उत्तर दिशा से, और भी करीब से।
“बिजली कड़क रही है। लगता है अभी और बारिश होने वाली है,” रानी उपश्रुति ने किसी से विशेष रूप से न कहते हुए कहा।
धनवंतरी ने सिर हिलाया, लेकिन जब उन्होंने खुली खिड़की की ओर देखा, तो उनकी आँखों में बेचैनी थी। किसी चीज़ ने चिकित्सक को यह आभास दिलाया कि यह गड़गड़ाहट नहीं, बल्कि दूर से आती घोड़ों के खुरों की आवाज़ थी जो हवा के साथ बहकर आ रही थी।
***

गिरिव्रज के महल का राजकीय कक्ष सलाहकारों, दरबारियों और महल के सेवकों से खचाखच भरा हुआ था, जो पद और कुलीनता के घटते क्रम में तीन तंग गोलाकार घेरों में कंधे से कंधा मिलाकर दीवारों तक फैले हुए थे। इस व्यवस्था के कारण कमरे के बीच में एक खाली जगह बच गई थी, जहाँ शूरसेना और कपिला अपनी ऊँची कुर्सियों पर बैठे थे। उनके सामने एक सौम्य और मृदुभाषी बुजुर्ग व्यक्ति बैठे थे - पल्लवन, जो कोसल के दरबार से आए एक विशेष दूत थे।
“राजा भूमिपाला और संपूर्ण कोसल राज्य की ओर से मेरी हार्दिक संवेदनाएँ स्वीकार करें,” दूत ने भाइयों को संबोधित करते हुए कहा। “राजा सिद्धसेना कोसल के प्रिय मित्र और अत्यंत सम्मानित व्यक्ति थे। उनका निधन केवल मगध के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे सिंधुवर्त के लिए एक बड़ी क्षति है।”
शूरासेना के बोलने से पहले दोनों भाइयों ने एक-दूसरे को क्षण भर के लिए देखा। “आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद, महाराज। राजा भूमिपाल और उनकी प्रजा की संवेदनाएं मगध की राजसभा और शोक संतप्त जनता द्वारा सराही गई हैं।”
पल्लवन राजकुमार के शब्दों पर विचार करने के लिए कुछ देर रुका। उस सुबह, उनका काफिला महल की ओर जाते हुए गिरिव्रजा की गलियों से गुजरा था, और जहाँ तक उन्हें पता चला, मगध के नागरिक शोक से कहीं अधिक हत्या और लूटपाट के संकेत दे रहे थे। उन्होंने राजधानी में सशस्त्र भीड़ को घूमते हुए देखा था, जो किकटों के घरों और प्रतिष्ठानों को बेरोकटोक लूट रहे थे और जला रहे थे, और उनके काफिले ने सुना था कि भाग रहे किकटों को ग्रामीण इलाकों में ढूंढ-ढूंढ कर मार डाला जा रहा था।

यह स्पष्ट था कि दंगा करने वाली भीड़ को मगध की कानून प्रवर्तन व्यवस्था का सक्रिय समर्थन न सही, लेकिन सहानुभूति तो प्राप्त थी ही – और इसी तरह राज्य की कानून प्रवर्तन व्यवस्था का भी।
“सचमुच एक दुखद क्षण,” दूत ने शोक से सिर हिलाया। “अंधाधुंध पागलपन का एक क्षण जिसने नेक राजा को हमसे छीन लिया। लेकिन हमें इन कठिन समयों में विवेक और संयम बरतना चाहिए।”
“राजा की मृत्यु अंधाधुंध पागलपन के कारण नहीं हुई,” शूरासेना ने पल्लवन को तीखे लहजे में टोकते हुए कहा। राजकुमार इतना समझदार था कि वह समझ गया कि दूत बातचीत को किस ओर मोड़ना चाह रहा है। “इसके विपरीत, यह किकाटाओं द्वारा वांगा गणराज्य के समर्थन से किया गया एक सोची-समझी दुष्टतापूर्ण कृत्य था। यह मगध की संप्रभुता के मूल पर प्रहार करने के उद्देश्य से किया गया एक कृत्य था, जिसने मगध के लोगों को अनाथ कर दिया है। इसलिए, उनका क्रोधित होना स्वाभाविक है।”
“लेकिन उनका क्रोध निर्दोषों की जान ले सकता है,” पल्लवन ने इस बयानबाजी को समझाने की कोशिश की। “आखिरकार, किकाटा भी मगध के ही निवासी हैं।”
“वे हमारे खिलाफ साजिश रचते हैं और हमसे उनकी रक्षा करने की उम्मीद की जाती है?” शूरासेना ने कमरे में चारों ओर देखते हुए, समर्थन जुटाने के इरादे से एक ठंडी मुस्कान के साथ उपहास किया। “मुझे आश्चर्य है कि क्या वह कुशल राजनयिक अपने शाही दरबार को कोसला के दुश्मनों के प्रति इतनी ही उदारता दिखाने की सलाह देगा।”
पल्लवन ने देखा कि सबने सिर हिलाए और कमरे में उपहास का भाव फैल गया। माहौल के उग्र होने का अंदाज़ा लगाते हुए उसने निष्कर्ष निकाला कि इस मामले को आगे बढ़ाना उचित नहीं था। वैसे भी, किकटों का भाग्य उसकी समस्या नहीं थी – वह गिरिव्रज में एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ आया था, जिसका पहला कार्य मगध को कोसला की ओर से सांत्वना देना था।
उन्होंने वह काम कर दिया था। अब उनके एजेंडे के दूसरे विषय पर चर्चा शुरू करने का समय था।
“जैसा आपको ठीक लगे… महाराज,” शूरसेना को संबोधित करने के लिए सही शब्द ढूंढने में कठिनाई महसूस करते हुए उन्होंने कहा। राजा सिद्धसेना की मृत्यु के बाद, यह मानना स्वाभाविक था कि युवराज शूरसेना ही उत्तराधिकारी होंगे। फिर भी, न तो कोई औपचारिक राज्याभिषेक हुआ था और न ही इस संबंध में कोई घोषणा; शूरसेना ने नए राजा होने का कोई संकेत भी नहीं दिया था। यह बैठक भी राजमहल में

हो रही थी, न कि मगध के सिंहासन वाले शाही दरबार में। वहां बैठक होने से मगध की नई सत्ता संरचना को समझने में मदद मिलती।
“शाही परिषद से विदा लेने से पहले, एक और मामला है जिस पर मैं चर्चा करना चाहता हूँ,” दूत ने सोच-समझकर शब्दों का चयन किया। “आपकी अनुमति से...?” शूरासेना ने थकी हुई सी तिरस्कारपूर्ण मुद्रा में हाथ हिलाया।
"दिवंगत राजा ने मत्स्य को संभावित साका खतरे के खिलाफ सुदृढीकरण के रूप में तीन हजार सैनिक और तीन हजार तीरंदाज देने का वादा किया था।"
पल्लवन को महसूस हुआ कि शूरासेना अकड़ गया है और उसने कपिला की ओर तिरछी नजर डाली।
“मुझे खेद है कि आपके तथ्य गलत हैं,” राजकुमार ने सिर हिलाते हुए कहा। “पिताजी ने मत्स्य में मगध की सेना भेजने के बारे में कभी कोई विशेष प्रतिबद्धता नहीं जताई थी।”
“लेकिन उन्होंने ऐसा किया... राजकुमार,” पल्लवन हिचकिचाते हुए कमरे में चारों ओर एक नज़र घुमाई। “पिछले सप्ताह, आपके पिता ने राजा बाणहस्त, राजा चंद्रवर्धन, राजा भूमिपाला और सम्राट विक्रमादित्य को लिखित संदेश भेजे थे, जिसमें पुष्टि की गई थी कि तीन हजार सैनिक और तीन हजार धनुर्धर मगध से मत्स्य की सीमा की ओर प्रस्थान करेंगे।”
शूरासेना अपनी कुर्सी पर स्थिर बैठे रहे, उनकी भौंहें तन गईं और आंखें जो अभी- अभी सामने आई बात से स्तब्ध थीं, उन्हें देखकर लगा जैसे वे स्तब्ध हों। अंत में, उन्होंने धीरे से सिर हिलाया, "यह... यह संभव नहीं है।"
“यह सच है,” पल्लवन ने जोर देकर कहा, और राजकुमार की बेचैनी का एक अजीबोगरीब तरीके से आनंद लेने लगा। “मेरे राजा को पाँच दिन पहले कोसल में संदेश मिला था
– इसलिए मुझे पता है। और यह संदेश राजा सिद्धसेना का था, क्योंकि इस पर उनकी राजसी मुहर लगी थी।”
शूरासेना ने अपने होंठ चबाते हुए सलाहकारों और दरबारियों के समूह की ओर देखा, जो बारी-बारी से अपने पैर हिला रहे थे और एक-दूसरे को चोरी-छिपे देख रहे थे। दूत के चतुर मन ने समझ लिया था कि सिद्धसेना द्वारा अन्य राजाओं को भेजे गए संदेशों की खबर ने पूरे समूह को बेचैन कर दिया था।
“ठीक है, शायद पिताजी ने ही वो संदेश भेजे होंगे,” शूरासेना ने चुप्पी तोड़ी। “तो फिर क्या हुआ?”
"सिंधुवर्त के राजा हार्दिक आशा करते हैं कि दिवंगत राजा द्वारा मत्स्य से किया गया वचन पूरा किया जाएगा, हे स्वामी।"

“क्या तुम्हें इतनी जल्दी में होना जरूरी है... जैसे... जैसे गिद्ध?” शूरासेना ने क्रोध से भरते हुए पूछा। “मेरे पिता की चिता की राख अभी भी गर्म है।” “हमें क्षमा करें, लेकिन सिंधुवर्त पर जल्द ही युद्ध छिड़ सकता है,” पल्लवन ने कोमल स्वर में कहा। “वृद्ध राजा इस तात्कालिकता को समझ जाते। इसके अलावा, उनकी अस्थियों की तरह, उनका वादा भी उमंग भरा है।”
"अगर वादा उनका था, तो उन्हें ही उसे पूरा करना चाहिए था।"
पल्लवन ने लंबे राजकुमार का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया। ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने अपना संयम पुनः प्राप्त कर लिया है, और जिस तरह से वे अपनी कुर्सी पर बैठे थे - पीठ सीधी, सीना ताने हुए और ठुड्डी आक्रामक ढंग से आगे निकली हुई - उससे स्पष्ट था कि वे मामले को घुमा-फिराकर कहने से तंग आ चुके थे।
"क्या तुम कह रहे हो..."
“मैं कह रहा हूँ कि हम उस वादे को पूरा करने के लिए बाध्य नहीं हैं,” शूरासेना की आवाज़ में दृढ़ता आ गई थी, और दूत ने तुरंत कमरे में सकारात्मक माहौल महसूस किया। “यदि राजा ने वह वादा किया था, तो उन्होंने मगध की राज परिषद से परामर्श किए बिना किया था। इसलिए परिषद को इसके लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। अतः, दुर्भाग्यवश, उनका वादा उनके साथ ही समाप्त हो जाता है।”
“क्या आप अपने पिता के नाम पर इस पर पुनर्विचार नहीं करेंगे?” राजनयिक ने जोर देकर पूछा। “सिंधुवर्त के राज्य खतरे में हैं...”
“सिंधुवर्त के राज्यों को अपनी समस्याओं से निपटना सीखना चाहिए,” शूरसेना ने गुस्से से कहा। “मगध को किकट और वंग से गंभीर चुनौती का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन क्या आप मुझे मदद के लिए एक राज्य से दूसरे राज्य भागते हुए देखते हैं? हम जो कुछ हमारे पास है उसी से काम चलाते हैं – मेरा सुझाव है कि आप सभी राजा भी ऐसा ही करना सीखें।”
राजकुमार अपनी सीट से उठे, उनके हावभाव से स्पष्ट था कि साक्षात्कार समाप्त हो गया है। उन्होंने आगे कहा, "महोदय, दोपहर के भोजन के लिए अवश्य रुकें। मुझे बताया गया है कि शाही रसोई ने विशेष रूप से आपके लिए मगध के बेहतरीन व्यंजनों का भव्य भोज तैयार किया है।"
जैसे ही पल्लवन राजकीय कक्ष से बाहर निकला, उसके कानों में शूरसेना की आवाज गूंज रही थी, उसे एहसास हुआ कि यह देखने के लिए किसी औपचारिक राज्याभिषेक या सिंहासन - या शाही परिषद की भी आवश्यकता नहीं थी - कि अधिकार और शक्ति गिरिव्रजा में निहित थी।
***

“सावधान रहो, योद्धाओं!” वरारुची ने छह फीट से कुछ अधिक लंबी एक पतली, लचीली तलवार खोलते हुए चिल्लाया। यह एक उरुमी तलवार थी, जो दक्षिणी राज्यों के योद्धाओं की पसंदीदा तलवार थी।
तुरंत ही भालाधारियों ने अपने भाले नीचे गिरा दिए, जिनकी नोकें सीधे आगे की ओर, उनके घोड़ों के सिर के सीध में थीं। कालिदास ने उसी समय अपनी चौड़ी तलवार निकाली और वरारुचि की ओर बढ़ गए।
वह आकृति नज़दीक आने लगी और वरारुची ने देखा कि वह उसका ही एक जासूस था। उसने घुड़सवार सेना को आदेश दिया, "अपनी जगह पर डटे रहो।"
जब जासूस वरारुचि और कालिदास के पास पहुँचा, तो उन्होंने देखा कि उसका चेहरा भय से विकृत था। इससे पहले कि दोनों सलाहकार कुछ कह पाते, जासूस ने बोलना शुरू कर दिया, शब्द तेजी से उसके मुँह से निकल गए।
“वे पहाड़ियों में हैं... मैंने उन्हें खाते हुए देखा... मेरे पीछे...” वह उन्माद में बड़बड़ाया।
“पहाड़ों में कौन हैं?” कालिदास ने दृढ़ता से पूछा।
“वे... पिशाच... वे हमारे दो जासूसों को खा रहे थे।”
"क्या?"
“हाँ।” स्काउट मुड़ा और कांपती उंगली से पहाड़ियों की ओर इशारा किया। “उन्होंने मुझे भी देख लिया है और अब वे मेरे पीछे आ रहे हैं। वहाँ!”
कालिदास और वररुचि ने अपनी गर्दनें उठाकर घूमते हुए कोहरे में झाँका, लेकिन उन्हें कुछ भी असामान्य दिखाई नहीं दिया।
वररुची ने कंधे उचकाए और जासूस से बात करने ही वाले थे कि मैदान के ऊपर की हवा में तेज चीखों की एक श्रृंखला गूंज उठी, जिसने बारिश की आवाज को भी दबा दिया। कुछ ही क्षणों बाद, धुंध से दर्जनों विकृत आकृतियाँ निकलीं और तेजी से उछलती- कूदती हुई प्रतीक्षा कर रहे घुड़सवारों की पंक्तियों की ओर बढ़ीं।

भाईचारे

बूढ़ा कुम्हार मिट्टी के गड्ढे के तल पर खड़ा था, बारिश के पानी से रिसते और बुलबुले छोड़ते चूनेदार क्षारीय कीचड़ में उसके टखने तक डूबे हुए थे। कुम्हार मिट्टी को बड़े-बड़े टिन के डिब्बों में भर रहा था, जिन्हें वह अपने शागिर्द को सौंप रहा था, जो लगभग बारह साल का एक लड़का था और गड्ढे के किनारे खड़ा था। लड़का बदले में उन भारी डिब्बों को एक उदास खच्चर की पीठ पर लाद रहा था, जो मिट्टी को गड्ढे से कुछ दूरी पर स्थित मिट्टी के कारखाने तक ले जा रहा था।
बारिश अब हल्की फुहारों में तब्दील हो चुकी थी, लेकिन आकाश में गड़गड़ाहट लगातार बढ़ती जा रही थी। कुम्हार बीच-बीच में रुककर बादलों की ओर देखता, कान लगाकर उस अजीब शोर को समझने की कोशिश करता जो हवा में गूंज रहा था।
जब प्रशिक्षु पांचवीं बार मिट्टी के बर्तन बनाने के कारखाने में गया, तब जाकर उस आवाज़ का स्रोत पता चला। कुम्हार अगले दौर के लिए बर्तन भर रहा था, तभी उसने गड़गड़ाहट के बीच लड़के की तेज़ चीख सुनी।
“आपा, आपा... देखो!”
“क्या बात है?” कुम्हार ने सिर उठाकर पूछा। लेकिन जहाँ वह खड़ा था, वहाँ से उसे न तो लड़का दिखाई दे रहा था और न ही वह वस्तु जिस पर लड़का उसका ध्यान आकर्षित कर रहा था।

“आपा... ऊपर आओ और इसे देखो।” शिष्य गड्ढे के ऊपर प्रकट हुआ, उसका युवा चेहरा उत्साह और भय से लाल था। उसने अपने गुरु को इशारा किया और कुम्हार की दृष्टि से परे किसी चीज़ की ओर ज़ोर से उंगली उठाई।
जिज्ञासावश कुम्हार गड्ढे से ऊपर रेंगने लगा, कीचड़ में बार-बार फिसलते और धंसते हुए वह लगातार बड़बड़ा रहा था। लेकिन जैसे ही वह ठोस ज़मीन पर पहुँचा और ऊपर देखा, उसका चेहरा आश्चर्य से भर गया। अभी भी चारों हाथों-पैरों के बल, वह अपनी आँखों के सामने घट रहे दृश्य को निहारने लगा।
मिट्टी का गड्ढा और मिट्टी के बर्तन बनाने का कारखाना एक उजाड़ मैदान के बीचोंबीच स्थित थे, जहाँ वनस्पति लगभग न के बराबर थी। दक्षिण और पश्चिम की ओर दूर धान के खेत थे, जिनके आगे किसानों की कुछ झोपड़ियाँ बिखरी हुई थीं। पश्चिम की ओर क्षितिज पर उज्जैन पर्वतमाला थी, जिसकी दीवारें धुंधले वातावरण में धुंधली सी दिखाई देने के बजाय कल्पना मात्र थीं।
लेकिन जिस चीज ने कुम्हार और उसके प्रशिक्षु का ध्यान आकर्षित किया, वह कहीं अधिक करीब थी।
ऊपर धूसर-काले बादलों को चीरते हुए एक विशाल इंद्रधनुष फूट पड़ा, जिसका ऊपरी सिरा मिट्टी के गड्ढे से लगभग आधा मील दूर धरती की ओर झुक रहा था। जिस बिंदु पर इंद्रधनुष ज़मीन को छू रहा था, वहाँ एक धुंधली सी रोशनी चमकी – और उसमें से कांस्य ढाल और धनुष लिए हेलमेट पहने घुड़सवारों का एक झुंड निकला। घोड़े बड़े, काले रंग के जानवर थे जो ज़ोर से हिनहिना रहे थे और अधीरता से ज़मीन पर पैर पटक रहे थे, और सवारों के घोड़ों को आगे बढ़ाते समय उनमें एक अलग ही खौफ झलक रहा था।
मिट्टी के गड्ढे के पास मौजूद आकृतियाँ जैसे ही पहचान से बचने के लिए सहज रूप से ज़मीन पर लेट गईं, घुड़सवार चारों ओर जमा हो गए और इंद्रधनुषी मार्ग से उतरने वाले अंतिम घुड़सवार का इंतज़ार करने लगे। जैसे ही पूरी घुड़सवार सेना अवंती की धरती पर मजबूती से उतरी, पोर्टल वाष्पीकृत हो गया और इंद्रधनुष धीरे-धीरे फैलकर गायब हो गया। इसी बीच, घुड़सवार अनुशासित पंक्तियों में फिर से संगठित हो गए और अपने नेता के किसी आदेश पर, वे मिट्टी के गड्ढे से दूर जाने लगे।
कुम्हार और उसका शिष्य धीरे-धीरे सीधे खड़े हुए, उनकी निगाहें पीछे हटते घुड़सवारों पर टिकी हुई थीं।
“ये कौन हैं, आपा?” लड़के ने आखिरकार स्तब्ध स्वर में पूछा।

घुड़सवारों को उज्जैन की ओर तेज़ी से भागते देख कुम्हार ने अपना सिर हिलाया। “मुझे नहीं पता। लेकिन वे निश्चित रूप से इंसान नहीं हैं। और मुझे लगता है कि वे यहाँ मुसीबत खड़ी करने आए हैं।”
***

मांस खाने वाले पिशाच कोहरे और बारिश में तेजी से आगे बढ़े, अपने नुकीले दांत दिखाते हुए, चीखते-चिल्लाते हुए और अपनी पूरी ताकत से चिल्लाते हुए, डराने- धमकाने का एक पागलपन भरा प्रदर्शन कर रहे थे।
वरारुचि ने उरुमी की मूठ को अपनी उंगलियों से कसकर पकड़ लिया और प्रतीक्षा करने लगा, उस क्षण के लिए खुद को तैयार करते हुए जब जानवर अवंती के घुड़सवारों की दीवार से टकराएंगे। हमले की भयावहता का जायजा लेते हुए उसकी आंखें दाएं- बाएं घूम रही थीं, और फिर उसने अपना सारा ध्यान उन तीन पिशाचों पर केंद्रित कर दिया जो सीधे उसकी ओर बढ़ रहे थे। गहरी सांस लेते हुए उसने अपनी ढाल उठाई और अपना बलवान दाहिना हाथ फैलाया, उरुमी बिना किसी रुकावट के हवा में लहरा रही थी।
"अपनी जगह पर डटे रहो," उसने चिल्लाते हुए कहा, उसकी निगाहें सबसे आगे खड़े एक पिशाच से मिल गईं, जिसने उसे अपना निशाना बनाया था।
वह राक्षस तेज़ी से नज़दीक आता गया, और वरारुची उसकी धूसर, खुरदरी त्वचा, शरीर के बड़े हिस्से को ढकने वाली झिल्लीदार जालीदार संरचना, और तिरछी सरीसृप जैसी आँखों और नुकीले सींगों वाले उभरे हुए सिर को देख सका। उसने उस प्राणी के नुकीले दाँतों से भरे गुर्राते मुँह और चारों पैरों पर मौजूद पीछे हटने वाले पंजों को भी देखा।
जब तीनों पिशाच उसकी ओर दस गज से भी कम दूरी पर थे, तब वरारुची ने अपना हाथ थोड़ा सा उठाया। उसी समय, उसने अपने घोड़े के पार्श्व भाग में अपनी एड़ियाँ गड़ा दीं और अपना आदेश ज़ोर से चिल्लाकर दिया।
"आक्रमण करना!"
जैसे ही घुड़सवार सेना आगे बढ़ी, भाले सीधे आने वाले जानवरों की ओर निशाना साधते हुए, वरारुचि के सामने मौजूद पिशाच हवा में ऊँचा उछला और भयंकर क्रोध से सेनापति पर झपटा। उसी क्षण, वरारुचि ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया, उरुमी उसके सिर के ऊपर चक्कर लगा रही थी। अपनी लचीली तलवार को कुशलता से चलाते हुए, उसने पिशाच को बीच हवा में ही पकड़ लिया - उरुमी ने जानवर के चेहरे पर वार किया और मुँह से ही उसे दो टुकड़ों में फाड़ दिया। जैसे ही वह प्राणी दर्द से चीखा, वरारुचि ने अपनी ढाल का इस्तेमाल करके उसके गिरते हुए शरीर को एक तरफ फेंक

दिया। जमीन पर गिरने से पहले ही, वरारुचि अगले पिशाच की ओर बढ़ गया, उरुमी हवा में बेरहमी से लहरा रही थी।
वररुचि के दाहिनी ओर, कालिदास भी युद्ध के बीचोंबीच थे, और अपनी तलवार से जानवरों पर वार करके घातक हमले को रोक रहे थे।
हालांकि, भाला चलाने वाले पिशाचों से बचाव करने के लिए संघर्ष कर रहे थे।
इन जानवरों की तेज़ गति और फुर्ती के कारण भाला चलाने वालों को अपने भारी भालों से निशाना साधने में कठिनाई हो रही थी। कई भाला चलाने वाले हमलावरों को पीछे धकेलने में नाकाम रहे थे, और अब उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ रही थी, क्योंकि इन जानवरों के पंजों और दांतों से उनके चेहरे और हाथ-पैर बुरी तरह घायल हो गए थे।
“अपने भाले छोड़ दो... अपने भाले छोड़ दो,” कालिदास दहाड़ते हुए बोले और उन्होंने अपनी तलवार एक पिशाच की पसलियों के बीच घुसा दी, जो एक भालाधारी योद्धा की खुली गर्दन को कुतर रहा था। “इसके बजाय अपनी तलवारों का प्रयोग करो,” उन्होंने आगे कहा और एक अन्य राक्षस का सिर दो टुकड़ों में काट दिया। कालिदास के आदेश पर घुड़सवार सेना ने तुरंत प्रतिक्रिया दी और लगभग तुरंत ही अवंती की सेना ने पिशाचों के आक्रमण को विफल करना शुरू कर दिया। युद्ध भीषण तीव्रता से चल रहा था, लेकिन कालिदास और वरारुचि के नेतृत्व में घुड़सवार सेना धीरे-धीरे हावी होने लगी।
फिर, जैसे ही बारिश कम हुई और मैदान के ऊपर बादल छंट गए, पहाड़ियों की ओर से एक भयानक चीख गूंजी। उस आवाज़ से अवांती के सैनिक अनायास ही कांप उठे और उन्होंने मुड़कर देखा तो अंधका एक दर्रे से निकलता हुआ दिखाई दिया, उसका घिनौना चेहरा क्रोध और रक्तपिपासा से विकृत था। और उसके पीछे-पीछे और भी पिशाच चीखते-चिल्लाते हुए आ गए।
अंधक को देखते ही वरारुचि ने निष्कर्ष निकाला कि यह वही राक्षस है जो हेहेया के वृत्तांतों में वर्णित पिशाचों का नेतृत्व कर रहा है। राक्षस की सफेद आँखों को देखकर उन्हें अहसास हुआ कि यह वही दृष्टिहीन दुष्ट है जिसके बारे में देवी कालिदास ने भविष्यवाणी की थी। वरारुचि ने तुरंत अपना घोड़ा मोड़ा और कालिदास के पास चले गए।
“हमें उस चीज को गिराना होगा, भाई,” उसने अंधका की ओर इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा।
कालिदास ने सिर हिलाकर पीछे मुड़कर घुड़सवार सेना को पुकारा, “हमें कुछ भाला चलाने वाले सैनिकों की आवश्यकता है।”

फिर, जब कालिदास ने उस पर बेतहाशा वार किए और वरारुचि उसकी पकड़ से छूटने के लिए संघर्ष कर रहा था, तभी राक्षस ने अपने बंदी का सिर काट डालने के इरादे से अपना मुंह चौड़ा खोल दिया।
अंधका का खुला हुआ मुँह उसके चेहरे से बस दो फीट की दूरी पर था, राक्षस की घिनौनी साँसें उस पर पड़ रही थीं, तभी वरारुचि को अपने पास से कुछ सरसराहट की आवाज सुनाई दी। अगले ही पल, उसने पास ही कहीं से मांस के टुकड़े के गिरने की आवाज सुनी और राक्षस की पकड़ ढीली होते हुए महसूस की। एक क्षण बाद, वह अंधका की पकड़ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ा।
अपने पैरों पर खड़े होते ही, वरारुचि ने आश्चर्य से ऊपर देखा तो राक्षस के सिर के बाईं ओर से पाँच फुट लंबा एक तीर निकला हुआ था। देखते ही देखते, एक और भारी तीर अंधका की मोटी गर्दन के निचले हिस्से में जा लगा, तीर का अगला हिस्सा गहराई तक धंस गया और वरारुचि के कानों में रीढ़ की हड्डी के टूटने की तेज आवाज सुनाई दी। अंधका का सिर ज़ोर से पीछे की ओर झटका, जिससे वह अपने भारी कंधों से अलग हो गया।
राक्षस ने गहरी कराह भरी और लड़खड़ाकर पीछे हट गया, उसका बायां हाथ और ऊपरी शरीर काले पित्तयुक्त रक्त से लथपथ था। वह कुछ देर तक अनिश्चित रूप से डगमगाता रहा, अपनी गर्दन और सिर से निकले मोटे बाणों को कमजोर ढंग से खरोंचता रहा, तभी एक तीसरा बाण उसकी छाती में जा लगा और उसकी पसलियों को तोड़ दिया। अंधका जमीन पर गिर पड़ा, उसका शरीर कुछ देर तक तड़पा और फिर बेजान होकर गिर पड़ा।
पिशाचों की व्यथा से भरी चीखें गूंज उठीं, अंधका के पतन की खबर पूरे मैदान में फैल गई। देखते ही देखते, जानवरों ने लड़ने की इच्छा खो दी और दुम दबाकर पहाड़ियों की ओर भागने लगे। अवंती की घुड़सवार सेना ने उनका पीछा करने की कोशिश की, लेकिन थके हुए घोड़े इस काम के लिए सक्षम नहीं थे और यह प्रयास जल्द ही छोड़ दिया गया।
मृत राक्षस के पास जाकर, वरारुचि घुटने टेककर उसके निर्जीव शरीर का बारीकी से निरीक्षण करने लगे। जब कालिदास आकर उनके पास खड़े हुए, तो वरारुचि ने हाथ बढ़ाकर अंधक की छाती से भारी बाण निकालने का प्रयास किया। बाण गहराई तक धंसा हुआ था और जरा भी नहीं हिला।
“यह चीज़ काम करती है,” उसने कालिदास की ओर देखते हुए कहा, उसकी आँखें राहत और आश्चर्य से चौड़ी हो गई थीं। “बिल्कुल वैसे ही जैसे वराहमिहिर ने कहा था।”

कालिदास ने सिर हिलाया और अपनी दृष्टि मैदान के उत्तर की ओर घुमाई, जहाँ रथों की एक कतार युद्धक्षेत्र की ओर बढ़ रही थी। उन्होंने रथों के सबसे आगे वाले रथ में वराहमिहिर को बैठे हुए देखा।
“मुझे खुशी है कि उसने नदी पार करने और समय पर यहाँ पहुँचने का रास्ता खोज लिया,” कालिदास ने आते हुए रथों की ओर हाथ हिलाते हुए कहा। “वरना हम दोनों शायद गिद्धों का भोजन बन जाते।”
“शायद तुम…” वरारुची ने सहमति जताते हुए कहा और खड़े हो गए। “मैं, निश्चित रूप से।”
***

"तुम यहाँ इसलिए आए हो क्योंकि... तुम्हें सम्राट से एक खंजर चाहिए, है ना?" शहर के पहरेदार का कप्तान अनिश्चितता से दोनों घुड़सवारों को देख रहा था, उसकी उंगलियाँ घबराहट में उसकी छाती पर लगे कांसे के पदक को कुरेद रही थीं। उसके चेहरे के भाव से स्पष्ट था कि कप्तान को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि घुड़सवार किस ओर इशारा कर रहे हैं।
“हां,” नासत्या ने सिर हिलाया, कप्तान की मंद बुद्धि से निपटने में पूरी तरह ऊबते हुए। “मैंने तुम्हें यही तो बताया था।”
“तो आप दोनों सम्राट से मिलने का समय मांग रहे हैं... छुरी के लिए। क्या यह सही है?”
कप्तान बोलते समय बार-बार अपनी निगाहें इधर-उधर घुमा रहा था। उन दोनों घुड़सवारों के पतले लंबे चेहरे, उनके सुनहरे लंबे बाल और उनकी ठंडी, झुकी हुई आँखों से हर चीज़ को देखने का तरीका उसे बेचैन कर रहा था। वह सोच रहा था कि ये घुड़सवार कौन हैं और अवंती की सेना की किसी भी टुकड़ी द्वारा रोके बिना वे उज्जैनी के इतने करीब कैसे पहुँच गए।
“नहीं, हम कोई मुलाकात नहीं चाहते, क्योंकि हमें आपके राजा से मिलने में कोई खास दिलचस्पी नहीं है,” दूसरे घुड़सवार, दसरा ने संक्षिप्त लहजे में कहा। “हम यहीं इंतजार करने में प्रसन्न होंगे, बशर्ते आपके राजा हमें कटार सौंप दें।” इस घोर अनादर को देखकर कप्तान स्तब्ध रह गया, लेकिन उसने केवल अपना गला साफ किया। "तो, आप चाहते हैं कि महल को सूचित किया जाए कि आप इस खंजर के लिए यहाँ आए हैं।"
“जी हां,” नसात्या ने फिर कहा। “और हां, मेरी सलाह है कि काम में थोड़ी जल्दी करें। हमें इंतजार करने की आदत नहीं है।”

“बिल्कुल,” दासरा ने अपने भाई के साथ तीखी मुस्कान का आदान-प्रदान करते हुए कहा। “वरना, हम शिष्टाचार को दरकिनार करके बिना निमंत्रण के ही आपके इस खूबसूरत छोटे शहर में घुसने का मन बना लेते।”
दोनों घुड़सवारों के कंधों के पार एक नज़र डालते हुए कप्तान को शत्रुता का बोध हो गया। थोड़ी दूरी पर घुड़सवारों की एक टुकड़ी खड़ी थी, जो हेलमेट पहने हुए और धनुष, तलवार और ढालों से लैस थे। कप्तान के अनुमान में उनकी संख्या लगभग पाँच सौ थी, और उन्हें इस बात का गहरा एहसास था कि नगर रक्षक दल की उनकी अपनी टुकड़ी, जिसमें बीस से भी कम सैनिक थे, संख्या में बुरी तरह कम थी। इससे भी बुरी बात यह थी कि वे उज्जैन की दीवारों से काफी दूर, शहर के पूर्व में स्थित एक मैदान में थे।
किसी भी अप्रिय घटना की स्थिति में, शीघ्र सहायता मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी।
"और मैं किसे बताऊं कि खंजर कौन चाहता है?" उसने कुछ आत्मविश्वास जुटाते हुए पूछा।
“देवों के राजा इंद्र के दरबार से अश्विनों का भाईचारा,” नासत्य ने उत्तर दिया।
***

"क्या आपको खुशी नहीं है कि हम आखिरकार इन रथों को साथ ले आए?"
वराहमिहिर ने अपनी भौंहें उठाकर वररुचि की ओर मुस्कुराया, जो रथों में से एक के सहारे झुके हुए थे और रथ के पीछे लगे भारी लकड़ी के बाजू पर प्रशंसा का भाव लिए हाथ फेर रहे थे। बाजू के खांचे में पांच फुट से थोड़ा अधिक लंबा एक तीर पहले से ही फंसा हुआ था, जो किसी भी क्षण दागे जाने के लिए तैयार था। “उन्होंने हमारी गति काफी धीमी कर दी, लेकिन हाँ, अंत में वे हमारे लिए जीवनरक्षक साबित हुए,” वरारुची ने उस यंत्र पर टकटकी लगाए सहमति जताते हुए कहा। “इसके बिना हम उस राक्षस को कभी नहीं मार पाते।” एक गहरी साँस लेते हुए उन्होंने वराहामिहिरा की ओर देखा। “आपने कमाल की चीज़ बनाई है। हमें शाही सेना में ऐसे और यंत्र शामिल करने चाहिए।”
सैनिक त्रेही गांव की सीमा से लगे पहाड़ी ढलानों पर विश्राम कर रहे थे। कुछ जगहों पर आग जलाई गई थी और सैनिकों को दोपहर के भोजन के लिए राशन लाने त्रेही भेजा गया था। घायलों की देखभाल की जा रही थी, जबकि मृतकों की गिनती जारी थी और उन्हें मैदान के किनारे रखा जा रहा था। घोड़े पहाड़ियों में रुक-रुक कर चर

रहे थे, सैनिक छोटे-छोटे समूहों में बैठकर धीमी आवाज़ में बातें कर रहे थे, उनके भाव थकान से लेकर राहत और विजय तक विभिन्न भावों को दर्शा रहे थे।
“पर तुमने नदी कैसे पार की?” कालिदास ने अपने बुरी तरह छिले घुटने पर पट्टी बांधते हुए पूछा। “जब हम नदी पार कर रहे थे, तो रथ कीचड़ में धंसते जा रहे थे।” “हम थोड़ा पूर्व की ओर बढ़े और एक ऐसी जगह मिली जहाँ ज़मीन सख्त थी और धाराएँ कम तेज़ थीं,” वराहमिहिर ने अपनी बैसाखी के सहारे लड़खड़ाते हुए कालिदास के बगल में बैठते हुए समझाया। “फिर भी, हमें दो रथ छोड़ने पड़े। इसी वजह से हमें देरी हुई।”
मुझे लगता है कि आपने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद यह मुकाम हासिल कर लिया, और वह भी बिल्कुल सही समय पर।
“हाँ, हालाँकि तुमने पहले तीर से मुझे लगभग मार ही डाला था। अगर तुम्हारा निशाना ज़रा सा भी चूक जाता तो मैं आज वहीं पड़ा होता।” वरारुची ने बिछाई जा रही लाशों की कतार की ओर इशारा किया।
“मेरी नज़र में, तुम्हारा सिर लगभग राक्षस के मुँह के अंदर था, तो समझो तुम्हारी मौत पक्की थी,” वराहमिहिर ने लापरवाही से कंधे उचकाते हुए कहा। “मुझे लगा कि अवंती के तीरों से मरना ज़्यादा सम्मानजनक तरीका होगा।”
जब कालिदास और वराहमिहिर ने एक-दूसरे को शरारती मुस्कान दी, तो वरारुचि ने बनावटी झुंझलाहट दिखाते हुए अपना हाथ माथे पर रख लिया। तभी एक सेनापति सलाहकारों के पास आया। उसने वरारुचि से कहा, “माननीय, हमने अंतिम गिनती कर ली है।”
"तो नुकसान किस तरह का है?"
“दो सौ बयालीस लोग मारे गए हैं और साढ़े तीन सौ से अधिक घायल हुए हैं, जिनमें से लगभग पचास लोग बेहद गंभीर रूप से घायल हैं, महोदय। मुझे डर है कि उनमें से कुछ बच नहीं पाएंगे। हमने लगभग सत्तर घोड़े भी खो दिए हैं।”
वररुची ने कुछ पल तक मृत सैनिकों की कतार को उदास भाव से देखा। "हमलावरों का क्या हुआ?"
“हमने लगभग चार सौ तीस पिशाचों के शव गिने हैं। उस बड़े शव के अलावा।” वराहमिहिर ने कुछ कहने के लिए अपना मुँह खोला ही था कि एक सैनिक की दर्द भरी चीख से उनकी बात अधूरी रह गई, जिसे एक अस्थायी स्ट्रेचर पर उठाया जा रहा था। सैनिक की ऊपरी बांह और कंधा खून से लथपथ, क्षत-विक्षत ऊतकों का ढेर था, हड्डी का सफेद भाग साफ दिख रहा था जहाँ पिशाच के दांतों ने मांस का एक बड़ा टुकड़ा नोच डाला था।

वराहमिहिर दर्द से कराह उठा और चीख के शांत होने का इंतजार करने लगा। शांति बहाल होने पर उसने पूछा, "क्या हमने हमलावरों में से किसी को जिंदा पकड़ा है?" “कोई नहीं, माननीय न्यायाधीश। वे सभी भागने में सफल रहे।”
"मैं चाहता हूं कि सभी पिशाचों और उस राक्षस को एक गड्ढे में फेंककर जलाकर राख कर दिया जाए," वरारुची ने क्रोध से लाल होते हुए आदेश दिया।
“जी हाँ, महाराज। और... हमारे मृतकों का क्या होगा?” कप्तान ने अपने पीछे खड़ी पंक्ति की ओर इशारा करते हुए पूछा। “क्या हम उन्हें अपने साथ वापस ले जा रहे हैं?”
“उज्जायिनी तो बस आधे दिन की यात्रा है,” वरारुचि ने सिर हिलाते हुए कहा। “अवंती के शहीदों का अंतिम संस्कार पवित्र क्षिप्रा नदी के किनारे ही किया जाना चाहिए।”
***

“उनके हावभाव से साफ है कि वे हमें डरा-धमकाकर हलाहल त्यागने पर मजबूर करना चाहते हैं, या फिर हमें टकराव के लिए उकसाना चाहते हैं,” वेताल भट्ट ने सम्राट से क्षपणक की ओर देखते हुए कहा। धनवंतरी आचार्य के बगल में खड़े थे, जबकि शंकु हमेशा की तरह सम्मानपूर्वक पीछे हट गए। “नारद ने उस दिन जिस तरह के मीठे शब्द या प्रलोभन दिए थे, वैसे कुछ भी नहीं।”
राजा और चार सलाहकार शाही दरबार से सटे एक निजी कक्ष में थे, जहां वे देवलोक से आए घुड़सवारों द्वारा रखी गई मांग पर जल्दबाजी में विचार-विमर्श कर रहे थे।
"सिर्फ पांच सौ सैनिकों की टुकड़ी के साथ, मुझे नहीं लगता कि डराना-धमकाना कोई अच्छी रणनीति होगी," धनवंतरी ने अपने चौड़े कंधों को उचकाते हुए कहा।
“खैर, अगर मकसद डराना है, तो यह काम नहीं करेगा, चाहे उनकी संख्या कितनी भी हो,” विक्रमादित्य ने क्रोधित होकर कहा। “और अगर वे लड़ने के लिए उतावली हैं, तो उन्हें निराश नहीं होना पड़ेगा। आचार्य जी, कृपया नगर रक्षकों को सूचित करें कि वे द्वारों पर बैरिकेड लगा दें और दीवारों के साथ-साथ तीरंदाजों को तैनात कर दें। और शाही सेना को बता दें कि मुझे एक हजार घुड़सवार और एक हजार पैदल सैनिक युद्ध में अपने साथ ले जाने हैं।”
“क्या आप स्वयं वहां जाने की योजना बना रहे हैं, सम्राट?” राजगुरु ने अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से राजा का आकलन किया।
“बिल्कुल।” विक्रमादित्य ने आश्चर्य से वेताल भट्ट की ओर देखा। “उज्जायिनी के दरबार में आने से इनकार करके और हमें कटार लेकर उनके पास जाने पर अड़चन

डालकर अश्विनों ने अवंती को सीधी चुनौती दी है। मैंने इसे स्वीकार करने का निर्णय लिया है – हालाँकि मैं उन्हें अपना मन बदलने और शांति से लौटने का एक अवसर दूंगा।”
लेकिन अगर तुम युद्ध में जाओगे, तो तुम सीधे उनके जाल में फंस जाओगे, विक्रमा। सम्राट ने आचार्य को ध्यानपूर्वक देखा, जबकि अन्य तीन सलाहकारों ने एक-दूसरे को हैरानी भरी नजरों से देखा।
“वे घुड़सवार मूर्ख नहीं हैं – वे शायद जानते हैं कि हम बिना लड़ाई के तलवार नहीं सौंपेंगे। लेकिन उनकी उम्मीद यही है कि उनकी धृष्टता से आप भड़क उठेंगे और उनसे मुकाबला करने के लिए निकल पड़ेंगे। अगर आप ऐसा करते हैं, तो वे युद्ध की शर्तें तय करने में सफल हो जाएंगे। बिना कुछ किए, वे अवंती के राजा को अपना महल छोड़कर उनके पास आने के लिए मजबूर कर देंगे, न कि इसके उलट।”
“दिमागी खेल...” राजा ने सोच-विचार करते हुए सिर हिलाया। “मैं समझ गया, आचार्य।”
“जी हाँ। आपका वहाँ जाना इस बात को स्वीकार करना होगा कि अश्विनी शासक आपके ध्यान देने योग्य हैं – हमें अश्विनी सेनापतियों को यह संतुष्टि नहीं देनी चाहिए। उज्जैन के दरबार से यह संदेश जाना चाहिए कि अवंती के राजा को घुड़सवारों के एक समूह और उनकी तुच्छ धमकियों से कोई फर्क नहीं पड़ता।” “लेकिन अश्विनों ने हमें तलवार सौंपने का आदेश देकर पहला कदम उठाया है,” विक्रमादित्य ने विरोध किया। “यह एक खुली चुनौती है, और इसका जवाब न देना कायरता होगी। हम महल के द्वार के अंदर छिपकर इस चुनौती को अनदेखा नहीं कर सकते; हमें इसका मुकाबला करना होगा।”
राजगुरु ने स्पष्ट किया, “मैंने चुनौती को नजरअंदाज करने के बारे में कुछ नहीं कहा। मैंने सिर्फ इतना कहा कि आपको इससे प्रभावित होते हुए नहीं दिखना चाहिए।”
कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया, सन्नाटा इतना गहरा था कि बगल के दरबार में सुनाई देने वाली धीमी फुसफुसाहट भी एक स्थिर, नीरस ध्वनि में बदल गई। वेताला भट्ट ने अपने चारों ओर मौजूद चेहरों को देखा, और अंततः उनकी निगाह सम्राट पर टिक गई।
"आपकी अनुमति से, हम चारों अश्विनों के भाईचारे से निपटेंगे।"
***

कोसला से निकला जुलूस घने जंगलों वाली पहाड़ी से नीचे उतरता गया और मगध के महल के द्वार धीरे-धीरे नजरों से ओझल होते चले गए।

पल्लवन, जो एक बंद रथ में बैठे थे, पर्दों के बीच से झाँकते हुए पेड़ों के बीच से गिरिव्रज नगर का अवलोकन कर रहे थे। इन पहाड़ियों से नगर शांत और निर्मल प्रतीत होता था, परन्तु दूत जानते थे कि दूर से देखने पर वास्तविकता हमेशा बदलती रहती है। और वैसे भी, उन्हें राजधानी के कुछ हिस्सों से उठता हुआ काला धुआँ दिखाई दे रहा था – जो मगध के आगजनी करने वालों और भीड़ द्वारा हाल ही में किकटों की असहाय आबादी पर किए गए क्रूर अत्याचारों की भयावह याद दिला रहा था। शूरासेना से मुलाकात के बाद पल्लवन को इस बात में कोई संदेह नहीं रहा कि किकटों का नरसंहार एक सुनियोजित नरसंहार का रूप ले रहा था, जिसे मगध राजमहल का पूरा समर्थन प्राप्त था। लेकिन उन्हें इस अचानक उत्पन्न हुई शत्रुता के कारण का पता नहीं था। वे जानते थे कि किकट अधिकांशतः शांतिप्रिय थे, मगध समाज में अच्छी तरह घुलमिल गए थे, और मगध शासन के विरुद्ध उठने वाली कुछ आवाज़ों पर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया था।
इसलिए, भले ही दिवंगत राजा का अंगरक्षक उस सनकी समूह का हिस्सा रहा हो, मगध के पास अपने सभी किकाटा प्रजाजनों के खिलाफ विद्रोह करने का कोई कारण नहीं था... पल्लवन अपने विचारों में डूबे हुए थे कि तभी उनकी गाड़ी अचानक, अप्रत्याशित रूप से रुक गई। उसी क्षण, दूत को आगे कहीं से हल्की-सी हलचल सुनाई दी। उन्होंने पर्दा हटाकर अपना सिर बाहर निकाला और गर्दन घुमाकर देखने की कोशिश की कि क्या हो रहा है; लेकिन सड़क के मोड़ के कारण उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया।
सीट पर सरकते हुए, दूत ने दूसरी तरफ का पर्दा हटाया और बाहर देखा। उसने देखा कि उसके अंगरक्षक दल के पाँच घुड़सवार एक दुबले-पतले आदमी के चारों ओर जमा थे, जो किसी प्रकार की विनती करता प्रतीत हो रहा था। अंगरक्षक आपस में बहस कर रहे थे और उस आदमी को धक्का देकर दूर हटा रहे थे।
"क्या हो रहा है?" पल्लवन ने अपने रथ के पास खड़े एक अंगरक्षक से पूछा। घुड़सवार समूह के पास पहुंचा और आगे चल रहे अंगरक्षकों में से एक से कुछ देर बात की। पल्लवन ने देखा कि वह छोटा आदमी एक तरफ असहाय और दयनीय हालत में खड़ा था, उसके हाथ प्रार्थना की मुद्रा में जुड़े हुए थे। थोड़ी देर बाद घुड़सवार वापस मुड़ गया।
“वह आदमी हमारा रास्ता रोक रहा है, महोदय,” घुड़सवार ने समझाया। “वह आपसे मिलने पर अड़ा हुआ है और कोड़े मारने पर भी हमें आगे नहीं जाने दे रहा है। वह कहता है कि उसकी जान खतरे में है और आपको उसे बचाना होगा।”
"कौन है ये?"

"उनका कहना है कि वे एक घुमंतू संगीतकार हैं, महोदय।"
पल्लवन अचंभित होकर सड़क के किनारे दुबके हुए उस व्यक्ति को देखने लगा। फिर, एक ऐसी सहज प्रवृत्ति का पालन करते हुए जिसे वह स्वयं भी पूरी तरह से समझा नहीं सकता था, दूत ने अपनी आवाज ऊंची की और आगे चल रहे अंगरक्षकों को संबोधित किया।
उसे आने दो।
घुड़सवारों ने अनिच्छा से उस आदमी को आगे जाने दिया, और वह तुरंत गाड़ी के पास पहुंचा, डर से कांपता और दुबका हुआ।
“आप क्या चाहते हैं?” पल्लवन ने विनम्रता से पूछा।
“कृपया मेरी मदद कीजिए। मैं एक संगीतकार हूँ। मैंने सुना है कि आप कोसला से हैं। मेरी दादी भी कोसला से थीं। मैं आपके पास दौड़कर आई हूँ। कृपया मेरी मदद कीजिए।”
“ठीक है, लेकिन आप मुझसे क्या चाहते हैं?” दूत ने धैर्यपूर्वक पूछा।
“मगध में मेरी जान को खतरा है, महोदय। मैं चाहता हूँ कि आप मुझे अपने साथ कोसल ले चलें।” इस बार वह व्यक्ति थोड़ा अधिक होश में था।
"क्या आप किकाटा हैं?"
“जी नहीं। लेकिन मैंने कुछ देखा है और मुझे डर है कि मैं पकड़ा जाऊँगा…” डर से उसका चेहरा काँप उठा। उसने चारों ओर देखा और थरथरा गया। “अगर उन्हें पता चल गया कि मैंने महल में जो कुछ हुआ वो देखा है, तो वे मुझे उसी तरह मार डालेंगे जैसे उन्होंने पुराने राजा के अंगरक्षक को मारा था।”
पल भर के लिए पल्लवन का चेहरा थम सा गया, क्योंकि वह उस आदमी के शब्दों के निहितार्थों को समझने की कोशिश कर रहा था। फिर, यह देखने के लिए कि कहीं कोई उन्हें देख तो नहीं रहा, उसने तेज़ी से चारों ओर देखा और गाड़ी का दरवाज़ा खोल दिया।
“अंदर जाओ,” उसने कड़े स्वर में कहा। वह जानता था कि काफिले को राजनयिक छूट प्राप्त है और बिना किसी ठोस कारण के उसे रोका या तलाशा नहीं जाएगा।
जैसे ही वह व्यक्ति रथ पर चढ़ गया, पल्लवन ने अपने अंगरक्षकों की ओर देखा। “अब हम पूरी गति से चलेंगे। मगध की सीमा पार करने तक हमें गति धीमी नहीं करनी है।” जैसे-जैसे जुलूस आगे बढ़ा, दूत ने बड़बड़ाते हुए पतले पर्दों को कसकर खींच लिया। फिर उसने गाड़ी के फर्श पर बैठे व्यक्ति की ओर आशा भरी निगाहों से देखा।

“जब तक तुम अपना सिर नीचे रखोगे, मेरी गाड़ी में तुम सुरक्षित हो। अब मुझे बताओ महल में क्या हुआ... तुमने क्या देखा। मुझे सब कुछ बताओ।”
***

पश्चिम की ओर से छाए धुंधले आकाश से सुनहरी पीली धूप की एक किरण फूट पड़ी और उज्जैनी के बाहरी मैदान को अपनी क्षणिक उमंग से सराबोर कर दिया, जब चारों पार्षद शहर के पूर्वी द्वार से आगे बढ़ते हुए अश्विनी घुड़सवार सेना से मिलने जा रहे थे। आचार्य का घोड़ा थोड़ा आगे था, उसके पीछे क्षपणक चल रहे थे, और उनके दोनों ओर शंकु और धनवंतरी थे। सैनिकों का एक छोटा दस्ता सबसे पीछे था।
घुड़सवारों के काफिले के पीछे, प्राचीरों पर ऊँचाई पर, नगर रक्षक दल के तीरंदाज किलेबंदी के पीछे दुबके हुए थे और दूर से अश्विनों के समूह पर सावधानीपूर्वक नज़र रख रहे थे। नीचे, अवंती की पैदल सेना और घुड़सवार सेना भारी बैरिकेड वाले द्वार के पीछे व्यवस्थित पंक्तियों में खड़ी थी।
शहर के अंधेरे से निकलकर धूप में आते छोटे समूह को देखकर, अपने घोड़े पर सवार नसात्या, जो अपनी एक कोहनी अपनी जांघ पर टिकाए बैठा था, ने लापरवाही से अपने सुंदर चेहरे से बालों की एक लट को पीछे हटाया और मुस्कुराते हुए अपने भाई की ओर देखा।
ऐसा लगता है कि मानव राजा समझौता करने के लिए यहां आया है।
दासरा ने विजय की ठंडी मुस्कान के साथ जवाब दिया, उसकी निगाहें पास आ रहे काफिले पर टिकी थीं।
भाई, ये तो घोर आत्मसमर्पण का मामला लग रहा है। लगता है वो महिलाओं के साथ हमारे पास आया है – शायद वो हमें सिर्फ़ छुरी से ज़्यादा किसी और चीज़ से भी संतुष्ट करना चाहता है।
जब वे अश्विनों के लगभग निकट पहुँच गए, तो वेताल भट्ट ने अपने घोड़े की लगाम थोड़ी देर के लिए रोकी। हाथ उठाकर उन्होंने अंगरक्षकों को वहीं रुकने का संकेत दिया, फिर अपने घोड़े को आगे बढ़ाया। शंकु, क्षपणक और धनवंतरी ने भी उनका अनुसरण किया।
लेकिन जैसे ही राजगुरु ने कुछ कदम बढ़ाए, वे एक बार फिर रुक गए क्योंकि बाकी तीन पार्षद भी उनके पास आ गए। चारों पार्षदों और अश्विनों ने जगमगाते मैदान में एक-दूसरे को देखा, सूरज की आखिरी कोशिश में दिन के कोहरे को चीरते हुए ज़मीन पर लंबी-लंबी परछाइयाँ पड़ रही थीं। सन्नाटा केवल हवा की हल्की सीटी की

आवाज़ से टूट रहा था, जिसके बीच-बीच में भोजन की तलाश में निकले दो मैनाओं की कर्कश चीखें सुनाई दे रही थीं।
यह देखकर कि अवंती के मनुष्य बीच की दूरी को कम करने के लिए कोई और प्रयास नहीं कर रहे थे, नासत्या ने अनिच्छा से अपने घोड़े को आगे बढ़ाया। दासरा अपने भाई के बगल में चलने लगा और दोनों जुड़वां भाई सलाहकारों के करीब पहुँच गए। “मुझे लगता है कि आप अवंती के राजा विक्रमादित्य हैं,” नासत्या ने आचार्य से अभिमानपूर्ण लहजे में कहा।
"मुझे खेद है कि आप गलत धारणा बना रहे हैं, देवा," वेतला भट्टा ने हल्की मुस्कान के साथ उत्तर दिया।
नसात्या की भौंहें असमंजस से तन गईं, उसकी निगाहें पार्षदों के चेहरों पर घूम रही थीं। "तो फिर तुम कौन हो?" उसने पूछा।
“मैं वेताल भट्ट हूँ, और ये धनवंतरी, क्षपणक और शंकु हैं,” मुख्य सलाहकार ने अपने साथियों की ओर इशारा करते हुए कहा। “हम सम्राट विक्रमादित्य के सलाहकार हैं।”
“और आपके सम्राट...?” नासत्या ने पहले पार्षदों के पीछे प्रतीक्षा कर रहे अंगरक्षकों के समूह पर अपनी निगाहें टिकाईं, फिर शहर के द्वारों की ओर, किसी शाही व्यक्ति के होने के प्रमाण की तलाश में।
“वह यहाँ नहीं हैं। हमारे सम्राट को अपने महल में और भी अधिक महत्वपूर्ण कार्यों को निपटाना है।”
राजगुरु को नासत्य और दासरा के चेहरों पर छाए अविश्वास को देखकर आनंद हुआ। अश्विन सेनापति शुरू से ही विक्रमादित्य के उनके पास आने की उम्मीद कर रहे थे
– लेकिन उन्हें बताया गया कि मानव राजा ने उन्हें अपने समय के योग्य नहीं समझा। आचार्य को पता था कि उनका दांव सफल रहा।
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा क्योंकि नासत्या ने खुद को संभालने की कोशिश की। "क्या तुम हमारे लिए वीशादा का खंजर लाए हो?" उसने कठोर स्वर में पूछा, मानो वह पहल को अपने हाथ में लेने के लिए बेताब हो।
वेताल भट्ट ने कुछ क्षण दोनों देवताओं को देखा और फिर सिर हिलाते हुए कहा, “मुझे लगता है कि हमने नारद को यह स्पष्ट कर दिया था कि हम कटार को किसी भी कीमत पर नहीं देना चाहते। फिर इसे आपके पास लाने का सवाल ही कहाँ उठता है?” “अश्विन संघ का विरोध करना तुम्हारे लिए घातक सिद्ध होगा,” दासरा ने तेवर चढ़ाते हुए कहा, उसकी निगाहें आचार्य के दाहिने हाथ में पकड़े पतले, लंबे भाले पर टिक गईं। उसे लगा कि हथियार पर बनी दो खोपड़ियाँ किसी डरावनी आकृति

का संकेत दे रही हैं। उसने पहली बार शंकु की ढाल और उसकी पतली कमर पर लटके हुए फेंकने वाले चाकुओं की कतारों पर भी ध्यान दिया।
“देव, हम आपसे निवेदन करते हैं कि हमें शांति से रहने दें,” आचार्य ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया। “परन्तु यदि आवश्यकता पड़ी तो हम अवंती और कटार की रक्षा अंतिम व्यक्ति तक करने के लिए तैयार हैं।”
“मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे अवंती में अब बस कुछ ही आदमी बचे हैं,” नासत्या ने अपने भाई की ओर तिरछी नज़र डालते हुए हँसते हुए कहा। “देखो यहाँ वीशादा के खंजर की रक्षा करने कौन आया है – राजा नहीं, जो अपने महल में छिपना पसंद करता है, बल्कि एक बूढ़ा आदमी, एक मोटा आदमी और... दो औरतें।”
वेताल भट्ट ने महसूस किया कि देवता के उपहास से शंकु और क्षपनाका अकड़ गई हैं। लेकिन इससे पहले कि दोनों महिलाएं व्यंग्य का जवाब दे पातीं, आचार्य के दाहिनी ओर से धनवंतरी ने बोलना शुरू कर दिया।
“फिलहाल हमारे राजा को भूल जाइए... पहले इस मोटे आदमी, इस बूढ़े आदमी और यहाँ मौजूद इन दो औरतों के सामने अपनी काबिलियत आजमाइए।” वैद्य की आवाज़ शांत और प्रसन्न थी, उनका चेहरा हंसी से दमक रहा था। “लेकिन जो भी हो, ध्यान रखना कि औरतों से हार मत जाना। नहीं तो देवलोक में पल रहे बच्चों के लिए यह कोई प्रेरणादायक कहानी नहीं बनेगी।”
जैसे ही ताना चुभ गया, नासत्या और दासरा के चेहरे कठोर हो गए, और राजगुरु समझ गए कि अब पासा पलट चुका है। मानो इस बात की पुष्टि करते हुए, दासरा ने अपना हाथ अपनी कमर पर लटकी तलवार की मूठ पर रख दिया।
"तो चलो इसे अभी निपटा लेते हैं," उसने गुस्से में बुदबुदाया।
आचार्य ने अपनी आंखों के कोने से महसूस किया कि दूर पंक्ति में तैनात अश्विनी घुड़सवार सेना अपने घोड़ों पर सीधी हो गई और अपनी तलवारों की म्यान की ओर हाथ बढ़ाया।
“देव, कोई मूर्खतापूर्ण कार्य मत करो,” वेताला भट्ट ने चेतावनी भरे लहजे में हाथ उठाया। “आक्रामकता का जरा सा भी संकेत मिलते ही अवंती के धनुर्धारी अपने तीर बरसा देंगे।”
अश्विन सेनापतियों ने उज्जैन की दीवारों की चोटी की ओर देखा तो उन्हें धनुष ताने, तीरंदाजों की एक लंबी कतार दिखाई दी, जिनके तीर उनकी ओर नीचे की ओर निशाना साधे हुए थे। नासत्या मन ही मन मुस्कुराया और उसने महसूस किया कि मैदान में आगे न बढ़कर अपनी जगह पर डटे रहकर, उस बूढ़े सलाहकार ने चतुराई से उसे और दसरा को तीरंदाजों की सीमा में खींच लिया था।

किले की प्राचीरों की ओर इशारा करते हुए राजगुरु ने आगे कहा, “उज्जायिनी की दीवारों के पीछे दस हजार से अधिक सैनिक हैं। मेरा मानना है कि आपके साथ मौजूद पाँच सौ घुड़सवार उनका मुकाबला करने में सक्षम होंगे। इसलिए, आपके भले के लिए, मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि आप शांतिपूर्वक देवलोक लौट जाएँ।”
ठीक उसी क्षण सूर्य घने बादलों के पीछे छिप गया, और मैदान पर शाम का गहरा अंधेरा छा गया। अश्विन सेनापति अपने घोड़ों पर बैठे थे, उनके होंठ भावहीन थे और वेतला भट्ट को घूर रहे थे। तभी, अचानक, नासत्या के चेहरे पर एक धूर्त मुस्कान प्रकट हुई, जो धीरे-धीरे फैलती हुई उसकी आँखों तक पहुँच गई।
ये इंसान कुछ नहीं जानते और न ही कुछ शक करते हैं, भाइयों... क्यों न इन्हें एक सरप्राइज दिया जाए?
आचार्य ने दशरा के होठों पर वही धूर्त मुस्कान देखकर व्याकुल होकर भौंहें चढ़ा लीं। लेकिन इससे पहले कि वे इस बारे में और सोच पाते, नासत्या ने उनसे बात की।
“तुम कटार नहीं छोड़ोगे और हम इसके बिना नहीं जाएंगे – मुझे इस समस्या का एक ही हल नज़र आता है,” देव ने मुस्कुराते हुए कंधे उचकाए। अपने घोड़े को घुमाते हुए, उसने आखिरी बार पीछे मुड़कर देखा। “सलाहकारों, अपने शहर को ब्रदरहुड के प्रकोप से बचाने के लिए तैयार हो जाओ।”
इसके साथ ही, अश्विन सेनापति घोड़ों की टापों की गड़गड़ाहट के साथ वापस अपनी टुकड़ियों की ओर लौट गए।

घेराबंदी
राजगुरु, आपको क्या लगता है वे क्या कर रहे हैं?
यह सवाल नगर सुरक्षा बल के एक वरिष्ठ कप्तान ने पूछा, जो कद में छोटा था, जिसकी दाढ़ी करीने से कटी हुई थी और नाक टूटी हुई थी। कप्तान वेताला भट्ट और धनवंतरी के साथ था, जो किले की दीवारों के पीछे बने रास्ते पर खड़े होकर पूर्वी मैदान की ओर देख रहे थे। उज्जैन में अंधेरा तेजी से ढल रहा था और ऊपर से हल्की फुहार गिर रही थी, जिससे उनके कपड़े और बाल धीरे-धीरे भीग रहे थे और असुविधा बढ़ रही थी।
"ऐसा लगता है कि वे कुछ नहीं कर रहे हैं," व्याकुल होकर वेताला भट्टा ने मैदान में एकत्रित अश्विनों को देखते हुए अपना सिर हिलाया।
सलाहकारों और अश्विन सेनापतियों के बीच मौखिक बहस को पौने घंटे बीत चुके थे। उज्जैनी की दीवारों की सुरक्षा में लौटने के बाद, आचार्य और धनवंतरी पूर्वी द्वार की रक्षा की निगरानी में जुट गए, जबकि क्षपणक दक्षिणी और पश्चिमी द्वारों की सुरक्षा के लिए निकल गए। शंकु को उत्तरी द्वार को मजबूत करने के साथ-साथ उज्जैनी की उत्तरी दीवार की परिधि से बाहर फैले घरों को खाली कराने का कार्य सौंपा गया था - यह एक घनी आबादी वाले और समृद्ध शहर का स्वाभाविक विस्तार था जो नए शहरी इलाकों को जन्म दे रहा था।
राजगुरु और धनवंतरी ने अश्विनों के विरुद्ध पूर्व आक्रमण का नेतृत्व करने की संभावना पर विचार-विमर्श किया था, लेकिन चारों ओर तेजी से अंधेरा छाते देख उन्होंने यह विचार त्याग दिया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि खुले मैदान के

अंधेरे में जान गंवाने का जोखिम उठाने से बेहतर है कि दीवारों की सुरक्षा में देवताओं की प्रतीक्षा की जाए।
आश्चर्य की बात यह है कि उज्जैन को आक्रमण से बचाने के लिए किलेबंदी किए जाने के दौरान, अश्विनों ने स्वयं युद्ध के प्रति कोई विशेष रुचि या उत्साह नहीं दिखाया – नासत्य की गंभीर चेतावनी के बावजूद। जैसे-जैसे दिन ढलता गया, देव सेना बस इधर-उधर खड़ी रही, और आचार्य को जो समझ में आया, उससे ऐसा प्रतीत हुआ मानो घुड़सवार किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हों।
“ऐसा नहीं लगता कि वे हमला करने की जल्दी में हैं,” धनवंतरी ने अपने चौड़े माथे पर जमा हुए पानी के छींटे पोंछते हुए कहा। राजगुरु की ओर मुड़ते हुए उन्होंने एक भौंह ऊपर उठाई। “क्या आपको लगता है कि वे हम पर हमला करने के बारे में दोबारा सोच रहे हैं? शायद उन्हें एहसास हो गया है कि उन्होंने हमारी ताकत को कम आंका था...”
“नहीं,” वेतला भट्टा ने दृढ़ता से सिर हिलाया। “वे किसी का या किसी चीज़ का इंतज़ार कर रहे हैं। मुझे इस बात का पूरा यकीन है।”
तभी, एक सिपाही संकरी सीढ़ियों से ऊपर किले की प्राचीर तक उतरा, जो नीचे की गलियों और संकरी रास्तों से होकर जाती थीं। पैदल मार्ग पर कदम रखते हुए, सिपाही राजगुरु के पास पहुँचा और झुककर प्रणाम किया। “महाराज, हमें जासूसों की रिपोर्ट मिल गई है,” उसने हाँफते हुए और साँस रोकते हुए कहा।
जैसे ही वेताल भट्ट को पता चला कि अश्विनी घुड़सवार सेना की संख्या पाँच सौ से अधिक नहीं है, उन्होंने जासूसों को आठों दिशाओं में फैलकर अतिरिक्त सैनिकों की तलाश करने का आदेश दिया। उन्हें पूरा विश्वास था कि देवता भी इतनी कम संख्या में युद्ध में आने की मूर्खता नहीं करेंगे; उन्हें लगा कि अश्विनी सेना ने छिपने और उज्जैन को चारों ओर से घेरने के लिए छोटे-छोटे समूहों में बँट गए हैं। मैदान में मौजूद घुड़सवारों द्वारा अब तक हमला न करना उनके इस विश्वास को और भी पुख्ता कर रहा था।
“स्काउट्स क्या रिपोर्ट करते हैं?” उसने पूछा।
“उज्जायिनी से दस मील के दायरे में किसी भी संदिग्ध घुड़सवार या सैनिकों की मौजूदगी की सूचना किसी भी जासूस ने नहीं दी है,” सैनिक ने कहा। “और पवित्र क्षिप्रा नदी के दोनों किनारों पर किसी भी संदिग्ध नाव के कोई संकेत नहीं हैं, महाराज।”
आचार्य अविश्वास से पलकें झपकाते हुए बोले, "ऐसा नहीं हो सकता। उनके पास अतिरिक्त सैनिक जरूर होंगे।"

“माननीय न्यायाधीश महोदय, सभी रिपोर्टें स्काउट्स मास्टर के पास हैं। सभी रिपोर्टें नकारात्मक हैं।”
वेताला भट्टा ने सिर हिलाया। "आप जा सकते हैं।"
राजगुरु ने अपनी निगाहें फिर से मैदान पर टिका दीं, उनकी घनी भूरी भौहें गहरी, नाखुश भौंहों में सिमट गईं।
“कोई अतिरिक्त सहायता नहीं आ रही,” उसने मन ही मन बुदबुदाया। “लेकिन यह कैसे संभव है? वे तो बहुत कम हैं...”
धनवंतरी और नगर रक्षक दल के कप्तान अश्विनों को देख रहे थे, जो आसपास के अंधकार में गतिमान परछाइयों के एक समूह की तरह लग रहे थे। गोधूलि बेला में उन्हें पहचानना कठिन होता जा रहा था।
“इसका मतलब है कि वे किसी चीज़ का इंतज़ार नहीं कर रहे होंगे,” चिकित्सक ने कहा। “जब तक कि वे अंधेरे का इंतज़ार न कर रहे हों, ताकि वे लोमड़ियों की तरह चुपके से बिना किसी की नज़र में आए भाग सकें...”
“बस यही बात है, धनवंतरी,” आचार्य ने अपनी आवाज में थोड़ी सी जीत का भाव लिए जोर देकर कहा। “बिल्कुल यही बात है। वे रात होने का इंतजार कर रहे हैं। वे अंधेरे की आड़ में हमला करने की योजना बना रहे हैं।”
“दस हजार रक्षकों वाले किलेबंद शहर के सामने पाँच सौ घुड़सवार – ये कोई बढ़िया योजना नहीं है,” कप्तान ने उपहास उड़ाते हुए कहा। “अंधेरा उन्हें क्या सामरिक लाभ दे सकता है?”
“मुझे नहीं पता,” राजगुरु ने उत्तर दिया, उन्हें मैदान में विदा होने से ठीक पहले अश्विन सेनापतियों के चेहरों पर आई अजीब सी मुस्कान याद आ गई। उनके मन में बेचैनी की लहर दौड़ गई और अचानक उन्हें उज्जैनी की रक्षा करने का भरोसा कम हो गया।
***

श्रीस्थली स्थित कमान केंद्र आकार में मध्यम था और सीमावर्ती शहर के पश्चिमी किनारे पर, अरबुदा पर्वतमाला की तलहटी से सटा हुआ स्थित था। एक छोटी नदी, जिसमें शायद ही कभी बाढ़ आती थी, कमान केंद्र और मुख्य शहर के बीच एक प्राकृतिक सीमा बनाती थी, जो अपनी संगमरमर की कारीगरी के लिए सिंधुवर्ता में प्रसिद्ध था।
रात होते ही श्रीस्थली की संगमरमर की कार्यशालाएँ शांत हो गईं, कारीगर और प्रशिक्षु दोनों अपने-अपने घरों में आराम करने लौट गए। दक्षिण में स्थित संगमरमर की प्रचुर खदानों से खच्चरों का आखिरी काफिला भी लौट चुका था, और

जैसे-जैसे कस्बे के लोग दिनभर के काम के बाद आराम कर रहे थे, संकरी गलियाँ धीरे-धीरे खाली होती जा रही थीं।
श्रीस्थली के मेहनती नागरिकों के लिए यह अच्छा ही हुआ कि कमान केंद्र कस्बे से कुछ दूरी पर स्थित था - अन्यथा, अमरा सिंह की भयानक गर्जना से शांत रात्रि के वातावरण में अनावश्यक रूप से खलल पड़ जाता।
"क्या संदेश में यह कहा गया था कि मैं कैदी को पूछताछ के लिए उपयुक्त देखना चाहता था या नहीं?"
परिसर के बीचोंबीच स्थित एक विशाल, चौकोर इमारत से आवाज़ आई, जिसकी खुली खिड़की से अमारा सिंह दिखाई दे रहे थे, जो सीमा रक्षक दल के एक लज्जित अधिकारी के सामने गुस्से से घूरते खड़े थे। पृष्ठभूमि में, घटाकरपारा और राज्यपाल सत्यवेद चुपचाप खड़े होकर अमारा सिंह की तीखी निगाहों के नीचे अधिकारी को छटपटाते और पसीना बहाते देख रहे थे।
“जी हां, माननीय,” अधिकारी हकलाते हुए बोला। “लेकिन... कैदी... लेकिन हमने सोचा था...”
“लेकिन कमांडर दत्ताका, आपने क्या सोचा?” अमारा सिम्हा गरजते हुए बोले। “आपके चिकित्सक ने कैदी का इलाज क्यों नहीं किया? उसकी टूटी हुई टांग को ठीक करने के लिए कुछ क्यों नहीं किया गया, और उसे दर्द कम करने के लिए कोई दवा क्यों नहीं दी गई?”
"वह एक हूना है, इसलिए हमने सोचा कि वह किसी भी तरह की दया का पात्र नहीं है, महोदय," अधिकारी ने बुदबुदाते हुए कहा।
“उसके पैर का इलाज करना दया दिखाने से कोई लेना-देना नहीं था, मूर्ख,” पार्षद ने गुस्से में अपना माथा पीटते हुए कहा। “यह तो बस उसे ऐसी हालत में रखने के लिए था ताकि हम उससे पूछताछ कर सकें।” उसने अपने हाथ हवा में उछाले और कमरे में इधर-उधर घूमने लगा, लेकिन कुछ ही पलों में वह दत्ताका के सामने वापस आ गया।
और हद तो तब हो गई जब तुमने उससे जबरदस्ती जानकारी निकलवाने की कोशिश की। क्या इसमें कोई हैरानी की बात है कि वह बेहोश हो गया? आखिर तुम क्या सोच रहे थे?
“हमारे पास अनुवादक था, इसलिए हमने सोचा... शायद आपके आने से पहले हम उससे कुछ जानकारी निकाल सकें, महाराज,” दत्ताका ने अपना सिर झुका लिया।
“अरे, जब मैं यहाँ आया तो आप अपनी कार्यकुशलता से मुझे प्रभावित करना चाहते थे।” पार्षद ने अपने बड़े-बड़े हाथ अपनी चौड़ी छाती पर बाँध लिए। “खैर,

कमांडर, आप मुझे प्रभावित करने में बुरी तरह असफल रहे। पहले तो आपने कैदी को उदयपुरी न भेजने के लिए कोई बेतुका बहाना ढूँढ़ा...”
“हमारे पास घायल कैदी को ले जाने के लिए कोई गाड़ी नहीं है...” दत्ताका ने कमजोर स्वर में विरोध करना शुरू किया, लेकिन अमारा सिम्हा ने उसे रोकने के लिए हाथ उठाया।
“नहीं, मुझे इससे कोई आपत्ति नहीं है, तो रहने दो। लेकिन मैं यहाँ तक लंबी और कठिन यात्रा करके आया हूँ ताकि हूना से पूछताछ कर सकूँ। अब अगर तुम्हारी मूर्खता की वजह से उसे कुछ हो जाता है और वह होश में नहीं आता... तो तुम बहुत बड़ी मुसीबत में पड़ जाओगे।”
“वह ठीक हो जाएगा, महोदय,” दत्ताका ने आश्वासन दिया, हालाँकि उसकी आवाज़ में कोई दृढ़ विश्वास नहीं था। छाया में खड़े एक छोटे कद के बुजुर्ग व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए उसने कहा, “हमारे चिकित्सक का कहना है कि वह ठीक हो जाएगा।” अमारा सिम्हा ने प्रकाश के घेरे में कदम रखने वाले उस व्यक्ति की ओर रुख किया। चिकित्सक के हावभाव से ही एक डरपोक और चिंताग्रस्त जीवन का आभास होता था, और परामर्शदाता ने सहज ही उस व्यक्ति से बात करते हुए अपनी आवाज़ को नरम कर लिया।
"कैदी को होश आ जाएगा, है ना?"
“उसे करना चाहिए। मुझे लगता है कि वह करेगा,” चिकित्सक ने उत्तर दिया, हालांकि पतले कंधों के हल्के से उखड़ने से अमारा सिम्हा निराश हो गया।
और हम कब तक उनके होश में आने की उम्मीद कर सकते हैं?
इस बार, और भी निराशाजनक रूप से, कंधे उचकाने का भाव अधिक स्पष्ट था। “मैं कुछ नहीं कह सकता। शायद कुछ घंटों में, शायद कल...”
मुझे उम्मीद है कि वह निगरानी में है।
“जी हाँ... महामहिम, पहरेदारों को सख्त निर्देश दिए गए हैं।” यह जानते हुए कि उसने कम से कम एक काम तो सही किया है, दत्ताका ने अपनी प्रतिष्ठा को बचाने और अमरा सिंह की नज़र में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के अवसर का लाभ उठाया।
“इसे ऐसे ही रहने दीजिए,” पार्षद ने कड़े शब्दों में कहा। “और जैसे ही उसे होश आए, मुझे और उस भले डॉक्टर को सूचित कर दीजिए। समझे? अब किसी को भेजिए जो हमें हमारे कमरे तक ले जाए। हमारा दिन बहुत लंबा रहा है और हम खाना खाकर रात को आराम करना चाहते हैं।”
***

अवंती के आकाश में लगभग एक घंटे से रात छाई हुई थी, तभी किसी ने मैदान में रोशनी बुझी हुई देखी।
वेतला भट्टा तीरंदाजों के एक समूह को निर्देश देने में व्यस्त थे, तभी उन्होंने दीवार के किनारे फुसफुसाहट सुनी, जो सैनिकों के बीच संदेश पहुंचने के साथ-साथ बढ़ती जा रही थी। मुड़कर उन्होंने मैदान की ओर देखा और आश्चर्य से उनका मुंह खुला रह गया।
कुछ क्षण पहले मैदान पर छाए अंधेरे में अब सैकड़ों-सैकड़ों फॉस्फोरसेंट रोशनी के छोटे-छोटे बिंदु चमक रहे थे, जो हल्की बूंदा-बांदी में चांदी-हरे जुगनुओं की तरह टिमटिमा रहे थे। हालांकि निश्चित रूप से कहना मुश्किल था, आचार्य की आंखों को रोशनी की वह कतार दोनों दिशाओं में मीलों तक फैली हुई प्रतीत हो रही थी, मानो उज्जैन की दीवारों के प्राकृतिक घुमाव का अनुसरण करते हुए आग की टिमटिमाती हुई लपटों का घेरा बना रही हो।
"यह क्या है?" वेतला भट्टा के साथ खड़े तीरंदाजों में से एक ने विस्मय से फुसफुसाते हुए कहा।
“अपनी-अपनी जगह ले लो और तैयार रहो,” राजगुरु ने गरजते हुए जवाब दिया। घूमकर, वह पूर्वी द्वार की ओर वापस जाने ही वाला था कि मानो जादू से, रोशनी हवा में उठने लगी, उनकी एक साथ गति किसी फव्वारे जैसी लग रही थी। अवंती के रक्षकों ने अचंभित आँखों से रोशनी की उड़ान का पीछा किया और रास्ते पर सन्नाटा छा गया। प्रकाश की किरणें प्रेत की तरह मैदान के ऊपर आसमान में ऊँचाई तक उठीं... और फिर, लगभग अदृश्य रूप से, उन्होंने अपनी दिशा बदल ली और नीचे उतरना शुरू कर दिया। हर गुजरते पल के साथ आकार और तीव्रता में बढ़ती हुई, वे अत्यंत बल के साथ उज्जैन की दीवारों की ओर चापाकार गति से नीचे आईं, और हवा में एक स्पष्ट, सीटी जैसी ध्वनि गूंज उठी।
“छिप जाओ!” आचार्य ने पूरी ताकत से चिल्लाते हुए किले की सुरक्षात्मक दीवारों पर खुद को पटक दिया। “ये आग के तीर हैं!”
कुछ ही सेकंड में तीर फुटपाथ और दीवार के दोनों ओर बरसने लगे। तीरों के नोक टकराते ही फट गए, जिससे चारों दिशाओं में चटखने वाली, चमकदार चिंगारियां फैल गईं, अंगारों के गर्म कण नंगी त्वचा को झुलसाते हुए हर ज्वलनशील चीज में आग लगा रहे थे।
शहर की सुरक्षा के सिपाही छुपने के लिए इधर-उधर भागने लगे, लेकिन पगडंडी पर गूंजती चीखों और चिल्लाहटों से पता चलता था कि बचाव की स्थिति लेने से पहले ही उनमें से कई को तीर लग चुके थे। आचार्य ने अपनी आंखों के कोने से एक सिपाही

को देखा, जिसके कपड़े आग की लपटों में घिरे थे, वह पगडंडी पर लड़खड़ाता हुआ चल रहा था और फिर असहाय होकर किनारे से नीचे गिर गया और उसकी मौत हो गई। दीवार के अंदर, कुछ तीरों ने एक घर में आग लगा दी थी, जबकि एक तीर ने शस्त्रागार से हथियारों से लदी एक गाड़ी को जला दिया था।
“जल्दी करो, आग बुझाओ,” नीचे से किसी ने चिल्लाते हुए कहा और गाड़ी की ओर दौड़ पड़ा। “हम इतने सारे तीर और भाले नहीं खो सकते।”
दीवार के किनारे दहशत फैल गई और कई सैनिक छिपने की जगह छोड़कर इधर-उधर भागने लगे। हालांकि, उनमें से जो अधिक साहसी थे, वे दीवार के पीछे छिप गए और अपने धनुष उठा लिए। वेताला भट्ट ने मैदान पर एक नज़र डाली। चारों ओर अंधेरा देखकर वह खड़ा हुआ और पैदल मार्ग पर दौड़ते हुए कई आदेश देने लगा।
“अपनी-अपनी जगहों पर लौट जाओ। सिर नीचे रखो और अपने धनुष तैयार रखो। अगर दुश्मन द्वार की ओर हमला करते हुए दिखे तो गोली चला दो।”
आचार्य के आदेशों को नगर रक्षकों द्वारा संप्रेषित किए जाने पर कुछ हद तक व्यवस्था बहाल हुई। नीचे, तलवारों और भालों से लैस सैनिक शहर के पूर्वी द्वार की ओर दौड़ पड़े।
वेतला भट्ट लगभग द्वार तक पहुँच ही गए थे कि उन्होंने मैदान में रोशनी की एक नई कतार को टिमटिमाते हुए देखा। जैसे ही अश्विनों ने जलते हुए बाणों की दूसरी लहर आकाश की ओर चलाई, राजगुरु ने दीवारों के भीतर मौजूद लोगों को नीचे से आवाज़ लगाई।
“छिप जाओ। और तीर आ रहे हैं।”
दीवार के पीछे छिपकर आचार्य ने अपना सिर बाहर निकाला – लेकिन इस बार उन्होंने तीरों को देखने के बजाय नीचे फैले अँधेरे मैदान पर ध्यान केंद्रित किया। जैसे ही तीर ऊपर चढ़े और अपनी उड़ान की ऊँचाई पर पहुँचे, एक पल के लिए पूरा मैदान उनकी हल्की रोशनी से जगमगा उठा। और उस रोशनी में वेताल भट्ट ने मैदान को घुड़सवारों की एक विशाल सेना से भरा हुआ देखा।
द्वार के उत्तर और दक्षिण में कई हजार घुड़सवारों की एक सेना तैनात थी।
जैसे ही जलते हुए बाणों की बौछार उज्जैनी पर हुई, राजगुरु प्राचीर के पीछे दुबक गए और सोचने लगे कि अश्विनी घुड़सवार सेना की संख्या मात्र पांच सौ से बढ़कर एक घंटे से भी कम समय में हजारों तक कैसे पहुंच गई।
***

शंकु उज्जैन की उत्तरी दीवार के बाहर बने घरों और झोपड़ियों को आग की लपटों में जलते हुए देख रही थी, उसकी आंखें आक्रोश, दुख और निराशा के आंसुओं से भरी हुई थीं।
अश्विनों ने बड़ी चतुराई से इस असुरक्षित इलाके को अपना निशाना बनाया था, और चारों ओर भरपूर नमी होने के बावजूद, उनके तीरों से निकली आग घनी इमारतों के बीच तेज़ी से फैल गई। लगभग बीस मकान पहले ही भयंकर लपटों की चपेट में आ चुके थे, जबकि आग की लंबी लपटें आग के किनारों पर खड़ी इमारतों को चाट रही थीं। जलते हुए मलबे से घना, काला धुआँ निकल रहा था और कस्बे की तंग गलियों में एक निराकार, प्रतिशोधी शक्ति की तरह फैल रहा था।
इन सबमें राहत की एकमात्र बात यह थी कि आग से अब तक किसी की जान नहीं गई थी – मोहल्ले के सभी निवासियों को सुरक्षित निकाल लिया गया था और शहर की दीवारों के पीछे पहुँचा दिया गया था। लेकिन शंकु जानता था कि अधिकांश गृहस्वामियों को अपनी सारी संपत्ति खोने का गंभीर खतरा था और उन्हें अपना जीवन नए सिरे से शुरू करना होगा।
उज्जैनी ने मन ही मन सोचा, अगर वह अश्विनों के आक्रमण का सामना करने में सक्षम हो गई तो क्या होगा।
इस अन्याय को कोसते हुए शंकु ने अपनी दृष्टि दाईं ओर घुमाई और पूर्व दिशा में फैले घोर अंधकार में झाँका, जहाँ से घुड़सवारों ने अपने ज्वालामुखियों से गोले दागे थे। अपने चारों ओर उठते तीखे धुएँ को झटकते हुए उसने उत्तरी द्वार की निगरानी करने वाले बुर्ज पर अपने बगल में खड़े बलवान सैनिक से बात की।
“वे कितनी दूर हैं?” उसने पूछा। “क्या वे हमारे तीरंदाजों की मारक क्षमता के भीतर हैं?”
“इस अंधेरे में कुछ कहना मुश्किल है,” सैनिक ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया। “पक्का कुछ कहने से पहले मुझे बेहतर दृश्य देखना होगा।”
ठीक उसी क्षण, मानो किसी पूर्व संकेत पर, अश्विनी घुड़सवार सेना ने हवा में तीरों की एक और बौछार कर दी। यह हमला, पिछले हमले के विपरीत, उज्जैन की दीवार पर लक्षित था, जिससे पैदल मार्ग पर मौजूद रक्षकों को छिपने के लिए भागना पड़ा।
“मुझे नहीं लगता कि वे हमारे तीर-कमान की सीमा में हैं,” सैनिक ने शंकु के साथ दीवार के पीछे छिपते हुए कहा। “अगर हम जवाबी फायरिंग करने की कोशिश करेंगे तो तीर बर्बाद ही होंगे। हमें उनके करीब आने का इंतजार करना चाहिए।”

शंकु ने सिर हिलाया, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। तीरों का गिरना रुकने का इंतज़ार करने के बाद वह उठी और पहरेदार मीनार से नीचे उतरी। वह संकरी धातु की सीढ़ी से नीचे उतरी और ज़मीन पर पहुँचकर तेज़ी से उत्तरी द्वार की ओर बढ़ी, जहाँ नगर सुरक्षा के कुछ अधिकारी आपस में बातचीत कर रहे थे।
“मैं मैदान में जा रही हूँ,” उसने बिना किसी भूमिका के घोषणा की। “मुझे अपने साथ चलने के लिए दस सर्वश्रेष्ठ घुड़सवार तीरंदाजों की आवश्यकता है जिन्हें आप जुटा सकते हैं।”
अधिकारी शंकु को घूरते रहे और समझ न पाने के भाव से सिर हिलाते रहे। पास खड़े कुछ सैनिकों ने उसकी बातें सुन ली थीं और उन्होंने हैरानी भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा। अंत में, एक अधिकारी बोला।
“लेकिन महाराज, राजगुरु ने हमें द्वार खोलने या मैदान में जाने से मना करने का आदेश भेजा है,” उसने कहा। उसके साथी अधिकारियों ने बढ़ती हुई चिंता में ज़ोर-ज़ोर से सिर हिलाया।
“मुझे पता है। लेकिन हम चुपचाप बैठकर उन तीरों को उज्जैनी को राख में बदलते हुए नहीं देख सकते।” बोलते-बोलते शंकु अपने घोड़े की लगाम कसने लगी। “हमें दुश्मन से युद्ध करना होगा और उन्हें नुकसान पहुंचाना शुरू करना होगा।”
“और आप सिर्फ दस घुड़सवार तीरंदाजों के साथ वहां जाकर ऐसा करने का इरादा रखते हैं?” अधिकारी की आवाज अविश्वास से भरी हुई थी।
“हाँ, मेरे पास एक योजना है। लेकिन पहले मुझे वे आदमी लाओ जिन्हें मैं चाहता हूँ। और दीवार पर तैनात तीरंदाजों को पूरी तरह सतर्क रहने के लिए कहो।”
***

मेज पर अगल-बगल रखी दो लंबी तलवारों में कुछ भी खास नहीं था। उनकी म्यानें किसी प्राचीन पशु की खाल से बनी थीं, कुछ जगहों पर चमकदार भूरी और कुछ जगहों पर गहरी और घिसी हुई। तलवारों के ब्लेड दिखाई नहीं दे रहे थे, लेकिन भारी लोहे के हैंडल, हालांकि ऑक्सीकरण से मुक्त थे, सादे और अलंकृत नहीं थे।
वे तलवारें देखने में ऐसी नहीं लग रही थीं मानो वे किसी राजा की संपत्ति होने के योग्य हों।
फिर भी, जब विक्रमादित्य अपने शयनकक्ष के बगल वाले कक्ष में दाखिल हुए, तो वे सीधे मेज की ओर बढ़े और हथियारों में से एक उठा लिया। तलवार की मूठ को मजबूती से पकड़कर, उन्होंने उसे म्यान से थोड़ा बाहर निकाला और उसका निरीक्षण किया। दीपों की रोशनी में चमकती हुई चमकदार धार, राजा की ठंडे क्रोध से भरी आँखों में प्रतिबिंबित हो रही थी।

लेकिन कुछ ही क्षणों बाद, धातु का रंग गहरा नारंगी हो गया, और फिर धधकते लाल रंग में बदल गया, जैसे ही छोटी नीली-हरी लपटें फूट पड़ीं और उसकी सतह पर भूतिया ढंग से नाचने लगीं, वह प्रज्वलित होकर जलने लगी।
हे महाराज, आप ही वह हैं जिनकी मुझे वर्षों से तलाश थी। आप ही वह हैं जिन्हें नरक की अग्नि धारण करने का अधिकार प्राप्त है। इन्हें स्वीकार कीजिए, क्योंकि ये आपके ही अधिकार में हैं।
विक्रमादित्य ने तलवार को म्यान में वापस डाल दिया, जिससे ज्वालाएँ बुझ गईं और तलवार की चमक भी फीकी पड़ गई। तलवारों का वर्षों से उपयोग नहीं हुआ था, फिर भी, उन्हें राहत मिली कि उनकी शक्तियाँ अभी भी बरकरार थीं। वैसे भी, उन्हें राक्षसी लायुषि द्वारा नरक की आग के बारे में बताई गई बातों पर संदेह करने का कोई कारण नहीं था...
और समय बर्बाद किए बिना, सम्राट ने अपनी तलवारें कमर के दोनों ओर, एक-एक करके, इस तरह बांध लीं कि उन्हें आसानी से दोनों हाथों से निकाला जा सके। फिर, अपने धातु के बाजूबंदों को खींचते हुए, वे कमरे से बाहर निकल गए। वे भीतरी गलियारों में से एक में आधे रास्ते तक ही पहुँचे थे कि युवा संसप्तक सेनापति अंगामित्र ने उन्हें रोक लिया। सेनापति के साथ एक बूढ़ा व्यक्ति था जिसकी घनी सफेद दाढ़ी और भूरी आँखें थीं - सद्गुण, महल के रक्षकों का प्रमुख। “सम्राट, कृपया अकेले मत जाइए,” सेनापति ने राजा के थोड़ा पीछे चलते हुए विनती की। “मेरे चार सौ सैनिक आपके साथ जाने के लिए इंतज़ार कर रहे हैं। कृपया उन्हें भी साथ ले जाइए।”
“जी सम्राट,” अंगामित्र के पीछे-पीछे चल रहे सद्गुण ने कहा। “अकेले वहाँ जाना बुद्धिमानी नहीं है। संसप्तकों को अपने साथ युद्ध करने दो।”
विक्रमादित्य ने अपने कदमों को रोके बिना और सेनापति और महल के अंगरक्षकों के प्रमुख की ओर देखे बिना दृढ़ता से अपना सिर हिलाया।
“सम्राट, कृपया,” अंगामित्रा ने हताशा से समझाने की कोशिश की। “यदि पार्षद कालिदास को पता चला कि मैंने आपको अकेले जाने दिया, तो वे मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगे। मैंने जिन सैनिकों को चुना है, वे सर्वश्रेष्ठ हैं, महाराज। मैं आपको वचन देती हूँ कि वे अपनी अंतिम साँस तक लड़ेंगे...”
“सेनापति, मुझे कभी भी संसप्तक की युद्ध करने की इच्छा और क्षमता पर संदेह नहीं रहा,” राजा ने अपनी चाल थोड़ी धीमी करते हुए बीच में ही कहा। “और मुझे पूरा विश्वास है कि आपने जो सैनिक मुझे सौंपे हैं, वे अवंती को गौरवान्वित

करेंगे। लेकिन अगर वे अभी मेरे साथ आते हैं, तो वे मेरी मदद से ज़्यादा मेरे लिए बाधा बनेंगे।”
निराश होकर अंगामित्र चुप हो गया। कप्तान की निराशा को भांपते हुए विक्रमादित्य रुक गया और उसकी और सद्गुण की ओर मुड़ गया।
“उज्जायिनी के द्वार से अकेले निकलने की एक वजह है,” राजा ने दक्षिण दिशा की ओर इशारा करते हुए समझाया। “ऐसी अंधेरी रातों में, मित्र और शत्रु में फर्क करना मुश्किल होता है, और युद्ध में आसानी से अपने ही लोगों को घायल किया जा सकता है। जब मैं मैदान के अंधेरे में होता हूँ, तो मैं यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ कि मेरे चारों ओर केवल अवंती के शत्रु ही हों। तभी मैं निडर होकर अपनी तलवारें चला सकूँगा, और अश्विनों को पीड़ा और दंड दे सकूँगा।”
***

उज्जैन की पश्चिमी दीवार के साथ बना रास्ता वर्षों की उपेक्षा के कारण फिसलन भरा और ऊबड़-खाबड़ था। कहीं-कहीं ढीले पत्थर खतरनाक ढलान बनाते थे, तो कहीं- कहीं हरे रंग की काई और कीचड़ के गड्ढे बन जाते थे। दिन के उजाले में भी यह रास्ता सुरक्षित नहीं था, और रात में तो यह मानो मौत का जाल था, फिर भी क्षपनाका खतरों की परवाह किए बिना उस पर दौड़ती हुई, निर्देश देती हुई और दौड़ते हुए दीवार के ऊपर से तीरों की बौछार करती हुई आगे बढ़ती रही।
“शत्रु को द्वार से दूर रखो। उन्हें द्वार भेदने मत दो।”
उसके नीचे, शहर के पश्चिमी द्वार के बाहर, क्षिप्रा से ऊपर जाने वाली सीढ़ियाँ अश्विनों से भरी हुई थीं जो उज्जैनी में प्रवेश करने के लिए धक्का- मुक्की कर रहे थे।
उत्तर, पूर्व और दक्षिण में समन्वित हमले प्रभावशाली थे, लेकिन अश्विनी आक्रमण का मुख्य प्रहार पश्चिम में, अंधेरे की आड़ में हुआ था। अश्विनी सेना का एक बड़ा दल नदी के रास्ते नीचे आया था, और जैसे ही उज्जैन के अन्य हिस्सों पर ध्यान भटकाने वाले तीर गिरे, उन्होंने पश्चिमी द्वार पर अचानक हमला कर दिया।
धड़ाम।
धातु की भारी ढालों की एक और लहर लकड़ी के फाटक से टकराई, जिससे पुरानी दीवार के ढांचे में कंपन पैदा हो गया। क्षपनाका ने मन ही मन बड़बड़ाया। नगर रक्षक दल पूरी तरह से बेखबर था, और अगर अश्विन फाटक पार कर गए, तो वह जानती थी कि अंदर इतने तलवारबाज और भालाधारी सैनिक नहीं हैं जो उनके हमले का सामना कर सकें।

“क्या आपने अतिरिक्त सैनिकों के लिए संदेश भेजा है?” उसने दीवार के उस हिस्से की सुरक्षा का जिम्मा संभाले हुए कप्तान से पूछा। “और क्या उन्होंने घरों को खाली कराना शुरू कर दिया है?”
“हाँ,” कप्तान ने उत्तर दिया, लेकिन उनके अस्पष्ट उत्तर से क्षपनाका को कोई तसल्ली नहीं मिली। हालाँकि, पीछे मुड़कर देखने पर उसे राहत मिली जब उसने देखा कि कुछ सैनिक डरे हुए नागरिकों के एक समूह को द्वार से दूर सड़क पर ले जा रहे हैं।
धड़ाम... धड़ाम...
लकड़ी पर ढालों के टकराने की गूंज पैदल मार्ग पर गूंजती रही, और हर बार प्रयास के साथ इसकी तीव्रता, दृढ़ता और शत्रुता बढ़ती गई। क्षपनाका ने कप्तान को आदेश दिया।
“मेरे पास तीर खत्म हो रहे हैं – मुझे कुछ तीर लाओ। और किसी को भेजो कि सभी तीरंदाजों को नए तीर मुहैया करा दे।”
कप्तान आदेशानुसार कार्य करने के लिए तुरंत चला गया। काश नदी की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ अधिक रोशन होतीं, क्षपनाका ने अपने धनुष में एक और तीर लगाया और नीचे मरोड़ते-मरते अंधेरे आकृतियों पर निशाना साधा।
धड़ाम...
यह पहली बार नहीं था जब उसने अश्विन परिवार के इतने सारे लोगों को देखकर आश्चर्य व्यक्त किया, जो मानो कहीं से अचानक प्रकट हो गए थे।
***

उज्जैन की जलती हुई झोपड़ियों की रोशनी में अश्विनी घुड़सवार सेना के कांसे के कवच धुंधले से प्रतिबिंबित होते देख शंकु ने अपने साथ आए घुड़सवार तीरंदाजों को इशारा करने के लिए हाथ उठाया। तीरंदाज मैदान में एक पतली, अनियमित पंक्ति में फैल गए, फिर भी एक-दूसरे की आवाज सुनने की दूरी पर रहे। धनुष ताने धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए, समूह अश्विनों के पीछे से उनकी ओर बढ़ा, अंधेरे में सबसे धीमी आवाज को भी सुनने की कोशिश कर रहा था।
जब शंकु को यकीन हो गया कि वह देवताओं की पहुँच में है, तो उसने अपनी कमर से चार कटारें निकालीं और रकाबों पर खड़ी हो गई। उसने बड़ी सहजता से संतुलन बनाते हुए अश्विनों पर एक के बाद एक कटारें फेंकीं, और हर कटार सटीक निशाने पर लगी। कटारों के निशाने पर लगने की आवाज सुनते ही घुड़सवार तीरंदाजों ने अश्विनों पर तीन तीरों की बौछार कर दी और फिर अंधेरे में तितर-बितर हो गए।

अचानक और चुपके से किए गए हमले ने देवताओं को चौंका दिया, और कुछ क्षणों के लिए उनकी सेना में अफरा-तफरी मच गई क्योंकि वे स्थिति का जायजा लेने की कोशिश कर रहे थे। इस अफरा-तफरी का फायदा उठाते हुए, शंकु ने घुड़सवारों की उमड़ती भीड़ पर चार और चाकू फेंके, जिससे उनमें से तीन जमीन पर गिर पड़े। फिर, अपने घोड़े को घुमाकर, उसने एक तीखी आवाज निकाली और उज्जैनी के उत्तरी द्वार की ओर वापस सरपट दौड़ने लगी।
कुछ ही सेकंड में, अश्विनी घुड़सवारों ने भागते हुए व्यक्ति को देख लिया और उसका पीछा करना शुरू कर दिया।
शंकु तेज़ी से घोड़े पर सवार होकर भागी, लेकिन जैसे-जैसे वह उज्जैनी के करीब पहुँचती गई, आग की रोशनी में उसकी आकृति और भी स्पष्ट होती गई, जिससे वह अपने पीछा करने वालों के लिए एक स्पष्ट निशाना बन गई। उसके चारों ओर आग के तीर बरसने लगे, जो फुफकारते और फटते हुए निकल रहे थे, उनमें से कुछ तीर बाल-बाल उसे छूकर निकल गए क्योंकि वह चकमा देते हुए खतरे से बच निकली।
"मेरे पीछे आते रहो, मेरे पीछे आते रहो," वह मन ही मन दोहराती रही, जैसे ही उसने उज्जैन की उत्तरी दीवार के खाली चेहरे को अंधेरे से उभरते हुए देखा।
जैसे ही देवता शंकु की ओर बढ़े, नगर का उत्तरी द्वार अंदर से खुलने लगा, मानो जलती हुई अग्नि की रोशनी में एक क्रूर, लालची मुँह दिखाई दे रहा हो। शंकु को सीधे द्वार की ओर बढ़ते देख और यह महसूस करते हुए कि वे बहुत पीछे रह गए हैं, अश्विनी अपने घोड़ों की लगाम कसने लगे – तभी अचानक शंकु का घोड़ा सुस्त पड़ गया और उसकी गति धीमी हो गई।
रुको मत, सूअरों! शंकु ने घबराते हुए अपने कंधे के ऊपर से दूरियों का अंदाज़ा लगाने की कोशिश की। आओ और मुझे ले जाओ। हार मत मानो। उसने किले की दीवारों की ओर देखा, यह सोचते हुए कि क्या अश्विनी लोग अवंती के तीरंदाजों की पहुँच में हैं, लेकिन दीवार पर कोई हलचल न देखकर उसे एहसास हुआ कि शायद वे नहीं हैं।
यह जानते हुए कि वह बहुत बड़ा जोखिम उठा रही है, शंकु ने अपनी गति और भी कम कर दी। उसे बस अश्विनों को लुभाते रहना था...
शंकु को अपने घोड़े की गर्दन पर झुकते और सुस्त पड़ते देख अश्विनियों ने अवसर भांप लिया और अपने घोड़ों को तेजी से आगे बढ़ाया। उन्हें पता था कि अगर वे काफी तेज रहे तो अपने शिकार के अंदर घुसने से पहले ही वे द्वार तक पहुंच सकते हैं और रक्षकों को शहर को दोबारा बंद करने का मौका नहीं मिलेगा।
शंकु ने अपने पीछे घोड़ों के खुरों की तेज़ आवाज़ सुनी और एक बार फिर पीछे मुड़कर देखा। वह जो करने की कोशिश कर रही थी, उसमें कुशल समय की आवश्यकता थी –

अगर उसने जल्दबाजी की, तो देवता हिम्मत हार जाएंगे और उसका पीछा करना छोड़ देंगे; अगर वह देर करती, तो उसके लिए ज़िंदा बचने का कोई रास्ता नहीं होगा। द्वार के पास कहीं से, उसने किसी को उसे पुकारते हुए सुना; शायद नगर रक्षक दल का कोई अधिकारी उसे जल्दी करने के लिए कह रहा था। उसने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन उसने दिल से उम्मीद की कि अंदर मौजूद लोग घबराहट में द्वार को समय से पहले बंद न कर दें।
शंकु ने अपनी आँखों के कोने से अश्विनों को अंधेरे के घेरे से बाहर आते देखा। द्वार से किसी ने फिर उसे पुकारा, लेकिन घोड़ों के खुरों की तेज़ आवाज़ में शब्द दब गए। तभी, ऊपर कहीं से, उसे धनुष की झंकार सुनाई दी।
एक सेकंड बाद, दीवार की पूरी लंबाई में झनझनाहट की एक श्रृंखला सुनाई दी, क्योंकि अंततः सिटी वॉच के तीरंदाज अश्विनों को अपनी सीमा में ले आए थे। “द्वार बंद करो, द्वार बंद करो।” शंकु ने अपनी सेना को आगे धकेलते हुए, अपनी पूरी ताकत से चीखना शुरू कर दिया, जबकि उसके पीछे देवताओं की दबी हुई चीखें हवा में गूंज रही थीं।
अश्विनों के तीरों की बौछार शंकु पर बरसी, लेकिन जैसे ही वह झुककर बंद हो रहे द्वारों के पीछे छिपने के लिए भागी, तीर उसे बाल-बाल बच गए। हालांकि, द्वारों के ठीक अंदर तैनात अवंती के दो सैनिक इतने भाग्यशाली नहीं थे; तीरों ने उन्हें जमीन पर गिरा दिया और द्वार देवलोक से आए घुड़सवारों पर बंद होने से पहले ही उन्हें आग लगा दी।
शंकु अपने घोड़े से कूदी और पहरेदार मीनार की ओर दौड़ी। सीढ़ी के दो-दो पायदान चढ़ते हुए वह ऊपर चबूतरे पर झुकी हुई अवस्था में पहुँची। चारों हाथों- पैरों के बल चलते हुए, अपनी हथेलियों पर पथरीले फर्श की ठंडी खुरदरी सतह को महसूस करते हुए, वह मीनार के किनारे तक सरक कर बाहर झाँकने लगी – तभी उसे अपने चारों ओर एक अजीब सी खामोशी छाने का आभास हुआ।
कुछ क्षण पहले जहां घोड़ों के खुरों की आवाज, पैरों की उन्मत्त भागदौड़ और आदेशों की चीखें हवा में गूंज रही थीं, अब वहां केवल सन्नाटा छाया हुआ था। शायद अश्विन परिवार पीछे हट गया है।
अपना सिर नीचे झुकाए हुए, उसने ऊपर देखा तो पाया कि वही हट्टा-कट्टा सिपाही, जो पहले उसके साथ था, एक दीवार के पीछे खड़ा मैदान को घूर रहा था। आग की रोशनी में उसका चेहरा सख्त था, उसकी आँखों में आश्चर्य और बेचैनी झलक रही थी।
"क्या हुआ है?" शंकु ने घबराई हुई फुसफुसाहट में पूछा, उसकी आवाज उस सन्नाटे में असहज रूप से तेज थी।

“उनमें ज़रा भी दया नहीं है,” सैनिक ने लगभग बिना हिले-डुले फुफकारते हुए जवाब दिया, उसके गले में डर की सूखी सी आवाज़ गूंज रही थी। “और वे... वे... टूट रहे हैं और बढ़ रहे हैं।”
"क्या?"
शंकु ने सावधानी से अपना सिर ऊपर उठाया और सैनिकों की निगाहों का पीछा किया, उसकी आंखें नीचे घट रहे विचित्र दृश्य के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थीं। उत्तरी द्वार के बाहर का मैदान मृत और मरणासन्न देवों से भरा पड़ा था। हालांकि, कई घुड़सवार सुरक्षित थे, और बढ़ते भय के साथ शंकु ने इन बचे हुए लोगों को अपने गिरे हुए साथियों के बीच जाते हुए देखा, जो एक-एक करके गंभीर रूप से घायलों का वध कर रहे थे। खुली गर्दन पर तलवार का जोरदार प्रहार, कनपटी या आंखों के बीच सटीक तीर – अश्विनी अपने ही लोगों को तेजी से, कुशलता से, बिना किसी पछतावे के मार रहे थे।
लेकिन शंकु को सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह थी कि कुछ घायल देव अपनी ही तलवारें अपने मुंह में ठूंसकर अपने गले से नीचे उतार रहे थे। एक पल के लिए शंकु को दक्षिणी राज्यों के तलवार निगलने वालों की याद आ गई, जिन्हें उसने मेलों में प्रदर्शन करते देखा था – लेकिन यहाँ तलवार निगलने वालों की कोई कोमलता नहीं थी। देव बेरहमी से तलवारें मुंह में ठूंस रहे थे, उनका दम घुट रहा था और वे घुरघुरा रहे थे, उनका सारा खून बह रहा था। जिस भयावह आत्मविश्वास के साथ घायल अश्विन स्वयं को मृत्यु दे रहे थे, उसमें कुछ रस्मों जैसा सा था। शंकु को अपने भीतर घृणा का भाव उमड़ता हुआ महसूस हुआ। लेकिन इससे पहले कि वह इसे रोक पाती, उसके गले में ही अटक गया जब उसने कुछ और भी भयावह देखा। उसकी पहली प्रतिक्रिया यही थी कि यह सब उसकी कल्पना है, लेकिन जैसे ही आग और भी तेज हुई और मैदान को रोशन कर दिया, उसे एहसास हुआ कि वह सिर्फ भ्रम में नहीं थी। जैसे ही तंदुरुस्त अश्विनी अपने भयानक काम में लगे रहे, उनका आकार बढ़ता हुआ प्रतीत हुआ, उनके शरीर फूलते, विकृत होते और अगल-बगल खिंचते हुए, मानो किसी विशाल, अदृश्य शक्ति द्वारा विपरीत दिशाओं में खींचे जा रहे हों। यह केवल अश्विनी ही नहीं थे - उनके वाहन भी चौड़ाई में बढ़ गए, एक पल के लिए मांस और ऊतकों के कंकालहीन पिंड में बदल गए।
फिर, जैसे ही विकृत शरीरों ने मसले हुए, आटे जैसी स्थिरता प्राप्त कर ली, प्रत्येक घुड़सवार दो अलग-अलग, समान, पूर्ण रूप से निर्मित संस्थाओं में विभाजित हो गया।
वे टूट रहे हैं और बढ़ रहे हैं।

शंकु सदमे से आँखें फाड़कर अश्विनी घुड़सवार सेना को बार-बार विभाजित होते और बढ़ते हुए देखता रहा, उनकी संख्या पलक झपकते ही दोगुनी हो गई। देखते ही देखते मैदान फिर से घुड़सवारों से भर गया – लेकिन किसी कारणवश, दीवार पर हमला करने के बजाय, उन्होंने रात के अंधेरे में पीछे हटना चुना। जल्द ही मैदान में केवल शव ही बचे रहे।
लेकिन शंकु जानती थी कि घुड़सवार ज़्यादा दूर नहीं गए हैं। वे जल्द ही लौटेंगे, और भी बड़ी संख्या में। उसने यह भी देखा कि देवों के इस स्व-निर्मित भाईचारे को रोकना असंभव होगा।
उज्जैनी के लिए उसका दिल निराशा से डूब गया।

नरक की आग

वे बार-बार खुद को दो हिस्सों में बांटकर अपनी संख्या बढ़ाते हैं।
वेताला भट्टा ने प्राचीरों को विस्मय से देखा। द्वार के पास और दीवार के आधार पर जलाई गई बड़ी मशालों की रोशनी में, वह मैदान में अश्विनी घुड़सवारों की धुंधली आकृतियाँ देख पा रहा था। वह समझ गया कि घुड़सवार धीरे-धीरे उज्जैनी के करीब आ रहे थे - शायद पूर्वी द्वार पर भी हमला होने वाला था। "तो इस तरह वे मात्र पाँच सौ से बढ़कर हमें चारों ओर से घेरने में कामयाब हो गए।"
“और इसीलिए वे बिना किसी सहानुभूति के अपने घायल सैनिकों को मार डालने में सक्षम हैं,” धनवंतरी ने बताया। “उन्हें अपने घायल सैनिकों को ठीक करने की कोई ज़रूरत नहीं है। वे बस उनकी जगह नए, युद्ध के लिए तैयार योद्धाओं को रख लेते हैं।”
राजगुरु ने कहा, "मुझे एक और कारण नज़र आता है कि वे अपने घायल साथियों को क्यों मार डालते हैं। वे ऐसा प्रभाव दिखाने के लिए करते हैं - अपने दुश्मनों को यह साबित करने के लिए कि वे कितने निर्दयी और निडर हो सकते हैं।"
एक भयावह सन्नाटा छा गया।
“अगर वे इतनी तेज़ी से अपनी इच्छा अनुसार प्रजनन कर सकते हैं, जैसा कि शंकु और उत्तरी द्वार पर तैनात सैनिकों ने देखा था, तो हम उन पर कभी काबू कैसे पा सकेंगे?” चिकित्सक ने धीरे-धीरे विचार किया।
जवाब देने के बजाय, आचार्य अपने एक सेनापति की ओर मुड़े और पूछा, "क्या राजा को इस बारे में सूचित कर दिया गया है?"

“एक घुड़सवार सम्राट को सूचना देने के लिए दक्षिण द्वार की ओर जा रहा है, महोदय।”
और पश्चिम से क्या ताजा खबर है?
“अश्विन लोग अभी भी फाटक तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन पार्षद क्षपनाका और उनके आदमी उन्हें रोक रहे हैं। माननीय न्यायाधीश, हमने पहले ही कुछ अतिरिक्त बल भेज दिए हैं।”
राजगुरु ने अपनी दृष्टि पूर्व दिशा की ओर मोड़ ली, यह सोचते हुए कि यदि अश्विनी सेना ने तीनों द्वारों पर एक साथ हमला कर दिया तो उन्हें अतिरिक्त सहायता कहाँ से मिलेगी। उस समय उन्हें पहले से कहीं अधिक यह इच्छा हुई कि काश वरारुचि, कालिदास और वराहमिहिर उज्जैन में होते।
"मुझे लगता है कि वररुची से अभी तक कोई खबर नहीं मिली है?" उसने बिना किसी वास्तविक उम्मीद के पूछा।
“कुछ नहीं, माननीय न्यायाधीश।”
आचार्य ने आह भरी और अपना सिर सीने पर टिका लिया। बुजुर्ग पार्षद का उदास चेहरा देखकर धनवंतरी ने उनके कंधे पर दिलासा भरा हाथ रखा।
मुझे पूरा यकीन है कि वे सब ठीक हैं। वरारुची ने खबर लेकर किसी को भेजा होगा – शायद अश्विन परिवार की वजह से वह शहर तक नहीं पहुंच पा रहा है।
वेताल भट्ट ने सिर हिलाया। दक्षिण में पिशाचों की सेना थी। उज्जैनी के चारों ओर अश्विनी घुड़सवारों की एक विशाल सेना थी। वीषाद के खंजर ने अवंती राज्य पर भारी कहर बरपाना शुरू कर दिया था।
अचानक मैदान से एक धीमी गर्जना सुनाई दी। ऊपर देखते हुए राजगुरु ने देखा कि घुड़सवारों की परछाइयाँ घोड़ों की टापों और युद्धघोषों के साथ दीवार की ओर बढ़ने लगीं। उसी क्षण, जलते हुए तीरों की एक और बौछार परवलयिक वक्र में हवा में उठी।
पूर्वी द्वार पर हमला हो रहा था!
***

पूर्व और उत्तर में फैले समतल, खुले मैदानों के विपरीत, उज्जैनी के दक्षिण का इलाका पहाड़ी था, जिसमें खड़ी चोटियाँ और पथरीली ढलानें थीं। इन चोटियों से शहर की ऊँची दीवारों के पीछे का स्पष्ट दृश्य दिखाई देता था, और यहीं से दसरा के नेतृत्व में अश्विनों ने तीरों से क्रूर हमला किया था, जिससे उज्जैनी के दक्षिणी इलाकों में आग लग गई और भयभीत नागरिकों की भीड़ सड़कों पर उतर आई।

फिर भी, दासरा ने अपनी तलवार पर मज़बूत पकड़ बनाए रखी। हालाँकि उसका व्यवहार धमकी भरा नहीं था, फिर भी उस रहस्यमयी घुड़सवार में कुछ अस्पष्ट रूप से खतरनाक सा भाव था।
अश्विन परिवार उस आकृति को धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए देखता रहा। स्थिर और आत्मविश्वासपूर्ण गति से सवार होकर, घुड़सवार शहर की सुरक्षा से निकलकर मैदान में आ गया। कोई भी उस घुड़सवार के पीछे नहीं आया, और किले की दीवारों पर सब कुछ शांत प्रतीत हो रहा था।
यह सोचकर कि घुड़सवार कोई दूत या दरबारी है जिसे युद्धविराम की विनती करने के लिए भेजा गया है, दासरा ने अपनी सतर्कता कम करनी शुरू कर दी जब उज्जैन के द्वार घुड़सवार के पीछे बंद होने लगे।
दसरा ने अपने जबड़े भींच लिए। घुड़सवार के बारे में उसकी आशंकाएँ सही थीं। यह आत्मसमर्पण नहीं था।
जैसे पुष्टि करते हुए, घुड़सवार रुका और अपनी कमरबंद से दो लंबी तलवारें निकालकर उन्हें अपने सिर के ऊपर चमकते चापों में लहराया। दसरा ने पलकें झपकाईं, मानो बंद होते दरवाजों के पीछे से आग की आखिरी लपटें तलवारों की नोकों पर किसी भ्रम की तरह लग रही हों - और फिर उसे एहसास हुआ कि दोनों तलवारें सचमुच चमकती लपटों से जगमगा रही थीं। और यद्यपि वह जानता था कि वह कल्पना कर रहा है, देव को महसूस हुआ कि अंधेरे मैदान के उस पार से घुड़सवार की निगाहें उस पर टिकी हुई हैं।
आक्रमण करना।
घुड़सवार सेना के किनारों पर मौजूद धनुर्धारियों ने अकेले खड़े उस व्यक्ति पर बाणों की बौछार कर दी। ततैया की तरह भिनभिनाते हुए, प्रकाश के छोटे-छोटे बिंदु उस घुड़सवार पर जा गिरे, जो अपने घोड़े पर चट्टान की तरह बैठा था, बाहें फैलाए, अपनी अग्नि-तलवारों को कसकर पकड़े हुए। अंतिम क्षण में, जब बाण लगभग उस तक पहुँच ही गए थे, घुड़सवार ने अपनी तलवारों से उन बाणों पर प्रहार किया, जो काटते और वार करते हुए बाणों को चकनाचूर कर रहे थे और चिंगारियों की एक चमकदार बौछार में उनके नोकों को बिखेर रहे थे। जब जलते हुए बाणों का अंतिम टुकड़ा भी जमीन पर गिरा, तो दसरा ने देखा कि घुड़सवार को कोई चोट नहीं आई थी। और हमले से भयभीत होने के बजाय, योद्धा ने अपने घोड़े को सरपट दौड़ाया और अश्विनी घुड़सवार सेना की दीवार की ओर सीधा बढ़ गया।
दासरा ने अवज्ञा के इस पागलपन भरे प्रदर्शन को देखकर अपना सिर हिलाया; इसने उसे स्तब्ध और निराश कर दिया।

आगे बढ़ो, भाइयों!
घुड़सवार की धृष्टता से क्रोधित होकर, देव मैदान में दौड़ पड़े, उनकी तलवारें सीधे हमलावर घुड़सवार की ओर तनी हुई थीं। लेकिन घुड़सवार धीमा नहीं हुआ। इसके बजाय, उसने अपनी तलवारों को व्यापक और जोरदार गति से लहराना शुरू कर दिया, तलवारों पर लगी लपटें हर बार भुजाओं के हिलने के साथ पतली और लंबी होती गईं और तीव्र होती गईं। लपटों का रंग भी साथ-साथ बदलता गया - पीले-नारंगी से चमकीले, भयावह हरे रंग में। कुछ ही क्षणों में, आग ने लंबी जलती हुई चाबुकों का रूप ले लिया, जो घुड़सवार के सिर के ऊपर मदहोश होकर चक्कर लगा रही थीं। दसरा ने मंत्रमुग्ध होकर देखा कि तलवारों से अग्नि की लपटें अलग होकर हवा में उड़ने लगीं, और अश्विनी घुड़सवार सेना की ओर मैदान में रेंगती हुई आगे बढ़ने लगीं, जिनका आकार लगातार बढ़ता जा रहा था। चाबुक अत्यंत गति और सटीकता से नीचे गिरे, देवों के आक्रमण के अग्रिम पंक्ति पर प्रहार करते हुए घुड़सवारों को उनके घोड़ों से गिरा दिया, उनके कवच को चीरते हुए उनकी हड्डियों तक की त्वचा को झुलसा दिया।
दर्द भरी चीखों से रात गूंज उठी और अश्विनी पीछे हट गए – लेकिन उज्जैन का घुड़सवार रुका नहीं। वह आगे बढ़ता रहा, अपनी तलवारें घुमाता रहा और चमकते हरे कोड़ों को हवा में उछालता रहा...
लेकिन इस बार, अश्विनों को खोजने के बजाय, चाबुक रात के आकाश में जलते हुए कुंडलियों की तरह मुड़ते और लिपटते हुए आगे बढ़े। जब देवता विस्मय से देख रहे थे, तो चाबुक जादुई रूप से आपस में जुड़कर तीन विशालकाय, अग्नि-प्रवण करने वाली चुड़ैलों में तब्दील हो गए। चीखते-चिल्लाते हुए, अग्नि-प्रवण चुड़ैलें घुड़सवार सेना के किनारों पर टूट पड़ीं और अपने भयानक काले मुखों से हरी लपटें उगलने लगीं।
दसरा का चेहरा अविश्वास से पीला पड़ गया जब उग्र चुड़ैलों ने उसकी सेना को रौंद डाला और अश्विनों को प्रजनन का मौका मिलने से पहले ही आग लगा दी। धीरे- धीरे, उसने अपना ध्यान वापस उस घुड़सवार पर केंद्रित किया, जो उसकी घुड़सवार सेना के केंद्रीय स्तंभ की ओर बढ़ रहा था। जैसे ही एक और धधकती हुई लपट निकली और देवताओं पर जा गिरी, दसरा दहशत से भर गया।
घुड़सवार नरक की आग का स्वामी है।
यह एहसास होते ही दसरा कांप उठा और उसके हाथ में तलवार ढीली पड़ गई।
***

"क्या आपको यकीन है कि आप जानते हैं कि आप क्या कर रहे हैं?"

धनवंतरी के चेहरे पर संदेह और भय का मिलाजुला भाव था, जब उसने मंद रोशनी में राजगुरु को देखा। वे अश्विनों के बाणों से बचने के लिए एक ढकी हुई सीढ़ी के अंदर दुबके हुए थे, और वैद्य को नीचे द्वार पर घुड़सवार सेना के लगातार प्रहार के शोर के बीच अपनी बात सुनाने के लिए जोर से चिल्लाना पड़ रहा था। आचार्य ने सिर हिलाया और अपना चेहरा धनवंतरी के कान के पास ले आए। “यदि प्रत्येक घुड़सवार मूलतः जुड़वां है, और प्रत्येक अनंत रूप से अनेक जुड़वांों में विभाजित होने में सक्षम है, तो इसका अर्थ है कि सभी अश्विन एक ही मूल शरीर और एक ही मूल मन से उत्पन्न हुए हैं। संभवतः अश्विनों का एक साझा मन है, जो पूरी सेना को नियंत्रित करता है, और यह तय करता है कि आगे क्या करना है, कौन कितनी बार प्रजनन करेगा... यदि ऐसा है, तो मैं उस साझा मन के भीतर प्रवेश करना चाहता हूँ।”
“वे क्या चाहते हैं, यह देखने के लिए? लेकिन यह तो स्पष्ट है – वे हम पर हमला करना चाहते हैं और हलाहला को छीनना चाहते हैं।”
वेतला भट्टा ने सिर हिलाया। “मैं उस मानसिकता में प्रवेश करना चाहता हूँ और उसे नियंत्रित करने की कोशिश करना चाहता हूँ। मैं देखना चाहता हूँ कि क्या मैं किसी तरह इस सेना को प्रभावित कर सकता हूँ।”
"लेकिन आप ऐसा कैसे करेंगे?" धनवंतरी ने हैरानी से पूछा।
“मुझे नहीं पता। जब तक मैं मंत्र का प्रयोग करके उन देवताओं में से किसी एक के मन में प्रवेश नहीं कर लेता, तब तक मुझे पता नहीं चलेगा।”
“मुझे यह विचार पसंद नहीं है,” चिकित्सक ने विरोध किया। “किसी के मन को पढ़ने की कोशिश करना एक बात है। उसे प्रभावित करने की कोशिश करना बिलकुल अलग बात है, आचार्य। आप किसी और से बेहतर जानते हैं कि यह प्रक्रिया बुरी तरह से उलटी पड़ सकती है – आपका मन दूसरे के मन से प्रभावित होकर भयानक, अकल्पनीय काम करने पर मजबूर हो सकता है।”
“मुझे पता है कि मेरा सुझाव जोखिम भरा है,” वेताला भट्टा ने जवाब दिया, और अश्विन परिवार द्वारा एक बार फिर गेट पर धक्का मारने से वह थोड़ा सहम गया। शोर के स्रोत की ओर इशारा करते हुए उसने ज़ोर देकर कहा, “लेकिन गेट टूटने से पहले हमें यह जोखिम उठाना ही होगा; जब तक कि आपके पास कोई बेहतर उपाय न हो।” धनवंतरी उदास निगाहों से पत्थर की सीढ़ियों की गहराई की ओर देखता रहा।
“तो फिर, सोचने का समय नहीं है,” आचार्य ने खड़े होकर अपना भाला पकड़ते हुए कहा। “जब मैं मंत्र पढ़ रहा हूँ, तब तक मेरी रक्षा करो।”

थे, लेकिन मोटा आदमी अपनी लाठी से उन तीरों को रोक रहा था; अंधेरे आसमान में उसकी लाठी बस एक घूमती हुई धुंधली सी आकृति जैसी दिख रही थी।
आचार्य के मन में जो अगली छवि उभरी, वह एक युवा, फुर्तीली महिला की थी जो छतों पर दौड़ रही थी, तेजी से तीर चला रही थी और इमारतों के बीच छलांग लगाते हुए आदेश दे रही थी। आग की रोशनी में उसका चेहरा देखते ही उन्हें तीव्र क्रोध का अनुभव हुआ।
वो उनकी पार्षदों में से एक है। उसने हममें से कई लोगों को पहले ही गिरा दिया है। उसे मार डालो।
वेताला भट्टा के लिए इस सम्मोहन से खुद को मुक्त करना एक वीरतापूर्ण प्रयास था। उनके संदेह सही साबित हुए थे – घुड़सवारों की एक साझा बुद्धि थी जो अश्विनी द्वारा देखे और महसूस किए गए हर शब्द को ग्रहण करती थी। लेकिन अब जब उज्जैनी में घुसपैठ हो चुकी थी और उसके नागरिकों का जीवन खतरे में था, तो उन्हें पता था कि उन्हें अपना सारा ध्यान अश्विनी समुदाय की सामूहिक बुद्धि पर अपने विचारों को प्रक्षेपित करने पर केंद्रित करना होगा।
लेकिन उसे यह देखकर घोर निराशा हुई कि उसका दिमाग उज्जैनी के विनाश और वैषदा के खंजर की पुनर्प्राप्ति के अलावा और कुछ भी कल्पना करने में असमर्थ था।
हम अवंती के राजा को उसके अहंकार की कीमत उसके जीवन से चुकाने पर मजबूर करेंगे।
धारा के विपरीत दिशा में बढ़ते हुए, उसने अपने विचारों को नियंत्रित करने का प्रयास किया। लेकिन जितना अधिक उसने प्रयास किया, देवताओं की शक्तियां उतनी ही प्रबल होती गईं, और उज्जैनी में शहर की रक्षा व्यवस्था ध्वस्त होने के कारण मची तबाही के दृश्य उसे घेरने लगे।
फिर अचानक आचार्य की दृष्टि में एक विशालकाय चुड़ैल रात के आकाश में चीखती हुई दिखाई दी, जिसके बालों से हरी आग निकल रही थी और उसके भयानक मुख से लपटें उगल रही थीं। उन्होंने एक घुड़सवार को भी मैदान में दौड़ते हुए देखा, जिसके दोनों हाथों में लंबी जलती हुई चाबुकें थीं। यह दृश्य उनके हृदय में भय का संचार कर गया।
घुड़सवार नरक की आग का स्वामी है।
यह विचार उसके मन में बैठ गया, मानो पेट में कोई भारी पत्थर धंस गया हो। और डर आतंक में बदल गया।
दौड़ना।

जैसे ही अग्नि कोड़े लिए सवार करीब आया, आचार्य ने हरे रंग की एक चौड़ी लपट देखी, जिसका सिरा सर्प की जीभ की तरह दो भागों में बंटा हुआ था, जो उनकी ओर दरांती की तरह बढ़ती हुई आ रही थी और अपने चाप में अश्विनों के एक समूह को जला रही थी। स्तब्ध होकर, उन्होंने उस लपट को अपनी ओर मुड़ते और उछलते हुए देखा, जिसकी धधकती हुई सफेद गर्मी उनकी त्वचा को झुलसा रही थी और उनके अंगों में दर्द की लहरें दौड़ा रही थीं...
वेतला भट्टा की पीली पड़ी शक्ल में आँखें खुल गईं। एक पल के लिए वे चबूतरे पर खड़े रहे, पसीने से तर और परिश्रम से फूली हुई धनवंतरी की चौड़ी पीठ को देखते रहे। फिर, नीचे से आ रहे बाणों की बौछार रुकते ही, राजगुरु बुरी तरह काँप उठे और चबूतरे पर गिर पड़े, उनका भाला ठंडे पत्थरों पर ज़ोर से टकराया।
***

अश्विनी जनजाति उज्जैन की गलियों में बेतहाशा दौड़ रही थी, घोड़ों के खुरों की एक धारा चारों दिशाओं से निकलकर शहर के पश्चिमी द्वार के टूटे-फूटे अवशेषों की ओर बढ़ रही थी। नगर रक्षक दल के सैनिक जल्दी से देवताओं के रास्ते से हट गए और घोड़ों के नीचे आने से बचने के लिए गलियों के किनारे बने घरों से सट गए। वहीं दूसरी ओर, घुड़सवारों ने अवंती के सैनिकों की ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया, यहाँ तक कि जब उन पर एक-दो भाले फेंके गए तब भी नहीं।
क्षपणका एक पेड़ की शाखा पर बैठी, इस उन्मादपूर्ण सवारी को बड़ी उत्सुकता और चौड़ी आँखों से देख रही थी। वह इसे समझ नहीं पा रही थी।
किले की दीवारों के भीतर से हो रहे प्रतिरोध की परवाह किए बिना, देवताओं ने शहर में प्रवेश पाने की उम्मीद में पूरी शाम पश्चिमी द्वार पर अपना आक्रमण जारी रखा। अंततः उनकी दृढ़ता रंग लाई और घुड़सवार सेना उज्जैन में घुस गई, और नगर रक्षक दल की कमजोर रक्षा को कुचल डाला। क्षपणक को आश्चर्य हुआ कि द्वार पर विजय प्राप्त किए हुए अभी कुछ ही समय बीता था – फिर भी अश्विनी शासक यहाँ से जाने के लिए पहले से ही तत्पर प्रतीत हो रहे थे।
शायद उन्हें वही मिल गया जिसके लिए वे आए थे!
जैसे ही यह विचार उसके मन में आया, क्षपणका के भीतर क्रोध और बेबसी के साथ-साथ भय भी उमड़ पड़ा। उसने तुरंत अपने धनुष पर एक और बाण चढ़ाया, हालांकि उसे अपने इस प्रयास की निरर्थकता का एहसास था। अगर देवताओं को छुरी मिल जाती, तो बहुत देर हो चुकी होती...

दुश्मन को नुकसान पहुंचाने में कभी देर नहीं होती, आचार्य ने बचपन में उनके चेहरों पर अपनी लकड़ी की तलवार लहराते हुए उनसे कहा था। हर घाव, हर चोट उन्हें कमजोर बनाती है।
क्षपणका ने धनुष की डोरी को कसकर खींचा और गली में दौड़ रहे अश्विनी घुड़सवारों में से एक के सिर पर निशाना साधा। वह तीर छोड़ने ही वाली थी कि जलते हुए घर की रोशनी में उसने घुड़सवार के चेहरे पर भाव देखा। जैसा उसने सोचा था, वह विजय की खुशी से भरा हुआ नहीं था। बल्कि, वह उन्मादी भय से भरा हुआ था।
ध्यान से देखने पर उसने पाया कि नीचे सड़कों पर मौजूद सभी घुड़सवारों के चेहरे भय से भरे हुए थे। और उसे यह आभास हुआ कि देवता उज्जैनी से छुटकारा पाने के लिए बेताब होकर भाग रहे थे।
वेताल भट्ट के निर्देशों के बावजूद, क्षपणका ने एक गहरी साँस ली और अपने हाथों को शिथिल करते हुए धनुष को नीचे रख दिया। खड़ी होकर, उसने शाखा पर संतुलन बनाते हुए पश्चिम द्वार की ओर देखा, जो धक्का-मुक्की करते और भागते हुए घुड़सवारों से भरा हुआ था। इस नाटकीय बदलाव पर राहत और हैरानी से सिर हिलाते हुए, उसने अश्विनों के समूह को रात के अंधेरे में निकलते हुए देखा।

Vishakha

घटाकरपारा के सिर में हर बार करवट बदलते ही एक हल्का, भारी दर्द उठता था, और पलकों के ठीक ऊपर की मांसपेशियां असहज रूप से फड़कती थीं, जिससे उन्हें बार-बार पलकें झपकाने और आंखें फैलाने के लिए मजबूर होना पड़ता था। उन्हें अपना सिर सीधा रखने में भी परेशानी होती थी, और उनका मुंह अभी भी खुरदुरा और सूखा लगता था, एसिड रिफ्लक्स का स्वाद उनके गले में बना रहता था।
उसने फैसला किया कि बर्फीले ठंडे पानी में लंबे समय तक स्नान करने से कोई फायदा नहीं हुआ। न ही लगातार तीन गिलास छाछ पीने से कोई चमत्कार हुआ। घटाकरपारा बिस्तर से उठ खड़ा हुआ, जहां वह अपने घुटनों के बीच सिर झुकाकर बैठा था, और उसने अमरा सिम्हा को कोसते हुए कहा कि उसे पिछले पांच सालों में शराब पीने के दौरान इतना बुरा हैंगओवर कभी नहीं हुआ था।
पिछली रात खाने के दौरान यह सब बड़ी ही मासूमियत से शुरू हुआ था। कमांडर दत्ताका ने अमरा सिंह का विश्वास फिर से जीतने के लिए पास की एक शराब की भट्टी से ताज़ा बनी शराब का एक घड़ा पेश किया। अमरा सिंह, जो कभी भी शराब पीने से मना नहीं करते थे, ने शालीनता से एक घड़ा स्वीकार कर लिया और घातकपारा और राज्यपाल सत्यवेद के लिए भी एक-एक घड़ा भर दिया।
शराब बहुत बढ़िया थी; एक जग से शुरू होकर जल्दी ही दो, फिर तीन, फिर चार हो गए, और हर जग खाली होने पर अमरा सिंह का मज़ाक फिर लौट आता था। कुछ ही देर में – और घटकरपारा को ठीक से याद नहीं था कि यह सब कैसे शुरू हुआ – अमरा सिंह ने

राजकुमार को शराब पीने की प्रतियोगिता के लिए चुनौती दे दी, और दो और घड़े मंगवाए गए। जग बड़े चाव से खाली किए गए, और तुरंत फिर से भर दिए गए... घटाकरपारा को उस रात की आखिरी याद यही थी कि वह कमांड सेंटर के भोजन कक्ष की छत को घूर रहा था, और मशाल की रोशनी में छत की कड़ियों को हिलते-डुलते देख रहा था।
दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई, लेकिन इससे पहले कि राजकुमार कुछ समझ पाते, दरवाजा खुला और दहलीज पर सीमा रक्षक दल का एक सिपाही खड़ा दिखाई दिया। "राजकुमार घटकर्परा को सलाम।"
राजकुमार ने सिर हिलाया, लेकिन तुरंत ही उसे अपने इस कदम पर पछतावा हुआ क्योंकि उसके कानों के बीच फिर से धड़कन तेज होने लगी।
"पार्षद अमरा सिम्हा कमांडर दत्ताका के कार्यालय में आपकी उपस्थिति चाहते हैं, माननीय।"
"मैं वहाँ रहूँगा," घटाकरपारा ने भारी आवाज़ में उत्तर दिया, दर्द कम करने के लिए उन्होंने अपने अंगूठे और मध्यमा उंगली के बीच अपनी कनपटी को दबाया। उसने सिपाही को झुककर दरवाजा बंद करते देखा, और सोचने लगा कि क्या उसने सिपाही के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान देखी थी। उसने फिर से खुद को कोसा, यह जानते हुए कि पिछली रात उसने राज्यपाल और दत्ताका के सामने खुद को पूरी तरह से मूर्ख साबित कर दिया था। शायद कमान केंद्र में यह बात फैल चुकी थी – और उसे डर था कि जल्द ही आधी शाही सेना को पता चल जाएगा कि राजकुमार शराब नहीं संभाल सकता।
जैसे ही घटाकरपारा खुले आंगन में दाखिल हुए, तेज सुबह की धूप से उनकी आंखें चौंधिया गईं। आंगन के उस पार दत्ताका का कार्यालय स्थित भवन था। बिना किसी दुर्घटना के आंगन पार करने के बाद, राजकुमार इमारत में दाखिल हुए और सेनापति के कार्यालय में पहुंचे, जहां उन्होंने देखा कि अमर सिंह मेज पर झुके बैठे हैं और फिर से चिड़चिड़े हो गए हैं। राज्यपाल सत्यवेद दूसरी कुर्सी पर बैठे अपने घुटनों पर उंगलियां थपथपा रहे थे, जबकि दत्ताका एक तरफ सिर झुकाए उदास खड़े थे।
राजकुमार के प्रवेश करते ही अमरा सिंह ने भौंहें चढ़ाकर उसकी ओर देखा, फिर मुड़कर दत्ताका को घूरने लगा।
“उदयपुरी लौटने की तैयारी करो। हम तुरंत निकलेंगे।” हालाँकि वह सेनापति की ओर घूर रहा था, इसमें कोई संदेह नहीं था कि अमरा सिंह ने राजकुमार को संबोधित किया था।

"लेकिन कैदी से पूछताछ के बारे में क्या?" घटाकरपारा ने असमंजस में पूछा। “कैसी पूछताछ, कैसा कैदी?” हट्टे-कट्टे पार्षद ने तीखे स्वर में कहा। “कमांडर दत्ताका की मूर्खता के कारण, पूछताछ के लिए कोई कैदी बचा ही नहीं है। हुना का जासूस आज सुबह होश में आए बिना ही मर गया।”
यह न जानते हुए कि कैसे प्रतिक्रिया दें, घटाकरपारा ने केवल कमांडर को घूर कर देखा, जिसने घबराहट में अपने होंठ चाटे और राजकुमार की ओर एक नजर डाली और फिर अपनी नजरें नीचे कर लीं।
“क्या तुम्हें पता है कि उस जासूस से हमें कितनी जानकारी मिल सकती थी?” अमारा सिम्हा ने दत्ताका को फटकार लगाते हुए कहा। “अगर तुम्हारी मूर्खता आड़े न आती तो हमें हूणों की योजनाओं के बारे में अमूल्य जानकारी मिल सकती थी।”
“सच है, सच है,” सत्यवेद ने गंभीर स्वर में कहा। “बहुत ही मूर्खतापूर्ण, बहुत ही बेवकूफी भरा।”
घटकरपारा भले ही खेद जता रहे थे, लेकिन उन्हें यह स्पष्ट आभास हो रहा था कि राज्यपाल दत्ताका के अपमान का भरपूर आनंद ले रहे थे। या फिर यहाँ कुछ और ही बात थी, कुछ ऐसा जिससे सत्यवेद को अपार संतुष्टि मिल रही थी... सेनापति के बोलते ही घटकरपारा ने इस विचार को मन से निकाल दिया।
“पार्षदगण, मैं आप सभी से तहे दिल से माफी मांगता हूं। जो कुछ हुआ है, उसका मुझे खेद है, लेकिन दुर्भाग्यवश इसे बदला नहीं जा सकता। इस कमान केंद्र के प्रमुख के रूप में, मैं इसकी पूरी जिम्मेदारी लेता हूं। मेरे खिलाफ जो भी दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी, मैं उसका पालन करूंगा।”
दत्ताका की सच्ची माफी और दोष अपने ऊपर लेने की इच्छा से अचंभित होकर, अमारा सिम्हा ने केवल सिर हिलाया।
“इसकी पूरी रिपोर्ट बिना देरी किए उदयपुरी भेजिए,” उन्होंने अपनी कुर्सी से उठते हुए कहा। सत्यवेद की ओर मुड़कर उन्होंने पूछा, “क्या आप भी हमारे साथ लौट रहे हैं?”
“जी नहीं, महोदय। जैसा कि मैंने आपको बताया, मुझे यहाँ नगर पंचायत के साथ कुछ काम है,” राज्यपाल ने श्रीस्थली की ओर इशारा करते हुए कहा। “मुझे राजस्व रसीदों की जाँच करनी है, सड़क मरम्मत के लिए स्थानीय नगर निगम अधिकारियों से मिलना है... फिर मैं दोपहर में सरमिष्ठा के लिए रवाना होऊंगा – वहाँ भी कुछ काम बाकी है।”

“जी हाँ, मैं समझ गया,” अमारा सिम्हा ने राहत भरी नज़रों से बीच में टोकते हुए कहा। “तुम सरमिष्ठा से अकेले आओगे। जाओ।” इतना कहकर वह तेज़ी से कमरे से बाहर निकल गया, मानो पिछली रात की मौज-मस्ती का उस पर कोई असर न हुआ हो।
कुछ ही देर बाद, जब घटाकरपारा, अमरा सिंह और उनके अंगरक्षक अपने घोड़ों के पास खड़े होकर प्रस्थान की तैयारी कर रहे थे, तभी उन्होंने कमांडर दत्ताका को जल्दी से उनकी ओर आते देखा।
“पार्षदगण, मेरे पास आपके लिए एक खबर है,” कमांडर का चेहरा उत्साह से चमक उठा। अमारा सिम्हा को भौंहें चढ़ाते देख उसने आगे कहा, “सौभाग्यवश, ऐसा लगता है कि सीमा रक्षक के सैनिकों ने एक और हूण जासूस को पकड़ लिया है।”
“कहाँ?” अमारा सिम्हा की आवाज़ आशा से भर उठी।
"दक्षिण की ओर, सीमावर्ती गांव उत्ताशी के पास। वहां तक पहुंचने में एक घंटे का समय लगता है।"
"क्या उन्हें यकीन है कि वह हूना का जासूस है?"
"जी नहीं, महाराज। वह आदमी स्थानीय बोली अच्छी तरह बोलता है, लेकिन सैनिकों को यकीन है कि वह इस इलाके का नहीं है। वह खुद को घुमंतू बढ़ई बताता है, लेकिन पिछली रात उसे सीमा सुरक्षा चौकी के आसपास ताक-झांक करते हुए पकड़ा गया था। ज़ाहिर है, वह यही कह रहा है कि वह अंधेरे में रास्ता भटक गया था।"
“हम्म... शक की बात है,” अमारा सिंह ने जानकारी पर विचार करते हुए अपनी बड़ी लाल मूंछें घुमाईं। “हो सकता है वो झूठ बोल रहा हो, हो सकता है सच। जानने का एक ही तरीका है।” दत्ताका से राजकुमार की ओर देखते हुए उन्होंने कहा, “चलिए उत्तशी चलते हैं और इस बढ़ई से मिलते हैं।”
“महामहिम, मैं अभी अपना घोड़ा लेकर आता हूँ।” कमांडर मुड़ा, लेकिन उसने मुश्किल से तीन कदम ही बढ़ाए थे कि अमारा सिम्हा ने उसे आवाज़ दी।
"रुको... क्या मृत स्काउट के शव का निपटान कर दिया गया है?"
नहीं, माननीय न्यायाधीश। मैं आदेश देने ही वाला था...
“तो मेरे पास एक बेहतर उपाय है,” अमारा सिम्हा ने बीच में कहा। “मैं चाहता हूँ कि तुम अपने बीस सबसे अच्छे आदमियों को उत्ताशी ले जाओ और इस आदमी को श्रीस्थली ले आओ। हम यहाँ उसके बारे में सच्चाई का पता लगाएंगे। लेकिन इस बार कोई गलती न हो, इसका ध्यान रखना।”
"जी हां, माननीय।" पार्षद के अचानक बदले फैसले से हैरान होकर दत्ताका ने सिर हिलाया।

“लेकिन जाने से पहले, अपने आदमियों को हिदायत दे दो कि वे मरे हुए हुना के शरीर को न ठिकाने लगाएं। यह बहुत ज़रूरी है। अब जल्दी करो, कमांडर। मैं इस घुमंतू बढ़ई से मिलने के लिए बहुत उत्सुक हूँ।”
दत्ताका के जाने पर घटाकरपारा ने भौंहें चढ़ा लीं। अमर सिंह की ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "मुझे यह समझ नहीं आ रहा है।"
“ज़रूर, मेरे बेटे,” अमारा सिम्हा ने रहस्यमयी मुस्कान के साथ राजकुमार के कंधे पर हाथ रखा और उसे इमारतों की छाँव में ले गए। “चलो अंदर चलते हैं। तुम्हारे पास हैंगओवर उतारने के लिए दो घंटे हैं।”
"तुम मृत स्काउट के शरीर को क्यों संरक्षित रखना चाहते हो?" घटाकरपारा ने चिड़चिड़ाते हुए पूछा, उसे इस बात से नफरत थी कि उसके हैंगओवर का असर आसपास के सभी लोगों को साफ दिख रहा था।
"क्योंकि मेरा मानना है कि एक मृत हूना भी हमें बड़े रहस्य बता सकता है।" ***

कोने का कमरा बड़ा तो था, लेकिन सादा था, जो उज्जैनी महल के भव्य वातावरण में बिल्कुल बेमेल लग रहा था। इसका विशाल संगमरमर का फर्श बिल्कुल खाली था, और इसकी सादी सफेद दीवारें भी, जिन पर चूने की हल्की परत चढ़ी हुई थी। इन दीवारों में से दो पर बड़ी-बड़ी हवादार खिड़कियां थीं, जिन पर पतले पर्दे लगे थे जो सुबह की हवा में धीरे-धीरे लहरा रहे थे। कमरे में एक नीचा दीवान और एक दीवार से सटी एक साधारण लेखन मेज के अलावा कोई फर्नीचर नहीं था, और कमरे के लगभग बीचोंबीच एक ऊंचा पलंग रखा था।
कमरे में अव्यवस्था का अभाव उसमें रहने वाले व्यक्ति के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाता प्रतीत होता था - जो पूरी तरह से आश्चर्यजनक नहीं था, यह देखते हुए कि ऊंचे पलंग पर तकियों और गद्दी के सहारे लेटा हुआ व्यक्ति आचार्य वेताल भट्ट था, जिसकी धंसी हुई आंखें थकी हुई निगाहों से बाहर घूर रही थीं। पलंग के चारों ओर सम्राट और परिषद के अन्य सदस्य मौजूद थे, जिनमें कालिदास, वररुचि और वराहमिहिर उज्जैन में हुई अप्रत्याशित घटनाओं से स्वाभाविक रूप से स्तब्ध और भ्रमित थे। वे एक ऐसे शहर को छोड़कर गए थे जो मजबूत और अभेद्य था, और पंद्रह घंटे बाद लौटने पर उसे पूरी तरह से तबाह और राख में तब्दील पाया। “राजगुरु, आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था,” विक्रमादित्य ने फटकार लगाते हुए कहा, हालांकि उनके लहजे में आक्रोश या अस्वीकृति के बजाय स्नेहपूर्ण चिंता झलक रही थी। “यह बहुत खतरनाक था।”

“मैंने उन्हें इसके खिलाफ चेतावनी दी थी, लेकिन कौन सुनेगा?” आचार्य के माथे पर चंदन और जड़ी-बूटियों का लेप लगाते हुए धनवंतरी ने कहा। हालांकि ऐसा लग रहा था कि वे नाराज़ थे, लेकिन चिकित्सक में कोई नाराज़गी नहीं थी। तौलिए से हाथ पोंछते हुए और बेपरवाही से कंधे उचकाते हुए उन्होंने कहा, “वैसे भी, चिकित्सकों की बातों पर कोई ध्यान नहीं देता।”
“अश्विनों को रोकना ही था और मुझे इसके अलावा कोई और रास्ता सूझा ही नहीं।” वेतला भट्टा की आवाज़ पतली थी लेकिन स्पष्ट थी, उनके शब्द दृढ़ता और स्पष्टता से निकल रहे थे जो आश्वस्त करने वाले थे। उन्होंने धनवंतरी की ओर मुड़ते हुए, अपने मुरझाए, सिकुड़े हुए चेहरे पर हल्की सी मुस्कान बिखेरी। “और आपके निर्देशों का पालन करने की बात करें तो, मैं पूरी ईमानदारी से वादा करता हूँ कि आज मैं बिस्तर पर ही रहूँगा और कोई शारीरिक मेहनत नहीं करूँगा।”
“देखा, मेरा मतलब क्या था जब मैंने कहा था कि कोई सुनता ही नहीं?” धनवंतरी ने झुंझलाहट में सिर हिलाया। “मैंने यह नहीं कहा कि आज आराम करो। मैंने कहा था कि जब तक तुम पूरी तरह से ठीक नहीं हो जाते, तब तक तुम्हें आराम करना होगा।” राजगुरु की परेशानी को देखकर पार्षदों ने हल्की-फुल्की हंसी का आदान-प्रदान किया और राहत महसूस की। वरारुचि, जो पलंग के बाईं ओर खड़ी थीं, हंसी थमने का इंतजार करने के बाद बोलीं।
“आचार्य, भले ही यह जोखिम भरा और नासमझी भरा कदम था, फिर भी आपने जो किया उसके लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं,” उन्होंने कहा। “अश्विनों के मन को वश में करके आपने उज्जैन को उनके हाथों और भी बड़ी विपत्ति से बचाया।”
"और तुमने उन्हें खंजर पर दावा करने से रोक दिया," वराहमिहिर ने जल्दी से कहा, जिस पर बाकी लोगों ने सहमति में सिर हिलाया।
“सचमुच, हम सब आभारी हैं...” विक्रमादित्य ने कहना शुरू किया, लेकिन वेताल भट्ट को ज़ोर से सिर हिलाते देख रुक गए।
“नहीं, नहीं... यह मैं नहीं था। मैंने कुछ नहीं किया। हाँ, मैंने उनके सामूहिक मन को नियंत्रित करने की कोशिश की, लेकिन मैं असफल रहा।”
आश्चर्यचकित होकर राजा और सलाहकारों ने एक-दूसरे को घूर कर देखा।
“आप बहुत विनम्रता दिखा रहे हैं, राजगुरु,” सम्राट ने धीरे से कहा।
“मैं नहीं हूँ,” वेताला भट्टा की आवाज़ दृढ़ थी। “मैंने तुमसे कहा था कि मैं असफल हो गया हूँ।”
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, जिसे राजा ने तोड़ते हुए पूछा, "तो फिर अश्विनों ने इतनी अचानक पलायन क्यों किया?"

“यह तुम थे, विक्रम। तुम और तुम्हारी नरक की आग।”
सम्राट ने अपनी कमर पर लटकी तलवारों की ओर देखा। "मुझे समझ नहीं आ रहा..."
“जब तुमने नरक की आग लेकर अश्विनों पर हमला किया, तो उनके मन में जो भय और आतंक छा गया था, मैंने उसे महसूस किया,” आचार्य ने उस घटना को याद करते हुए कांपते हुए कहा। “मैंने चुड़ैलों को अपनी घुड़सवार सेना को राख में बदलते देखा, मैंने जलते हुए उनकी भयानक पीड़ा को महसूस किया। नरक की आग के आतंक ने ही मुझे बेहोश कर दिया था।”
सभी को पहले तो खाली निगाहों से उसकी ओर घूरते हुए और फिर असमंजस में एक-दूसरे की ओर देखते हुए देखकर, राजगुरु ने आह भरी।
“मेरा यह अनुमान सही निकला कि अश्विन बिरादरी में एक समान सोच थी – इसी वजह से इतने बड़े क्षेत्र में फैले होने के बावजूद वे इतनी कुशलता से काम करते थे। एक अश्विन जो देखता, महसूस करता या सोचता था, वही सब दूसरे अश्विन भी देखते, महसूस करते और सोचते थे। यही असली कारण है कि घायल अश्विन या तो आत्महत्या कर लेते हैं या उनके साथी उन्हें मार देते हैं – ताकि सामूहिक सोच घायलों के दर्द से पंगु न हो जाए।”
"तो, आपका कहना है कि जब दक्षिणी द्वार पर बैठे अश्विनी शासक नरक की आग से लैस सम्राट को देखकर भयभीत हो गए, तो उनका भय तुरंत बाकी घुड़सवार सेना में भी फैल गया, जिसके कारण वे सभी भाग गए?" क्षपनाका ने पूछा।
वेताला भट्टा ने सिर हिलाया। “हो सकता है कि सिर्फ एक अश्विन डरा हो, लेकिन इतना ही उनके सामूहिक मन में दहशत पैदा करने के लिए काफी था।” वे रुके और सिर हिलाया। “उनकी सबसे बड़ी ताकत अंततः उनकी सबसे बड़ी कमजोरी बन गई।”
मुख्य सलाहकार द्वारा अभी-अभी किए गए खुलासे पर विचार करते हुए समूह में एक गंभीर सन्नाटा छा गया।
“बाहर क्या हाल है?” राजगुरु ने खिड़कियों की ओर सिर झुकाते हुए पूछा। “बुरा है?”
विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। उन्होंने पूरी सुबह शहर में घूमते हुए हालात का जायजा लिया, जहाँ आवश्यक था वहाँ सहानुभूति और संवेदना व्यक्त की, और भयभीत नागरिकों को आश्वस्त किया कि उज्जैन एक बार फिर सुरक्षित है। दक्षिणी और उत्तरी जिलों के बड़े हिस्से आग से तबाह हो गए थे, और उन्होंने वहाँ बहुत शोक और निराशा देखी थी। वे जानते थे कि शहर को फिर से सामान्य होने में समय लगेगा। और घावों को भरने में काफी अधिक समय लगेगा।
"हमें क्या-क्या नुकसान हुए हैं?" वेतला भट्टा ने पूछा।

“लाशों की गिनती अभी जारी है, लेकिन हमारा अनुमान है कि लगभग एक हजार लोग मारे गए हैं,” राजा उदास होकर खिड़की से बाहर देखते हुए बोले। “इनमें से एक तिहाई नागरिक होंगे, जिनमें से अधिकतर आग की चपेट में आ गए। हमने अभी तक आर्थिक नुकसान का आकलन शुरू भी नहीं किया है।”
वररुचि ने कहा, "लोगों का डरना स्वाभाविक है।"
क्षपनाका ने बताया, "सिर्फ आम नागरिक ही नहीं, सैनिक भी भयभीत हैं। वर्दी में अपने इतने सालों में उन्होंने कभी ऐसी स्थिति का सामना नहीं किया है।"
“मैं सहमत हूँ,” कालिदास ने अंततः अपनी चुप्पी तोड़ी। “पिशाचों से लड़ने के लिए हमारे साथ गए घुड़सवार भी सवाल पूछ रहे हैं। हर तरफ बहुत भ्रम और अनिश्चितता का माहौल है।”
“शहर भर में अफवाहें फैल रही हैं कि हमलावर जादुई शक्तियां प्राप्त कर चुके हूण थे,” शंकु ने कहा। “कुछ लोग अवंती के शापित होने की बात भी कर रहे हैं।” विक्रमादित्य ने दृढ़ता से कहा, “हमें अफवाहों और अनिश्चितता को दूर करना होगा। ऐसा करने का एकमात्र तरीका अवंती के लोगों को यह सच बताना है कि हम पर किसने और क्यों हमला किया।”
“क्या हम उन्हें हलाहला के बारे में बताएंगे?” वरारुची ने संदेह भरी निगाहों से अपने भाई की ओर देखा।
“हमें ऐसा करना ही होगा,” सम्राट ने उत्तर दिया। “हमें अपनी प्रजा को उनके कष्टों का स्पष्टीकरण देना होगा। यदि हम उन्हें सत्य बताएंगे, तो वे संभवतः हमें समझेंगे और सर्वज्ञानी से किए गए वचन का पालन करने के लिए हमारा सम्मान करेंगे।”
वररुची ने सिर हिलाया। “मैं तुरंत नगर उद्घोषकों को भेज देता हूँ। क्या आप चाहते हैं कि यह खबर पूरे अवंती में भेजी जाए?”
“जी हां, हर कस्बे और गांव में।” राजा कुछ देर रुककर गहरी सोच में डूब गए। “हेहेया, मत्स्य, वत्स, कोसल, मगध और अनार्ता संघ के दरबारों में भी दूत भेजो। हमारे सहयोगी भी इस खबर को जानने के हकदार हैं, क्योंकि हेहेया पिशाचों के हमले का कुछ भार पहले ही झेल चुका है। दरअसल...” राजा ने कालिदास की ओर सीधे देखा। “...मैं चाहता हूं कि आप स्वयं राजा हरिहर को यह खबर पहुंचाएं।”
“मैं आज शाम को चला जाऊंगा,” उस दैत्य ने आदेश की पुष्टि की।
“विक्रम, तुम्हें यह समझना होगा कि हमारे सभी सहयोगी कटार की रक्षा करने के हमारे प्रयासों की सराहना नहीं करेंगे, खासकर अगर इसका मतलब हेहेया जैसे खतरों से निपटना हो,” आचार्य ने चेतावनी दी।

“तो चलिए इस अवसर का उपयोग यह पता लगाने के लिए करें कि हमारे असली सहयोगी कौन हैं,” विक्रमादित्य ने कठोर स्वर में उत्तर दिया।
तभी दरवाजा खुला और महल का एक सेवक अंदर आया। वह थका हुआ और निराश लग रहा था, शायद उस सुबह उज्जैन में सभी लोग ऐसा ही महसूस कर रहे थे।
“सम्राट विक्रमादित्य और नौ सदस्यों की परिषद को प्रणाम,” उन्होंने कहा। “मैं सम्राट का संदेश लेकर आया हूँ।” राजा को सिर हिलाते देख उन्होंने घोषणा की, “महाराज ने आपको बुलाया है।”
“महारानी को बता दीजिए कि मैं शीघ्र ही उनके पास आऊंगा,” सम्राट ने कहा।
राजा के आदेशों का पालन करने के बजाय, सेवक दरवाजे पर हिचकिचाता हुआ खड़ा रहा। कमरे में मौजूद सभी लोगों की निगाहें जब उसकी ओर तिरस्कारपूर्ण ढंग से मुड़ीं, तो उसने क्षमा याचना करते हुए गला साफ किया और हकलाते हुए दो वाक्य बोले।
“मेरा मतलब महारानी माँ से नहीं था, महोदय। महारानी विशाखा ने आपको बुलाया है।”
विक्रमादित्य और उनके सलाहकार अचंभित होकर सेवक को देखते रह गए।
***

किकाटा गांव, जो आग की लपटों में घिर रहा था, उस पहाड़ी की तलहटी से आधा मील की दूरी पर स्थित था, जिस पर जनरल दैपायाना अपने घोड़े पर सवार होकर बैठे थे। मगध के सबसे चतुर रणनीतिकारों और खूंखार योद्धाओं में से एक, सेनापति ने जलते हुए गाँव को संतुष्टि से देखा। उसका विशाल, गोरा चेहरा उत्तेजना से लाल हो गया था, क्योंकि उसने देखा कि कबीले के लोग बेखबर होकर इधर-उधर भाग रहे थे। मगध के सैनिकों ने गाँव को तीन तरफ से घेर लिया था, और चालाकी से किकाटाओं के भागने के लिए केवल एक ही रास्ता खुला छोड़ा था - पूर्व दिशा में, मगध को वंगा गणराज्य से अलग करने वाली सीमा की ओर।
चौबीस घंटे पहले, जनरल दैपायन के नेतृत्व में मगध सेना की छह टुकड़ियाँ - प्रत्येक में तीन हजार सैनिक और घुड़सवार, पैदल सेना और तीरंदाज इकाइयाँ शामिल थीं - गिरिव्रजा से निकली थीं। सेना दक्षिण-पूर्व दिशा में लगातार आगे बढ़ती रही और यात्रा के पहले अठारह घंटों में काफी दूरी तय कर ली थी। लेकिन अंतिम छह घंटों में गति काफी धीमी हो गई, जब टुकड़ियाँ दक्षिणी निचले इलाकों में प्रवेश कर गईं, जो किकाटा जनजाति की पारंपरिक मातृभूमि है।
मैदानी इलाकों में पहुँचने पर सेना छोटे-छोटे टुकड़ियों में बँट गई और पूरे क्षेत्र में फैल गई, तथा किकाता बस्तियों की तलाश में व्यवस्थित रूप से इलाके

की छानबीन करने लगी। उन छह घंटों में, दर्जनों किकाता गाँवों और बस्तियों पर छापा मारकर उन्हें जलाकर राख कर दिया गया, सैकड़ों आदिवासियों को मार डाला गया या बंदी बना लिया गया, जबकि हजारों लोग पूर्व की ओर भाग गए।
“हमें किकाता जनजाति की महिलाओं, बच्चों, बीमारों और बूढ़ों को सीमा पार करके वांगा में धकेलना होगा,” दाइपायाना ने मगध की शाही परिषद में उपस्थित लोगों को अपनी रणनीति समझाते हुए कहा था। “वांगा किकाता शरणार्थियों से भर जाना चाहिए – इतने अधिक कि उन्हें भोजन और आश्रय प्रदान करना वांगा की शासी परिषद के लिए एक संकट बन जाए। वांगा शरणार्थियों से निपटने में इतना व्यस्त हो जाना चाहिए कि जब हम हमला करें, तो उनके अन्न भंडार खाली हो जाएं और उनकी आपूर्ति श्रृंखला चरमरा जाए। इस तरह मैं वांगा की रक्षा व्यवस्था को कमजोर करना चाहता हूँ।”
जब मगध के कुछ सैनिकों ने गाँव के आसपास के धान के खेतों में आग लगा दी, तो अन्य सैनिकों ने सभी स्वस्थ पुरुषों और महिलाओं को इकट्ठा किया और उन्हें दो बड़े आम के पेड़ों के पास ले गए, जहाँ मगध सेना के अधिकारी छाया में बैठे थे। अधिकारी यह तय करने वाले थे कि ग्रामीणों को गुलामी के काम में कैसे लगाया जाए। कुछ ग्रामीणों ने, जिन्होंने थोड़ा-बहुत विरोध करने का प्रयास किया, उन्हें तुरंत मार डाला गया। उनकी मृत्यु से दो उद्देश्य पूरे हुए - इससे अन्य कैदी अधिक आज्ञाकारी हो गए और गाँव के बाकी लोगों को भागने की प्रेरणा मिली। “इस रफ्तार से तो हमें ज्यादा गांवों पर छापा मारने की जरूरत नहीं पड़ेगी,” जनरल ने अपने बगल में खड़े एक जूनियर अधिकारी से बात करते हुए अपनी घनी, घुमावदार मूंछों पर हाथ फेरा। “जो बच निकले हैं, वे खबर फैला देंगे, और हम सब जानते हैं कि अफवाह सौ पंखों पर उड़ती है। जल्द ही, किकाटा जनजाति के लोग बड़ी संख्या में वांगा की ओर पलायन करेंगे।”
“हे स्वामी, आपकी त्रुटिहीन योजना देवताओं की इच्छा पर भी विफल नहीं हो सकती,” चापलूस ने बिना किसी शर्म के उत्साह से कहा, और बड़ी कुशलता से पान के पत्ते पर बुझा हुआ चूना लगाया। “मगध की सेना आपके नेतृत्व से धन्य है।”
दैपायन ने चापलूसी से प्रसन्न होकर मुस्कुराया। उसके दाँत गहरे भूरे रंग के हो गए थे, जो जीवन भर पान चबाने की आदत का परिणाम था। उसने नीचे झुककर नौकर द्वारा तैयार किया गया पान लिया और सुपारी के छोटे से गट्ठे को कुशलतापूर्वक अपने दाहिने गाल में दबा लिया।
"जनरल जी, देखिए हम आपके लिए गांव से क्या लाए हैं।"

दैपायाना ने पीछे मुड़कर देखा तो उसके पीछे दो कनिष्ठ अधिकारी खड़े थे। अधिकारियों के पीछे, तीन किकाता महिलाएं छह भाले और तलवारों की नोकों पर कांपती हुई खड़ी थीं, जिन्हें आधा दर्जन मगध सैनिकों ने तान रखा था।
महिलाओं को घूरते हुए जनरल की मुस्कान और चौड़ी हो गई, उसकी निगाहें उनके सुडौल शरीर पर टिकी थीं। एक महिला लगभग चालीस वर्ष की थी, सुगठित और आकर्षक थी। दूसरी लगभग तीस वर्ष की थी, कद में छोटी लेकिन दुबली-पतली। तीसरी तो बस पंद्रह वर्ष की लड़की थी, नाजुक और दुबली-पतली।
“आप क्या सोचते हैं, जनरल?” अधिकारियों में से एक ने शरारती मुस्कान के साथ पूछा।
“बहुत बढ़िया,” दैपायाना ने अश्लील मुस्कान के साथ उत्तर दिया। “मगधन के अच्छे बीज बोने के लिए आदर्श मिट्टी।”
"आप अपनी पसंद चुन लीजिए, जनरल," दूसरे अधिकारी ने सुझाव दिया।
“तुम दोनों को कौन-कौन से चाहिए?” दैपायना ने शरारती अंदाज में पूछा।
"जनरल को जो चाहिए, वह नहीं," अधिकारियों में से एक ने बात को टालते हुए कहा। दैपायाना ने दूसरे की चतुराई को पहचानते हुए मुस्कुराया। उसकी निगाहें तीनों महिलाओं में सबसे बड़ी पर टिक गईं। उसे हमेशा से ही बड़ी महिलाओं के प्रति आकर्षण रहा था। इसके अलावा, वह जानता था कि यह अनुभवी होगी। सबसे अच्छी बात यह थी कि उसे उसकी आँखों में भय देखना अच्छा लगता था।
उसने उत्सुकता से अपने होंठ चाटे, उम्मीद करते हुए कि डर अंत तक बना रहेगा। महिलाओं के साथ उसे यही तरीका सबसे अच्छा लगता था।
***

विक्रमादित्य पलंग के किनारे पर बैठा था, विशाखा के छोटे हाथों को अपने हाथों में पकड़े हुए, उसके भावहीन चेहरे को घूर रहा था, उन आँखों में जागरूकता की एक झलक की तलाश कर रहा था जिन्होंने इतने वर्षों तक अपने आकर्षण से उसे मोहित कर रखा था।
“देखो, मैं यहाँ हूँ,” उसने तीसरी बार दोहराया और रानी के हाथों को धीरे से दबाया।
बिस्तर से अभी भी कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली थी।
सम्राट ने विशाखा के हाथ छोड़ने से पहले अपनी आँखें उठाकर पलंग के चारों ओर खड़े लोगों के घेरे पर एक नज़र डाली। दर्द और निराशा से भरी एक गहरी आह भरते हुए उन्होंने कमरे में चारों ओर देखा।
“आखिर हुआ क्या? उसने क्या कहा?” उसने पूछा।

दोनों नौकरानियों में से एक, जो अधिक चतुर और बातूनी थी, आगे बढ़ने के लिए धक्का-मुक्की करने लगी।
“माननीय महोदय, मैं महारानी के पास बैठी थी,” उसने अपनी बात शुरू करते हुए कहा। “जब से उन्होंने आखिरी बार बात की थी, तब से हम उनके बगल में बैठे हैं और उनके हर पल को देख रहे हैं, ठीक वैसे ही जैसे माननीय चिकित्सक ने हमें बताया था, माननीय महोदय।”
“अच्छा, अच्छा,” धनवंतरी ने दासी को अपनी कहानी जल्दी सुनाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा। “तो जब तुम रानी के पास बैठी थी, तब क्या हुआ था?” "वह अचानक फिर बोली। ऐसा लगा जैसे उसने पुकारा हो।"
“उसने राजा का नाम लेकर पूछा?” रानी उपश्रुति ने दासी की ओर हल्के से झुंझलाहट भरी नजरों से देखा क्योंकि वह सीधे मुद्दे पर नहीं आ पा रही थी। “शुरू में नहीं, महारानी माँ,” लड़की ने उत्तर दिया। “उसके पहले शब्द मुझे ‘इत्तिताई’ जैसे लगे।” दासी के चेहरे के भाव से स्पष्ट था कि उसे वे शब्द समझ में नहीं आए थे।
“इत्तिताई?” रानी उपश्रुति एक पल के लिए हैरानी से भौंहें सिकोड़ीं, फिर उनका चेहरा साफ हो गया और उन्होंने क्षपणक की ओर देखा। “पुत्र, क्या इत्ति निषाद के महल में तुम्हारी माता की निजी दासी नहीं थी?”
पलंग के पास खड़ी क्षपनाका ने अपने भीतर उमड़ रही आशा और निराशा की लहरों को काबू में रखते हुए सिर हिलाया। विशाखा पर निगाहें टिकाए हुए वह अपनी बहन के पास गई, झुकी और धीरे से उसके माथे को सहलाया।
“माँ उन्हें इत्ती ताई कहकर बुलाती थीं क्योंकि वे लगभग उनकी बड़ी बहन जैसी थीं। इसलिए हम भी उन्हें इत्ती ताई कहकर बुलाने लगे।” सुखद पलों की यादें उमड़ते देख क्षपनाका की आवाज़ भर्रा गई। मुश्किल से गले से आवाज़ निकालते हुए उन्होंने कहा, “अगर रानी ने इत्ती ताई कहकर पुकारा, तो हो सकता है कि उन्हें हमारे बचपन की कोई बात याद आ गई हो।”
क्षपणक के शब्दों से झुके हुए कंधे सीधे हो गए और निराश मनोबल में उछाल आया। पूरे दो वर्षों में, यह पहला ठोस प्रमाण था जो विशाखा के धीमे और कष्टदायक स्वास्थ्य लाभ की ओर इशारा कर रहा था।
“उसके बाद रानी ने क्या कहा?” विक्रमादित्य की आँखों में मानो दासी से विनती का भाव था।
“महाराज, महारानी के अचानक बोले गए शब्दों से मैं आश्चर्यचकित रह गया। मुझे भी यकीन नहीं था कि मैंने सही सुना है, इसलिए मैंने महारानी से अपने शब्द

दोहराने को कहा। उन्होंने एक पल के लिए मेरी ओर देखा, उनकी आँखें पूरी तरह चौकस थीं। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि आप कहाँ हैं, महाराज। उनके ठीक शब्द थे, ‘राजकुमार विक्रम कहाँ हैं?’ इसलिए मैंने पहरेदारों को आपको सूचित करने के लिए कहा।”
“आगे क्या हुआ?”
“कुछ नहीं, माननीय न्यायाधीश। उसने फिर कुछ नहीं कहा... और उसकी आँखों की चमक फीकी पड़ गई।”
पूरी तरह से असमंजस में पड़े सम्राट ने अपनी निगाहें विशाखा पर टिका दीं। उसने उन्हें बुलाया था, लेकिन अब जब वे यहाँ आ गए थे, तो उसने चुपचाप दरवाज़ा बंद कर लिया था। इससे उन्हें बचपन के वो दिन याद आ गए जब वे लुका-छिपी खेलते थे और उनकी बारी होती थी खोजने की। एक खिलखिलाहट, कपड़ों की सरसराहट या पैरों की आहट से विशाखा का छुपना हमेशा उजागर हो जाता था, लेकिन जब वे दौड़कर देखने जाते, तो उसे शायद ही कभी वहाँ पाते जहाँ उन्होंने सोचा होता था कि वह छिपी है। विशाखा सुराग छोड़कर गायब होने में माहिर थी।
राजा अकड़कर उठे और खिड़की के पास झुककर पास के गुलमोहर के पेड़ की शाखाओं को हवा में लहराते हुए देखने लगे। उनके सीने में गहरा दुख समाया हुआ था, मानो उन्हें ज़मीन पर गिरा रहा हो।
"उसने राजकुमार विक्रम क्यों कहा?" उसने कमरे की ओर मुड़कर पूछा।
“उससे पहले उन्होंने इत्ती ताई को बुलाया था, इसलिए जैसा कि क्षपणक ने कहा, रानी को शायद अपने बचपन की, अपने अतीत की बातें याद आने लगी हैं,” धनवंतरी ने कहा। “जब वह बड़ी हो रही थीं तब आप राजकुमार विक्रम थे, इसलिए यह तर्कसंगत है।”
“हम उसकी याददाश्त को तेज़ी से सुधारने और उसे जल्दी स्वस्थ होने में मदद करने के लिए क्या कर सकते हैं?” राजा ने कमरे के बीच में वापस आते हुए पूछा। “कोई न कोई उपाय तो होना ही चाहिए।”
“महाराज, मैं अपनी पूरी कोशिश कर रहा हूँ,” धनवंतरी ने शांत भाव से कहा। “उसके ठीक होने के लक्षण दिख रहे हैं – हम सब देख सकते हैं। लेकिन इसमें समय लगेगा। आपको धैर्य रखना होगा।”
हालांकि उनके चेहरे के भाव से लग रहा था कि वे चिकित्सक की सलाह से बिल्कुल भी संतुष्ट नहीं थे, फिर भी विक्रमादित्य ने अपना सिर झुका लिया और फिलहाल इस मामले को यहीं समाप्त कर दिया।

“मुझे लगता है कि अब हम सबको चलना चाहिए,” महारानी माँ ने कहा। “रानी को थोड़ा आराम करने दें।” धनवंतरी ने सहमति में सिर हिलाया और फिर क्षपणक की ओर मुड़ी। “पुत्र, अगर तुम चाहो तो रुक सकते हो।”
"धन्यवाद, माँ," राजकुमारी ने पलंग के पास बैठते हुए कहा।
बाकी के सलाहकार बाहर जाने लगे, लेकिन विक्रमादित्य को विशाखा के पलंग के पास उदास खड़ा देखकर वरारुचि रुक गए। उन्होंने कालिदास के कंधे पर हाथ रखकर उन्हें रोक लिया। दोनों ने एक-दूसरे को अर्थपूर्ण निगाहों से देखा और फिर राजा के पास चले गए।
“भाई, तुम कुछ समय के लिए रानी के साथ क्यों नहीं रहते?” वरारुची ने सुझाव दिया। “शायद तुम्हारे यहाँ रहने से कुछ मदद मिल जाए।”
“जी हां, क्यों नहीं?” धनवंतरी ने समूह में शामिल होते हुए कहा। राजा के हाथ पर सांत्वना भरा हाथ रखते हुए उन्होंने आगे कहा, “मेरी किसी भी दवा से कहीं अधिक, यह आपका विश्वास ही है जिसने उसे यहां तक पहुंचाया है।”
विक्रमादित्य ने मुड़कर दक्षिणी खिड़की से बाहर देखा। दूर, उन्हें शहर के ऊपर घना, धूसर धुएँ का कोहरा छाया हुआ दिखाई दिया, मानो कोई विशाल शिकारी पक्षी नीचे जले-बिखरे खंडहरों में दावत की तलाश में मंडरा रहा हो। वे जानते थे कि उज्जैन के उत्तरी भाग में भी ऐसा ही कोहरा छाया हुआ है।
“मित्र, नगर की चिंता मत करो,” कालिदास ने राजा के मन की बात जान ली और कहा। “इसे मुझ पर, वररुचि और शंकु पर छोड़ दो। हम सब कुछ संभाल लेंगे।”
सम्राट ने तीनों सलाहकारों का जायजा लिया, फिर बिस्तर पर चुपचाप लेटी हुई विशाखा की ओर देखा, जो अपने द्वारा दूसरों को पहुँचाई जा रही पीड़ा के प्रति उदासीन और बेपरवाह थी। उससे अपनी निगाहें हटाते हुए विक्रमादित्य ने अपना सिर हिलाया।
“इस समय शहर और यहां के लोगों को मेरी जरूरत है,” उन्होंने कहा। इतना कहकर वे दरवाजे से बाहर निकल गए।
***

शुक्राचार्य ने खेद से सिर हिलाते हुए बुदबुदाया, “मैं मानता हूँ कि हमने मानव राजा का गलत आकलन किया। अगर इससे आपको तसल्ली मिले, तो यह गलती करने वाले हम अकेले नहीं थे। देवताओं ने भी हलाहल की रक्षा करने की उसकी क्षमता और दृढ़ संकल्प को बहुत कम आँका था – और शायद उन्हें इसकी कीमत हमसे कहीं अधिक चुकानी पड़ी।”

“महागुरु, इससे हमें कोई सांत्वना नहीं मिलती,” हिरण्याक्ष ने महापुजारी पर क्रोधित दृष्टि डालते हुए उत्तर दिया। “हमने अंधक के रूप में एक भयंकर राक्षस को खो दिया है, पिशाच सेना पराजित और हतोत्साहित हो चुकी है, और जीत हमारे हाथ में कहीं नहीं है।”
ऋषि और असुर स्वामी, असुर स्वामी के दरबार में अकेले थे। हिरण्याक्ष अपने क्रिस्टल सिंहासन पर सोमा का प्याला लिए बैठा था, जबकि शुक्राचार्य हाथ पीछे बांधे, गहन चिंतन में डूबे हुए दरबार में चहलकदमी कर रहे थे।
"सर्वज्ञ ने विक्रमादित्य को कटार की रक्षा के लिए चुनकर बुद्धिमानी का काम किया," ऋषि ने लगभग स्वयं से कहा।
“फिर भी, वह तो बस एक इंसान है,” हिरण्याक्ष ने अपनी जांघ पर हाथ मारा और व्याकुल होकर खड़ा हो गया, जिससे कुछ सोमा गिर गया। “किसी भी इंसान ने कभी असुरों के रास्ते में खड़े होने की हिम्मत नहीं की है।”
“यह राजा कोई साधारण मनुष्य नहीं है,” ऋषि ने चेतावनी देते हुए कहा। “यह मत भूलो कि वह नरक की अग्नियों का स्वामी है, जिन्हें तुम्हारी स्वयं माता ने नरक की शाश्वत ज्वालाओं में गढ़ा था।”
“मुझे आश्चर्य है कि नरक की आग इस मनुष्य के हाथों में कैसे पहुँच गई,” हिरण्याक्ष ने अपने सिंहासन से सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए भौंहें चढ़ाते हुए कहा।
“ये हड्डियाँ उसे राक्षसी लायुषि ने दी थीं।” असुर स्वामी की आँखों में हैरानी देखकर शुक्राचार्य ने सिर हिलाया। “जी हाँ, वही लायुषि – आपके सौतेले भाई पौरव की दासी। मुझे अभी-अभी हड्डियों से इसके बारे में पता चला है।”
“जब तुमने पहली बार हड्डियों से सलाह ली थी, तब उन्होंने तुम्हें ये सब क्यों नहीं बताया?” असुर की आवाज असंतोष से कांप रही थी।
“हड्डियाँ अपने आप जानकारी नहीं देतीं, मैंने यह पहले भी कहा है। वे केवल विशिष्ट प्रश्नों के उत्तर देती हैं, वह भी रहस्यमय पहेलियों के रूप में। राजा के पास नरक की अग्नि होने के बारे में कुछ भी न जानते हुए, स्वाभाविक रूप से मेरे पास पहले उनके बारे में पूछताछ करने का कोई कारण नहीं था।” शुक्राचार्य ने एक बार फिर खेदपूर्वक सिर हिलाया। “लेकिन हाँ, काश मैंने अंधका को मृत्युदंड देने से पहले मानव राजा के बारे में और अधिक जानने का प्रयास किया होता।”
हालांकि हिरण्याक्ष महायाजक के तर्क में कोई खामी नहीं देख सका, फिर भी वह नाखुश लग रहा था। तभी उसके मन में एक नया विचार आया और उसने शुक्राचार्य से

फिर पूछा, “लेकिन अंधका और पिशाचों ने विक्रमादित्य से युद्ध नहीं किया – आप कहते हैं कि उनका सामना विक्रमादित्य के तीन सेनापतियों से हुआ, जिनमें से एक लंगड़ा था। इन सेनापतियों ने अंधका और भयंकर पिशाचों की सेना पर कैसे विजय प्राप्त की?”
“ये तीनों सेनापति विक्रमादित्य की नौ सदस्यीय परिषद का हिस्सा हैं – नौ निडर योद्धा, जिनमें से प्रत्येक नौ पवित्र मोतियों में से एक का धारक है।”
“क्या ये नौ योद्धा नौ मोती धारण करते हैं?” असुर स्वामी ने आश्चर्य और बेचैनी के मिश्रण के साथ शुक्राचार्य का अवलोकन किया।
“जी हां, उन्हें अपनी अनूठी ताकत और क्षमताएं मोतियों से ही मिलती हैं...” शुक्राचार्य ने व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ रुकते हुए कहा, “फिर भी, उनमें से किसी को भी नौ मोतियों के अस्तित्व का ज्ञान नहीं है। नौ मोती अपनी-अपनी असाधारण शक्तियों से अनभिज्ञ हैं। अगर वे कभी मोतियों की शक्तियों का पूरी तरह से उपयोग करना सीख जाएं, तो नौ मोतियों की परिषद को हराना नामुमकिन होगा।” “एक राजा जो नरक की अग्नि का स्वामी है – और नौ सलाहकार जो अपनी शक्ति से अनभिज्ञ हैं, फिर भी हमें पराजित करने में कामयाब हो जाते हैं…” एक महिला की आवाज़ खाली दरबार में स्पष्ट रूप से गूंजी। “क्या आप कह रहे हैं कि असुर सेना की पूरी शक्ति भी इन मनुष्यों को कुचल नहीं सकती, महागुरु?”
ऋषि और हिरण्यक्ष ने मुड़कर देखा तो होलिका उनकी ओर आ रही थी, उसकी गोद में सुनहरी आँखों वाला शिशु था। उसके थोड़ा पीछे एक असुर बच्चा था, जो शिशु से कुछ ही बड़ा था और गोल-मटोल पैरों से दौड़ रहा था। बच्चे की त्वचा सुनहरी और आँखें होलिका की तरह नीली थीं, लेकिन उसके बाल घने और मोटे सुनहरे थे, जो होलिका के काले बालों से अलग थे। सुनहरे बालों के नीचे से दो छोटे सींग निकले हुए थे, जो बच्चे को एक शरारती मासूमियत दे रहे थे।
“ओह, मुझे यकीन है कि उन्हें कुचला जा सकता है,” शुक्राचार्य ने हाथ हिलाकर उपेक्षा का भाव दिखाया।
“अच्छा,” हिरण्याक्ष ने कहा और प्रधान पुजारी के सामने मजबूती से खड़े हो गए, उनकी आवाज ऊपर की गैलरी में गूंज उठी। “तो चलिए सिंधुवर्त पर धावा बोलते हैं और इस बेतुकेपन का अंत करते हैं जो पहले ही हद से ज्यादा बढ़ चुका है।”
“यह एक विकल्प है...”
हिरण्याक्ष ने ऋषि को घूरकर देखा। "क्या यहाँ और भी लोग हैं, महागुरु?" “मित्रता,” शुक्राचार्य ने कंधे उचकाते हुए कहा। “मनुष्यों से युद्ध करने की क्या आवश्यकता है जब हम उन्हें अपने पक्ष में ला सकते हैं? राजा और उनकी

परिषद वीर योद्धा हैं और देवताओं के विरुद्ध हमारी लड़ाई में योग्य सहयोगी साबित हो सकते हैं।”
“लेकिन विक्रमादित्य ने देवताओं के इसी तरह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था, तो फिर उन्होंने हमारी मित्रता क्यों स्वीकार की?” डायन रानी ने पूछा। “क्या उन्होंने नारद से यह नहीं कहा था कि वे मित्रता के बदले हलाहल नहीं देंगे?” ऋषि को सिर हिलाते देख, असुर स्वामी ने हैरानी से अपना गाल खुजलाया। "तो फिर हम वहाँ कैसे सफल होंगे जहाँ नारद असफल रहे?"
"नारद इसलिए असफल हुए क्योंकि उन्होंने एक छोटी सी चाल चलने के बारे में नहीं सोचा, जिससे मुझे यकीन है कि वांछित परिणाम मिल जाता," प्रधान पुजारी ने एक धूर्त मुस्कान के साथ कहा।
“महागुरु, मैं आपको समझ नहीं पा रहा हूँ।”
“हर इंसान में कोई न कोई कमजोरी होती है जिसका फायदा उठाया जा सकता है, कोई न कोई खामी होती है जो उसे पूरी तरह से असुरक्षित बना देती है,” शुक्राचार्य ने दरबारियों की एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा। “हड्डियों ने इंसानी राजा के कवच में मौजूद दरार को उजागर कर दिया है।”
“उसकी कमजोरी क्या है?” हिरण्याक्ष ने बढ़ती उत्तेजना के साथ पूछा।
“विशाखा, अपनी बीमार पत्नी के प्रति उनका गहरा प्रेम। मुझे लगता है कि राजा विक्रमादित्य उन्हें ठीक कराने के लिए किसी भी हद तक जाएंगे...” ऋषि ने अपनी दाढ़ी सहलाई, उनकी आँखों में एक रहस्यमयी, दूरदर्शी भाव था। “अब समय आ गया है कि मैं अवंती के दरबार का दौरा करूं।”

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

वाली घटनाओं की याद से घृणा झलक रही थी जो उसने अपनी गाड़ी की खिड़कियों से देखी थीं। “नहीं, महाराज। मुझे पूरा यकीन है कि वह एक साधारण प्रतिभा वाला घुमंतू संगीतकार है जो महलों में मनोरंजन करता है।”
राजा इस बात पर विचार करने लगा। "वह उस सुबह महल के बगीचे में क्या कर रहा था?" “उन्हें गिरिवरजा के महल में ठहराया गया था क्योंकि राजा सिद्धसेना ने अपनी दयालुता दिखाते हुए एक प्रदर्शन के बाद उन्हें रात भर के लिए आश्रय दिया था। यह महज़ संयोग था कि अगली सुबह उन्होंने महल के बगीचे में टहलने का फैसला किया और बगीचे की सीढ़ियों पर जो कुछ हुआ, उसे देखा।”
“यह बात समझ में आती है,” भूमिपाला ने धीरे से सिर हिलाया। “शूरासेन ने सिद्धसेना को मारने के लिए शायद वही जगह चुनी होगी, क्योंकि वह जानता था कि उस समय उद्यान सुनसान होगा। लेकिन उसने इस बात का ध्यान नहीं रखा कि कोई बाहरी व्यक्ति वहाँ मौजूद हो सकता है और गलती से उसके इस घिनौने कृत्य को देख सकता है।”
कमरे में फिर कुछ देर सन्नाटा छा गया, तभी राजा ने एक सवाल पूछा। “लेकिन उसने ऐसा क्यों किया? सिद्धसेना बीमार था और उसके पास जीने के लिए ज्यादा समय नहीं बचा था... क्या शूरसेना मगध का राजा बनने के लिए इतना बेताब था?”
“माननीय, यह घटना भले ही चौंकाने वाली हो, लेकिन इसका संबंध राजा सिद्धसेना की मृत्यु से कम और उसके बाद किकाटा अंगरक्षक की निर्मम हत्या से अधिक है,” पल्लवन ने असाधारण दूरदर्शिता का परिचय देते हुए कहा। “संगीतकार बताते हैं कि कैसे शूरसेना ने राजा की मृत्यु का दोष अंगरक्षक पर मढ़ दिया और देखते ही देखते किकाटाओं के विरुद्ध जनभावना भड़का दी। राजा सिद्धसेना की हत्या इसलिए नहीं की गई थी क्योंकि शूरसेना मगध का सिंहासन चाहता था – बल्कि इसलिए की गई थी ताकि शूरसेना किकाटाओं और वंगाओं के विरुद्ध युद्ध छेड़ सके।”
“आप सही कह रहे हैं,” भूमिपाला ने कहा, और याद दिलाया कि शूरसेन ने विक्रमादित्य के राजसूय यज्ञ में गणतंत्र के विरुद्ध युद्ध छेड़ने का अपना इरादा स्पष्ट कर दिया था। “और आप कहते हैं कि शूरसेन ने हूणों और शकों के विरुद्ध सिंधुवर्त की रक्षा के लिए सैनिक भेजने के अपने पिता के वादे को पूरा करने से इनकार कर दिया है?”
"बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में, माननीय न्यायाधीश।"
राजा ने आह भरी। "ऐसा लगता है कि सिद्धसेना के निधन से हमने एक सहयोगी को खो दिया है।"
“महामहिम, अब हम क्या करें?” दरबारियों में से एक ने पूछा।

“सबसे पहले तो हमें पूर्वी क्षेत्र में हो रहे घटनाक्रमों पर कड़ी नज़र रखनी होगी। मैं चाहता हूँ कि मगध में हमारे जासूसों का नेटवर्क तुरंत मज़बूत किया जाए। साथ ही, कुछ जासूसों को वंगा भी भेजा जाए। हमें नियमित रूप से रिपोर्टों की भी आवश्यकता होगी। कृपया इसका ध्यान रखें।”
“संगीतकार का क्या हुआ?” दरबारी ने पूछा।
“उसके भले के लिए, बेहतर होगा कि वह कुछ समय के लिए यात्रा करना छोड़ दे,” भूमिपाला ने कंधे उचकाते हुए कहा। “उसे कुछ समय के लिए श्रावस्ती में ही रखो, जब तक हम यह तय न कर लें कि उसके साथ क्या करना है। लेकिन जब तक उसे ज्यादा बोलने की आदत नहीं है, मुझे लगता है कि वह सुरक्षित है।”
“क्या हमें अपने बाकी सहयोगियों को भी सिंधुवर्त की रक्षा में सहायता न करने के मगध के फैसले के बारे में सूचित नहीं करना चाहिए?” पल्लवन ने याद दिलाया। “सिर्फ इतना ही क्यों...? हमें सिद्धसेना की मृत्यु के बारे में जो कुछ भी पता चला है, वह भी उन्हें बताना होगा।” भूमिपाला का चेहरा बोलते ही सख्त हो गया। “राजा एक पुराने और भरोसेमंद मित्र थे। शूरसेना के पाप बढ़ते जा रहे हैं, और मेरी राय में, उन्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।”
***

मोटी लोहे की पसलियों और मजबूत बोल्टों से मजबूत किया गया भारी लकड़ी का दरवाजा खुल गया और कमांडर दत्ताका अंदर आ गए।
कमांडर ने खुरदुरे पत्थर के फर्श और दीवारों वाली मध्यम आकार की कोठरी का चारों ओर जायजा लिया। अमारा सिम्हा एक दीवार से टेक लगाकर, सीने पर हाथ बांधे खड़ा था, जबकि घटाकरपारा और कमांड सेंटर का अनुवादक एक साधारण लकड़ी की मेज के आमने-सामने बैठे थे। तीनों को जिज्ञासा भरी निगाहों से उसकी ओर मुड़ते देख दत्ताका ने चुपचाप सिर हिलाया।
घटाकरपारा तुरंत मेज से उठ गए और उनकी जगह अमारा सिम्हा बैठ गए। चारों व्यक्तियों ने एक बार फिर एक-दूसरे की ओर देखा, जिसके बाद अमारा सिम्हा ने अनुवादक को घूरकर देखा।
“मैं तुम्हें आखिरी बार चेतावनी दे रहा हूँ – मेरे सब्र का इम्तिहान मत लो। तुम कौन हो और श्रीस्थली में क्या कर रहे हो?”
“Ma’a ugr an’hi, keberez,” अनुवादक ने घबराहट भरे लहजे में बड़बड़ाते हुए कहा। उसके शब्दों का मोटा-मोटा अनुवाद यह था, ‘मैं तुम्हें समझ नहीं पा रहा हूँ, मुझ पर दया करो।’

“मुझे पता है कि तुम अवंती भाषा बोल सकते हो, इसलिए यह बकवास बंद करो,” अमारा सिंह ने ऊँची आवाज़ में कहा। “तुम हूणों के लिए जासूसी कर रहे हो, है ना?” “मा’आ उगर अन’ही…” अनुवादक ने फिर से शुरू किया, लेकिन अमारा सिंह की दहाड़ ने उसे बीच में ही रोक दिया।
“बस करो!” पार्षद ने अपने बाएं हाथ की हथेली पर ज़ोर से मुक्का मारा। थप्पड़ की हल्की सी गूंज अनुवादक की दर्द भरी चीख में दब गई।
“केबेरेज़, केबेरेज़...” वह सिसकते हुए बोला, और एक पल के लिए, अमारा सिम्हा उसकी विनती में छिपी सच्चाई को देखकर दंग रह गया। अनुवादक उम्मीद से कहीं बेहतर अभिनेता साबित हो रहा था।
"बोल, सूअर! सच बाहर निकालो!"
“Edha unnu a’gaia h’lum. Ma’a gois khaar’i waa.” मुझे और मत मारो; मैं तो बस एक मामूली चोर हूँ जो भाग रहा है।
मैं तुझे टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा, कुत्ते।
अमरा सिंह ने मेज पर इतनी जोर से प्रहार किया कि दत्ताका और घटाकरपारा दोनों चौंक कर उछल पड़े। अनुवादक लकड़ी में आई गहरी दरार को देखकर स्तब्ध रह गया, लेकिन जल्दी ही संभलकर वह दर्द से चीख उठा।
“अमगो पा’इथ... अमगो पा’इथ...” मेरा हाथ, मेरा हाथ।
"बोलो, तुम हूना कुत्ते, बोलो..."
कुछ और मिनटों तक, अमारा सिम्हा और अनुवादक की बहस जारी रही। अमारा सिम्हा मुट्ठियाँ पटकता, मेज पर मुक्के मारता और गालियाँ देता रहा, जबकि अनुवादक चीखता और दया की भीख माँगता रहा। कोठरी की दीवारें पत्थर की बनी थीं, लेकिन छत के पास पर्याप्त हवा आने-जाने की व्यवस्था थी जिससे आवाज़ें बाहर निकल जाती थीं – अमारा सिम्हा जानबूझकर हर आवाज़ को तेज़ करता था – और ये आवाज़ें बगल वाली कोठरी तक पहुँचती थीं, जहाँ दत्ताका के आदमियों ने उत्तशी से आए संदिग्ध जासूस को रखा था।
अमारा सिम्हा मेज के चारों ओर घूमा और अनुवादक का सिर नकली मौत की पकड़ में जकड़ लिया। "मुझे सच चाहिए या मैं तुम्हारा सिर काट दूंगा," उसने गुर्राते हुए कहा। "तुम दुनिया में अकेले हूण जासूस नहीं हो। हम और भी लोगों को ढूंढ निकालेंगे और उनसे बात निकलवा लेंगे, और तुम्हारी जान बेवजह चली जाएगी। इसलिए जो कुछ भी तुम जानते हो, बता दो, मैं तुम्हें जाने दूंगा।"
अनुवादक ने कुछ अस्पष्ट शब्द बुदबुदाए, और वे शब्द एक और घुटती हुई चीख के साथ समाप्त हुए।

“भाड़ में जाए वो,” अमारा सिंह ने दत्ताका पर चिल्लाते हुए कहा। “अगर वो नहीं बोलेगा, तो उसे आंगन में लटका दो।” इतना कहकर उसने कोठरी का दरवाजा जोर से खोला और बाहर निकल गया।
कुछ ही देर में, दो सैनिक उस स्काउट के शव को, जिसकी उसी सुबह मृत्यु हो गई थी, आंगन से होते हुए उस कोठरी के सामने से ले गए, जहाँ उत्ताशी से आए उस बढ़ई को रखा गया था। शव सैनिकों के बीच में था, उसकी भुजाएँ उनके कंधों पर लटकी हुई थीं, सिर आगे की ओर झुका हुआ था, पैर कीचड़ में घिसट रहे थे, और एक सूजा हुआ पैर बुरी तरह मुड़ा हुआ था।
देखने में तो ऐसा लग रहा था कि जासूस जीवित है, हालांकि उसे बुरी तरह से प्रताड़ित किया गया था और वह बेहोश होने की कगार पर था।
सैनिकों ने शव को आंगन के दूसरे छोर तक ले जाकर फांसी के तख्ते पर लटका दिया।
शव के फांसी के तख्ते पर लटकते ही, अमारा सिंह फांसी के तख्ते के पास पहुंचा।
उसने मृत व्यक्ति के चेहरे पर दो-तीन थप्पड़ मारे और अपने सवालों के जवाब मांगे। फिर वह पीछे हट गया और अपनी कमर से तलवार निकाल ली।
बिना किसी चेतावनी के, उसने तलवार को लाश के पेट में एक बार, दो बार, तीन बार घोंप दिया। फिर बालों से सिर पकड़कर उसने लाश का सिर धड़ से अलग कर दिया।
एक मिनट भी नहीं बीता था कि दत्ताका ने बढ़ई की कोठरी का दरवाजा खोल दिया। बंधक आंगन की ओर खुलने वाली खिड़की के पास दुबका हुआ था, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी छोटी भूरी आँखों में डर साफ झलक रहा था। जैसे ही उसने दत्ताका को दरवाजे से पीछे हटकर अमारा सिंह के भारी-भरकम शरीर को अंदर आते देखा, उसका चेहरा दहशत से भर उठा।
पार्षद एक हाथ में कटा हुआ सिर और दूसरे हाथ में तलवार लिए कोठरी में दाखिल हुआ। सिर और तलवार दोनों से खून टपक रहा था – हालांकि बंधक को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि दोनों को बस एक ताजा काटे गए बकरे के खून में डुबोया गया था।
“क्या तुम बढ़ई हो?” अमारा सिंह ने कड़े स्वर में पूछा। उसके धड़ पर बकरी का खून खूब फैला हुआ था, और कुछ बड़ी बूँदें उसकी धधकती दाढ़ी पर भी चिपकी हुई थीं।
बंधक ने सिर हिलाया।
“अच्छा, इसका मतलब है कि तुम भी अवंती भाषा समझते हो, इस कमीने के विपरीत।” अमारा सिम्हा ने मृत स्काउट का सिर उठाया और उसे नंगी लकड़ी की मेज पर पटक दिया, खून की धारियाँ और छींटे मेज की सतह पर बेतरतीब ढंग से फैल गईं।

बंधक ने फिर से सिर हिलाया, उसकी निगाहें सिर पर टिकी हुई थीं।
"क्या तुम बोलने वाले हो, या तुम अपने दोस्त जैसी ही नियति पसंद करोगे?"
बंधक ने तीसरी बार सिर हिलाते ही ज़ोर से उल्टी की। उसी समय, डर के मारे उसका पेशाब निकल गया और गंदी धोती पर फैल गया। उसने खुद को संभालने के लिए मेज़ का किनारा पकड़ लिया, पेशाब उसके पैरों के पास जमा हो गया।
“मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा,” उसने हांफते हुए कहा। “सब कुछ... वादा करता हूँ। बस मुझे मार मत डालना, प्लीज़।”
***

अपनी घनी सुनहरी दाढ़ी के नीचे, इंद्र का चेहरा गहरे लाल रंग का था, उनकी नीली आँखें काली और उग्र थीं। उनके माथे पर गहरी लकीरें थीं, और उनकी गर्दन की नसें अकड़ी हुई थीं, क्योंकि उन्होंने अपने मांसल कंधों को झुकाया हुआ था और मुट्ठियों को इतना कसकर भींचा हुआ था कि उंगलियों के जोड़ सफेद पड़ गए थे। वे अपने महल के विशाल गलियारे में बड़े-बड़े कदम रखते हुए चल रहे थे, और देवताओं के एक छोटे समूह के चारों ओर चक्कर लगा रहे थे जो बेचैनी से खड़े थे, और आशंका से अपने राजा का अनुसरण कर रहे थे।
“तुमने अपने ऊपर और पूरे देवलोक पर कलंक लाद दिया है,” उसने गुस्से से कहा और हॉल के बीच में बैठे समूह में शामिल नासत्य और दसरा की ओर घूरकर देखा। “मुझे नहीं पता कि मुझे किस बात से ज़्यादा घृणा होती है – मानव सेना से तुम्हारा भागना या जिस बेशर्मी से तुम यहाँ उपस्थित हुए हो!”
“हे महामहिम, ये नरक की आग थी,” नासत्य ने निराशा से सिर झुकाए हुए धीरे से कहा। उसने इंद्र से नज़रें मिलाने से पूरी तरह परहेज किया।
देवों के स्वामी ने घूमकर समूह की ओर रुख किया। उन्होंने व्यंग्यपूर्वक कहा, “यह जानकर खुशी हुई कि अश्विनी घुड़सवार सेना को पंख देने के लिए दो दयनीय अग्नि तलवारें ही काफी हैं। और मैं तो हमेशा से ही इस बंधुत्व को अपने सबसे निडर योद्धाओं में गिनता आया हूँ।”
“हे प्रभु, जब हम कहते हैं कि शहर हमारे वश में था, तो कृपया हम पर विश्वास करें,” दासरा ने विनती की। “यह केवल तब हुआ जब वीर...”
“बस बहुत हो गया,” इंद्र ने अपना एक भारी हाथ उठाते हुए आदेश दिया। “तुम्हारी इस बड़ी असफलता के बारे में बार-बार सुनकर मुझे कोई खुशी नहीं होती। तुम जाओ। मुझे गुरु बृहस्पति और नारद से और भी ज़रूरी मामलों पर चर्चा करनी है।”

नासत्या और दासरा ने गहरी प्रणाम किया। अपनी निगाहें झुकाए, अपमानित जुड़वां भाई हॉल से बाहर निकल गए, उनके कदमों की आहट गलियारे के दूसरे छोर पर दूर तक सुनाई देती रही।
जब हॉल में फिर से सन्नाटा छा गया, तो समूह में से एक देव आगे बढ़ा। वह कद में छोटा, मोटा और टेढ़े पैरों वाला था, हालांकि यह कहना मुश्किल था कि यह उसके वजन के कारण था या उसकी उम्र के कारण। वह बूढ़ा लग रहा था, फिर भी उसकी त्वचा झुर्रियों से रहित थी, उसका गोरा चेहरा चिकना और चमकदार था, जो उसके गंजे सिर के साथ सहजता से मिल रहा था, जिसके चारों ओर सफेद बालों का एक पतला अर्धचंद्राकार घेरा था।
“मुझे ऐसा कहने के लिए क्षमा करें, प्रभु, लेकिन मुझे लगता है कि आपने अश्विनों के प्रति कठोर रवैया अपनाया,” उन्होंने कहा।
देवलोक में, संभवतः यही एक देवता थे जो निंदा के भय के बिना ऐसा कथन कहने में सक्षम थे। क्योंकि देवताओं के राजकक्ष होने के नाते, गुरु बृहस्पति को इंद्र द्वारा अत्यधिक सम्मान दिया जाता था - जो सर्वथा दुर्लभतम विशेषाधिकारों में से एक था।
“हम्फ!” इंद्र ने झुंझलाहट में अपने हाथों को सीने पर बांधते हुए कहा।
“यह सच है कि युद्ध से भागकर उन्होंने कोई गौरव अर्जित नहीं किया, लेकिन इस तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता कि वे नरक की आग के विरुद्ध थे,” बृहस्पति ने तर्क दिया। “हम सभी उन राक्षसी तलवारों की क्षमताओं से भली-भांति परिचित हैं।”
“नरक की अग्नियां,” इंद्र ने सिर हिलाते हुए दोहराया। “मुझे तो पता भी नहीं था कि तीनों लोकों में कहीं ये तलवारें अभी भी मौजूद हैं।” एक पल रुककर, उन्होंने गुस्से से पूछा, “हम कैसे यकीन कर सकते हैं कि ये नरक की अग्नियां ही थीं? हो सकता है कि वे न हों और अश्विनों से कोई गलती हो गई हो।”
“हे प्रभु, आपने नासत्य और दसरा को उनका वर्णन करते हुए सुना है,” बृहस्पति ने उत्तर दिया। “वे जलते हुए कोड़े, वे दुष्ट चुड़ैलें... वे दिति की नासमझी भरी रचनाएँ ही हो सकती हैं।”
जैसे ही इंद्र एक गंभीर मौन में डूब गए, एक मधुर आवाज, जो झनझनाते कांच की तरह साफ और कमल की कलियों पर ओस की बूंदों की तरह ताजा थी, ने उस मौन को भंग कर दिया।
“ये नरक की आग क्या हैं और हे गुरुदेव, ये हमें इतना चिंतित क्यों करती हैं?”

“निश्चित रूप से, ऋषि कश्यप ने अपनी असीम बुद्धि से तुरंत ही धर्म के लिए नरक की आग से उत्पन्न खतरे को भांप लिया था,” नारद ने एक बार फिर बीच में दखल देते हुए कहा। “लेकिन वे यह भी जानते थे कि उन्हें दिति को प्रसन्न रखना है। इसलिए, बड़ी सूझबूझ से उन्होंने तलवारों को आशीर्वाद दिया – उन्हें आदेश दिया कि वे केवल सबसे गुणी योद्धा की इच्छा का पालन करें।”
“आप कह रहे हैं कि उनके आशीर्वाद से ऋषि ने क्रूर हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष के हाथों में नरक की आग को बेअसर कर दिया?” उर्वशी ने नारद की ओर देखा, उसकी आँखें प्रशंसा से चौड़ी हो गईं। “यह तो सचमुच एक उत्कृष्ट चाल थी!”
“सिर्फ़ हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष ही नहीं,” नारद हँसते हुए बोले, अप्सरा द्वारा उन पर बरसाए जा रहे ध्यान का आनंद लेते हुए। “दिति के सबसे छोटे पुत्र, श्रेष्ठ पौरव को छोड़कर, हर असुर के हाथों में तलवारें बेकार थीं। वैसे, यह हमारे लिए कभी चिंता का विषय नहीं था क्योंकि पौरव एक निर्मल तपस्वी का जीवन व्यतीत करते थे, जिन्हें युद्ध और असुरों की महिमा से कोई लगाव नहीं था। इसलिए ऋषि कश्यप की सूझबूझ के कारण नरक की आग की शक्ति कुंद हो गई थी।” उर्वशी ने कुछ पल सोचा। “अगर ये तलवारें इतनी शक्तिशाली हैं, तो हम देवताओं ने इन्हें पाने की कोशिश क्यों नहीं की?” उसने अपने आस-पास के चेहरों को एक-एक करके देखा, उसका अपना चेहरा हिरणी जैसी मासूमियत से भरा हुआ था। “क्या ये तलवारें असुरों के खिलाफ हमारी लड़ाई में अनमोल नहीं होतीं?”
वहाँ उपस्थित सभी देवता अपने पैर हिलाते हुए एक-दूसरे को तिरछी निगाहों से देखने लगे। बृहस्पति और नारद, जो अब तक अप्सरा से बातचीत करने के लिए इतने उत्सुक थे, दोनों ने ही कुछ नहीं कहा। यहाँ तक कि इंद्र, जो अब तक चुपचाप पीछे खड़े होकर सारी गतिविधियों को देख रहे थे, अप्सरा को जवाब देने से बचने के लिए जल्दी से फिर से चहलकदमी करने लगे।
"असुरों के खिलाफ नरक की आग का इस्तेमाल करना बेहद विडंबनापूर्ण होता, और मैंने सुना है कि हमने कोशिश की थी, है ना, पिताजी?"
वक्ता एक युवा देव था, गोरा और मध्यम कद का, जो चुपके से गलियारे में प्रवेश कर गया था। उसकी नाक उभरी हुई और नुकीली थी, लेकिन उसके गालों की किशोरावस्था की कोमलता बरकरार थी और उसके होंठ गुलाबी, मांसल और स्त्रीत्वपूर्ण थे। हालांकि, उसकी आंखें चिड़चिड़ी और चुनौती भरी थीं, क्योंकि वह देवों के स्वामी को निहार रही थी। यह जयंत था, इंद्र का प्रथम पुत्र, जो उनकी विधिवत विवाहित पत्नी शची से उत्पन्न हुआ था।
राजा ने अपने बेटे की ओर तिरस्कार भरी नजर डाली, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।

“मुझे यकीन है कि हमने पूरी कोशिश की, है ना गुरुदेव?” जयंता ने हल्की सी मुस्कान के साथ बृहस्पति की ओर मुड़कर कहा।
“जी हां,” चैंबरलेन ने अनिच्छा से गला साफ करते हुए कहा। “दुर्भाग्य से, तलवारें... प्रतिक्रिया देना बंद कर चुकी थीं। शायद उम्र और कम इस्तेमाल के कारण वे कुंद हो गई थीं।”
"फिर भी, इतने वर्षों के बाद, ऐसा लगता है कि उन्होंने मानव राजा की इच्छा का सराहनीय ढंग से पालन किया है," जयंता ने एक मजाकिया मुस्कान के साथ टिप्पणी की।
उर्वशी की नज़र राजकुमार के आत्मसंतुष्ट चेहरे पर एक पल के लिए पड़ी, फिर वह ऋषि की ओर लौट गई, जो बातचीत के इस मोड़ से स्पष्ट रूप से असहज लग रहे थे। "गुरुदेव, क्या हम जानते हैं कि मानव राजा को तलवारें कैसे प्राप्त हुईं?" “मुझे खेद है कि नहीं,” बृहस्पति ने बनावटी लहजे में जवाब दिया। “हमने हेलफायर्स में बहुत पहले ही रुचि खो दी थी, इसलिए हमने कभी उनका रिकॉर्ड नहीं रखा।”
“और इससे कोई फर्क भी नहीं पड़ता,” इंद्र ने अचानक रुकते हुए कहा। उन्हें जयंता का ताना मारने का लहजा पसंद नहीं आया था, और उर्वशी की आवाज़ में जो थोड़ी सी श्रद्धा झलक रही थी, वो तो उन्हें और भी बुरी लगी, जब उसने मानव राजा के बारे में बात की। “इन तलवारों को लेकर बहुत ज़्यादा चर्चा हो रही है; हमेशा से ही ऐसा होता आया है। हमें इसके बजाय वीषाद का खंजर वापस लाने पर ध्यान देना चाहिए। बस यही मायने रखता है।”
“मुझे सिंधुवर्त पर सेना लेकर जाने दीजिए,” जयंता ने तुरंत, अकड़ भरे स्वर में कहा। “मैं मानव राजा को उसकी औकात दिखाऊंगा और हलाहल तथा नरक की आग लेकर लौटूंगा।”
राजकुमार के शब्दों के बाद दालान में एक अजीब सी खामोशी छा गई। बाकी सबने अपनी सांसें थाम लीं, वहीं इंद्र ने अपने बेटे को गुस्से भरी नजरों से देखा। “यह काम किसी अनुभवहीन लड़के का नहीं है,” उसने कहा। बिना किसी प्रतिक्रिया का इंतज़ार किए, उसने ज़ोर से ताली बजाई। तुरंत ही, एक विशाल गरुड़ एक द्वार पर प्रकट हुआ और हॉल के बीचोंबीच चला गया।
“जी हां, महामहिम राजा?” गरुड़ ने आदरपूर्वक झुकते हुए कहा।
इंद्र ने आदेश दिया, “मरुतों को संदेश भेजो। उन्हें बता दो कि मैंने उन्हें महल में बुलाया है।”

गरुड़ ने झुककर सीधा खड़ा हो गया। “जैसा आप चाहें, महाराज... लेकिन मरुत इस समय देवलोक में नहीं हैं। वे...”
मुझे परवाह नहीं कि वे कहाँ हैं। उन्हें ढूंढो और मेरे पास भेज दो।
कुछ और कहने से पहले ही, देवों के स्वामी बिना किसी औपचारिकता के हॉल से बाहर निकल गए। गरुड़ ने कुछ क्षण तक जाते हुए उन्हें देखा और फिर चुपचाप पीछे हट गए। नारद, बृहस्पति और कुछ अन्य देवताओं ने अनिश्चितता भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा, और धीरे-धीरे समूह तितर-बितर हो गया, हर किसी ने किसी न किसी बहाने से उस परिस्थिति में गरिमापूर्ण ढंग से विदा होने का प्रयास किया। अंततः, हॉल में केवल उर्वशी और जयंता ही खड़े रह गए।
अप्सरा धीरे-धीरे उस युवा राजकुमार के पास पहुँची, जो झुके हुए कंधों और नाराज़गी भरे चेहरे के साथ खड़ा था। एकदम पास आकर उसने अपना हाथ उठाया और उसकी बाईं गाल पर उंगली फेर दी।
“लड़का,” उसने फुसफुसाते हुए, मुंह फुलाते हुए और नखरे दिखाते हुए कहा। “मेरे स्वामी ने आपको लड़का कहा।”
जयंता, जिसके होंठ दर्द से कांप रहे थे, ने झट से अपना सिर पीछे किया और उर्वशी की कलाई पकड़ ली। "मैं लड़का नहीं हूँ और मैं तुम्हें यह दिखा सकता हूँ - अगर तुम मुझे ऐसा करने दो," उसने गुस्से से फुफकारा।
अप्सरा ने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन जयंता ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया और उसे अपनी ओर खींच लिया। उसके उभरे हुए स्तन जयंता की बांह से दब गए, और उसके बालों की मदहोश कर देने वाली खुशबू उसके पूरे मन को मोह लिया। वह अपने होठों से कुछ ही इंच दूर, उसके कोमल, आधे खुले होठों से निकलती गर्म सांसों को महसूस कर सकता था।
“तुम जानती हो कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ, उर्वशी,” उसने हाँफते हुए कहा। “और मैं यह भी जानता हूँ कि तुम मेरे बारे में सोचे बिना नहीं रह सकतीं, यहाँ तक कि जब तुम पिताजी के बिस्तर पर होती हो। तो फिर उस प्यार को क्यों नकारती हो जो हमारा हक है?”
“मैं देवताओं के शक्तिशाली स्वामी की स्वामिनी हूँ,” उर्वशी ने धीरे से कहा। “तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम्हें पसंद करूँगी, अनुभवहीन लड़के?”
“मैं तुम्हारी आँखों में चाहत देख सकता हूँ। जिस तरह से तुम मुझे देख रहे हो... जिस तरह से तुम अभी मुझे देख रहे हो। तुम मेरी ओर आकर्षित हो रहे हो, तुम मुझे चाहते हो।”

अप्सरा ने जयंत की आँखों में गहराई से देखा और राजकुमार को लगा जैसे वह उसकी बाहों में पिघल रही हो। तभी अचानक उर्वशी छटपटाई और खिंची और उसकी पकड़ से छूट गई। जयंत ने हैरानी से उसे देखा, तभी उर्वशी ने शरारती मुस्कान के साथ उंगली हिलाकर उसे चिढ़ाया।
“मेरे स्वामी को कभी भी मेरे साथ इस हालत में मत देखना,” वह हंसते हुए बोली। “आप जानते हैं कि वह मेरे प्रति बहुत ईर्ष्यालु और अधिकार जताने वाला है। इसके परिणाम आपके लिए गंभीर हो सकते हैं।”
इतना कहकर वह मुड़कर चली गई, जयंता के सीने में एक खाली, कड़वा दर्द और उसके मन में एक अधूरी तड़प छोड़ गई।
***

"क्या हम उस जासूस की बातों पर विश्वास कर सकते हैं?" घटाकरपारा ने अमारा सिम्हा की ओर देखा, जो अपने निचले होंठ को चबा रहा था।
“ऐसा न करने का कोई कारण नहीं है। वह बुरी तरह डरा हुआ है। उसकी हालत को देखते हुए, उसके लिए सिर कटने के डर से कुछ भी छिपाना मुश्किल होगा।”
“मरे हुए स्काउट का इस्तेमाल करके उसे खुलवाना एक बहुत ही चालाकी भरा तरीका था, माननीय महोदय,” दत्ताका ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, जिनके कमरे में दोनों पार्षद अब बैठे थे। “हमने उसे बिना छुए ही उससे सच उगलवा लिया।”
“धमकी और यातना से कहीं ज़्यादा, मौत का सबूत सच उगलवाने का एक कारगर तरीका है,” अमारा सिम्हा ने कहा। “निर्दय हत्या आपके बंधक को यह संदेश देती है कि आपके लिए मानव जीवन का कोई महत्व नहीं है। और अगर इसे सही तरीके से किया जाए, तो यह उसके मन में यह विचार भी पैदा करता है कि आप उसके पास मौजूद जानकारी को इतना महत्व नहीं देते कि उसकी जान बख्श दें। मैं इस तरकीब का इस्तेमाल तब करता हूँ जब कोई लाश आसानी से मिल जाए।”
कुछ देर तक तीनों व्यक्ति अपने बंधक से मिली जानकारी पर विचार करते रहे। "सीमा से चार दिन की घुड़सवारी की दूरी पर स्थित विशाल रेगिस्तान में लगभग बीस हजार हूणों की एक सेना तैनात है," घटाकरपारा ने अपने साथियों की ओर देखते हुए भौंहें चढ़ाकर कहा। "यह बहुत दूर नहीं है, खासकर अगर वे तेजी से आगे बढ़ने का फैसला करें।"
“लेकिन जासूस ने यह भी बताया कि वे दो महीने से अधिक समय से डेरा डाले हुए हैं, और अरबुदास के करीब सैनिकों को ले जाने का कोई संकेत नहीं मिला है,” दत्ताका ने बताया। “अगर वे हमला करने की योजना बना रहे हैं, तो उन्हें सीमा के काफी करीब ठिकाने बनाने होंगे; रेगिस्तान की भीषण गर्मी में चार दिन की यात्रा

किसी को भी थका देगी और लड़ने में असमर्थ बना देगी। मुझे तो जासूस द्वारा बताए गए शिविर से ज्यादा गतिविधियों के समन्वय और आपूर्ति श्रृंखला स्थापित करने का केंद्र लगता है।” “शायद आप सही कह रहे हैं,” अमारा सिम्हा ने सहमति जताते हुए कहा। “साथ ही, बीस हजार सैनिक दुश्मन के इलाके में पूर्ण आक्रमण करने के लिए बहुत कम हैं। अगर वे सिंधुवर्त में गहराई तक घुसकर कब्जा किए गए क्षेत्र पर कब्जा बनाए रखना चाहते हैं - जो मुझे लगता है कि हूणों का इरादा है
- तो उन्हें तीन या चार गुना अधिक सैनिकों की आवश्यकता होगी।”
दत्ताका ने ज़ोरदार सहमति में सिर हिलाया। “इसके अलावा, अगर आपको याद हो, तो जासूस ने यह बात बता दी थी कि सैनिकों की कमी लग रही है, क्योंकि सैनिकों को अनार्ता पर नियोजित हमले की तैयारी में लगाया जा रहा है। इसलिए, हालांकि हमें सतर्क रहना चाहिए, मैं यहाँ तत्काल किसी खतरे की संभावना को खारिज करता हूँ।” कुछ देर तक छाए रहे चिंतनशील मौन को घटाकरपारा ने भंग कर दिया।
“क्या आपको लगता है कि हूणों की अनार्ता संघ पर समुद्र के रास्ते हमला करने की योजना के बारे में जासूस सच कह रहा था?” अमारा सिंह के माथे पर अनिश्चितता की लकीरें देखकर राजकुमार ने कहा, “उन्होंने पहले कभी ऐसा कुछ करने की कोशिश नहीं की है। हूण और शक समुद्री यात्रा करने वाले लोग नहीं हैं, और उनके पास कभी कोई नौसेना भी नहीं रही है।”
“इसका मतलब यह नहीं है कि वे ऐसा करने की योजना नहीं बना रहे हैं,” उस विशालकाय व्यक्ति ने उत्तर दिया। “पिछले दस वर्षों में, उन्होंने बड़ी नावें बनाने की तकनीक और उन्हें चलाने का कौशल हासिल कर लिया होगा। और यह तर्कसंगत भी है – समुद्र से हमला ही एकमात्र तरीका है जिससे हूण पाँच अनार्ता नगर राज्यों के उपजाऊ भीतरी इलाकों और समृद्ध व्यापारिक केंद्रों तक शीघ्र पहुँच प्राप्त कर सकते हैं।”
“यह सिंधुवर्त राज्यों को आर्थिक रूप से पंगु बनाने का सबसे तेज़ तरीका भी है,” दत्ताका ने आगे कहा। “अनर्त संघ हमेशा से हूणों और शकों से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहा है, जिससे हमें और हमारे अन्य सहयोगियों को महत्वपूर्ण रणनीतिक और वित्तीय मजबूती मिली है। लेकिन अगर अनर्त राज्य हूणों के हाथों हार जाते हैं, तो द्वारका और भृगुकाक्ष बंदरगाहों से होकर पश्चिम की ओर जाने वाले हमारे व्यापार मार्ग अवरुद्ध हो जाएंगे। आवश्यक कच्चे माल की आपूर्ति रुक जाएगी, जबकि निर्यात से होने वाली आय पर भी असर पड़ेगा, जिससे राजकोष पर और भी दबाव पड़ेगा।”

अमरा सिम्हा ने नए आदर भाव से कमांडर को देखा। पहले स्काउट की मृत्यु का कारण बनी मूर्खता को छोड़कर, दत्ताका ने बड़ी कुशलता दिखाई थी, और अब उसके शब्दों से ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी विश्लेषणात्मक क्षमताएँ भी काफी थीं। “बिल्कुल सही, कमांडर,” अमारा सिम्हा कुर्सी पर सीधा बैठते हुए बोले। “अब मुझे समझ में आ रहा है कि हूणों ने हमारी चौकी पर हमला क्यों किया और गार्ड्स के कप्तान के ज़रिए वह धमकी क्यों दी। हमले से पहले चेतावनी देना उनकी आदत नहीं है, और यही बात मुझे परेशान कर रही थी। यह एक चाल थी ताकि हमारा सारा ध्यान सीमा की ओर खींच लिया जाए, और फिर वे अनार्ता राज्यों पर अचानक नौसैनिक हमला कर सकें। जब तक हम अपनी जगह बदलते, अनार्ता राज्य पर कब्ज़ा हो चुका होता। ज़रा सोचिए – वे हमें आगाह करते हैं कि वे आ रहे हैं, लेकिन मरुस्थली में तो सिर्फ़ बीस हज़ार हूण ही हैं। देखिए, सब कुछ एकदम सही बैठ रहा है!” अपने विचारों से प्रेरित होकर, बलवान पार्षद अपनी सीट से उछल पड़ा। “युगंधरा और अन्य अनार्ता प्रमुखों को इस खतरे के बारे में तुरंत सूचित किया जाना चाहिए, ताकि वे आवश्यक सावधानी बरत सकें।” उसने खिड़की से बाहर ढलते अंधेरे की ओर देखा और खेद से आह भरी। “सूरज तो डूब चुका है – अब सूर्ययंत्र का उपयोग करने का कोई फायदा नहीं। लेकिन कमांडर, कल सुबह सूरज उगते ही यह खबर उज्जैन को अवश्य पहुंचाई जानी चाहिए। बिना किसी चूक के। सुनिश्चित करें कि संचालक संदेश भेजें...”
अमारा सिम्हा की बात दरवाजे पर ज़ोरदार दस्तक से बाधित हुई। जैसे ही उन्होंने मुड़कर देखा, दरवाजा अपने आप खुल गया और कमान केंद्र के चिकित्सक दहलीज पर खड़े दिखाई दिए। बूढ़ा व्यक्ति अंदर कदम रखने ही वाला था कि उसने देखा कि अमारा सिम्हा उसे कठोर निगाहों से देख रहे हैं। दुविधा में पड़े चिकित्सक ने रुककर दत्ताका को अनिर्णय भरी निगाहों से देखा।
“जी हां, क्या बात है?” कमांडर ने उठकर दरवाजे की ओर जाते हुए पूछा। “हम थोड़ा व्यस्त हैं।”
चिकित्सक अब भी झिझक रहा था, दोनों पार्षदों की ओर संदेह भरी निगाहों से देख रहा था, न तो उसने माफी मांगी, न ही संकेत समझा और न ही वह वहां से गया।
“क्या हुआ है, महोदय?” अमारा सिम्हा ने यह भांपते हुए अपनी भौंहें ऊपर उठाईं कि कोई बात उस आदमी को परेशान कर रही है।
“सच में, यह कोई खास बात नहीं है,” चिकित्सक ने धीमी आवाज़ में कहा, और साथ ही दत्ताका को कंधे से पकड़कर धीरे से कमरे में ले जाने दिया। “मेरा इरादा दखल देने का नहीं था, लेकिन...”

“कोई बात नहीं। बताओ क्या मामला है।”
“मैं…” चिकित्सक ने घबराकर अपने होंठ चाटे। “मुझे शक है कि जिस जासूस को हमने पकड़ा था… मतलब जो आज सुबह मरा… उसकी मौत जहर से हुई है।”
अमारा सिम्हा, घटकार्पारा और दत्तका हैरान होकर एक-दूसरे की ओर देखने लगे। “आपको यह कैसे पता चला?”
"शव को अंतिम संस्कार के लिए भेजे जाने से पहले मैं उसकी जांच कर रहा था, तभी मुझे स्काउट के दाहिने पैर पर एक संदिग्ध घाव दिखाई दिया।"
“किस तरह का घाव?”
“ये सांप के दांतों के निशान थे। मुझे इस बात का यकीन इसलिए हुआ क्योंकि घाव के आसपास की त्वचा जहर के कारण बदरंग हो गई थी।”
“सांप का काटना?” घटाकरपारा ने हैरानी से देखा। “इससे समझ में आता है कि स्काउट उस खाई में कैसे पहुंचा जहां हमारे पहरेदारों ने उसे पाया। इससे टूटे हुए पैर का भी पता चलता है; वह बुरी तरह गिरा होगा। और उसकी बेहोशी का भी...” “इसमें एक समस्या है,” चिकित्सक ने बीच में कहा। “मैंने जहर के अंश एकत्र किए और उनका विश्लेषण किया। स्काउट को काटने वाला सांप किंग कोबरा था, और किंग कोबरा का जहर कुछ ही घंटों में जान ले लेता है – जबकि स्काउट कल पूरे दिन यहाँ जीवित था। और यहाँ किसी ने भी उसका सांप के काटने का इलाज नहीं किया।”
अमरा सिम्हा खुली खिड़की के पास गए, जहाँ से छोटी नदी और श्रीस्थली शहर दिखाई देता था। संगमरमर के टुकड़ों से लदे पाँच खच्चर पुल पार करके शहर की ओर जा रहे थे।
“तो, पहाड़ियों में स्काउट को सांप ने नहीं काटा था,” बड़े पार्षद ने बाहर देखते हुए अनुमान लगाया। फिर वे दत्ताका की ओर मुड़े। “आखिरी बार किसी ने कब यह पता लगाया था कि स्काउट ज़िंदा है या नहीं?”
“आप दोनों और गवर्नर सत्यवेदा के रात को सोने चले जाने के बाद, मैं और चिकित्सक उसकी कोठरी में गए,” कमांडर ने पुष्टि की। “आधी रात के कुछ ही समय बाद का समय था। स्काउट बेहोश था, लेकिन निश्चित रूप से जीवित था, महोदय।” “लेकिन आज सुबह तड़के ही उसकी मौत हो गई।” अमारा सिम्हा ने गहरी सांस ली और अपने सामने खड़े तीनों आदमियों की ओर देखा। “तो, उसे आधी रात से सुबह होने के बीच किसी समय काटा गया था, और वह होश में आए बिना ही मर गया।”
"क्या आज सुबह किसी ने कहीं किंग कोबरा देखा?" घटाकरपारा ने पूछा।
दत्ताका ने कंधे उचकाते हुए कहा, "स्काउट के कमरे में तो ऐसा बिल्कुल नहीं था, मैं यह बात पक्के तौर पर कह सकता हूँ।"

“मुझे आश्चर्य होता है कि क्या कोई जंगली किंग कोबरा उन कोठरियों में घुसकर किसी कैदी को काट सकता है और बिना किसी को पता चले बाहर निकल सकता है,” अमारा सिम्हा ने कहा। “दरवाजे मजबूत हैं, दीवारों में कोई सुविधाजनक दरारें या छेद नहीं हैं, और खिड़कियां बहुत ऊंचाई पर लगी हैं। यह किसी तरह बहुत आसान लगता है।”
“एक और बात, महाराज,” कमांडर का चेहरा अचानक गंभीर हो गया। “किंग कोबरा घने, उष्णकटिबंधीय जंगलों का मूल निवासी है। ये शुष्क पहाड़ियाँ इसका प्राकृतिक आवास नहीं हैं। वास्तव में, मैंने इन इलाकों में कभी भी जंगली किंग कोबरा नहीं देखा है।”
"तो, जिसने स्काउट को काटा था, उसे शायद यहाँ लाया गया था और हत्या के इरादे से कोठरी में डाला गया था। उनका मकसद स्काउट की मौत को कल सुबह हुई पिटाई के कारण हुई मौत के रूप में दिखाना था।"
“लेकिन जासूस को इस तरह कौन मारेगा? और क्यों?” कमांडर ने अमारा सिम्हा को आश्चर्य से देखा।
“मैं आपको बता सकता हूँ कि ऐसा क्यों किया गया – होश में आने के बाद उसे हमसे कुछ भी बताने से रोकने के लिए। ‘किसने किया’ यह पता लगाना मुश्किल होगा और साबित करना भी कठिन होगा। इसके लिए कुछ जाँच-पड़ताल करनी पड़ेगी। लेकिन मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि जिसने भी यह किया है, वह हूणों के लिए काम कर रहा है। और वह हमारे बीच इसी कमांड सेंटर में मौजूद है।”
उसके बाद छाई खामोशी में, अमर सिंह के शब्द ज़ोर से सुनाई दिए, हालाँकि उन्होंने अपनी आवाज़ को धीमी कर लिया था। “हम सूर्ययंत्र का उपयोग करके अनार्तों को खतरे की सूचना नहीं भेजेंगे, सेनापति। अब इतनी खुलेआम बात करना सुरक्षित नहीं है। इसके बजाय हम उज्जैन में एक भरोसेमंद घुड़सवार भेजेंगे। मैं सम्राट के लिए एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करूँगा, और फिर वे मुख्य युगंधरा के दरबार में एक दूत भेज सकते हैं।”
दत्ताका सहमति में सिर हिलाने लगा, लेकिन घटाकरपारा को भौंहें चढ़ाते देख रुक गया।
“क्या इस तरह हमारा कीमती समय बर्बाद नहीं होगा?” राजकुमार ने पूछा। “घुड़सवार पहले पूर्व दिशा में उज्जैन की यात्रा करेगा, जिसमें उसे डेढ़-दो दिन लगेंगे। फिर दूत पश्चिम दिशा में द्वारका की यात्रा करेगा, जो दूरी तय करने में उसे दो-तीन दिन लगेंगे। इस तरह खबर मुख्य युगंधरा तक लगभग एक सप्ताह में नहीं पहुंचेगी।”

“आप क्या सुझाव देते हैं?” अमारा सिम्हा ने पूछा।
“मैं अभी द्वारका के लिए निकल सकता हूँ – या शायद कल सुबह तड़के। मुख्य युगंधरा को सीधे यही संदेश पहुँचाने में मुझे दो दिन से ज़्यादा नहीं लगेंगे। मेरे पास अवंती की राजसी मुहर है, इसलिए मैं सम्राट के दरबार का प्रतिनिधित्व कर सकता हूँ, है ना?”
“यह संभव है,” अमारा सिम्हा ने स्वीकार किया, और आश्चर्य जताया कि यह शानदार विचार पहले उनके दिमाग में क्यों नहीं आया। शायद उम्र का असर उन पर पड़ रहा था, जिससे उनकी गति धीमी हो गई थी। “हाँ, मुझे लगता है कि यह ठीक रहेगा। लेकिन आप अकेले नहीं जा रहे हैं।”
“मैं नहीं।” राजकुमार इस संभावना से उत्साहित दिख रहा था कि अब वह यात्री की तरह साथ चलने के बजाय आखिरकार कुछ सार्थक काम खुद कर सकेगा। “मैं दत्ताका के आधे दर्जन आदमियों को अपने साथ ले जाऊंगा।”
“ज़रूर,” कमांडर ने सहमति जताते हुए कहा। “जब भी आप तैयार हों, मेरे सैनिक तैयार रहेंगे।”
***

“विशाखा कैसी है?” आचार्य ने पूछा। “क्या उसमें कोई और सुधार के संकेत मिले हैं?”
विक्रमादित्य ने सिर हिलाया, कमरे में जल रहे दो दीपों की रोशनी में उनका चेहरा उदास और थका हुआ लग रहा था। "आज सुबह से कुछ नहीं हुआ।"
आचार्य अपने पलंग पर बैठे हुए थे। वे तरोताज़ा लग रहे थे और उनके चेहरे पर कुछ ताजगी लौट आई थी। उनके हाथ में मिट्टी का प्याला था, जिसे वे समय-समय पर होठों तक उठाते थे और हर बार जब वह गाढ़ा, कड़वा पेय उनके गले से नीचे उतरता था, तो वे सिहर उठते थे।
“What does Dhanavantri say?”
“वह आस्था और धैर्य की मांग करता है,” सम्राट ने उत्तर दिया। उनके लहजे से प्रतीत हुआ कि वे निराश थे।
“तो हमें विश्वास और धैर्य रखना चाहिए, विक्रम,” राजगुरु ने राजा के मनोभाव को भांपते हुए कहा। “धनवंतरी को पता है कि वह क्या कह रहा है – और वह अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर रहा है।”
राजा ने गहरी सांस ली और सिर हिलाया।

"अगर मैं अधिक मजबूत होता तो शायद मैं उसके मन को पढ़ने की कोशिश कर सकता था," आचार्य ने आधे मन से कहा, उनकी अरुचि से यह स्पष्ट हो गया कि वे वास्तव में इस विचार के बारे में क्या सोचते थे।
“पहले आपको स्वस्थ होना होगा,” सम्राट ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। “अभी यही सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है।”
"शहर इस स्थिति से कैसे निपट रहा है?" वेटला भट्टा ने कुछ देर रुककर विषय बदल दिया।
विक्रमादित्य ने खुली खिड़की से बाहर देखा। यह क्रिया सहज थी। राजा किसी गहन अंतर्विचार में लीन प्रतीत हो रहे थे, उनकी दृष्टि बाहर के अंधेरे में कहीं केंद्रित नहीं थी। अंत में उन्होंने कहा, "यह धीरे-धीरे ठीक हो रहा है। हम साहस जगाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं।"
"और देवों और असुरों द्वारा हम पर किए गए हमले की खबर को लोगों ने कैसे लिया?" “अभी स्थिति का आकलन करना जल्दबाजी होगी और जो कुछ हो रहा है उसका पूरा महत्व शायद अभी तक पूरी तरह से सामने नहीं आया है, लेकिन प्रतिक्रिया मिली-जुली है।” राजा के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। “कुछ लोगों को इस बात का गर्व है कि सर्वज्ञ ईश्वर ने हलाहल की रक्षा के लिए अवंती को चुना। और निश्चित रूप से, दोनों युद्ध जीतने की जीत का भी एहसास है। लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो प्रतिशोध के डर से सहमे हुए हैं और आश्वस्त होने से इनकार कर रहे हैं। कालिदास और वरारुचि ने मुझे बताया है कि इनमें से कई लोग शहर छोड़कर अपने गांवों की सुरक्षा में लौट जाएंगे।”
आचार्य ने कहा, "हम इसके बारे में ज्यादा कुछ नहीं कर सकते। दरअसल, जो लोग जाने का फैसला करते हैं, वे शायद ज्यादा समझदार होते हैं।"
उन शब्दों की तीक्ष्णता कमरे की खामोशी में एक अशुभ बादल की तरह छाई हुई थी। विक्रमादित्य धीरे से अपनी कुर्सी से उठे और मुख्य सलाहकार के हाथ में रखे खाली प्याले की ओर हाथ बढ़ाया। प्याले को पलंग के पास रखी एक छोटी मेज पर रखकर वे राजगुरु की ओर मुड़े।
“इसीलिए आपको जल्दी से अपना स्वास्थ्य ठीक करना होगा, आचार्य,” उन्होंने कहा। “मुझे सीमावर्ती दुनिया की यात्रा करने में आपकी मदद चाहिए।”
“सीमावर्ती दुनिया?” वेताला भट्टा की परेशान आँखों के ऊपर उनकी भौहें तेज़ी से उठ उठीं।
“मुझे देवों और असुरों की वापसी का पूर्वाभास है – सर्वज्ञ ने मुझे छुरी देते समय यही भविष्यवाणी की थी। अश्विनों ने नगर के द्वार तोड़ दिए थे और वे उस

स्थान से बहुत दूर नहीं थे जहाँ हम अभी बैठे हैं। मुझे डर है कि महल बहुत असुरक्षित है। हलाहल के लिए एकमात्र सुरक्षित स्थान जो मुझे दिखाई देता है, वह सीमावर्ती लोक है।”
आचार्य ने गहरी साँस ली। "क्या आप खंजर को भूत-प्रेत के स्वामी की हिरासत में छोड़ने का इरादा रखते हैं?"
विक्रमादित्य ने सिर हिलाया। "बेताल ने मुझसे जो वादा किया था, उसे पूरा करने का समय आ गया है।"

ओरेकल

ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों से गुज़रते जुलूस में चार पालकी उठाने वाले और शाही सेना के बारह घुड़सवार थे, जिनमें से छह खाली पालकी के आगे और छह पीछे सवार थे। पालकी, जिसकी गुंबददार छत पर अवंती का सूर्य-चिह्न बना था, जो उसके आधिकारिक दर्जे को दर्शाता था, सादगीपूर्ण थी। महलों की पालकियों से जुड़ी भव्य कारीगरी से रहित, यह साधारण लकड़ी से बनी थी, जिसमें सादी सूती गद्दी और हल्के मलमल के पर्दे लगे थे। विक्रमादित्य ने इसे बड़ी सावधानी से चुना था, क्योंकि वे जानते थे कि यदि उन्हें इस मिशन में सफल होना है, तो शान-शौकत और सादगी के बीच संतुलन अत्यंत आवश्यक होगा।
प्रगति धीमी थी, पालकी उठाने वाले ऊबड़-खाबड़ भूभाग के कारण आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। परिणामस्वरूप, विक्रमादित्य और शंकु जुलूस से काफी आगे निकल चुके थे, जो अब लगभग आधा मील आगे एक समतल, हल्की ढलान वाली चट्टान पर अपना रास्ता बना रहे थे। आसपास की पहाड़ियाँ शांत थीं, और घोड़ों की नालों की धातुई गूँज उस सन्नाटे में और भी तेज़ सुनाई दे रही थी।
शंकु ने अपने घोड़े की लगाम खींची और राजा ने भी वैसा ही किया। उन्होंने देखा कि लड़की ने अपना सिर उठाया और सीटी बजाई, मानो कोयल की आवाज़ की हूबहू नकल कर रही हो। फिर उसने अपना सिर झुकाया और ध्यान से सुनने लगी, सम्राट ने भी वैसा ही किया। लेकिन विक्रमादित्य ने लाख कोशिश की, फिर भी उन्हें पालकी उठाने वालों की धीमी, लयबद्ध 'होई-हुई... होई-हुई... होई-हुई' की आवाज़ के अलावा कुछ सुनाई नहीं दिया, जो ताल के साथ कदम मिलाकर गा रहे थे।

फिर, कहीं दूर से, उसे किसी दूसरे पक्षी की धीमी लेकिन कर्कश आवाज सुनाई दी। शंकु ने बाईं ओर इशारा करते हुए आगे का रास्ता बताया।
जुलूस के बाकी लोगों के आने का इंतज़ार करते हुए राजा ने शंकु पर नज़र डाली और उसकी प्रतिभा को देखकर अचंभित रह गए। उसके शांत चेहरे और बड़ी-बड़ी आँखों में दबी हुई तीव्रता को देखकर राजा समझ गए कि कालिदास इस स्त्री की ओर क्यों आकर्षित हुए थे। शारीरिक बनावट में भिन्न होने के बावजूद, दोनों में अटूट दृढ़ संकल्प था, दोनों में धैर्य और व्यावहारिक बुद्धि का गहरा भंडार था, और जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण बचपन में अपनी पहचान खोने और धीरे-धीरे उस नुकसान को स्वीकार करने की प्रक्रिया से प्रभावित था।
हालांकि, उस सुबह शंकु को अपने घोड़े पर बैठे हुए देखकर, विक्रमादित्य को लगा कि शंकु के हावभाव में भी उन्हें त्याग का भाव दिखाई दे रहा है।
उन्होंने कहा, "आपको नहीं लगता कि मदर ओरेकल को मनाया जा सकता है।"
ये शब्द सीधे तौर पर प्रश्न के रूप में नहीं कहे गए थे, फिर भी लड़की ने एक पल के लिए सोचा। "नहीं, मेरे राजा," उसने कहा। वह हमेशा 'मेरे राजा' या 'महामहिम' ही बोलती थी, चाहे आसपास कोई और हो ही न।
सम्राट कुछ देर तक चुप रहे।
उन्होंने कहा, “ऐसा नहीं है कि हम चाहते हैं कि वह घुमंतू जनजाति को छोड़कर हमेशा के लिए महल में आ जाए। और अगर वह जनजाति के करीब रहना चाहती है, तो हम उन सभी के लिए व्यवस्था कर सकते हैं...”
“इसका घुमंतू जनजाति से कोई लेना-देना नहीं है, महाराज।” एक दुर्लभ, अप्रत्याशित रुकावट के साथ, शंकु की आवाज़ में झुंझलाहट झलक रही थी। “यह महल का मामला है। उसे यह बिल्कुल पसंद नहीं है।”
विक्रमादित्य चौंक और भ्रमित दोनों नजर आ रहे थे।
"उनका मानना है कि महल ही घुमंतू जनजाति को बदनाम करने के लिए जिम्मेदार था।" “तुम्हारे... वार्डन की वजह से?” राजा ने सावधानी से पूछा।
शंकु ने अपने होंठ दबाए और सिर हिलाकर अपना चेहरा दूसरी ओर मोड़ लिया। लेकिन वह इतनी जल्दी नहीं कर पाई थी कि सम्राट ने उसकी आँखों में शर्मिंदगी देख ली।
और उन्हें एहसास हुआ कि अपने दिल की गहराई में शंकु भी शायद महल से नफरत करती थी, क्योंकि महल उसे उसके खून में बहने वाले उस दागदार रक्त की याद दिलाता था।
उसके पिता ब्रिच्छा का रक्त, जो अभी भी उज्जैन की गहराई में स्थित महल की कालकोठरियों में सड़ रहा था।

महेंद्रादित्य राजा के शासनकाल में अवंती का एक साधारण सिपाही, ब्रिच्छा, हूणों और शकों के विरुद्ध युद्ध शुरू होते ही तेजी से पदोन्नति प्राप्त कर गया। राजा की मृत्यु के बाद, वरारुचि के शासनकाल में, ब्रिच्छा को शाही अस्तबल का संरक्षक नियुक्त किया गया, जिस पर शाही सेना के घोड़ों के रखरखाव की देखरेख का दायित्व था। विक्रमादित्य के सिंहासन पर बैठने के बाद भी वह इस प्रतिष्ठित पद पर बना रहा – हालांकि, उसने हूणों से धन लेकर इस विशेषाधिकार का दुरुपयोग करना शुरू कर दिया।
सिंधुवर्त में घुड़सवार सेना की सभी गतिविधियों की जानकारी रखने वाला ब्रिच्छा गुप्त रूप से शत्रुओं को सूचना देने लगा, जिसके परिणामस्वरूप अवंती की सेना को कई गंभीर हार का सामना करना पड़ा। हालांकि, अगर लालच ब्रिच्छा पर हावी न होता तो उसकी छल-कपट कभी उजागर न होती। अपनी संपत्ति और बढ़ाने की लालसा में, ब्रिच्छा ने हूणों के कहने पर अस्तबल के स्वामियों को रिश्वत देना शुरू कर दिया ताकि घोड़ों के आहार में अफीम मिलाई जा सके और उन्हें युद्ध में सुस्त और अविश्वसनीय बनाया जा सके।
फिर एक दिन अचानक उसकी छोटी सी गाड़ी के पहिए निकल गए, जब अस्तबल के एक मालिक को चारे की नांद में अफीम मिलाते हुए रंगे हाथों पकड़ा गया।
ब्रिच्छा को उनके पद से हटा दिया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया, जहाँ अंततः उन्हें सिंधुवर्त की सबसे कठोर सजा - दंडक वन, निर्वासितों के वन में निर्वासन - की सजा सुनाई गई। लेकिन इससे पहले कि उन्हें पायोष्णि दर्रे पर ले जाया जाता, उनकी पत्नी, जो घुमंतू जनजाति की एक स्वाभिमानी पुत्री थीं, ने शर्म से आत्महत्या कर ली और अपनी आठ वर्षीय पुत्री शंकुबाला को पीछे छोड़ गईं।
ब्रिच्छा ने विक्रमादित्य से क्षमादान की विनती की, और अनाथ होने की कगार पर खड़ी उस नन्ही, असहाय लड़की के प्रति सहानुभूति से द्रवित होकर राजा ने देशद्रोही वार्डन की सजा को आजीवन कारावास में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने शंकु को महल में स्थानांतरित करने का भी आदेश दिया ताकि वह नियमित रूप से अपने पिता से मिल सके। इस प्रकार, शंकु शाही अस्तबल में रहने लगी, जहाँ घुड़सवारी और चाकू फेंकने में उसके कौशल ने वेताल भट्ट का ध्यान आकर्षित किया। धीरे-धीरे उसे राजगुरु के संरक्षण में शामिल किया गया, और समय के साथ उसने विक्रमादित्य का सम्मान अर्जित कर लिया, जिन्होंने उसे अपनी परिषद का हिस्सा बना लिया।

लेकिन विडंबना यह थी कि शुरुआती कुछ वर्षों को छोड़कर, शंकु शायद ही कभी अपने पिता से मिलने जाती थी, और हर गुजरते वर्ष के साथ अंधेरी कोठरी में उसकी मुलाक़ातें कम होती जा रही थीं। विक्रमादित्य जानता था कि कैदी की बार-बार की विनतियों और निवेदनों के बावजूद, शंकु ने लगभग तीन वर्षों तक ब्रिच्छा से मिलने से साफ इनकार कर दिया था।
जैसे ही पालकी और उसके अंगरक्षक एक पहाड़ी को पार करके नज़र आए, सम्राट ने अनुमान लगाया कि भले ही महल ब्रिच्छा को क्षमादान दे दे, शंकु अपने पिता को कभी माफ नहीं करेगी।
लगभग एक घंटे बाद विक्रमादित्य और शंकु को देवी के तम्बू में ले जाया गया – लेकिन इससे पहले राजा को गोबर की आग पर पकाए गए पारंपरिक भोजन से सम्मानित किया गया। राजा और उनके सलाहकार के साथ देवी के तम्बू में चार वरिष्ठ कबीले के लोग भी शामिल हुए, जो राजा के निमंत्रण पर आए थे।
“मुझे आपके आने की खबर हवा से मिली,” बूढ़ी औरत ने सीधे-सीधे कहा, औपचारिकता का सहारा लिए बिना। “उम्मीद है कि जो खाना मैंने आपके लिए बनवाया था, वह आपको पसंद आया होगा? या फिर वह आपके स्वाद के हिसाब से बहुत सादा था?”
“माँ, यह बिल्कुल सही था,” विक्रमादित्य ने उत्तर दिया। “जटिल जीवन जीने वाले व्यक्ति से बेहतर सादगी की कद्र कोई नहीं कर सकता।”
“वाह, वाह!” मदर ओरेकल खिलखिलाकर हंस पड़ीं, उनकी बूढ़ी, नम आँखों में खुशी झलक रही थी। फिर थोड़ा गंभीर होते हुए उन्होंने पूछा, “यह चतुर राजा क्या चाहता है?”
“अच्छा, माँ...” सम्राट थोड़ी देर रुका, फिर सीधे मुद्दे पर आने का फैसला किया। “मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ महल चलो।”
राजा के शब्दों का सन्नाटे में सन्नाटा छा गया, जिसमें केवल कबीले के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति की हांफती हुई आवाज ही सुनाई दे रही थी।
“माँ, आपने अवंती की बहुत मदद की है, और इसके लिए मैं आपका जितना भी धन्यवाद करूँ कम है,” विक्रमादित्य ने आगे कहा। “लेकिन मुझे डर है कि आने वाले दिनों में आपकी सलाह की और भी अधिक आवश्यकता होगी, और मैं आपकी पोती को बार-बार महल से बाहर जाकर आपकी तलाश करने नहीं दे सकता। यह उसकी प्रतिभा का घोर दुरुपयोग होगा – साथ ही समय की भी भारी बर्बादी होगी जिससे मेरे सैनिकों और लोगों की कीमती जानें खतरे में पड़ सकती हैं। इसलिए, माँ, कृपया...”

मदर ओरेकल कुछ देर चुप रहीं। फिर सिर हिलाते हुए बोलीं, “मैं बूढ़ी हो चुकी हूँ और मेरे पास जीने के लिए बस कुछ ही साल बचे हैं। मैं अपने कबीले के साथ रहना चाहती हूँ...”
“माँ, मुझे पता है कि आपको महल पसंद नहीं है – आपकी पोती ने मुझे बताया था,” राजा ने बीच में ही कहा। “फिर भी मैं आपसे आने का अनुरोध करता हूँ।”
जब सबने एक-दूसरे को देखा, तो महिला ने सिर हिलाया। “हाँ, महल ने मेरे साथ बुरा बर्ताव किया है। इसने उस आदमी को मेरी बेटी की ज़िंदगी में ला दिया,” उसने ऐसे कहा जैसे ब्रिच्छा का नाम लेना उसे घिनौना लग रहा हो। “इसने मेरी बेटी को मुझसे छीन लिया और बिना किसी गलती के हमारे कबीले पर कलंक लगा दिया।” विक्रमादित्य ने तर्क दिया, "महल ने ब्रिच्छा को दंडित करके जनजाति को न्याय भी दिलाया।"
“यह दंड महल के विरुद्ध उसके विश्वासघात के लिए था,” मदर ओरेकल ने सुधार करते हुए कहा। “हम जानते हैं कि कबीले की प्रतिष्ठा का कभी कोई लिहाज़ नहीं था। हे महाराज, हम खानाबदोश लोग हैं, लेकिन हमें गर्व से अपना सिर ऊंचा रखना पसंद है।”
इकट्ठे हुए कबीले के लोगों ने बूढ़ी औरत के शब्दों की सराहना और समर्थन में जोरदार आवाजें निकालीं।
“जी हां, मां,” राजा ने स्वीकार किया। “लेकिन जहां बदला लेना जरूरी था, वहां राजमहल ने कबीले की पोती की खातिर गद्दार की जान बख्श कर दया दिखाई।”
जब देवी भविष्यवक्ता चिंतन में डूबी हुई थीं, तब तम्बू के चारों ओर हल्की-सी सहमति की फुसफुसाहट गूंज उठी। सम्राट ने वातावरण में थोड़ी नरमी महसूस की और इस अवसर का पूरा लाभ उठाने का फैसला किया।
“माँ, आप आदित्य वंश के सूर्य के ग्रहण लगने की बात करती हैं। फिर भी इस धरती पर आने वाले अंधकार को दूर करने के लिए आप एक उंगली तक नहीं उठातीं? आप महल के एक प्रतिनिधि के आचरण के कारण जनजाति के कलह की बात करती हैं, फिर भी आप उस एकमात्र अवसर से मुंह मोड़ लेती हैं जो महल की सहायता करके जनजाति को सम्मान वापस दिलाने का है? आप अपने मान-सम्मान और गौरव को प्रिय मानती हैं, फिर भी आप प्राचीन देवता के उपहार की रक्षा करने में मेरी मदद करके इन दोनों को अर्जित करने का अवसर गँवा देती हैं?”
राजा के बोलने के काफी देर बाद तक, देवी माँ अपनी चटाई पर झुकी बैठी रहीं, आँखें बंद किए, उनका शरीर धीरे-धीरे आगे-पीछे हिल रहा था। कबीले के लोग अपनी सीटों पर बेचैन हो गए, उन्हें देवी माँ की चुप्पी का कोई कारण समझ नहीं आ रहा

था। शंकु को लगभग यकीन हो गया था कि उसकी दादी सो गई हैं, तभी उस बूढ़ी औरत ने अपनी आँखें खोलीं और विक्रमादित्य को ध्यान से देखा।
अंत में उसने कहा, “आप अपने शब्दों और विचारों में बुद्धिमान हैं, मेरे महाराज। मैं आपके साथ महल में चलूंगी।”
***

“मेरी समझ से, देव और असुर तब तक नहीं रुकेंगे जब तक कि उनमें से कोई एक इस कटार पर अपना अधिकार न जमा ले। क्या यह सही है?” राजा हरिहर चिंतित होकर कालिदास के चेहरे को देख रहे थे।
"जी हां, माननीय।"
गहरी सांस लेते हुए, राजा ने अपनी कोहनी कुर्सी के आर्मरेस्ट पर टिका दी और अपने निचले होंठ को दबा लिया क्योंकि वह उन सभी बातों के निहितार्थों पर विचार कर रहा था जो सलाहकार ने अभी-अभी प्रकट की थीं।
उन्होंने विस्तार से कहा, “आप कहते हैं कि उज्जैन का एक बड़ा हिस्सा पहले हमले में भारी तबाही झेल चुका है। इस रफ्तार से तो जल्द ही पूरा शहर तबाह हो जाएगा।”
कालिदास ने जवाब देने के लिए मुंह खोला, लेकिन खुद को रोक लिया। हरिहर के खिलाफ तर्क देना मूर्खतापूर्ण इनकार था। यह स्पष्ट था कि यदि हमले जारी रहे तो उज्जैनी के पतन का गंभीर खतरा होगा। फिर भी, खुलकर स्वीकारोक्ति करने से घबराए हुए राजा को कोई राहत नहीं मिलती। इन परिस्थितियों में, कालिदास ने कुछ नहीं कहा।
दुर्भाग्यवश, हरिहारा ने इस मौन को मौन सहमति का संकेत मान लिया। हाथ ऊपर उठाते हुए उन्होंने पूछा, "विक्रमादित्य कटार की रक्षा कैसे करेंगे?"
“साहस और विश्वास के साथ।” इस बार कालिदास को पता था कि उनके पास एक अच्छा उत्तर है। “इसी तरह हम पिशाचों और अश्विनी घुड़सवार सेना से छुटकारा पा सकते हैं।”
हेहेया के राजा उठे और उस संकरे निजी कक्ष में चहलकदमी करने लगे जिसमें कालिदास को सुबह महिष्मती पहुंचने पर ले जाया गया था।
“और हूण और शक?” राजा ने व्याकुल होकर पूछा।
“महाराज, हूणों और शकों के बारे में क्या कहेंगे?” कालिदास ने सावधानी से पूछा।
“क्या अब अवंती उनके खिलाफ अपना अभियान छोड़ देगी?” हरिहारा ने स्पष्ट किया।

“माननीय न्यायाधीश, ऐसा होने का कोई सवाल ही नहीं है। अवंती सिंधुवर्त को आक्रमणकारियों से मुक्त रखने के लिए अंत तक लड़ेगी।”
“विक्रमादित्य हूणों, शकों, देवताओं और असुरों से एक साथ कैसे लड़ेंगे? यह कैसे संभव है?” राजा ने सिर हिलाते हुए अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गए। फिर, एक नए विचार के साथ, वे उठ बैठे। “मुझे लगता है कि हेहेया पर भी और हमले होंगे?” “देवों और असुरों से? हमें इस पर संदेह है, महाराज। उनकी एकमात्र रुचि हलाहल में है, जो उज्जैन में स्थित है।”
“लेकिन उस अंधे राक्षस के नेतृत्व में पिशाच सेना ने मेरे आधे राज्य को तबाह कर दिया,” हरिहर ने चिढ़ते हुए कहा। “कौन कह सकता है कि हमें उज्जैन की ओर मंडरा रहे असुरों या देवताओं के ऐसे और हमलों का सामना नहीं करना पड़ेगा?” “महाराज, अवंती राज्य हेहेया पर हुए अत्याचारों के लिए गहरा खेद व्यक्त करता है,” कालिदास ने कठोर स्वर में कहा। यद्यपि वे हरिहर की चिंताओं को समझते थे, फिर भी राजा के इस तुच्छ व्यवहार से उन्हें घृणा होने लगी थी। उन्हें स्पष्ट रूप से यह आभास हो रहा था कि हरिहर एक कृतघ्न और अवसरवादी मित्र की तरह व्यवहार कर रहे हैं।
“पश्चाताप करना ठीक है, पार्षद कालिदास, लेकिन आपको यह समझना होगा कि हेहेया एक छोटा सा राज्य है जिसके संसाधन सीमित हैं। हमारे पास ऐसी आपात स्थितियों से निपटने की क्षमता नहीं है।”
“मैं अवंती की ओर से हार्दिक क्षमा याचना करता हूँ और हेहेया की मित्रता के प्रति हमारी कृतज्ञता का एक छोटा सा प्रतीक भेंट करता हूँ,” कालिदास ने उत्तर दिया, और राजा द्वारा उन्हें ‘सलाहकार’ कहकर संबोधित करने के तरीके को ध्यान में रखा। हरिहर के स्वर में पहले जैसी गर्मजोशी नहीं थी। “महाराज, नीचे एक रथ इंतज़ार कर रहा है जिसमें आपके खजाने के लिए सोने का एक संदूक है। मुझे आशा है कि इसका उपयोग पिशाच सेना द्वारा नष्ट किए गए छावनियों और गांवों के पुनर्निर्माण में किया जा सकेगा।”
अवंती के योगदान का जिक्र सुनकर राजा कुछ शांत हुए। उन्होंने स्वीकार किया, “यह हमारे लिए निश्चित रूप से मददगार होगा।” एक क्षण रुककर उन्होंने पूछा, “अब जब विक्रमादित्य ने देवताओं और असुरों की शक्ति का सामना करने का निश्चय कर लिया है, तो वह अपने सहयोगियों से क्या चाहते हैं?”
हरिहर के सामने बैठे कालिदास अचानक उठ खड़े हुए। पूरी तरह खड़े होकर वे बूढ़े राजा के सामने काफी ऊंचे दिखाई दिए। हरिहर के प्रश्न का सही अर्थ समझते हुए उन्होंने कहा, “महाराज, मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं रथ को नीचे ले जाने के लिए

अंगरक्षक के रूप में आया था और आपको हलाहल की खबर देने आया था। मेरा काम पूरा हो गया है। अब मैं आपसे विदा लेना चाहता हूँ।”
किसी भी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा किए बिना, उस दैत्य ने झुककर प्रणाम किया और कक्ष से बाहर निकल गया।
***

मगध की सेना अस्या नदी के पश्चिमी तट पर स्थित एक विशाल, खुले मैदान में एकत्रित थी। नदी के उस पार एक और समतल, वृक्षहीन मैदान था, जो धीरे-धीरे ढलान वाली पहाड़ियों की एक श्रृंखला में विलीन हो जाता था, जिसके आगे वंगा की समृद्ध लौह खदानें और दंडकभुक्ति का खनन नगर स्थित था।
जैसे-जैसे उनके चारों ओर अंधेरा गहराता गया, मगध के सैनिकों ने अपने हथियार और ढालें एक तरफ रख दीं और नदी किनारे लेटकर अपने थके हुए अंगों को आराम दिया। कई सैनिक घुटनों तक गहरे पानी में उतर चुके थे, लंबी यात्रा के दौरान जमा हुई धूल और थकान को धो रहे थे। उनके पीछे रात के लिए तंबू लगाए जा रहे थे, जबकि बड़े-बड़े तांबे के कड़ाहे लकड़ी की बड़ी-बड़ी आग पर रखे जा चुके थे।
नदी तट पर फैली विशाल सेना के बावजूद, बारह महाशिलाकांतक तोपें तम्बुओं से भी ऊँची खड़ी थीं और पूरा इलाका उन्हीं के साये में बसा हुआ था। कठोर लोहे की लकड़ी से बनी ये भारी-भरकम तोपें चार-चार हाथियों की टोलियों द्वारा खींची जाती थीं और विशाल पत्थरों को बहुत दूर तक फेंकने में सक्षम थीं। हालांकि इस विशेष अभियान में इन तोपों का व्यावहारिक उपयोग न के बराबर था – वांगा में कोई ऐसा मजबूत किला नहीं था जिसे भेदने के लिए घेराबंदी के हथियारों की आवश्यकता हो। फिर भी, सेनापति दैपायाना ने इन्हें प्रभाव के लिए साथ लाने पर जोर दिया था; वे जानते थे कि महाशिलाकांतक तोपों को देखकर ही अक्सर भय उत्पन्न हो जाता था और प्रतिरोध टूट जाता था।
“हम आज आधी रात को अस्या नदी पार करके पूर्व दिशा की ओर प्रस्थान करेंगे,” दैपायन ने एक छोटी मेज पर फैले कढ़ाईदार नक्शे पर अपनी तर्जनी उंगली से थपथपाते हुए घोषणा की। वह एक विशाल मंडप में थे, जहाँ उनके चारों ओर मगध सेना के आधा दर्जन सेनापति और सेनापति मौजूद थे। उनके बाईं ओर कपिला खड़े थे, जो वंगा पर होने वाले उनके पहले आक्रमण में सेनापति का साथ देने के लिए गिरिव्रज से आए थे।
“मेरी योजना है कि कल तेज धूप निकलने से पहले मैं दंडकभुक्ति तक की आधी दूरी तय कर लूँ,” दैपायन ने आगे कहा। “अंधेरे में उन पहाड़ियों की तलहटी तक पहुँचकर

मैं वांगा द्वारा पहाड़ियों में तैनात किए गए जासूसों और सैनिकों को भी चौंकाना चाहता हूँ।”
“भोर होते ही मगध की सेना को अपने दरवाजे पर देखकर वांगा के जासूस चौंक जाएंगे,” कपिला ने नक्शे का अध्ययन करते हुए अपनी घनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए व्यंग्यपूर्ण लहजे में कहा।
“जी हां, महाराज,” सेनापति ने सहमति जताते हुए कहा। एक कप्तान की ओर मुड़कर उन्होंने आदेश देना शुरू किया। “आपका काम यह सुनिश्चित करना है कि नदी के किनारे पर्याप्त आग जल रही हो, और रात भर आग की देखभाल के लिए कोई न कोई मौजूद रहे। और हां, तंबू नहीं हटाए जाएंगे। जो भी हमें देख रहा हो, उसे ऐसा लगना चाहिए कि सेना अभी भी इसी किनारे पर है और भोर से पहले कहीं जाने का उसका कोई इरादा नहीं है। समझ गए?”
कप्तान को सिर हिलाते देख, दैपायाना ने दो वरिष्ठ कमांडरों को संबोधित करते हुए कहा, “आप सेना को चार समूहों में बाँटकर नदी पार करने की निगरानी करेंगे। याद रखें कि नदी का किनारा आग से रोशन होगा, इसलिए नदी पार करने का काम आग की रोशनी से दूर, नदी के ऊपरी और निचले हिस्से में करना होगा। नदी पार करने के बिंदुओं को पहले से ही निर्धारित कर लें – सब कुछ शीघ्रता से होना चाहिए। मैं सूर्योदय के समय उन पहाड़ियों पर पहुँचना चाहता हूँ।”
“अगर पहाड़ियों में हमें प्रतिरोध का सामना करना पड़ा तो हम हमला कैसे करेंगे, जनरल?” एक कमांडर ने पूछा।
“मैं उसी पर आ रहा हूँ,” दैपायाना ने उत्तर दिया। “चाहे कुछ भी हो जाए, किसी भी परिस्थिति में घुड़सवार सेना को वांगा के सैनिकों के साथ झड़प नहीं करनी है। यह काम पैदल सेना और तीरंदाजों पर छोड़ देना चाहिए। घुड़सवार सेना का काम सीधा है – पहाड़ियों को पार करने के बाद, उसे तेज़ी से और सीधे दंडकभुक्ति की ओर बढ़ना है और शहर की रक्षा व्यवस्था पर नियंत्रण करना है। इसके बाद, उसे सभी खानों को सुरक्षित करना है और वांगा के बाकी हिस्सों की ओर जाने वाले सभी निकास मार्गों को अवरुद्ध करना है। हमारी अनुमति के बिना कोई भी खानों और शहर में प्रवेश या बाहर नहीं जा सकेगा।”
"दंडकभुक्ति के नगरवासियों का क्या होगा?"
“जब तक वे आदेशों का पालन करते हैं और रास्ते से हट जाते हैं, तब तक किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन अगर कोई प्रतिरोध करता है, तो कोई दया मत दिखाना। हम यहाँ कैदियों को लेने नहीं आए हैं। हम यहाँ वांगा को पकड़ने आए हैं।”
***

“कुछ नहीं। क्या आप मेरे साथ बैठना चाहेंगे?” जैसे ही कमांडर मेज के दूसरी ओर बैठा, अमारा सिम्हा ने घड़ा लहराते हुए उसे आमंत्रित किया। “एक खाली प्याला मंगवाइए।”
दत्ताका ने खिड़की से बाहर देखा। आसमान का रंग गहरा बैंगनी होता जा रहा था, लेकिन आसपास की पहाड़ियों की छाया से श्रीस्थली कस्बे को अलग पहचानने के लिए अभी भी पर्याप्त रोशनी थी।
"थोड़ी देर में, माननीय न्यायाधीश," उसने कहा, यह तय करते हुए कि अभी इतनी देर नहीं हुई है कि ड्रिंक पीने की जरूरत हो।
अमारा सिम्हा ने कंधे उचकाए और अपने गिलास में उदारतापूर्वक एक गिलास भर डाला।
"क्या पार्षद को कोई बात परेशान कर रही है?"
“यह किंग कोबरा वाली बात है,” अमारा सिम्हा ने नाराज़गी से जवाब दिया। “मैं तय नहीं कर पा रहा हूँ कि यहाँ और समय लगाकर इसकी जाँच करूँ या उदयपुरी लौट जाऊँ। कमांडर अतुल्यातेजा के हवाले से चौकी छोड़े हुए काफी समय हो गया है, और सीमा पर बहुत काम करना बाकी है। फिर भी, पिछली रात यहाँ कुछ हुआ है, और मुझे लगता है कि यह पता लगाना ज़रूरी है कि इसके पीछे कौन था।”
“अगर इससे आपको मदद मिलती है, तो मैं आपके लिए इस मामले की आगे जांच कर सकता हूं,” दत्ताका ने कहा। “अगर मुझे कुछ पता चलता है, तो मैं आपको तुरंत बता दूंगा।”
“हां, शायद आप कर सकते हैं,” अमारा सिम्हा ने गिलास से एक और बड़ा घूंट लेते हुए कहा। लेकिन उत्साह वापस नहीं आया।
दोनों व्यक्ति कुछ देर चुपचाप बैठे रहे, तभी सेनापति की नज़र अमरा सिंह की कोहनी के पास पड़े ताड़ के पत्तों के एक छोटे ढेर और एक कलम पर पड़ी। उसने देखा कि पत्तों पर संस्कृत शब्द अवरोही क्रम में सारणीबद्ध रूप से लिखे हुए थे।
“अगर मैं पूछ सकूँ, तो आप किस काम में लगे हैं, महोदय?” एक पल के लिए हट्टे- कट्टे पार्षद असमंजस में पड़ गए। फिर, दत्ताका की बात समझकर उन्होंने ताड़ के पत्तों पर नज़र डाली। “मैं संस्कृत शब्द जड़ों की शब्दावली बना रहा हूँ,” उन्होंने समझाया। “इसमें थोड़ा व्याकरण और थोड़ा काव्य है। मैं पिछले दो वर्षों से इस पर काम कर रहा हूँ।”
“तलवार चलाने वाले बहुत कम लोग ऐसा कर सकते हैं।” कमांडर की आवाज आश्चर्य से भरी थी। “आप बहुत विद्वान होंगे।”

“यह तो कुछ भी नहीं है – आपको देखना चाहिए कि पार्षद कालिदास क्या लिखते हैं। लेकिन हाँ, मुझे स्वर्गीय श्रीगुप्त जैसे गुरुओं से सीखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।”
“You studied under Guru Srigupta of Bhojapuri?”
दत्ताका की आवाज में थोड़ी उत्तेजना महसूस करते हुए अमरा सिंह ने सिर हिलाया। "क्या आप गुरु श्रीगुप्त के बारे में जानते हैं?"
“वो मेरे दूर के चाचा थे... हालांकि मैं मानता हूँ कि मैं इसे साबित करने के लिए वंश वृक्ष नहीं बना सकता,” कमांडर मुस्कुराए। “मैं उनसे बचपन में कुछ बार मिला था, जब मेरी माँ मुझे भोजपुरी में उनके घर ले गई थीं। मुझे वो ज़्यादा अच्छे से याद नहीं हैं – वो बूढ़े थे और उनकी लंबी सफ़ेद दाढ़ी थी... लेकिन उनकी एक बेटी थी जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता। वो मेरी ज़िंदगी में मिले सबसे अच्छे और दयालु लोगों में से एक थीं। हमेशा मुस्कुराती रहती थीं, हँसी से भरी रहती थीं और हम बच्चों के लिए मिठाइयाँ लाती थीं।”
“हाँ, वह मेरी अब तक की सबसे अच्छी शख्सियतों में से एक थीं।” अमारा सिम्हा ने दोहराया। उनकी आवाज़ में उदासी छा गई थी, जिसे दत्ताका ने महसूस नहीं किया। “बेशक, आपने मेरे चाचा से पढ़ाई की थी, इसलिए आप उन्हें जानते होंगे। क्या आपको उनका नाम याद है?”
“स्वाहा,” पार्षद ने अपने गिलास की ओर देखते हुए कहा। “जिससे आपने बेहद प्यार किया हो और शादी की हो, उसका नाम भूलना मुश्किल है।”
“आपने उससे शादी कर ली है? ओह, तो हम रिश्तेदार हो गए!” दत्ताका की आँखें चमक उठीं, लेकिन फिर वह रुक गया। “रुको... महाराज, आप ऐसा क्यों कह रहे हैं कि वह कोई ऐसी थी जिससे आप बेहद प्यार करते थे?”
“हमारी शादी के दो साल बाद, बच्चे को जन्म देते समय स्वाहा की मृत्यु हो गई। वह और बच्चा, दोनों।”
कमांडर ने अपनी निगाहें झुका लीं। शाम की खामोशी कमरे में छा गई, दोनों आदमी आमने-सामने बैठे थे, एक को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे, दूसरे के पास कहने के लिए कुछ नहीं बचा था।
अंत में, अमर सिंह ने प्याला अपने होठों तक उठाया और उसे पूरा पी लिया। उठकर वे ताड़ के पत्तों को समेटने लगे। उन्होंने कहा, “मैंने कल सुबह उदयपुरी लौटने का फैसला किया है। मैं हूण जासूस को अपने साथ ले जाऊंगा। जब घटाकरपारा द्वारका से लौटें, तो उन्हें उदयपुरी आने के लिए कह देना।”
और जांच का क्या हुआ?

"मुझे विश्वास है कि मैं वैवाहिक रिश्ते से जुड़े व्यक्ति पर भरोसा कर सकता हूं कि वह सच्चाई का पता लगाने के लिए आवश्यक कदम उठाएगा," पार्षद ने हल्की मुस्कान के साथ जवाब दिया।
***

लगभग आधी रात बीत चुकी थी जब सेनापति अंगमित्र और उनके चार संसप्तक कौशांबी नगर पहुँचे और राजा चंद्रवर्धन के महल की ओर चल पड़े। कालिदास ने अपने प्रतिनिधि को अवंती पर हुए दोहरे आक्रमण की खबर चंद्रवर्धन तक पहुँचाने का कार्य सौंपा था, और युवा सेनापति ने वत्स के दरबार तक की लंबी यात्रा के दौरान कम विश्राम करते हुए, आदेशों का पूरी निष्ठा से पालन किया था।
समसप्तकों को कौशांबी के द्वार पर रोक दिया गया था, लेकिन जब उन्होंने अपनी प्रामाणिकता साबित कर दी और अपने मिशन की तात्कालिकता स्थापित कर दी, तो उन्हें औपचारिक रूप से महल तक ले जाया गया, जो रात के अंधेरे में विशाल तो था लेकिन आकारहीन प्रतीत होता था। अपने घोड़े से उतरकर, अंगामित्र ने पत्थर के तटबंध से टकराते पानी की आवाज़ से अनुमान लगाया कि वे यमुना के निकट हैं। अवंती से आए सैनिकों को एक बड़े, लगभग खाली कमरे में ले जाया गया और उन्हें महल के एक अधिकारी के आने का इंतज़ार करने को कहा गया। लगभग दस मिनट तक उन्हें वहीं छोड़ दिया गया, फिर उन्हें उस गलियारे से आती कदमों की आहट सुनाई दी जो उस कमरे में खुलता था। गलियारे के दरवाज़े पर लटके कीमती ब्रोकेड के पर्दे को हटाते हुए एक दुबला-पतला बुजुर्ग व्यक्ति कमरे में दाखिल हुआ।
“कैप्टन अंगामित्रा?” उस व्यक्ति ने अपने सामने मौजूद चेहरों को देखते हुए पूछा।
कप्तान आगे बढ़ा और वह व्यक्ति उसकी ओर मुड़ा। हालाँकि, उसकी स्पष्ट भेंगापन के कारण, ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी निगाहें अंगामित्र के दाहिनी ओर खड़े संसप्तक पर टिक गईं।
“नमस्कार,” उस व्यक्ति ने कहा और कप्तान की ओर एक कदम बढ़ाते हुए दूसरे संसप्तक की ओर देखता रहा। “मैं सलाहकार यशोभावी, राजा चंद्रवर्धन की मंत्री हूँ। मुझे लगता है कि आपके पास सम्राट विक्रमादित्य का राजा के लिए कोई संदेश है?”
“जी हां, पार्षद,” अंगामित्रा ने उत्तर दिया। “हम इतनी देर रात महल में आने के लिए क्षमा चाहते हैं, लेकिन संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि संभव हो तो हम यह संदेश राजा चंद्रवर्धन को तुरंत देना चाहेंगे।”
“मुझे खेद है कि यह संभव नहीं होगा, कप्तान,” यशोभावी ने गंभीरता से कहा।

“अच्छा...” अंगामित्र थोड़ा चौंक गया। “शायद हम इसे सुबह उसे सौंप सकते हैं?” मंत्री की तिरछी नज़र उसे काफी परेशान करने वाली लगी।
"वह भी संभव नहीं होगा।"
“राजा महल में नहीं हैं?”
“जी हां,” यशोभावी ने उत्तर दिया। “लेकिन समस्या यह है कि आज सुबह हमारे राजा को लकवे का गंभीर दौरा पड़ा है। उनकी हालत में सुधार नहीं हो रहा है और राजचिकित्सकों का कहना है कि उनकी हालत बेहद नाजुक है।”
संसप्तकों ने एक-दूसरे की ओर देखा। उन्होंने ऐसी स्थिति की कल्पना नहीं की थी, और यह स्पष्ट था कि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करना है।
“मैं इतना कर सकती हूँ कि सेवकों को भेज दूँ कि वे आपको आपके कमरों तक पहुँचा दें,” यशोभावी ने उनकी मदद के लिए कहा। “रात को आराम कीजिए, क्योंकि आप थके हुए होंगे। इस बीच, राजकुमार शशिवर्धन के कल सुबह तक महल पहुँचने की उम्मीद है। शायद आप सुबह उनसे मिल सकें और उन्हें सम्राट विक्रमादित्य का संदेश दे सकें।”

आरोग्य करनेवाला

वेताला भट्ट और वरारुचि द्वारा अश्विन और पिशाचों के अवंती पर आक्रमण की घटनाओं का क्रम सुनकर पल्लवन के चेहरे पर अचंभित अविश्वास का भाव छा गया था। राजनयिक की निगाहें बार-बार सभा कक्ष की खिड़कियों की ओर जा रही थीं, मानो वे बताई जा रही बातों की पुष्टि चाह रहे हों, लेकिन महल की यात्रा के दौरान पल्लवन ने तबाह हो चुके शहर का इतना दृश्य देख लिया था कि वे जानते थे कि यह सच है।
जब आचार्य ने अपना वर्णन समाप्त किया, तो पल्लवन चुपचाप बैठा रहा, परिषद की मेज पर उकेरे गए सूर्य-शिखर के जटिल पैटर्न को घूरते हुए अनमने ढंग से अपनी उंगलियों को चटकाता रहा।
“यदि आप स्वयं देखना चाहें तो हम आपको कटार दिखा सकते हैं,” विक्रमादित्य की गंभीर आवाज ने सन्नाटे को भंग कर दिया।
राजनयिक ने अपना सिर उठाया और राजा को देखा। फिर उसने जल्दी से अपना सिर हिलाया। “नहीं सम्राट, मुझे आप सब पर अविश्वास करने का कोई कारण नहीं है। अगर मैंने आपको ऐसा आभास कराया हो तो क्षमा करें – मैं आपके शब्दों पर कभी संदेह नहीं करूंगा। बस यह सब... परेशान करने वाला है...” स्थिति की गंभीरता उसके मन में फिर से उभर आने पर पल्लवन की आवाज धीमी पड़ गई।
“यह सब अचानक हुआ, यह आपके लिए एक बड़ा झटका होगा,” राजा ने धीरे से सिर हिलाते हुए कहा। “लेकिन यकीन मानिए, हमारा इरादा किसी को भी इस बारे में अनजान रखने का नहीं था। कल ही हमने राजा भूमिपाल के दरबार में यह खबर लेकर एक दूत भेजा

था। लेकिन आप तो श्रावस्ती से और भी पहले निकल चुके होंगे, इसलिए आपको इस सब की कोई जानकारी नहीं हो सकती थी।”
“जी नहीं, महाराज। नहीं...” पल्लवन ने हैरानी से अपना सिर हिलाया।
फिर भी, जब उन्होंने विक्रमादित्य को दोबारा संबोधित किया, तो राजनयिक के लहजे में एक सूक्ष्म बदलाव आ गया था। विस्मय से भरा हुआ, अब वह लगभग अत्यंत श्रद्धापूर्ण था। “सम्राट, आप धन्य हैं। आपने सर्वज्ञ के दर्शन किए, जो अधिकांश मनुष्यों के लिए दुर्लभ है। आपको सर्वज्ञ द्वारा एक कर्तव्य पूरा करने के लिए चुना गया है, जो और भी दुर्लभ है। आपके जीवनकाल में जीवित रहना ही मेरे लिए सम्मान की बात है, और यह मेरे राजा का अपार सौभाग्य है कि आप मेरे विश्वसनीय मित्र हैं।”
“मुझे खुशी और गर्व है कि कोसला अवंती में एक मित्र देखता है,” सम्राट ने शालीनता से सिर झुकाया। वह पल्लवन को इतने लंबे समय से जानते थे कि उन्हें पता था कि भूमिपाला को पल्लवन पर पूरा भरोसा था, और पल्लवन तब तक किसी बात के लिए प्रतिबद्ध नहीं होते थे जब तक उन्हें भूमिपाला का पूरा समर्थन सुनिश्चित न हो जाए।
“सम्राट, अगर कोसला आपकी किसी भी तरह से सहायता कर सके तो हमें जरूर बताएं। सर्वज्ञानी ईश्वर के प्रति आपके वचन का पालन कराने में हम आपकी हर संभव सहायता करना अपना सौभाग्य समझेंगे।”
“जरूरत पड़ने पर मैं कोसला की मदद लेने में जरा भी संकोच नहीं करूंगा,” विक्रमादित्य ने मुस्कुराते हुए अतिथि को आश्वासन दिया। “लेकिन हमारी परेशानियों की बात यहीं खत्म करते हैं... हमें बताइए, आपके इस अचानक आगमन का क्या कारण है?”
पल्लवन ने पलकें झपकाईं जब उसे वह काम याद आया जिसके लिए वह उज्जैन आया था। “मैं यहाँ एक परेशान करने वाली खबर लेकर आया हूँ – हालाँकि मैं मानता हूँ कि आज सुबह मैंने जो देखा और सुना है, उसके बाद मुझे संदेह है कि आप और अधिक विचलित हो पाएँगे,” उसने स्वीकार किया।
“और यह खबर क्या है...?” राजा ने उत्सुकता से पूछा।
पल्लवन ने शीघ्रता से और बिना किसी विषयांतर के विक्रमादित्य और उनकी परिषद को गिरिव्रज की अपनी यात्रा, संगीतकार से हुई मुलाकात, मगध की सीमा पार भागने और संगीतकार द्वारा शूरसेना के हाथों राजा सिद्धसेना की निर्मम हत्या के खुलासे का विस्तृत विवरण दिया।

“राजा भूमिपाल सही कह रहे हैं,” राजनयिक की बात सुनने के बाद विक्रमादित्य ने गंभीरता से कहा। “यह स्पष्ट है कि शूरसेन वंगा पर आक्रमण करने पर आमादा है, लेकिन पुराने राजा ने उसे रोका होगा। उन्हें हटाकर शूरसेन ने न केवल अपने रास्ते से सारी बाधाएं हटा दी हैं, बल्कि मगध में गणतंत्र और किकटों के विरुद्ध जनमत जुटाने का अपना लक्ष्य भी हासिल कर लिया है।”
“मेरे राजा का मानना है कि शूरसेना को उसके किए की सज़ा मिलनी चाहिए,” पल्लवन ने मेज़ के चारों ओर बैठे लोगों के चेहरों को ध्यान से देखते हुए कहा। उनके लहजे से स्पष्ट था कि उन्होंने फैसला सुनाने का निश्चय कर लिया है। “राजा सिद्धसेना मेरे राजा के अच्छे मित्र थे और सम्राट के दिवंगत पिता भी उन्हें बहुत पसंद करते थे। मेरे राजा का मानना है कि सिद्धसेना की मृत्यु का बदला अवश्य लिया जाना चाहिए।”
विक्रमादित्य ने अपनी कोहनियों को परिषद की मेज पर टिकाया और राजनयिक पर पैनी नजर डाली। "क्या आप कृपया हमें यह बता सकते हैं कि राजा भूमिपाल वास्तव में क्या प्रस्ताव रख रहे हैं?"
“मेरे राजा ने शूरसेना और मगध की राजसभा के विरुद्ध सैन्य कार्रवाई शुरू करने का प्रस्ताव रखा है। शूरसेना को न्याय के कटघरे में लाने के लिए हमें वत्स, मत्स्य, हेहेया और अनर्त राज्यों के साथ सर्वसम्मति बनानी होगी।”
वररुचि और कालिदास ने सहमति में ज़ोर से सिर हिलाया, लेकिन सम्राट सतर्क नज़र आ रहे थे। बोलते समय उन्होंने सोच-समझकर शब्द चुने। “मैं मानता हूँ कि हम शूरसेना को इस भयानक हत्या के लिए बरी नहीं कर सकते, खासकर तब जब वह इसका बहाना बनाकर किकटों के खिलाफ नरसंहार करवा रहा है और वंगा जैसे निर्दोष पड़ोसी राज्य पर आक्रमण कर रहा है। फिर भी, हमें जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए, क्योंकि मगध राज्य अभी भी हमारा सहयोगी है।”
“क्या शूरासेना ने सिंधुवर्त की रक्षा के लिए अपनी सेना भेजने से इनकार करके हमारे साथ किए गए सभी गठबंधनों को वस्तुतः रद्द नहीं कर दिया है?” वरारुचि ने विरोध जताया।
“सच है। लेकिन मगध की प्रजा, जिस पर हाल ही तक दयालु राजा सिद्धसेना का शासन था, आज भी हमारी सहयोगी है। हम मगध के निर्दोषों का खून अपने हाथों पर नहीं लगने दे सकते। सिद्धसेना के प्रति हमारा इतना कर्तव्य है।”
"जहां तक मुझे पता चला है, मगध में शायद ही कोई निर्दोष बचा हो," पल्लवन ने गिरिव्रज में हुई लूटपाट के दृश्यों को याद करते हुए कड़वाहट से कहा।

“आप सही कह रहे हैं,” विक्रमादित्य ने स्वीकार किया। “इस समय, मगध की गुमराह प्रजा संभवतः शूरसेना और राज परिषद का समर्थन कर रही है। इससे हमारे लिए सैन्य संघर्ष में जल्दबाजी न करना और भी ज़रूरी हो जाता है। शूरसेना चतुराई से अपनी प्रजा को यह विश्वास दिलाएगा कि उनका राज्य केवल इसलिए खतरे में है क्योंकि उसने सिंधुवर्त की रक्षा के लिए मगध के सैनिकों को भेजने से इनकार कर दिया। वह यहाँ तक कि हमें किकटों और वंगाओं का साथ देते हुए भी दिखा सकता है। तब, व्यावहारिक रूप से, हम मगध की प्रजा की नज़र में हमलावर बन जाएँगे और वह बेचारा पीड़ित। हमें शूरसेना को अपनी प्रजा से और अधिक समर्थन प्राप्त करने का अवसर नहीं देना चाहिए।”
सभा कक्ष में कुछ क्षणों के लिए छाई असहज चुप्पी को कालिदास ने तोड़ा। उन्होंने कहा, “यदि खुले संघर्ष का विकल्प न हो, तो हम कुछ संसप्तकों को गिरिव्रज भेजकर शूरसेना की गुप्त रूप से हत्या करवा सकते हैं। इससे किसी को भनक तक नहीं लगेगी।”
सम्राट ने प्रस्ताव पर ध्यानपूर्वक विचार करने के बाद सिर हिलाया। “यहाँ की स्थिति हेहेया की स्थिति से बिल्कुल अलग है, जब कुलभेद ने राजा हरिहर के विरुद्ध तख्तापलट किया था। हेहेया में कुलभेद को बहुत कम समर्थन प्राप्त था, जबकि शूरसेना को राज परिषद और अपनी प्रजा का पूरा समर्थन प्राप्त प्रतीत होता है। यदि शूरसेना की हत्या कर दी जाती है, तो वह मगध की प्रजा के मन में आसानी से शहीद बन जाएगा। और उसकी मृत्यु का दोष किकटों पर डालकर, राज परिषद किकटों के प्रति जनता की घृणा का और अधिक लाभ उठाकर अपने उद्देश्यों की पूर्ति कर सकती है। यह उल्टा असर करेगा। हमें ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहिए जिससे किकटों का दुख बढ़े।”
“लेकिन सम्राट, अगर हम शूरसेना के खिलाफ कार्रवाई नहीं करते हैं, तो हम एक हत्यारे को मनमानी करने की छूट दे देंगे,” पल्लवन ने थोड़ी झुंझलाहट के साथ तर्क दिया। “क्या हम उसे सिंधुवर्त की शांति भंग करने की आजादी देने जा रहे हैं?”
“नहीं,” राजा की आवाज़ दृढ़ और आदेशात्मक थी। “शूरसेन को काबू में लाना होगा और उसे अपने कर्मों का हिसाब देना होगा। लेकिन हम जो भी कदम उठाएँ, उससे मगध में उसकी शान नहीं बढ़नी चाहिए। बूढ़े राजा की हत्या करके और इस बारे में झूठ बोलकर शूरसेन ने अपनी प्रजा को धोखा दिया है – उसे ऐसी सज़ा मिलनी चाहिए जिससे उसकी प्रजा उसके धोखे से बेनकाब हो जाए। शूरसेन के पतन का उसकी अपनी प्रजा

द्वारा स्वागत और जश्न मनाया जाना चाहिए। तभी राजा सिद्धसेन को सच्चा न्याय मिलेगा।”
“हम इसे कैसे हासिल करेंगे, महाराज?” पल्लवन ने इस बार अधिक सम्मान के साथ पूछा।
“मगध में कहीं न कहीं तो राजा सिद्धसेन के वफादार जरूर होंगे,” सम्राट ने उत्तर दिया। “पुराने राजा के साथ खड़े रहे एक-दो प्रभावशाली व्यक्ति भी काफी होंगे। शायद राजपरिषद में हों, शायद मगध की सेना में... हमें इन लोगों को जल्दी से ढूंढना होगा और उन्हें उनके राजा की मृत्यु की सच्चाई बतानी होगी। उनकी मदद से हम शूरसेना के खिलाफ जनमत को मोड़ सकते हैं।”
“मैं ऐसे कुछ लोगों को जानता हूँ।” राजनयिक चिंतनशील मुद्रा में बैठा रहा, लेकिन जैसे ही उसे यह विचार अच्छा लगा, उसकी आँखों में चमक आ गई। “मैं शुरुआत इस तरह कर सकता हूँ...”
पल्लवन की बातचीत तभी सभा कक्ष के दरवाजे पर दस्तक से बाधित हो गई। ऊपर देखने पर पुरुषों ने देखा कि दरवाजा खुला है और रानी उपश्रुति अंदर आ रही हैं। सम्मान के साथ पुरुष अपनी सीटों से उठे, रानी कमरे में दाखिल हुईं, लेकिन पल्लवन की नजर पड़ते ही वह अचानक रुक गईं।
"महारानी माता, कोसला के राजा भूमिपाला और प्रजा की ओर से आपको नमस्कार," राजनयिक ने औपचारिक रूप से झुककर कहा।
“आपको और आपके राजा को मेरा नमस्कार,” रानी ने उत्तर दिया। “इस तरह अचानक आने के लिए मैं क्षमा चाहती हूँ। मुझे पता ही नहीं था कि आप यहाँ हैं।” उन्होंने हाथ से इशारा करते हुए सबको बैठने को कहा, “आप जारी रखिए। मैं बाद में आती हूँ।”
लेकिन जैसे ही रानी उपश्रुति जाने के लिए मुड़ीं, पल्लवन फिर बोला। “नहीं माँ, कुछ नहीं है,” उसने कहा। “मुझे लगता है कि आप यहाँ किसी ऐसे काम के लिए आई हैं जिसमें सम्राट और परिषद का ध्यान ज़रूरी है। मैं सहर्ष प्रतीक्षा करूँगा। कृपया मत जाइए।”
रानी एक पल रुकीं और विक्रमादित्य की ओर देखा, जिन्होंने हल्के से कंधे उचकाए और सिर हिलाया। दूत के शब्दों से यह स्पष्ट हो गया था कि इस मामले पर आगे कोई बहस नहीं हो सकती।
“धन्यवाद,” उसने पल्लवन की ओर मुस्कुराते हुए कहा। “इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा।” राजा की ओर देखते हुए उसने कहा, “मुझे लगता है कि आपने एक आंख वाले वैद्य के बारे में खबर सुन ली होगी।”

विक्रमादित्य आश्चर्यचकित होकर कुछ क्षणों तक अपनी माँ को देखता रहा, फिर स्पष्टीकरण के लिए वेताल भट्ट और वरारुचि की ओर मुड़ा। हालाँकि, दोनों सलाहकार भी उतने ही भ्रमित प्रतीत हुए।
“क्या आप वैद्य के बारे में कुछ नहीं जानते?” महारानी माँ के स्वर में आश्चर्य और झुंझलाहट दोनों समान रूप से झलक रही थी, उन्होंने कमरे में चारों ओर नज़र घुमाई। सभी के भावहीन चेहरे और सिर हिलाने को देखकर उन्होंने कहा, “पूरा शहर उनके बारे में बात कर रहा है।”
“नहीं माँ, मुझे खेद है कि यह बात हम तक नहीं पहुँची है,” सम्राट ने कुछ कड़े स्वर में कहा।
“खैर, यह आदमी हाल ही में उज्जैन आया है – सभी के अनुसार, वह इस क्षेत्र में बिल्कुल नया है। ऐसा लगता है कि वह हमारे नागरिकों का तरह-तरह की बीमारियों का इलाज कर रहा है, और कहा जाता है कि उसके इलाज किसी चमत्कार से कम नहीं हैं। कहते हैं कि उसने अश्विनी हमलों से प्रभावित लोगों को भी राहत पहुंचाई है; जाहिर तौर पर उसने हमारे कुछ सैनिकों का भी इलाज किया है।”
“यह आदमी कौन है?” विक्रमादित्य ने अपनी भौंहें सिकोड़ीं और धनवंतरी की ओर देखा, लेकिन वैद्य ने पूरी तरह से अचंभित भाव दिखाया। “यह कहाँ से आया है?” रानी ने कहा, “किसी को पता नहीं है। वह इस इलाके के लिए अजनबी है... उसे सिर्फ वैद्य के नाम से जाना जाता है। या फिर एक आंख वाला वैद्य, क्योंकि वह एक आंख से अंधा है।”
“अगर मैं पूछ सकता हूँ, तो आपने उसे हमारे ध्यान में क्यों लाया है, महारानी माँ?” आचार्य ने लंबे समय बाद पहली बार बोलते हुए पूछा।
“मेरे पालकी उठाने वालों में से एक के बेटे ने वैद्य को कुछ कहते हुए सुना, राजगुरु। वैद्य ने दावा किया कि महल में मौजूद युवती के लिए उनके पास इलाज हो सकता है।”
रानी उपश्रुति ने शब्दों को समझने के लिए कुछ देर रुककर कहा, “आपको इस व्यक्ति को महल में अवश्य आमंत्रित करना चाहिए। वह विशाखा के अलावा किसी और का जिक्र नहीं कर रहे होंगे।”
***

तीन घंटे से अधिक समय से अंगामित्र यमुना नदी के किनारे बने एक कमरे में बैठे उफनती नदी पर चलती नावों और नौकाओं को देख रहे थे। छोटी नावें यात्रियों को ले जाने के लिए दोनों किनारों के बीच तेजी से दौड़ रही थीं, जबकि माल से लदी बड़ी नौकाएं मत्स्य और पश्चिम में सुरसेना और चेदि की छोटी रियासतों तथा

पूर्व में मगध और वंगा के बीच धीमी गति से ऊपर-नीचे तैर रही थीं। हर गुजरते घंटे के साथ सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता जा रहा था और अब लगभग कौशांबी के ठीक ऊपर था, लेकिन नदी की ठंडी हवा से उसकी गर्मी कम हो रही थी। हवा और ऊब के कारण नाविक को हल्की नींद आ गई थी, इसलिए कदमों की आहट के साथ किसी की आवाज सुनकर वह चौंक कर जाग उठा।
"कैप्टन, आपको इतनी देर तक इंतजार कराने के लिए मुझे क्षमा करें।"
अंगामित्र ने पीछे मुड़कर देखा तो एक युवक कमरे में तेज़ी से आ रहा था, पार्षद यशोभावी उसके दो कदम पीछे चल रही थी। वह युवक लगभग तीस वर्ष का था, लंबा और दुबला-पतला, उसके लंबे भूरे बाल कंधों तक लटके हुए थे। उसके पतले चेहरे पर सलीके से दाढ़ी रखी थी, जबकि उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में हमेशा उदासी छाई रहती थी। कप्तान ने गौर किया कि कद-काठी और शारीरिक बनावट में राजकुमार शशिवर्धन और उनके पिता कितने अलग थे।
“महामहिम, यह बिल्कुल ठीक है...” कप्तान उठने लगा, लेकिन राजकुमार ने उसे वापस अपनी सीट पर बैठने का इशारा किया।
“मुझे पता है कि अवंती से आए मेहमान के साथ ऐसा बर्ताव करना ठीक नहीं है – पिताजी इसे कभी मंज़ूर नहीं करेंगे,” शशिवर्धन अंगामित्रा के सामने खाली कुर्सी पर बैठ गया। “लेकिन मैं क्या कर सकता था? मैं आज सुबह ही लौटा हूँ, और तब से लगभग हर समय डॉक्टरों के साथ ही रहा हूँ।”
राजकुमार की बातें सुनते हुए, अंगामित्रा ने शशिवर्धन के उच्चारण में आई हल्की सी लड़खड़ाहट और उसकी सांसों में सोमा की हल्की सी गंध को न तो अनदेखा किया। यह समझते हुए कि राजकुमार सुबह के बारे में पूरी तरह सच नहीं बोल रहा था, सेनापति ने यशोभावी की ओर देखा, लेकिन सलाहकार ने अंगामित्रा के दाहिनी ओर शांत भाव से देखा।
“मैं समझ सकता हूँ, महाराज,” अंगामित्रा ने शशिवर्धन की ओर देखते हुए कहा। “राजा चंद्रवर्धन अब कैसे हैं?”
“मुझे डर है कि स्थिति अच्छी नहीं है,” राजकुमार ने आह भरी और पीछे झुक गए। “चिकित्सक उनकी प्रगति से संतुष्ट नहीं हैं। और महल में इतनी सारी चीजों का ध्यान रखना है, इतनी सारी चीजें हैं जिन पर ध्यान देने की जरूरत है...” शशिवर्धन ने थके हुए हाथों से अपना माथा ढँक लिया, उनकी चिंतित आँखें नदी की ओर टकटकी लगाए थीं। अंगमित्रा ने निष्कर्ष निकाला कि राजा की अनुपस्थिति में आधिकारिक निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी से राजकुमार अभिभूत प्रतीत हो रहे थे। अचानक, सेनापति को यह दुविधा होने लगी कि क्या उन्हें वत्सा आने के लिए

राजकुमार को उस समाचार से अवगत कराना चाहिए या नहीं, लेकिन शशिवर्धन के संबोधन के बाद यह मामला सुलझ गया।
“खैर, हमारी अच्छी सलाहकार यशोभावी कहती हैं कि आप पिताजी के लिए एक ज़रूरी संदेश लेकर आई हैं,” शशिवर्धन ने अंगामित्रा की ओर जिज्ञासा भरी नज़रों से देखते हुए कहा। “संदेश इतना ज़रूरी होगा कि आप सुबह से मेरा इंतज़ार कर रही हैं – क्या है वो?”
अपने संक्षिप्त विवरण पर कायम रहते हुए और लगभग रटे-रटाए शब्दों में बोलते हुए, सेनापति ने विक्रमादित्य के पास मौजूद कटार से संबंधित हर महत्वपूर्ण बात का वर्णन किया। शशिवर्धन और यशोभावी दोनों ने बड़ी उत्सुकता से सुना, और जब अंगामित्र ने उन्हें अश्विनों और पिशाचों की सेना के साथ हुए संघर्षों के बारे में बताया तो वे आश्चर्य से अवाक रह गए।
जब कप्तान चुप हो गया, तो राजकुमार और सलाहकार ने सुनी हुई बातों पर मन ही मन विचार किया, उनके चेहरे आश्चर्य से भरे हुए थे। अंत में, सलाहकार पर एक संक्षिप्त नज़र डालने के बाद, शशिवर्धन ने बोलना शुरू किया।
“आपने जो बताया है, वह सचमुच आश्चर्यजनक है। मुझे इस बात पर कोई हैरानी नहीं है कि पिता सम्राट विक्रमादित्य का इतना सम्मान करते हैं। लेकिन...” यहाँ राजकुमार की आवाज़ थोड़ी लड़खड़ा गई। “...क्या सम्राट हमसे कुछ चाहते हैं? मेरा मतलब है, क्या आप यहाँ किसी काम से आए हैं...?”
अंगामित्र ने सिर हिलाया। “सम्राट केवल अपने सहयोगियों को कटार के बारे में सच्चाई बताना चाहते हैं, और मुझे महाराज चंद्रवर्धन को यह खबर देने के लिए यहाँ भेजा गया है। मेरी यात्रा का इससे अधिक कोई उद्देश्य नहीं है।” शशिवर्धन ने सिर हिलाया, राहत से उनके चेहरे और कंधों में तनाव कम हो गया। अंगामित्रा समझ गई कि राजकुमार बस इस बात से खुश थे कि उन्हें अपने पिता की ओर से कोई महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेना था। लेकिन जैसे ही कप्तान जाने की तैयारी करने लगे, शशिवर्धन ने उनसे फिर बात की।
फिर भी, जहाँ तक मुझे याद है, अवंती और वत्सा हमेशा से सहयोगी रहे हैं। पिता और राजा महेंद्रदित्य के बीच हमेशा से बहुत अच्छे संबंध थे, और जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, पिता सम्राट का बहुत सम्मान करते हैं। हमारे राज्यों ने विवाह के माध्यम से रक्त संबंध भी स्थापित किए हैं, इसलिए...
राजकुमार लड़खड़ाते हुए रुक गया, मानो उसे अचानक इस बात का डर सताने लगा हो कि अच्छे इरादों की जल्दबाजी में वह कुछ ऐसा कर बैठा है जिससे बाद में राजा चंद्रवर्धन नाराज हो जाएंगे। उसने संदेह भरी निगाहों से यशोभावी की ओर देखा,

लेकिन सलाहकार के हल्के से प्रोत्साहन भरे इशारे को देखकर उसका चेहरा साफ हो गया।
“इसलिए, अवंती को हर संभव सहायता प्रदान करना वत्सा का कर्तव्य है,” शशिवर्धन ने आत्मविश्वास से कहा। “सम्राट विक्रमादित्य को बता दें कि हम हर संभव तरीके से सहायता करने के लिए तैयार हैं – मुझे यकीन है कि अगर पिताजी यहाँ होते तो वे भी यही चाहते।”
“राजा चंद्रवर्धन और आप जैसे विश्वसनीय मित्र पाकर मुझे गर्व है, राजकुमार,” अंगामित्र ने अपने आसन से उठते हुए उत्तर दिया। “अब यदि आप मुझे अनुमति दें, तो मैं आपकी निष्ठा की प्रतिज्ञा लेकर उज्जैन लौटना चाहता हूँ।”
***

“मैं चिकित्सक के रूप में जाना जाता हूँ, महाराज। मैं उन धुंध भरी घाटियों से आता हूँ जहाँ से शक्तिशाली लौहित्या नदी प्राग्ज्योतिषपुरा राज्य में प्रवेश करने से पहले बहती है।”
वक्ता उज्जैन के विशाल सिंहासन कक्ष के केंद्र में खड़ा था। उसकी बुलंद आवाज ऊँची, गुंबददार छत से टकराकर गूंज रही थी, जिससे ऊपर लटके अलंकृत क्रिस्टल के दीपक डर से हल्के से कांप रहे थे। वह कद में छोटा लेकिन गठीला था, और उसके गोरे चेहरे पर घनी भूरी दाढ़ी और मूंछें थीं। उसने अपनी बाईं आंख पर एक काली पट्टी भी बाँध रखी थी।
"क्या आपका नाम 'चिकित्सक' के अलावा और कुछ नहीं है?" वेताला भट्टा ने चतुराई से पूछा।
“क्या अंततः किसी व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से नहीं होती, महोदय?”
इसके बाद जो असहज चुप्पी छाई रही, उसे विक्रमादित्य ने तोड़ा।
“और आप कहते हैं कि आप अवंती की रानी को उनकी बीमारी से ठीक कर सकते हैं?” राजा राजसी सिंहासन पर आगे की ओर झुके, जो तराशे और पॉलिश किए हुए काले संगमरमर का एक विशाल टुकड़ा था, जिस पर मखमल और साटन के कीमती तकिए लगे थे। संगमरमर पर सोने और हाथीदांत की भारी जड़ाई की गई थी, सफेद और पीले रंग की लकीरें ऊपर उठकर आपस में गुंथी हुई राजा के सिर के पीछे एक विशाल सूर्य-शिला का रूप धारण कर रही थीं। विक्रमादित्य की निगाहें अजनबी को ध्यान से देख रही थीं। "माननीय न्यायाधीश, मुझे विश्वास है कि मैं ऐसा कर सकता हूँ - हालाँकि जब तक मुझे महारानी से मिलने का मौका नहीं मिल जाता, तब तक मैं निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता।"

“क्या आप चिकित्सक हैं?” आचार्य ने नवविवाहित पर संदेह भरी नज़र डाली, फिर धनवंतरी की ओर संक्षिप्त रूप से देखा। “यदि मैं पूछ सकूँ, तो आपने यह विद्या कहाँ से सीखी?”
“कुछ लोग मुझे चिकित्सक कहते हैं, कुछ वैद्य... और कुछ तांत्रिक। इससे क्या फर्क पड़ता है?” वैद्य ने कंधे उचकाते हुए धनवंतरी की ओर इशारा किया। “माननीय दरबारी वैद्य भी इस बात से सहमत होंगे कि अंततः मायने रखता है इलाज पर विश्वास। इस नगर के लोगों में असीम विश्वास है; वरना मेरे किसी भी इलाज का कोई असर नहीं होता।”
"आप जैसी प्रतिभा के लिए, यह अजीब बात है कि हमने आपके बारे में पहले कभी नहीं सुना," वेताला भट्टा ने अजनबी को ध्यान से देखते हुए टिप्पणी की।
“यह मेरे बस की बात नहीं है,” वैद्य ने बेबसी भरी हल्की सी मुस्कान के साथ कहा। राजगुरु ने सिर हिलाया। "आप उज्जैन क्यों आए हैं?"
“मैं एक यात्री हूँ, महोदय। मैं जहाँ भी जाता हूँ, बीमारों और दुर्बलों की सहायता करने का प्रयास करता हूँ। मैं संयोगवश अनार्तास की ओर पश्चिम दिशा में जा रहा था, तभी मुझे आपके इस सुंदर शहर पर आई विपत्ति के बारे में पता चला। इसलिए मैंने यहाँ आने का निर्णय लिया।”
“आपको रानी की बीमारी के बारे में कैसे पता चला?” रानी उपश्रुति ने पूछा। “माँ, इस राज्य की प्रजा अपने राजा और रानी से बहुत प्रेम करती है,” वैद्य ने उत्तर दिया। “रानी के प्रति उनकी चिंता शब्दों में आसानी से व्यक्त हो जाती है।”
“मुझे उम्मीद है कि आप समझते होंगे कि रानी की बीमारी मामूली नहीं है,” वेताला भट्टा ने कहा। “वह पिछले दो वर्षों से हमारे दरबारी चिकित्सक की देखरेख में हैं, लेकिन उनकी हालत में कोई खास सुधार नहीं हुआ है। और सिंधुवर्त में शायद धनवंतरी से बेहतर चिकित्सक कोई नहीं है।”
मैं केवल वहीं प्रयास कर सकता हूँ जहाँ दूसरे असफल रहे हैं।
हालांकि अजनबी ने ये शब्द सहज भाव से कहे, लेकिन राजगुरु को लगा कि धनवंतरी को नीचा दिखाने का एक सूक्ष्म प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने यह भी देखा कि वैद्य ने बड़ी चतुराई से पूछे गए हर तीखे सवाल का जवाब टाल दिया था। लेकिन इससे पहले कि वे और कुछ पूछ पाते, सम्राट ने बोलना शुरू कर दिया।
“मुझे लगता है कि अगर आप रानी को ठीक कर देते हैं तो आप इनाम चाहेंगे। तो आपकी कीमत क्या होगी?”

“महाराज, अभी इस बारे में बात करना जल्दबाजी होगी,” वैद्य ने उत्तर दिया। “मुझे अभी रानी से मिलना बाकी है। और भले ही मुझे लगे कि मैं आपकी मदद कर सकता हूँ…” वह आचार्य की ओर क्षण भर के लिए रुका। “…मुझे लगता है कि आप रानी के स्वास्थ्य में सुधार के कुछ प्रमाण देखना चाहेंगे, इससे पहले कि आप यह तय करें कि महल में उनका इलाज करने के लिए मुझे बुलाना उचित है या नहीं। इसलिए इस पर बाद में चर्चा करना ही उचित होगा।”
वेतला भट्ट ने विरोध दर्ज कराने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन राजा ने उनसे पहले ही विरोध कर दिया।
“जैसी आपकी इच्छा,” विक्रमादित्य सिंहासन से उठते हुए बोले। “अब यदि आप मुझे अनुमति दें, तो मैं आपको रानी के कक्ष तक ले चलता हूँ। धनवंतरी, क्या आप हमारे साथ आना चाहेंगे?”
“जी हां, सम्राट।”
राजा और वैद्य सिंहासन कक्ष से बाहर निकले, उनके पीछे-पीछे धनवंतरी भी चल रहे थे। जैसे ही महारानी माँ और बाकी सलाहकार और दरबारी बाहर के हॉल में निकले, आचार्य ने सोच-विचार करते हुए अपनी दाढ़ी सहलाई। हालाँकि वे इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं बता पा रहे थे, फिर भी उस अजनबी में कुछ ऐसी चालाकी थी जो राजगुरु को बेहद अप्रिय लगी।
आगंतुक पर कड़ी नजर रखने का मन में निश्चय करते हुए, आचार्य सिंहासन कक्ष से बाहर निकले और विशाखा के शयनकक्ष की ओर जा रहे समूह में शामिल हो गए।
***

संगमरमर के फर्श की भव्यता, मेरु पर्वत से आने वाली सुगंधित हवा को अंदर आने देने वाली चौड़ी मेहराबदार खिड़कियाँ और गुंबददार छत को सहारा देने वाले सोलह विशाल स्तंभों के साथ, अमरावती महल का केंद्रीय कक्ष किसी भी तरह से छोटा नहीं था। फिर भी, जब इंद्र ने भव्य सीढ़ी के शीर्ष से नीचे देखा, तो नीचे का सारा हॉल छोटा प्रतीत हुआ, सीढ़ी के नीचे एक भद्दे अर्धवृत्त में खड़े सात विशालकाय राक्षसों के सामने वह बौना सा लग रहा था।
सातों ही कद-काठी में विशाल और प्रभावशाली थे, लेकिन उनका आकार ही उनकी विशिष्टता का एकमात्र कारण नहीं था। उनकी भारी-भरकम काया को ढकने वाले कठोर, हड्डियों से बने बाहरी कवच, उनकी त्वचा का गहरा नीला रंग और उनके सिर से निकले चार काले सींग भी ध्यान आकर्षित करते थे - दो सींग ऊपर और पीछे की ओर मुड़े हुए थे, जबकि दो सींग कंधों की ओर झुके हुए आगे की ओर इशारा करते थे। उनके सुंदर चेहरे गंभीर और उदास थे, और उनकी आँखें पारे जैसी मंद चमक से भरी हुई थीं।

इंद्र सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए मन ही मन मुस्कुराए, उन्होंने राक्षसों को एक घुटने पर बैठकर प्रणाम करते देखा। अश्विनों के सिंधुवर्त की विनाशकारी यात्रा से लौटने के बाद से देवलोक के स्वामी पहली बार इतने शांत और सहज दिखे थे।
“उठो, दिति के पुत्रों,” इंद्र ने हाथ हिलाकर आदेश दिया।
लेकिन राक्षस तब तक घुटनों के बल बैठे रहे जब तक इंद्र सबसे नीचे वाली सीढ़ी पर नहीं रुक गए। फिर वे खड़े हो गए और सिर झुकाकर खड़े हो गए, प्रत्येक राक्षस अपने राजा से लगभग दो हाथ लंबा था।
“प्रणाम, महाराज,” एक राक्षस ने धीमी, गड़गड़ाती आवाज़ में कहा। “हम आपके लिए क्या कर सकते हैं?”
जवाब देने के बजाय, इंद्र हॉल में दाखिल हुए। दो दैत्यों ने तुरंत रास्ता छोड़ दिया, जिससे देवता हॉल की एक खिड़की तक जा सके। कुछ देर तक, देवता खिड़की से बाहर देखते रहे, हाथ पीठ पर बांधे, उनकी निगाहें महल की रक्षा करने वाली चट्टानों पर टिकी थीं। फिर अचानक मुड़कर उन्होंने राक्षसों की ओर देखा। “मैं चाहता हूँ कि तुम उज्जैन शहर को नष्ट कर दो,” उसने क्रोध से भरी ठंडी आवाज़ में कहा। “शहर को नष्ट करो, उसके राजा को मार डालो, और मेरे लिए हलाहल और नरक की आग वापस ले आओ।”
सीढ़ियों के पास खड़े लोगों ने एक-दूसरे की ओर देखा। "नरक की आग से तुम्हारा मतलब... हमारी माता की तलवारें हैं?" पहले बोलने वाले राक्षस ने पूछा।
“क्या इस नाम से कोई और भी है?” इंद्र ने झुंझलाहट से भौंहें चढ़ाईं। हल्के से सिर हिलाकर उन्होंने अपने मन से उस विचार को दूर किया। “हाँ, दिति की तलवारें। और वह हलाहल जो वीषाद के खंजर में रखा है।”
“हे मेरे स्वामी, यह कौन सा राजा है जिसके पास हलाहल और नरक की आग का अधिकार है?”
“वह मनुष्य है और उसका नाम विक्रमादित्य है।” खिड़की से वापस लौटते हुए, इंद्र हॉल में चहलकदमी करने लगे। अगले कुछ मिनटों में, उन्होंने दैत्यों को हलाहल की कथा का संक्षिप्त विवरण दिया, जिसका अंत देवताओं द्वारा कटार को पुनः प्राप्त करने में हुई असफलता से हुआ।
“जिस तरह से वे भागे, अश्विनों ने मानव सेना के सामने हम देवताओं का उपहास किया,” इंद्र ने दांत पीसते हुए कहा। “अब यह तुम मरुतों का कर्तव्य है कि तुम मानव राजा को मारकर और मुझे कटार और दो तलवारें लाकर देवलोक का गौरव बहाल करो।”

“जैसा आप आज्ञा दें, महाराज,” राक्षसों के सरदार ने उत्तर दिया। “हम तुरंत उज्जैन के लिए प्रस्थान करेंगे।”
“यह सुनिश्चित करो कि हमला तेज़ और निर्मम हो,” देवता ने चेतावनी भरे लहजे में उंगली उठाई। “अश्विनों ने विक्रमादित्य की सेना को शहर की रक्षा व्यवस्था मजबूत करने का समय देकर गलती की। तुम उन पर तब अचानक हमला करोगे जब वे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं कर रहे होंगे। और साथ ही, मनुष्यों को उनके अहंकार का सबक सिखाओगे।”
राक्षसों के महल से बाहर निकल जाने के बाद, इंद्र महल के प्रांगण की ओर खुलने वाली बालकनी की सीढ़ियों पर चढ़ गए, और रास्ते में थोड़ी देर रुककर सोमा का एक प्याला उठा लिया। मुंडेर से टेक लगाकर, उन्होंने सिंधुवर्त में मरुतों को भेजने के अपने निर्णय पर गर्व व्यक्त किया।
कठोर तपस्या और यज्ञों के बाद दिति द्वारा गर्भ धारण किए गए मरुत मूल रूप से एक ही राक्षसी प्राणी थे जो उनकी कोख में पल रहे थे। अपार शक्ति और महान जादुई क्षमताओं से संपन्न, इस राक्षसी बच्चे को वह एक ही उद्देश्य से जन्म दे रही थी
- इंद्र और देवलोक का विनाश।
लेकिन इंद्र को दिति की योजना का भनक लग गई और उन्होंने कुबेर के दरबार से एक यक्ष को दिति को बहकाने के लिए भेजा – इस उम्मीद में कि यक्ष का रहस्यमय वीर्य गर्भस्थ गर्भ को गुप्त रूप से विषैला बना देगा। दिति स्वाभाविक रूप से उस बलवान यक्ष के आकर्षण में फंस गई, और जब वे प्रेममय संबंध बना रहे थे, यक्ष ने उसके गर्भस्थ राक्षसी गर्भ को नष्ट करने का प्रयास किया। लेकिन गर्भ इतना शक्तिशाली था कि उसका वीर्य उसे केवल सात छोटे भागों में ही विखंडित कर सका – जिनमें से प्रत्येक से एक मरुत का जन्म हुआ।
एक सर्वशक्तिशाली राक्षस को जन्म देने की अपनी योजना विफल होते देख दिति व्याकुल और क्रोधित हो गईं और उन्होंने सातों शिशुओं को हिमालय की चोटियों में स्थित एक ठंडी गुफा में उनके हाल पर छोड़ दिया। इसी गुफा में इंद्र को वे अवांछित मरुत शिशु मिले, जो ठंड से नीले और अकड़े हुए थे, भूखे थे और लगभग मरणासन्न थे। निस्वार्थता और करुणा का परिचय देते हुए, देवताओं के स्वामी इंद्र उन शिशुओं को देवलोक ले आए, जहाँ उनका स्वास्थ्य सुधारा गया।
जैसे ही इंद्र ने प्याला होठों तक उठाया और सोमा का स्वाद चखा, वे एक बार फिर मन ही मन मुस्कुराए। मरुतों को देवलोक लाना एक अचूक रणनीति साबित हुई थी। अपनी निर्दयी माता के प्रति घृणा के भाव से पोषित होकर, सात राक्षस शिशु अपनी रगों में बहने वाले असुर रक्त से घृणा करने लगे थे। और अब शक्तिशाली दानवों

के रूप में, उन्होंने अमरावती और उसके शासक के प्रति अटूट निष्ठा की शपथ ली, और पाताल लोक से आए अपने ही बंधुओं के विरुद्ध अनेक सफल अभियानों में देवताओं का नेतृत्व किया।
प्याले का सारा पानी फेंकते हुए इंद्र सोचने लगे कि पहली बार में ही उन्हें मरुतों को उज्जैन भेजने का विचार क्यों नहीं आया। दिति के सात राक्षस पुत्रों की भयानक शक्ति और जादूगरी के आगे कोई भी मानव सेना कुछ नहीं कर सकती थी।
***

उज्जैनी गोधूलि की सुनहरी रोशनी में मग्न थी, महल की पश्चिमी दीवार सिंदूरी रंग से सराबोर थी, तभी विशाखा ने वैद्य की ओर देखने के लिए अपना सिर घुमाया। पहले तो इस घटनाक्रम पर किसी का ध्यान नहीं गया; वैद्य रानी के पलंग के पास फर्श पर बैठे ध्यानमग्न थे और उनकी आँखें बंद थीं। शयनकक्ष में मौजूद एकमात्र अन्य व्यक्ति, वृद्ध नर्स, रानी के रात्रि भोज के लिए छोटी मेज सजा रही थीं और उनकी पीठ विशाखा की ओर थी।
शयनकक्ष में छाई खामोशी दोपहर के उस सन्नाटे से बिलकुल उलट थी, जब वैद्य को विशाखा की जांच के लिए अंदर बुलाया गया था। महल के सभी लोग उम्मीदों से भरे हुए कमरे में जमा हो गए थे, और गलियारों में महल के सेवकों की भीड़ उमड़ रही थी, जो अंदर हो रही गतिविधियों की एक झलक पाने के लिए बेताब थे।
वैद्य ने सरसरी जाँच करने के बाद विशाखा के चेहरे पर चंदन और हल्दी का लेप लगाने का आदेश दिया। पलंग के पास ज़मीन पर तांत्रिक मंडल बनाकर, वैद्य ने विशाखा के दोनों हाथों में एक-एक लाल गुड़हल का फूल रखा और फिर मंडल के सामने बैठ गए। कुछ मंत्रों का उच्चारण करने और दश-महाविद्याओं को प्रसन्न करने के बाद, वे ध्यान की अवस्था में चले गए।
समय बीतने के साथ-साथ उत्सुकता कम होती गई और लोग धीरे-धीरे शयनकक्ष से निकलकर अपने-अपने कामों पर लौट गए। क्षपनाका सबसे आखिर में निकली। अगर वह थोड़ी देर और रुकती, तो वह अपनी बहन को वैद्य को घूरते हुए देख पाती, लेकिन संयोगवश, विशाखा का भोजन लेकर आई एक नौकरानी ने अपनी रानी में आए इस बदलाव को देखा।
मुश्किल से सांस लेते हुए, अपनी गोल-गोल आंखों से विशाखा को घूरती हुई, नौकरानी दबे पांव नर्स के पास गई।
“रानी…” उसने फुसफुसाते हुए कहा।

“क्या?” नौकरानी के लहजे में व्याप्त घबराहट को भांपते हुए नर्स अचानक मुड़ी।
उसने कुछ पल विशाखा को निहारा, उसकी आँखें उत्साह से चौड़ी हो गईं। फिर, नौकरानी से थाली का बोझ उतारकर, वह उसके कान के पास झुक गई।
“महारानी को बुलाओ,” उसने फुफकारते हुए कहा। “समय बर्बाद मत करो और इसके बारे में किसी और को मत बताना। अब जल्दी करो।”
कुछ ही मिनटों में, रानी उपश्रुति और क्षपणक पलंग के पास खड़ी थीं, विशाखा से लेकर वैद्य तक अनिर्णय की स्थिति में देख रही थीं। क्षपणक अपनी बहन की ओर एक कदम बढ़ीं, लेकिन महारानी ने उन्हें कंधे पर हाथ रखकर रोक दिया। थोड़ी देर बाद, विक्रमादित्य और धनवंतरी भी उनके पास आ गए, और चारों ने चिंता भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा।
“वह वैद्य को क्यों घूर रही है?” विक्रमादित्य ने धनवंतरी को एक तरफ खींचते हुए पूछा।
चिकित्सक ने जवाब में कंधे उचका दिए।
“वह काफी सतर्क लग रही है,” राजा ने धीरे से कहा। “क्या हमें उसका ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश करनी चाहिए?”
“नहीं,” धनवंतरी ने ज़ोर से सिर हिलाया। “चलिए देखते हैं आगे क्या होता है।” तभी वैद्य ने अपनी आँखें खोलीं। एक पल के लिए वह बिना कुछ देखे सामने घूरते रहे, फिर विशाखा की ओर देखने के लिए अपना सिर उठाया। रानी की नज़रें पल भर के लिए वैद्य की आँखों से मिलीं – और फिर, मानो कोई जादू टूट गया हो, उन्होंने पलकें झपकाईं और उन्हें देख रहे अन्य चेहरों की ओर मुड़ गईं। उनके चेहरे पर पहचान का कोई भाव नहीं था, लेकिन उनके चेहरे की चमक और आँखों में हल्की जिज्ञासा बिलकुल नई थी।
राजपरिवार ने मार्गदर्शन के लिए वैद्य की ओर देखा। जब उपश्रुति ने देखा कि क्षपणक ने अपना सिर झुकाया है, तो उन्होंने क्षपणक के कंधे से अपना हाथ हटा लिया। राजकुमारी अपनी बहन के पास गईं और धीरे से उनका हाथ पकड़ने के लिए आगे बढ़ीं, लेकिन विशाखा ने अपना हाथ छुड़ा लिया और उनके चेहरे पर भय के भाव उभर आए। क्षपणक का चेहरा उतर गया, लेकिन हाथ पीछे खींचते हुए उन्होंने आश्वस्त करने वाली मुस्कान दी।
विशाखा ने पलटकर देखा, मानो कोई प्रतिक्रिया देने का इरादा न दिखाया हो। फिर उसने संदेह भरी निगाहों से कमरे में चारों ओर देखा और क्षपणक की ओर लौट गई।

"पानी," उसने स्पष्ट रूप से कहा, हालांकि उसकी आवाज एक डरपोक, सहमे हुए बच्चे जैसी थी।
कमरे में मौजूद सभी लोग उत्सुकता से सांस रोककर देख रहे थे, तभी क्षपनाका विशाखा के और करीब झुक गई।
"क्या आपको थोड़ा पानी चाहिए?" उसने भावुक होकर पूछा।
अपनी बहन को सिर हिलाते देख क्षपणका की आँखों से आँसू बहने लगे। उस मनहूस, धूप भरी सुबह के बाद यह पहली बार था जब विशाखा ने किसी बात पर प्रतिक्रिया दी थी। "रानी के लिए पानी," धनवंतरी ने नर्स की ओर देखा, उसके गले में एक गांठ सी महसूस हो रही थी।
विशाखा को पानी का एक प्याला दिया गया। उसने खूब पानी पिया और अपने चारों ओर मौजूद चेहरों को गौर से देखा। अंत में, प्याला नीचे रखकर उसने क्षपणक से लेकर वैद्य की ओर देखा।
“मैं कहाँ हूँ?” उसने कांपती हुई आवाज़ में पूछा।
“दोस्तों के बीच,” वैद्य ने उसके सिर पर स्नेहपूर्वक हाथ रखते हुए उत्तर दिया। “अब तुम्हें आराम करना चाहिए।”
जैसे ही विशाखा आज्ञाकारी भाव से तकिये पर लेट गई, वैद्य ने विक्रमादित्य की ओर मुड़कर कहा, "महाराज, कृपया विश्राम करें।"
“उसके खाने और दवाइयों का क्या होगा?” धनवंतरी ने पूछा।
“उसे खाना दिया जा सकता है। आपकी दवाइयाँ भी दे दीजिए।” वैद्य ने कंधे उचकाते हुए कहा। “मुझे लगता है कि इनसे उसे कोई नुकसान नहीं होगा। लेकिन उसे सबसे ज़्यादा नींद की ज़रूरत है। कृपया ध्यान रखिए कि वह अच्छी तरह सोए। मैं कल सुबह उससे फिर मिलूंगा।” इतना कहकर वह झुककर कमरे से बाहर चला गया।
सम्राट ने वैद्य के जाने का इंतज़ार किया और फिर अपना ध्यान पलंग की ओर मोड़ा, जहाँ विशाखा अभी भी असमंजस में सबका आकलन कर रही थी। जब उनकी नज़रें मिलीं, तो विक्रमादित्य ने विशाखा के माथे पर हल्की सी शिकन देखी। जब उसने नज़रें फेर लीं, तो विक्रमादित्य सोचने लगा कि उसके मन में क्या चल रहा है। मुड़कर, वह वैद्य के पीछे-पीछे शयनकक्ष से बाहर निकल गया।
“क्या आप मुझे बता सकते हैं कि अभी क्या हुआ है?” विक्रमादित्य ने वैद्य के पीछे जाते हुए उससे पूछा। “क्या उसकी याददाश्त... वापस आ रही है?”
वैद्य रुक गया और राजा की ओर मुड़ा। “महाराज, अभी तो रानी को यह भी नहीं पता कि वह कौन हैं,” उसने धैर्यपूर्वक कहा। “मैंने उन्हें उनके परिवेश के प्रति सचेत करके केवल एक कदम आगे बढ़ाया है। उन्हें सब कुछ याद आने में थोड़ा समय लगेगा।”

“पर वे वापस तो आएंगे ही, है ना?” सम्राट की आशा और चिंता से भरी आँखें वैद्य की आँखों में गहराई से गड़ी हुई थीं। “वह पूरी तरह से ठीक हो जाएगी, है ना?” विक्रमादित्य के स्वर में व्याप्त हताशा को भांपकर वैद्य मन ही मन मुस्कुराया। उसे यह हताशा अच्छी लगी। इससे उसे यह एहसास हुआ कि अवंती की यात्रा करना उसका सही निर्णय था।
"हमें तभी पता चलेगा जब वह पूरी तरह से ठीक हो जाएंगी, माननीय न्यायाधीश।"

***

शुक्राचार्य ने एक और मुस्कान बिखेरी, इस बार अधिक खुली हुई, क्योंकि वे महल के पूर्वी भाग में स्थित अपने लिए सुसज्जित शयनकक्ष की निजता में थे। शयनकक्ष विशाल और हवादार था, जिसमें एक आरामदायक पलंग था, हालांकि शुक्राचार्य सोने के लिए ताड़ के पत्तों की चटाई पसंद करते थे। अब वे इसी चटाई पर लेटे हुए थे, अपने हाथों को सिर के पीछे रखकर, कम रोशनी वाले दीपक की रोशनी में छत पर नाचती हुई परछाइयों को निहार रहे थे। बाहर, महल के अधिकांश लोग रात के लिए सो चुके थे, केवल झींगुर और टिड्डे ही पहरेदारों और द्वारपालों का साथ दे रहे थे।
वह पूरी तरह से ठीक हो जाएगी, है ना?
हे सम्राट विक्रमादित्य, वह अवश्य ठीक हो जाएगी, परन्तु यदि आप उसे ठीक करना दिल से चाहें। वह अवश्य ठीक हो जाएगी, परन्तु यदि आप मुझे वह देंगे जिसके लिए मैं आया हूँ।
शुक्राचार्य को एक पल के लिए भी संदेह नहीं हुआ कि सम्राट रानी के शीघ्र स्वस्थ होने की दिली इच्छा रखते थे – हड्डियाँ झूठ नहीं बोलतीं, और उन्होंने दिन भर राजा की भक्ति के कई प्रमाण देखे थे। उन्हें बस इस बात का यकीन नहीं था कि राजा कटार के बदले...
शुक्राचार्य के विचारों में खलल बेडरूम के नक्काशीदार लकड़ी के दरवाजे पर हल्की दस्तक से पड़ा। उन्होंने सिर उठाकर दरवाजे की ओर देखा, उन्हें यकीन नहीं था कि उन्होंने सही सुना है। एक के बाद एक दो हल्की दस्तक से उन्हें पता चला कि कोई दरवाजे पर है।
“कृपया अंदर आइए,” उन्होंने कहा। चटाई से उठकर उन्होंने दीपक की बाती उठाई और जैसे ही दरवाजा खुला, मध्यम कद का एक दुबला-पतला व्यक्ति अंदर आया। जैसे ही प्रकाश उस व्यक्ति पर पड़ा, शुक्राचार्य को सिंहासन कक्ष में और बाद में विशाखा के शयनकक्ष में उस व्यक्ति को देखने की याद आ गई।
“जी हां, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं?” उसने पूछा।

“मैं सम्राट विक्रमादित्य का भाई वरारुचि हूँ,” शुक्राचार्य के पास पहुँचते हुए उस व्यक्ति ने अपना परिचय दिया। “मैंने सुना है कि आपके द्वारा रानी की जाँच करने के बाद उनके स्वास्थ्य में सुधार के लक्षण दिखाई दे रहे हैं।” “रास्ता लंबा और अनिश्चितताओं से भरा है, लेकिन मुझे खुशी है कि कुछ प्रगति हुई है,” शुक्राचार्य ने सिर झुकाया। तो ये थे वरारुचि – उन सलाहकारों में से एक जिन्होंने अंधका से युद्ध किया और उसे मार डाला। “क्या मैं आपकी किसी तरह मदद कर सकता हूँ?”
“अच्छा...” वरारुची हिचकिचाई। “आपकी... आपकी उपचार शक्तियाँ वाकई अद्भुत हैं, इसलिए मैं चाहती हूँ... मैं चाहूँगी कि आप मेरी माँ से मिलने आएँ।”
“आपकी माँ... आपका मतलब महारानी माँ से है? लेकिन वह तो काफी स्वस्थ लगती हैं।” वररुचि के काले चेहरे पर एक परछाई कौंध गई, हालांकि शुक्राचार्य निश्चित रूप से यह नहीं कह सके कि यह केवल टिमटिमाती रोशनी का भ्रम था या कुछ और।
नहीं, मेरा मतलब मेरी मां से था – सम्राट और मैं सौतेले भाई हैं। मेरी मां महल में नहीं हैं।
“मैं समझ गया।” शुक्राचार्य ने इस जानकारी को समझा और महसूस किया कि यह कभी काम आ सकती है। “उसे क्या तकलीफ है?”
"वात रोग।"
“इसका समाधान आसानी से हो जाएगा,” शुक्राचार्य ने आश्वस्त करते हुए कहा। “आपकी माँ कितनी दूर रहती हैं?”
"पवित्र क्षिप्रा नदी के पार पश्चिम की ओर दो घंटे की यात्रा।"
"तो क्या हम कल शाम को उससे मिलने चलें?"
“यदि आप आएँ तो मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी। धन्यवाद।” वरारुची ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कमरे से चले गए।
शुक्राचार्य चटाई पर लौट आए, लेकिन लेटने के बजाय उन्होंने अपना सादा सूती थैला खींच लिया। थैले का सारा सामान चटाई पर निकालकर उन्होंने उसमें से छह मानव कशेरुकाओं के टुकड़े ढूंढ निकाले जिनकी उन्हें तलाश थी। एक चुटकी सिंदूर लेकर उन्होंने संगमरमर पर एक मंडल बनाया, फिर हड्डियों को हाथों में थामकर मंत्र का उच्चारण करते हुए उन्हें हिलाया।
मंडला के अंदर हड्डियों को फेंकते हुए, वह आगे झुका और उस आकृति का अध्ययन करने लगा, उस व्यक्ति के बारे में कुछ और जानने की कोशिश कर रहा था जो अभी-अभी उससे मिलने आया था।

[illegible] [illegible] [illegible] [

चेतावनी

वांगा में जितने समय से लोग याद रख सकते थे, उससे कहीं अधिक समय से यह परंपरा चली आ रही थी कि ग्रैंड असेंबली हर पखवाड़े में एक बार अत्यंत गरिमा और मर्यादा के साथ नीतिगत मामलों पर चर्चा करने के लिए एकत्रित होती थी। लेकिन ताम्रलिप्ति की उस धूप भरी सुबह, परंपरा और प्रोटोकॉल दोनों का अप्रत्याशित रूप से उल्लंघन हुआ था। एक तो, ग्रैंड असेंबली को समय से पहले और कम सूचना पर बुलाया गया था; दूसरा, गणतंत्र की अठारह रियासतों के सभी प्रमुख एक साथ बोल रहे थे, एक-दूसरे पर चिल्लाकर अपनी बात मनवाने की कोशिश कर रहे थे। सभा भवन में बहने वाली ठंडी नदी की हवा भी वातावरण में व्याप्त आशंका और आक्रोश को दूर नहीं कर पाई।
“शांत हो जाइए... कृपया शांत हो जाइए,” विधानसभा के एक अधिकारी ने विनती की। “कुलपति सुदासन को बोलने का मौका दीजिए।”
“आप हमें शांत रहने के लिए कैसे कह सकते हैं?” वहाँ जमा हुए सरदारों में से एक ने क्रोधित होकर पूछा। “दंडकभुक्ति पर मगध की सेना ने कब्ज़ा कर लिया है, और खबरों के अनुसार वहाँ हमारे लगभग पचास सैनिक और नागरिक मारे गए हैं। भगवान जाने अगला निशाना कौन होगा। जब हमारी सुरक्षा ही खतरे में है, तो हम शांत कैसे रह सकते हैं?”
“कृपया... हम सब यहां इस मामले पर चर्चा करने के लिए आए हैं,” अधिकारी ने आग्रह किया।

“क्या हम सिर्फ इस मामले पर चर्चा करेंगे?” एक अन्य प्रमुख ने पूछा। “चर्चा कौन करना चाहता है? मैं जानना चाहता हूं कि ग्रैंड असेंबली इस मामले में क्या करने जा रही है?”
अधिकारी के उत्तर देने से पहले ही, थोड़ा पीछे खड़े एक बुजुर्ग व्यक्ति ने आगे बढ़कर अधिकारी के कंधे पर धीरे से हाथ रखा। उस व्यक्ति का व्यवहार एक कुलीन व्यक्ति जैसा था, उम्रदराज चेहरे पर जिम्मेदारी की लकीरें थीं, फिर भी उसकी चमकदार आँखों में बुद्धिमत्ता झलक रही थी। सिर को थोड़ा झुकाकर, उस व्यक्ति ने अधिकारी को संकेत दिया कि वह कार्यवाही का संचालन संभाल रहा है। अधिकारी के जाते ही, हॉल का शोर धीरे-धीरे कम होकर मंद फुसफुसाहट में बदल गया। “सरदारों, आप पूछते हैं कि ग्रैंड असेंबली इस मामले में क्या करने वाली है,” उन्होंने बुलंद आवाज में कहा और अपने कम होते बालों को हथेली से सहलाते हुए आगे कहा। “लेकिन आप भूल जाते हैं कि आप ही ग्रैंड असेंबली हैं... इसलिए इस सवाल का जवाब सिर्फ आप ही दे सकते हैं।”
वहाँ उपस्थित सभी प्रमुखों ने अपने पैर हिलाए और शर्मिंदगी भरी निगाहों से एक-दूसरे को देखा। अंत में, एक प्रमुख उठ खड़ा हुआ।
“कुलपति सुदासन, हमारी गलती के लिए क्षमा करें,” उन्होंने हॉल में व्यवस्था बहाल करने वाले व्यक्ति को संबोधित करते हुए कहा। “कृपया समझें कि दंडकभुक्ति में जो कुछ हुआ है, उससे हम सभी चिंतित हैं। मैं सबसे अधिक चिंतित हूं, क्योंकि दंडकभुक्ति सीधे मेरे अधिकार क्षेत्र में आता है।”
“भाई, मैं आपकी चिंता से सहमत हूँ,” सुदासन ने उत्तर दिया। “इसीलिए इस सभा को बुलाया गया है।”
“कुलपति जी, क्या हमें पता है कि मगध ने हम पर हमला क्यों किया है?” एक अन्य प्रमुख ने पूछा। “और दंडकभुक्ति पर कब्जा क्यों किया गया है?”
“सच कहें तो हमें नहीं पता। हमने कभी मगध को कोई हानि पहुंचाने का इरादा नहीं किया – हमने कभी किसी को कोई हानि नहीं पहुंचाई। वांगा ने सिंधुवर्त राज्यों के साथ हमेशा सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखे हैं।”
“क्या ऐसा हो सकता है कि मगध इस बात से नाराज़ हो कि हमने किकाता शरणार्थियों को शरण दी है?” सबसे पहले बोलने वाले प्रमुख ने पूछा। “माना जाता है कि मगध के पुराने राजा की हत्या उनके किकाता अंगरक्षकों ने की थी।”
“हम किकटों को वंगा में शरण क्यों दे रहे हैं?” दंडकभुक्ति के अधिकार क्षेत्र में आने वाले सरदार ने पूछा। सहमति में सिर हिलाते देख उसने आगे कहा, “वे हमारे संसाधनों का दोहन कर रहे हैं और बीमारियाँ फैला रहे हैं... और उनकी वजह

से अब हमें मगध की नाराज़गी झेलनी पड़ रही है। हमें उन्हें वापस भेज देना चाहिए।”
“उन्हें वापस कहाँ भेजें?” सुदासन ने पूछा, वह इस विचार को मिल रहे समर्थन से अवगत था। “मगध वापस भेजकर उनका वध करवा दें? किकाता एक शांतिप्रिय जनजाति है और हमारा उनसे संबंध बहुत पुराना है। अब उन्हें उनकी मातृभूमि से बेदखल किया जा रहा है और उनके पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है। हमें चिंता और भय को अपने निर्णय पर हावी नहीं होने देना चाहिए।”
“तो अब हम क्या करें? हम कैसे पता लगाएं कि मगध के उद्देश्य क्या हैं?”
“हमने मगध सेना के कमांडर से मिलने के लिए दंडकभुक्ति में पहले ही दो वरिष्ठ दूत भेज दिए हैं,” कुलाधिपति ने उत्तर दिया। “हो सकता है कि यह सब महज़ एक भयानक गलतफहमी हो जिसे आमने-सामने बैठकर सुलझाया जा सके।”
“और हमें अभी तक दूतों से कोई खबर नहीं मिली है?”
“वे कल शाम ही दंडकभुक्ति के लिए रवाना हुए थे।”
"अगर दूत यह खबर लेकर लौटते हैं कि मगध शत्रुता जारी रखने का इरादा रखता है तो क्या होगा?"
सभाघर में बेचैनी की लहर दौड़ गई, तभी सुदासन ने गहरी सांस ली। “ऐसी स्थिति में, वांगा को अपनी रक्षा के लिए तैयार रहना होगा। एहतियात के तौर पर, हमने दंडकभुक्ति के आसपास अपनी सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करना शुरू कर दिया है। सभा तत्काल प्रभाव से मगध से सटे सभी रियासतों में सैनिकों की संख्या बढ़ाने का प्रस्ताव करती है। इसके अलावा, सभा चंद्रकांता, मेदिनीपुरी और ताम्रलिप्ति नगरों की रक्षा के लिए और अधिक सैनिकों की तैनाती का प्रस्ताव करती है।”
"हम आपके सभी प्रस्तावों को मंजूरी देते हैं," सरदारों ने लगभग एक साथ चिल्लाकर कहा।
सुदासन ने विधानसभा के एक अधिकारी को सिर हिलाकर प्रस्ताव पारित होने का संकेत दिया। जैसे ही अधिकारी आदेश का पालन करने के लिए हॉल से बाहर निकला, किसी ने सवाल उठा दिया।
"क्या हम गणतंत्र को एक लंबे समय तक चलने वाले हमले से बचाने के लिए पर्याप्त रूप से सुसज्जित हैं?"
कुलाधिपति उस प्रश्न से भयभीत थे। सिंधुवर्त की सबसे शक्तिशाली सेनाओं में मगध की सेना भी शामिल थी, जो अपने सर्वोत्तम समय में भी चुनौती पेश करने में सक्षम थी। अब दंडकभुक्ति पर कब्जा हो जाने के बाद, शहर का केंद्रीय

शस्त्रागार भी पहुंच से बाहर हो गया था, जिससे वांगा की सेना पर अतिरिक्त दबाव पड़ गया था।
“सब कुछ मगध की सेना की ताकत और इरादे पर निर्भर करता है,” उन्होंने जवाब दिया। “लेकिन आपके सवाल का जवाब यह है कि अगर हमें लंबे समय तक चलने वाले युद्ध में जीवित रहना है, तो हमें दंडकभुक्ति पर फिर से कब्जा करना होगा और शस्त्रागार पर अधिकार जमाना होगा।”
एक बार फिर दोनों के बीच अशुभ निगाहों का आदान-प्रदान हुआ।
“क्या हम कलिंग और ओद्रा राज्यों से सहायता नहीं मांग सकते?” दंडकभुक्ति के प्रमुख ने अपनी चुप्पी तोड़ी। “वे हमारी मदद कर सकते हैं।”
“हम पूछकर देख सकते हैं,” सुदासन ने कहा, हालाँकि उनकी आवाज़ में कोई खास उम्मीद नहीं थी। समस्या यह थी कि वांगा हमेशा से संघर्षों में तटस्थ रहा था, और यद्यपि गुटनिरपेक्षता एक चतुर रणनीति थी जिससे किसी पक्ष को चुनने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी, लेकिन मुसीबत आने पर पक्के गठबंधन बनाना मुश्किल हो जाता था।
तभी सभा भवन के एक कोने में हल्की फुसफुसाहट सुनाई दी। मुड़कर देखने पर कुलपति ने देखा कि एक सैनिक कुछ अधिकारियों से बात कर रहा है।
“क्या बात है?” सुदासन ने ऊंची आवाज में पूछा।
“कुलपति महोदय, यह सैनिक दंडकभुक्ति के पास का एक घुड़सवार है,” अधिकारियों में से एक ने उत्तर दिया।
“नीचे आओ, सिपाही,” सुदासन ने सिपाही को इशारा किया। “हमारे लिए तुम्हारे पास क्या है?”
“महाराज, मैं कल दंडकभुक्ति भेजे गए दूतों की खबर लाया हूँ,” सैनिक ने कहा। “उनके घोड़े आज सुबह दंडकभुक्ति से लौट आए हैं।”
“उनके घोड़े...? उन दो दूतों का क्या हुआ?”
“माननीय महोदय, घोड़े उनके शवों को कीचड़ में घसीटते हुए ले जा रहे थे।” कमरे में चारों ओर से गहरी साँसें सुनाई देने लगीं, सैनिक ने आगे कहा, “दोनों के सिर कटे हुए थे। हमने उनकी पहचान उनके आधिकारिक चिह्नों... और इससे की।” सुदासन ने घुड़सवार के बढ़े हुए हाथ में मौजूद पांडुलिपि को लेने के लिए हाथ बढ़ाया। जैसे ही उसकी उंगलियां पांडुलिपि पर पड़ीं, कुलाधिपति समझ गया कि यह वही आधिकारिक पत्र था जिसे दूत अपने साथ लाए थे, जिसमें वांगा ने उल्लंघन के खिलाफ विरोध दर्ज कराया था और बातचीत के माध्यम से समस्या का समाधान करने का प्रस्ताव दिया था।

पत्र खोलते ही चांसलर ने उस पर बिखरे सूखे खून के धब्बों को देखा। सबसे नीचे, खून में डूबी कलम से एक संक्षिप्त संदेश लिखा हुआ था।
आपके दूतों ने मगध क्षेत्र में घुसपैठ करने की कीमत चुकाई है। दंडकभुक्ति से दूर रहें।
***

“क्या आपको यकीन है कि इस हूण जासूस ने समुद्र के रास्ते हम पर हमला करने की योजनाओं के बारे में बात की थी?” युगंधरा ने अपनी कोमल भूरी आँखों से घटकर्परा का आकलन किया।
“जी, महाराज,” राजकुमार ने मेज के उस पार अनार्ता सरदार की ओर देखा और सिर हिलाया।
द्वारका में युगंधरा के महल के पश्चिमी कोने पर स्थित एक ऊँची निजी बालकनी में दोनों व्यक्ति बैठे थे, उनके बीच मेज पर एक भव्य भोजन परोसा गया था। व्यस्त व्यापारिक बंदरगाह की हलचल उनसे बहुत दूर थी, और केवल हवा की सरसराहट और कभी-कभार काले सिर वाले सीगल की चहचहाहट ही सुनाई दे रही थी।
युगंधरा पीछे की ओर झुक गए, समस्या पर ध्यान केंद्रित करते हुए उनकी भौंहें तन गईं। "लेकिन हूणों और शकों को समुद्र का कोई ज्ञान नहीं है... यह बात समझ से परे है।"
घटकरपारा की निगाहें क्षितिज तक फैले नीले जल के विशाल विस्तार पर टिक गईं, उनके चेहरे पर उस व्यक्ति का विशिष्ट आश्चर्य झलक रहा था जिसने अपना पूरा जीवन भूभाग में बिताया हो। उनका ध्यान आंशिक रूप से अवंती पर हुए देव और असुरों के आक्रमण की खबरों पर था - जिसके बारे में उन्हें कुछ घंटे पहले ही युगंधरा से पता चला था - इसलिए उन्होंने सरदार को तुरंत जवाब नहीं दिया। “सचमुच यह बात समझ में नहीं आती,” राजकुमार ने अंत में कहा। “लेकिन पार्षद अमारा सिम्हा का मानना है कि हूणों ने पिछले कुछ वर्षों में इस कला में महारत हासिल करने में बिताए होंगे।”
“तुम समझते नहीं हो,” युगंधरा ने सिर हिलाते हुए कहा। “समुद्री कौशल ज़मीन पर रहकर नहीं सीखा जा सकता – इसके लिए जहाज़ पर चढ़कर समुद्र में यात्रा करनी पड़ती है। हम नाविक हैं...” वह रुका और खाड़ी की ओर हाथ से इशारा किया, जहाँ आधा दर्जन बड़े जहाज़ लंगर डाले खड़े दिखाई दे रहे थे। “अनर्त से जहाज़ रोज़ाना इन समुद्रों में आते-जाते हैं, और नाविक तट के दोनों किनारों पर हर खाड़ी और जलमार्ग से अच्छी तरह वाकिफ हैं। उनमें से किसी ने भी इन जलक्षेत्रों में हूण

जहाज़ों को देखने की सूचना नहीं दी है। तो फिर, हूण जासूस ने जिन जहाज़ों की बात की थी, वे कहाँ लंगर डाले खड़े हैं?”
घटाकरपारा ने कंधे उचका दिए, अचानक उसे गलत खबर लेकर इतनी दूर आने पर मूर्खता का एहसास हुआ। युगंधरा ने जासूस की कहानी में जो खामियां निकाली थीं, वे अब स्पष्ट रूप से सामने आ गई थीं।
“छोटे से छोटे जहाज़ को चलाने के लिए अभ्यास की ज़रूरत होती है, और जहाँ तक मुझे पता है, हूणों ने बिल्कुल भी अभ्यास नहीं किया है,” सरदार ने आगे कहा। “तो या तो हूण नौसैनिक युद्ध करने की कोशिश करके बहुत बड़ी मूर्खता कर रहे हैं, या फिर तुम्हारा जासूस झूठ बोल रहा था। जब तक... जब तक...”
जैसे ही युगंधरा के मन में अचानक एक नई संभावना आई, उसका चेहरा बदल गया और वह ध्यान से बालकनी की गुंबददार छत को घूरने लगा। "...जब तक कि हूण अंधकार नदी के जल में इस कला को निपुणता से न सीख रहे हों।"
खानाबदोशों से सुनी बातों के आधार पर, सिंधुवर्त के लोग जानते थे कि काली नदी महान रेगिस्तान के ठीक बीच से बहती है - जहाँ से हूण और शक सबसे पहले आए थे, और जहाँ वे सिंधुवर्त से निकाले जाने के बाद वापस लौटे थे।
घटाकरपारा ने सरदार को ध्यान से देखा। नमकीन हवा में गहरी सांस लेते हुए उसने पूछा, "क्या यह संभव है?"
“यह संभव है। नदी में नौकायन करना समुद्र में नौकायन करने जैसा नहीं है, लेकिन इससे आवश्यक कौशल प्राप्त होते हैं। और कहा जाता है कि काली नदी एक विशाल नदी है जिसमें तेज़ धाराएँ बहती हैं।” जैसे ही यह विचार मन में बैठा, युगंधरा की आँखें चिंता से चौड़ी हो गईं। “तो हाँ, यह संभव है।”
लेकिन क्या आपके नाविकों को यह पता नहीं होता?
"अनर्ता का कोई भी नाविक उस शापित नदी के मुहाने से आगे जाने का साहस नहीं करता, जिसके दूषित जल ने महान रेगिस्तान को जन्म दिया।"
सरदार ने समुद्र की ओर देखा और गहरी जलधारा से परावर्तित हो रही सूर्य की चकाचौंध से बचने के लिए अपनी आँखें सिकोड़ लीं। यदि हूण सचमुच आ गए, जैसा कि कहा जा रहा था, तो द्वारका को हमले का सबसे अधिक सामना करना पड़ेगा। द्वारका – चमकता हुआ रत्न, अनार्तों का गौरव।
“पार्षद अमरा सिम्हा ने उज्जैन में पहले ही एक संदेशवाहक भेजकर सम्राट को आपके सामने आने वाले संभावित खतरे के बारे में सूचित कर दिया है,” राजकुमार ने सरदार की कुछ चिंता दूर करने की उम्मीद में कहा। “मुझे पूरा विश्वास है कि सम्राट इस पर कार्रवाई करेंगे और अतिरिक्त सेना भेजेंगे।”

युगंधर ने अवंती पर हुए देव और असुरों के हमलों के बारे में सोचते हुए सिर हिलाया। विक्रमादित्य पहले से ही बहुत सारी परेशानियों से जूझ रहे थे, और उन्हें यकीन नहीं था कि राजा के पास अनर्तों के दुखों के लिए समय होगा। मेज के दूसरी ओर बैठे घटकर्परा को उदास निगाहों से देखते हुए, युगंधर को एहसास हुआ कि अचानक उनकी दोपहर के भोजन की भूख खत्म हो गई है।
***

“माँ, आपने मेरे लिए संदेश भेजा था?”
देवी ने सिर उठाकर देखा तो विक्रमादित्य उनके कमरे के द्वार पर खड़े थे। वे ठंडे संगमरमर के फर्श पर बिछी एक साधारण चटाई पर बैठी थीं, उनके हाथों में तांबे का मूसल और ओखली थी। उन्होंने सिर हिलाया, और जैसे ही सम्राट कमरे में दाखिल हुए, वे ओखली में सामग्री पीसने में जुट गईं। राजा उस बूढ़ी स्त्री के सामने रुक गए और धैर्यपूर्वक उनके बोलने का इंतजार करने लगे।
“बैठ जाइए,” मदर ओरेकल ने अंततः पास ही रखे सागौन की लकड़ी के स्टूल की ओर इशारा करते हुए कहा। दाँतविहीन मुस्कान के साथ उन्होंने आगे कहा, “यह आपका अपना महल है।”
विक्रमादित्य मुस्कुराते हुए स्टूल को आगे खींचकर बैठ गए। फिर भी, उन्होंने उस महिला को टोकने की कोई कोशिश नहीं की, बल्कि चुपचाप उसे मूसल से कूटते हुए देखते रहे। कुछ क्षण बीतने के बाद, उसने अपना सिर झुकाया और पैनी नज़रों से राजा का आकलन किया।
“मैंने सुना है कि रानी की तबीयत में सुधार हो रहा है?”
“हाँ, उसमें सुधार के कुछ स्पष्ट लक्षण दिख रहे हैं,” विक्रमादित्य की आँखें चमक उठीं। “वह अभी भी मुश्किल से कुछ बोल पा रही है, लेकिन ऐसा लगता है कि उसे अपने आसपास की घटनाओं का पहले से ज़्यादा एहसास हो रहा है... कम से कम कभी- कभी।” संदेह के कारण वह थोड़ी देर रुका। “पिछले दो सालों में मैंने उसे इतना अच्छा कभी नहीं देखा।”
“यह सुनकर मुझे खुशी हुई,” देवी माँ ने ओखली में झाँकते हुए सिर हिलाया। मूसल को एक तरफ रखकर, उन्होंने ओखली को उल्टा कर दिया और उसका सारा मिश्रण अपने दाहिने हाथ के प्याले में निकाल लिया। राजा ने देखा कि वह सूखे सुपारी पीस रही थीं। सुपारी के छोटे-छोटे टुकड़ों को मुँह में डालते हुए, देवी विक्रमादित्य के बारे में सोचने लगीं।
“रानी की सेहत में सुधार सुनकर मुझे खुशी हुई,” उसने दोहराया। “लेकिन हे बुद्धिमान राजा, महल में आए अजनबी से सावधान रहें।”

सम्राट ने अपनी भौंहें सिकोड़ीं। "क्या आपका मतलब वैद्य से है, माँ?"
“महल में बहने वाली हवा बुरे इरादों का संकेत दे रही है,” मदर ओरेकल ने अप्रत्यक्ष रूप से उत्तर दिया। “सावधान रहो।”
विक्रमादित्य ने बुढ़िया के चेहरे को गौर से देखा, उन्हें उम्मीद थी कि वह अपनी बात में कुछ और जोड़ेंगी, लेकिन उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली थीं और सुपारी चबाते हुए संतुष्टि से आगे-पीछे झूल रही थीं। उन्होंने अपने जुड़े हुए हाथों को देखा और उनके शब्दों पर विचार करने लगे।
“बस इतना ही, माँ?” उसने अंत में पूछा।
आंखें खोलते हुए, मदर ओरेकल ने कहा, “बादलों में भी खतरा मंडरा रहा है। बिजली से सावधान रहना।”
सम्राट ने सिर झुकाया। "धन्यवाद, माताजी।"
भविष्यवाणी कक्ष से बाहर निकलकर विक्रमादित्य एक खुले बरामदे की ओर बढ़े, जिसके केंद्र में एक विशाल सूर्यघड़ी लगी हुई थी। रेलिंग से टेक लगाकर राजा ने अपनी आँखों को ढँककर आकाश की ओर देखा और चारों ओर घूमकर आकाश के हर छोटे से छोटे भाग का सर्वथा अवलोकन किया।
सिर के ठीक ऊपर चमकती हुई तेज रोशनी के अलावा, निर्मल नीले आकाश में और कुछ भी नहीं था।
विक्रमादित्य अभी आकाश का अवलोकन ही कर रहे थे कि उन्हें पास आते कदमों की आहट सुनाई दी। चारों ओर देखने पर उन्होंने एक महल के सेवक को बरामदे की ओर तेजी से आते देखा।
“महामहिम, आपको महारानी के कक्ष में बुलाया जा रहा है,” परिचारक ने सूचित किया।
“क्या रानी ठीक हैं?” राजा ने चिंता से भरे स्वर में आगे बढ़ते हुए पूछा।
जी हाँ, माननीय न्यायाधीश। ऐसा लगता है कि उसने फिर से बात की।
जब विक्रमादित्य शयनकक्ष में जल्दी से दाखिल हुए, तो उन्होंने देखा कि क्षपणक विशाखा के बगल में पलंग पर बैठे हैं, जबकि रानी उपश्रुति उनके पास ही खड़ी हैं। महारानी ने एक हाथ क्षपणक के कंधे पर रखा हुआ था और झुककर विशाखा से धीरे से बातें कर रही थीं।
“यह तुम्हारी बहन क्षपनाका है, मेरे बच्चे,” राजा ने अपनी माँ को कहते हुए सुना।

विशाखा ने कुछ देर तक संदेह भरी निगाहों से क्षपणक की ओर देखा, फिर रानी उपश्रुति की ओर मुड़कर कहा, "नहीं, मेरी बहन मुझसे बहुत छोटी है," और उसने सिर हिला दिया।
वेताल भट्ट और धनवंतरी को एक तरफ खड़े देखकर सम्राट उनके पास गए। उन्होंने पूछा, "क्या हुआ है, राजगुरु?"
आचार्य ने उत्तर दिया, “ऐसा लगता है कि उसने अचानक क्षपणक और अपनी माता के बारे में पूछा है। वह निषाद लौटने की इच्छा व्यक्त कर रही है।”
“क्या वह निषाद के पास वापस जाना चाहती है?” विक्रमादित्य अविश्वास से देखने लगा।
“ज़ाहिर है, उसके बचपन की कुछ यादें लौट आई हैं,” धनवंतरी ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा। “उसकी माँ और क्षपनाका की यादें... उसके मन में क्षपनाका अभी भी एक छोटी बच्ची है, इसीलिए उसे महारानी की बातें स्वीकार करने में कठिनाई हो रही है।”
तीनों पुरुषों ने अपनी निगाहें फिर से बिस्तर पर टिका दीं। विशाखा ने एक बार फिर सिर हिलाया। “नहीं, मेरे माता-पिता निषाद के महल में हैं,” उसने रोते हुए कहा। “मैं उनसे मिलना चाहती हूँ। कृपया मुझे वहाँ ले चलिए।”
जब रानी उपश्रुति और क्षपणक ने बेबसी में पुरुषों की ओर देखा, तो विक्रमादित्य ने पूछा, "चिकित्सक कहाँ है?"
“हमने उसे बुलवाया है,” धनवंतरी ने थोड़े अकड़कर जवाब दिया। “वह यहीं होना चाहिए... आह, वह रहा।”
वैद्य कमरे में दाखिल हुए और कमरे में मौजूद अन्य लोगों की ओर ध्यान दिए बिना सीधे विशाखा के पास चले गए। "जी बच्ची, क्या बात है?" उन्होंने रानी की ओर स्नेहपूर्वक देखते हुए पूछा।
“मैं घर जाना चाहती हूँ, लेकिन ये लोग मुझे जाने नहीं दे रहे,” विशाखा ने सिसकते हुए कहा। “कृपया उनसे कहिए कि मुझे घर ले जाएं।”
“बिल्कुल, वे आपको जाने देंगे,” वैद्य ने आश्वस्त करते हुए कहा। “बस वे चाहते हैं कि आप थोड़ी देर आराम कर लें। नींद से जागने के बाद आप जा सकते हैं। क्या यह ठीक है?”
विशाखा ने नाक पोंछी और सिर हिलाया।
“अच्छा। लेकिन सोते समय इन्हें अपने हाथों में थामे रखना।” वैद्य ने विशाखा के हाथों में दो लाल गुड़हल के फूल रख दिए। “अब सो जाओ।”

रानी ने प्रसन्नतापूर्वक पलंग पर लेटकर करवट बदल ली। पल भर में ही वह सो गईं। जब महारानी माँ और क्षपणक पलंग से उठे, तो विक्रमादित्य ने वैद्य को फर्श पर मंडल बनाते हुए देखा। राजा की आँखें नम थीं।
“विक्रमा, क्या बात है?” राजगुरु ने शयनकक्ष से बाहर निकलते ही पूछा। राजा, आचार्य और राजचिकित्सक एक गलियारे से नीचे जा रहे थे। “क्या तुम्हें कोई बात परेशान कर रही है?”
हे बुद्धिमान राजा, महल में आए अजनबी से सावधान रहें।
“कुछ समय पहले संयोगवश मेरी मुलाकात मदर ओरेकल से हुई,” सम्राट ने कहा। “उसने क्या कहा?” आचार्य ने पूछा।
महल में बहने वाली हवा बुरे इरादों की ओर इशारा करती है।
“उसने...” विक्रमादित्य दुविधा में पड़कर रुक गया। “उसने चेतावनी दी थी कि बादलों में खतरा है और हमें बिजली से सावधान रहना चाहिए।”
“बादल?” धनवंतरी ने गलियारे में लगी खिड़कियों में से एक से बाहर झाँका। “यहाँ मीलों तक कोई बादल नहीं हैं।”
“लेकिन अगर देवी कहती हैं कि हमें सावधान रहना चाहिए, तो हमें सावधान रहना ही होगा,” वेताला भट्टा ने याद दिलाया। “वह शायद ही कभी गलत साबित हुई हैं।”
“सच है।” विक्रमादित्य ने अपने होंठ चाटे और अपने साथियों की ओर देखने से बचते हुए कहा, “इसीलिए मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता होगी, राजगुरु। मेरा इरादा आज रात ही कटार लेकर सीमावर्ती लोक जाने का है।”
***

“मेरे मित्र, इतने उदास मत दिखो,” वराहमिहिर ने सिर हिलाते हुए कहा। “चिकित्सक ने चाहे जो भी उपलब्धि हासिल की हो, इस बात में कोई संदेह नहीं है कि तुम अवंती राज्य के सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक हो।”
धनवंतरी ने अपना सिर झुकाया, लेकिन उनके होंठों के लटकने से स्पष्ट था कि वराहमिहिर के शब्दों से उन्हें ज़रा भी तसल्ली नहीं मिली थी। दोनों सलाहकार वैद्य के घर के बरामदे में बैठे थे – वराहमिहिर एक बड़े झूले पर सोमा का प्याला लिए बैठे थे, जबकि धनवंतरी एक मुलायम गद्दे पर शहद और नींबू का काढ़ा पी रहे थे। उत्तर दिशा से तेज़ हवा चल रही थी, जिससे उज्जैन के आसपास की रात की हवा ठंडी हो रही थी।
“देखो, सच तो यह है कि वैद्य ने चमत्कार कर दिखाए हैं,” धनवंतरी ने अंत में कहा। “और मेरा मतलब सिर्फ महल में ही नहीं है – पूरे शहर में हर कोई उनके और उनके इलाज के बारे में बात कर रहा है।” “हाँ... लेकिन...” वराहमिहिर ने कोई तर्क

ढूंढने की कोशिश की। “लेकिन विशाखा का उदाहरण ही ले लो। वैद्य का प्रभाव उज्जैन के द्वार पर पड़ने से बहुत पहले ही विशाखा में सुधार के लक्षण दिखने लगे थे।”
"बहुत मामूली लक्षण हैं," चिकित्सक ने बीच में टोकते हुए स्पष्ट किया।
“ठीक है, लेकिन संकेत तो हैं ही। हो सकता है कि आपकी देखरेख में उसकी सेहत सुधर रही थी और संयोग से वैद्य सही समय पर वहाँ आ गया हो। ऐसा हो सकता है, है ना?”
चिकित्सक ने कंधे उचकाते हुए इस बात को स्वीकार किया। “लेकिन वैद्य के मार्गदर्शन में उसकी रिकवरी की गति वाकई अद्भुत है। इसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।”
"खैर, वह तांत्रिक शक्तियों का इस्तेमाल कर रहा है। इसे चिकित्सा तो नहीं कहा जा सकता।"
"लेकिन इसे इलाज ही माना जा सकता है," धनवंतरी ने उदास स्वर में कहा और गद्दे पर और नीचे धंस गया।
“ठीक है, तो वैद्य... अच्छा है,” वराहमिहिर ने थोड़ी देर रुकने के बाद कहा। “लेकिन तुम इसे अपने ऊपर हावी क्यों होने दे रहे हो?”
“क्योंकि उन्हें डर है कि महल वैद्य की बातों पर ज़्यादा ध्यान देने लगेगा,” मदारी ने घर के प्रवेश द्वार से कहा। वह चुपचाप आई थीं, दोनों पुरुषों को उनकी मौजूदगी का पता भी नहीं चला था, और जैसे ही वह दरवाजे से टिकीं, उनके चेहरे पर अपने पति की दुर्दशा को लेकर निराशा और सहानुभूति के भाव थे।
धनवंतरी ने झुंझलाहट से अपनी पत्नी की ओर देखा, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया। वराहमिहिर ने मदारी से अपनी दृष्टि हटाकर चिकित्सक की ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखी।
"खैर, पिछले दो दिनों से सम्राट और महारानी माँ वैद्य से काफी ज्यादा सलाह ले रहे हैं," धनवंतरी ने अनिच्छा से स्वीकार किया।
"यह स्वाभाविक है क्योंकि उन्होंने विशाखा के स्वास्थ्य लाभ में भूमिका निभाई है," वराहमिहिर का लहजा बिल्कुल सीधा-सादा था।
“बिल्कुल यही बात मैं इतने समय से समझाने की कोशिश कर रहा था,” चिकित्सक ने झुंझलाहट में कहा। अब जब यह मुद्दा सबके सामने आ गया था, तो उसकी ज़ुबान खुल गई। “चिकित्सक ने वह कर दिखाया है जहाँ मैं असफल रहा। और उसका प्रभाव केवल राजा और रानी माँ तक ही सीमित नहीं है – यहाँ तक कि वरारुचि भी उसकी उपचार शक्ति से प्रभावित हो गए हैं।”

"किस तरह से?"
“वरारुचि ने वैद्य को अपनी माता से मिलने के लिए मना लिया है।” वराहमिहिर की उलझन देखकर धनवंतरी ने आगे कहा, “बड़ी-माँ के गठिया का इलाज करने के लिए। वे कुछ देर पहले नाव से रवाना हुए हैं। मुझे तो इसके बारे में बताया भी नहीं गया, जबकि मैं उनकी देखभाल कर रहा था।”
वराहमिहिर ने कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन फिर अपना इरादा बदल दिया। उन्हें समझ आ गया था कि राजचिकित्सक की चिंताएं पूरी तरह निराधार नहीं थीं।
“खैर, उसकी शक्तियां चाहे जो भी हों, मुझे शक है कि वह वैद्य मेरी खोई हुई टांग को ठीक कर पाएगा,” उसने बातचीत में थोड़ी नरमी लाने की कोशिश करते हुए आखिर में कहा। “और मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि जरूरत पड़ने पर मैं उससे सलाह नहीं लूंगा। मुझे उसे देखना भी पसंद नहीं है।”
अब धनवंतरी की बारी थी कि वह वराहमिहिर का गहन अध्ययन करे। "आप 'नापसंद' शब्द का प्रयोग क्यों करते हैं?"
मुझे नहीं पता। उसके बारे में कुछ तो गड़बड़ है। वह हर बात को लेकर बहुत ज्यादा आश्वस्त है, बहुत ही चिकनी-चुपड़ी बातें करता है... मुझे ऐसा लगता है कि वह इतना अच्छा है कि सच नहीं हो सकता।
“बिल्कुल यही मैंने भी उनके बारे में सोचा था,” चिकित्सक ने सुखद आश्चर्य और राहत भरी मुस्कान के साथ कहा। “बस मैंने कहा नहीं।”
“आपने बुद्धिमानी दिखाई – नहीं तो इसे पेशेवर प्रतिद्वंद्विता मान लिया जाता,” वराहमिहिर ने सिर हिलाया। अपने प्याले से आखिरी घूंट लेते हुए, वह झूले से नीचे उतर गए। “चलो, बहन ने जो स्वादिष्ट खाना बनाया है, उसे ठंडा न होने दें। अगर मुझे ठंडा खाना ही खाना होता, तो मैं आपके खाने का निमंत्रण स्वीकार ही नहीं करता।”
"इसीलिए तो तुम्हें मौका मिलते ही शादी कर लेनी चाहिए थी," मदारी ने शरारती अंदाज में चिढ़ाते हुए कहा।
“दिन में दो गर्म भोजन के लिए इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है, बहन,” वराहमिहिर ने अपनी बैसाखी के सहारे खड़े होते हुए व्यंग्य किया। “और अगर मैं शादी करना भी चाहता, तो कोई भी स्त्री मेरे इन छोटे-मोटे आविष्कारों के प्रति मेरे जुनून को बर्दाश्त नहीं करती।”

जैसे ही मदारी और बुजुर्ग पार्षद अंदर गए, धनवंतरी अपने गद्दे से उठ गया। बाहर आंगन में हवा तेज होकर ठंडी हो गई थी, जिससे धूल के छोटे-छोटे गुबार उड़ रहे थे। अंदर कहीं से, खुली खिड़की हवा से जोर से बंद हुई।
चिकित्सक अंदर गया और घर में चारों ओर छानबीन करते हुए उस खिड़की को ढूंढ निकाला जिससे परेशानी हो रही थी। जैसे ही उसने खिड़की बंद की, उसे दूर से गरजने की आवाज सुनाई दी। पहले तो उसने इस पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन जैसे ही वह भोजन कक्ष में दाखिल हुआ, जहाँ मदारी और रसोई की एक सहायिका खाना परोस रही थीं, विक्रमादित्य के दिन में पहले कहे गए शब्द उसे याद आ गए और वह चौंक गया। उसने चेतावनी दी कि बादलों में खतरा है और हमें बिजली से सावधान रहना चाहिए। अगर उसने जो सुना वह गरज थी, तो वहां बिजली भी जरूर चमक रही होगी।
***

वेताल भट्ट के भाले पर बनी खोपड़ियों के गड्ढों से गहरे कोयले जैसे लाल रंग का प्रकाश निकल रहा था, जो विक्रमादित्य के शयनकक्ष के एक कोने में जल रहे अकेले दीपक की पीली रोशनी से छनकर आ रहा था। इन दोनों के मिले-जुले प्रभाव से एक मंद, गेरू रंग की रोशनी बन रही थी जो आचार्य के चारों ओर घूम रही थी। आचार्य राजा के पलंग के सिरहाने बैठे थे, एक हाथ में भाला था और दूसरा हाथ राजा के बुखार से तपते माथे पर हथेली नीचे की ओर रखे हुए था। राजगुरु की आंखें बंद थीं और उनके होंठ एक धीमी, अस्पष्ट मंत्र का जाप कर रहे थे।
सम्राट बेजान पड़े थे, उनका शरीर अकड़ा हुआ था, कंधे सीधे थे, गर्दन की नसें अकड़ी हुई थीं। हल्की रोशनी में भी उनके चेहरे की पीलापन साफ झलक रहा था, और उनकी सांसें उथली और अनियमित थीं। राजा के हाथ, जो उनके बगल में थे, कसकर बंद थे - और दाहिनी मुट्ठी से एक पतली तलवार निकली हुई थी, जो गहरे, गेरूए रंग के प्रकाश में चमक रही थी।
काफी देर तक दोनों में से कोई भी नहीं हिला। फिर अचानक आचार्य की भौंहें तन गईं और उनकी आंखें झपकते ही खुल गईं।
हे बुद्धिमान राजा, महल में आए अजनबी से सावधान रहें।
वेताल भट्ट के चेहरे पर चिंता के भाव उभर आए, लेकिन इससे पहले कि यह बात उनके मन में पूरी तरह बैठ पाती, विक्रमादित्य का शरीर ज़ोर से कांप उठा। राजगुरु ने तुरंत अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं और ध्यान भटकने से रोकने की कोशिश की। इस कोशिश से आचार्य के माथे पर पसीने की बूँदें आ गईं, लेकिन जैसे ही उनका ध्यान वापस लौटा, राजा के शरीर में चल रहे कंपन कमज़ोर पड़ गए और शांत हो गए।

खोपड़ियों से निकलने वाली चमक धीरे-धीरे तेज होती गई, और आचार्य ने अपनी हथेली के नीचे राजा की त्वचा को नम और चिपचिपी महसूस किया। कुछ क्षण बाद, विक्रमादित्य ने एक गहरी साँस ली और उनका शरीर शिथिल हो गया। आँखें खोलकर वेताल भट्ट ने देखा कि राजा मुश्किल से साँस ले रहे थे और उनकी मांसपेशियाँ गहरी नींद की तरह शिथिल हो गई थीं।
नींद से भी बढ़कर, मृत्यु की सुस्ती...
फिर भी, विक्रमादित्य ने अपने हाथ में मौजूद कटार पर अपनी पकड़ मजबूत बनाए रखी।
आचार्य ने गहरी साँसें लेते हुए अपने माथे से पसीना पोंछा। फिर, कमरे की शांति भंग न करते हुए, वे शयनकक्ष के द्वार की ओर बढ़े और उसे खोला। बाहर गलियारे में कालिदास एक खंभे से टिके खड़े थे, उनकी विशाल भुजाएँ उनकी चौड़ी छाती पर मुड़ी हुई थीं।
वेताल भट्ट को द्वार के चारों ओर खड़े देखकर, संसप्तकों का सेनापति सीधा खड़ा हो गया और उसने प्रश्नवाचक भाव से अपनी भौंहें ऊपर उठा लीं।
"वह सीमावर्ती लोक में प्रवेश कर चुका है," आचार्य ने धीरे से घोषणा की और कपड़े से अपना चेहरा पोंछा।
“क्या वह ठीक है?” उस दैत्य ने गर्दन झुकाकर शयनकक्ष में देखते हुए पूछा। राजगुरु ने सिर हिलाया, उनके चेहरे पर उदासी छाई हुई थी। क्या दूर से आती गड़गड़ाहट की आवाज़ थी? उन्होंने कान लगाकर सुनने की कोशिश की, लेकिन बाहर पेड़ों से होकर गुज़रती तेज़ हवा की सरसराहट के अलावा कुछ सुनाई नहीं दिया। आचार्य ने पीछे मुड़कर देखते हुए कहा, “हाँ, वह है, लेकिन यह सबसे नाजुक और खतरनाक हिस्सा है। विक्रम की मृत्यु-नींद में किसी भी तरह की खलल नहीं पड़नी चाहिए। अन्यथा... वह शायद कभी वापस न आ पाए।”
“आचार्य जी, भयभीत न हों,” कालिदास ने गलियारे के बीचोंबीच खड़े होकर उत्तर दिया, उनका एक हाथ अपनी तलवार की मूठ पर हल्के से टिका हुआ था। “मैं यहाँ यह सुनिश्चित करने के लिए मौजूद हूँ कि हमारे राजा को कोई भी बाधा न पहुँचाए।”

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

हाथों के नीचे चूर-चूर हो गई जब उन्होंने उसे खींचकर नदी में उतारा। उन्होंने नाव का निरीक्षण किया जो लहरों वाले पानी में एक फूले हुए शव की तरह तैर रही थी, उनकी नज़र उस चिपचिपी काई की परत पर पड़ी जिसने अवंती के सूर्य-शिखर की धुंधली आकृति को ढक रखा था, जो कभी गर्व से उसके पतवार पर उकेरी गई थी। नाव के एक तरफ कुछ तख्ते गायब थे, लेकिन यह देखकर कि उसमें अभी भी एक टूटा हुआ चप्पू था और अंदर से सूखी थी, सम्राट ने फैसला किया कि यह उन्हें दूसरे किनारे तक ले जाने के काम आएगी।
क्षिप्रा नदी पार करने का सफर बिना किसी घटना के पूरा हो गया; हालांकि, जैसे ही उन्होंने नाव को किनारे लगाया और उतरने की तैयारी की, विक्रमादित्य के कानों में बिजली की गड़गड़ाहट गूंजी। उसी क्षण, नीचे नदी में तेज लहरें उठने लगीं, जिससे जर्जर नाव एक तरफ झुक गई और सम्राट का संतुलन बिगड़ गया। राजा ने नाव के किनारे को पकड़ लिया और खुद को तथा हिलती हुई नाव को संभाला।
जब उसे महसूस हुआ कि उसने अपनी बेल्ट में जो खंजर फंसा रखा था, वह ढीला होकर उसकी कमर से फिसल गया!
नीचे देखते हुए विक्रमादित्य ने देखा कि पतली सी तलवार प्रकाश की छोटी-छोटी चापों में घूमती हुई नाव और नदी के किनारे के बीच की दरार की ओर सीधी जा रही है। गहरी सांस लेते हुए राजा ने तलवार पर झपट्टा मारा, उनकी उंगलियां उसे पकड़ने की कोशिश करतीं, चूक जातीं, अटकतीं और फिसल जातीं...
सड़ी हुई, कपटी क्षिप्रा तलवार को लेकर चल रही बेताब जद्दोजहद अंतहीन प्रतीत हो रही थी, लेकिन जब कटार पानी से कुछ ही इंच दूर थी, तभी राजा की उंगलियों ने उसकी काले लोहे की मूठ को पकड़ लिया और तलवार को सुरक्षित वापस खींच लिया गया। एक पल के लिए सम्राट हिलती हुई नाव में खड़े रहे, कटार को अपनी छाती से लगाए रहे, जहां चिंता और परिश्रम से उनका दिल ज़ोर से धड़क रहा था।
स्वयं को शांत करने के बाद, विक्रमादित्य ने ठोस भूमि पर कदम रखा और कटार को अपनी कमरबंद में सुरक्षित कर लिया। फिर उन्होंने उज्जैन के क्षुद्र खंडहरों का जायजा लिया, जो मृत वृक्षों के बढ़ते जंगल से घिरे हुए थे, उजाड़ और जीवन के किसी भी रूप से पूरी तरह से रहित थे।
राजा को दुख के साथ यह एहसास हुआ कि एक दिन उसके प्रिय नगर का भी यही हाल होगा। फिर, ढलते हुए धुंधले सूरज की ओर देखते हुए, उसने महसूस किया कि यही वह नियति है जो एक दिन अस्तित्व में आई हर चीज़ का अंत करेगी। वह जो देख रहा था वह सृष्टि का जीवन और मृत्यु के बीच संक्रमण काल से गुज़रना मात्र था।

यह सीमावर्ती जगत था, मरे हुओं का शाश्वत क्षेत्र, जीवितों की दुनिया को मृतकों की दुनिया से अलग करने वाला अंधकारमय आवरण। वह पुल जिसके ऊपर से सृष्टि की हर वस्तु को अस्तित्व से विनाश की अवस्था में जाना पड़ता था। एक दर्पण जगत जहाँ वस्तुएँ पहले से ही अपनी विनाशकारी, विघटित अवस्था में विद्यमान थीं...
विक्रमादित्य मुड़ा और वृक्षों से घिरी मेड़ के उस पार बहुतायत में उगी हुई, घुटनों तक ऊंची, खुरदरी घास को जोतने लगा। उसे एहसास हुआ कि अभी भी उसे श्मशान घाट तक काफी दूरी तय करनी है, जहाँ भूत-प्रेत का स्वामी विराजमान था।
***

शुक्राचार्य और वरारुचि रात भर धीमी गति से घोड़े पर सवार रहे। तेज़ होती हवा की सीटी और घोड़ों के खुरों की हल्की आवाज़ उनके बीच फैली खामोशी को भर रही थी। उषांथा के घर से निकलने के बाद से दोनों ने शायद ही कभी एक-दूसरे से बात की हो, और जब भी शुक्राचार्य ने बातचीत शुरू करने की कोशिश की, वरारुचि के जवाब बेपरवाह और अस्पष्ट थे।
प्रधान पुजारी यह जानना चाहता था कि पार्षद के मन में क्या चल रहा है।
पिछली रात हड्डियों ने शुक्राचार्य को वरारुचि के बारे में बहुत कुछ बताया था, फिर भी बहुत कुछ ऐसा था जो हड्डियाँ प्रकट करने में असमर्थ थीं। इसलिए, शुक्राचार्य को यह तो पता था कि सलाहकार ने अपने सौतेले भाई के राजा बनने की आयु तक अवंती राज्य पर शासन किया था, लेकिन उन्हें यह नहीं पता था कि विक्रमादित्य के लिए सिंहासन त्यागने पर वरारुचि को कैसा महसूस हुआ। और यद्यपि उन्हें यह पता चला था कि वरारुचि की एक पत्नी दक्षिणी राज्यों में से एक में रहती थी - जिससे उन्हें एक पुत्र और एक पुत्री हुई थी - लेकिन हड्डियों ने यह नहीं बताया कि सलाहकार की पत्नी और बच्चे अवंती के दरबार में सेवा करते हुए भी सुदूर दक्षिण में क्यों रहते रहे।
दरअसल, हड्डियों ने इस तथ्य पर चुप्पी साध रखी थी कि वरारुचि ने अपनी शादी को एक गहरा रहस्य बनाकर रखा था - यहाँ तक कि अपनी माँ से भी! यह बात शुक्राचार्य को महज़ संयोग से पता चली थी।
“यह जीवन का अभिशाप है कि जब हमारे बच्चे छोटे होते हैं तो हमारे पास उनके लिए समय नहीं होता, और जब हम बूढ़े हो जाते हैं तो उनके पास हमारे लिए समय नहीं होता,” उषांथा ने कहा था जब मुख्य पुजारी ने उनके शयनकक्ष के फर्श पर मंडल बनाना शुरू किया था। महिला स्पष्ट रूप से अकेलेपन से जूझ रही थी, और एक अप्रत्याशित अतिथि की उपस्थिति ने उसे बातूनी बना दिया था। “आपके प्रश्न का

उत्तर देने के लिए, हाँ, यहाँ कभी-कभी अकेलापन महसूस होता है। काश वरारुचि की शादी हो जाती – कम से कम तब मेरे पास कुछ पोते-पोतियाँ तो होते जिनका साथ मैं सह सकती।”
“क्या आपका बेटा अविवाहित है?” शुक्राचार्य रुक गए और ऊपर देखने लगे, उनकी उंगलियां आधे बने मंडल पर टिकी हुई थीं। वरारुचि किसी काम से कमरे से बाहर गए हुए थे, जिससे मुख्य पुरोहित को इस मामले की जांच करने का समय मिल गया था। “नहीं,” उषांथा ने हैरानी से कहा। “जब भी मैं इस विषय पर बात करती हूँ, तो वह कहता है कि वह महल में बहुत व्यस्त है और उसके पास पत्नी और बच्चों के लिए समय नहीं है। यह कितनी बेवकूफी वाली बात है! मैं कहती हूँ, यह तो बस एक बहाना है। आप एक वैद्य हैं – क्या आप इस बारे में कुछ नहीं कर सकते?”
प्रधान पुजारी ने स्त्री के चेहरे पर बनावटीपन की तलाश की, लेकिन उसे केवल स्पष्टता ही दिखाई दी। उसने अपना सिर हिलाया और मुस्कुराया।
“माँ, ऐसा नहीं है। मेरे पास अधिकतर बीमारियों का इलाज है, लेकिन मैं स्वीकार करता हूँ कि जिद्दीपन का कोई इलाज नहीं है।”
अब जब वे उज्जैन की ओर वापस लौट रहे थे, शुक्राचार्य ने सलाहकार के सिर के पिछले हिस्से को तिरछी निगाहों से देखा। उन्हें पता था कि हड्डियों की बनावट गलत नहीं हो सकती - वे कभी गलत नहीं होती थीं।
“मान लीजिए कि आप विवाहित हैं, माननीय न्यायाधीश?”
शुक्राचार्य ने कूटनीतिक ढंग से प्रश्न पूछा, अपने लहजे में मासूम जिज्ञासा का भाव लाते हुए, फिर भी उन्हें यकीन था कि उन्होंने वरारुचि को अपनी काठी में सिहरते हुए देखा।
"मैं नहीं हूँ," पार्षद ने कुछ देर रुकने के बाद संक्षिप्त स्वर में कहा। “पता नहीं क्यों, मुझे हमेशा यही लगता था कि तुम वही हो,” प्रधान पुजारी ने आश्चर्य जताते हुए कहा। “दरअसल, मुझे लगभग यकीन हो गया था...”
“अगर मैं होता तो क्या मुझे पता नहीं चलता?” वरारुची अपने साथी की ओर मुड़ा, उसकी आवाज़ कठोर और ठंडी थी। “तुम्हें यह विचार कहाँ से आया? क्या तुमने इस बारे में कुछ सुना है...?”
इस बार, प्रधान पुजारी को लगा कि उसने पार्षद की आवाज में थोड़ी सी चिंता महसूस की है।
"नहीं, माननीय न्यायाधीश।"

“खैर, अगर तुमने ऐसा किया भी होता, तो वो महज़ एक अफवाह ही होती,” वरारुची ने झल्लाकर कहा। “सब जानते हैं कि मैं शादीशुदा नहीं हूँ।” इतना कहकर वो बस मुड़कर घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ गया।
शुक्राचार्य ने अंधेरे में एक रहस्यमयी मुस्कान दी। सम्राट के सौतेले भाई के प्रति उनकी जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी।
वे दोनों ओर खड़ी पहाड़ियों वाली घनी वन घाटी से गुजर रहे थे, लेकिन कुछ ही क्षणों में वे समतल, खुले मैदान में पहुँच गए। तुरंत ही दोनों सवारों का ध्यान उत्तरी आकाश की ओर आकर्षित हो गया, जहाँ बिजली की चमक से बादलों की निचली कतार जगमगा उठी।
बिजली चमकते ही वरारुचि ने तनाव और घबराहट भरी आवाज़ में कहा, "हमें जल्दी चलना होगा।" शुक्राचार्य की प्रतिक्रिया का इंतज़ार किए बिना, पार्षद ने अपने घोड़े को सरपट दौड़ा दिया।
अपने घोड़े के पेट में एड़ी गाड़ते हुए, प्रधान पुजारी उसका पीछा करने लगा, यह सोचकर कि वरारुचि को अचानक उज्जैन लौटने की इतनी जल्दी क्यों है। जहाँ तक वह समझ पाया, सलाहकार को तूफान में फंसने की आशंका परेशान नहीं कर रही थी।
यह कुछ और ही होना चाहिए था...
***

शराब के नशे में चूर तीनों सबसे आखिर में सराय से निकले। सराय मालिक ने उन्हें बहला-फुसलाकर और फुसलाकर घर तक जाने के लिए एक घड़ा मुफ्त शराब देने का वादा किया था। अब वे तीनों उज्जैन के पूर्वी इलाके की एक संकरी गली में लड़खड़ाते हुए चल रहे थे, एक-दूसरे का सहारा लिए हुए और सराय मालिक के दिए हुए लालच को एक-दूसरे को देते हुए, दिन भर की बची हुई शराब जल्दी ही खत्म कर रहे थे। चारों ओर ठंडी हवा चल रही थी, पेड़ों की चोटियों को चीरती हुई, गलियों में कराहती हुई और सड़कों पर कचरा उड़ाती हुई।
“आह...” उनमें से एक ने आह भरी और उल्टे रखे घड़े के किनारे से आखिरी बूंद चाट ली। खाली घड़े को हिलाकर यह सुनिश्चित करने के लिए कि उसमें अब और शराब न बची हो, उसने उसे एक तरफ फेंक दिया। मिट्टी का घड़ा एक नीची दीवार से टकराया और ज़ोरदार आवाज़ के साथ टूट गया।
"यह अच्छा था," उसने संतुष्टि से अपने होंठों को चाटते हुए और अपने हाथ के पिछले हिस्से से अपना मुंह पोंछते हुए मुस्कुराते हुए कहा।

“काश हमारे पास एक और घड़ा होता,” उसके एक साथी ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा और सड़क किनारे पड़े टूटे हुए घड़े को उदास निगाहों से देखा। चिढ़कर उसने आगे कहा, “हमें सराय मालिक से ऐसे दो घड़े माँग लेने चाहिए थे।”
“चुप रहो...”, तीसरे ने अपने होठों पर उंगली रखते हुए कहा। धुंधली आँखों से चारों ओर फैले अँधेरे में देखते हुए उसने आगे कहा, “चुप रहो... कोई आवाज़ मत करो। अगर नगर सुरक्षा के किसी सैनिक ने हमें सुन लिया, तो शांति भंग करने के आरोप में हम मुसीबत में पड़ जाएँगे।”
किस्मत से, नगर सुरक्षा बल का कोई भी सदस्य आस-पास नहीं था, और वे लोग बिना किसी रुकावट के लड़खड़ाते और डगमगाते हुए आगे बढ़ते रहे, कभी चुप तो कभी शोर मचाते हुए। एक झाड़ियों से भरे बगीचे से गुजरते हुए, उनमें से एक ने बाकी दो लोगों की पकड़ से खुद को छुड़ा लिया। उसने इशारे से यह जताने की कोशिश की कि उसे शौच जाना है, और वह बगीचे को सड़क से अलग करने वाली झाड़ियों की ओर बढ़ गया। इंतजार करने के लिए अधीर होकर, उसके साथी बस लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ते रहे।
जब से वे शराबखाने से निकले थे, आसमान में हल्की बिजली की चमक और लगातार गरजने की आवाज़ गूंज रही थी। अब, जब शराबी पेशाब कर रहा था, तभी अचानक उसके दाहिनी ओर थोड़ी दूर पर बिजली की तेज़ चमक गिरी। तेज़ हवा के झोंके से लड़खड़ाते हुए, उसकी त्वचा गर्मी से कांप रही थी, गरज की ज़ोरदार आवाज़ उसके कानों में गूंज रही थी, वह आदमी मुड़ा और सुन्न होकर अंधेरे में घूरने लगा।
उसकी आँखें - जो चमत्कारिक रूप से चोट से बच गई थीं - जैसे ही धुंधली रोशनी में अभ्यस्त हुईं, उसे लगा कि बिजली गिरने वाली जगह से एक विशालकाय आकृति उठ रही है। तेजी से पलकें झपकाते हुए, नशे में धुत व्यक्ति ने देखा कि वह आकृति कैसे लंबी और आकार लेती गई और मानव रूप धारण कर लिया। फिर, जैसे ही बिजली की एक और चमक ने आकाश को रोशन किया, उसने उस आकृति के सिर से निकले चार बड़े सींगों को देखा।
वहीं जड़वत खड़ा, भय से चेहरा बिगड़ा हुआ, शराबी देखता रहा कि चार सींगों वाली आकृति ने धीरे-धीरे अपना सिर घुमाया और मंद, धातुई चाँदनी की तरह चमकती ठंडी आँखों से उसे घूरने लगी। लगभग उसी क्षण, उस जानवर ने खामोशी से गुर्राते हुए अपने दाँत दिखाए और शराबी पर झपटा।
शराबी ने चीख मारी - लेकिन उसकी अपनी आवाज उस सपाट, खोखली खामोशी में दब गई जो अब उसके कानों में छा गई थी।

अगले ही पल, उज्जैन पर बिजली की छह और कड़कड़ाहटें गिरीं, एक के बाद एक तेजी से, और हर बार शहर के अलग-अलग हिस्से में। लगभग तुरंत ही, आसमान से अचानक भारी बारिश शुरू हो गई।
भय से कांपते शरीर और गले में अटकती सांसों के साथ, बचे हुए दो शराबी लड़खड़ाते हुए एक-दूसरे को गले लगाने लगे। एक-दूसरे को कसकर पकड़े हुए, एक-दूसरे को आशा और सहारा देते हुए, अपनी किस्मत पर यकीन न करते हुए, वे थरथराते हुए सड़क के बीचोंबीच पड़े अपने दोस्त के टूटे-फूटे शरीर के चारों ओर जमा बारिश के पानी को देखते रहे।
***

बारिश से भीगते हुए धनवंतरी जब महल में दाखिल हुए तो उनके पीछे पानी की एक लकीर सी बन गई। सिर, चेहरे और बांहों से पानी पोंछते हुए और कपड़ों को निचोड़कर सहजता से चलने-फिरने लायक बनाते हुए, वैद्य द्वार के आसपास जमा पहरेदारों को पीछे छोड़ते हुए उस हॉल की ओर बढ़े जो अवंती के दरबारियों की हिलती-डुलती परछाइयों से भरा हुआ था।
“हमें पहले यह पता लगाना होगा कि वास्तव में क्या हो रहा है,” धनवंतरी ने वराहमिहिर की गूंजती आवाज को कंपकंपी भरे शोर के बीच सुना। “अधिक जानकारी मिलने तक हम कोई कार्रवाई नहीं कर सकते, इसलिए कृपया शांत रहें। सलाहकार क्षपनाका और सलाहकार धनवंतरी मामले की जांच करने गए हैं। हमें जल्द ही उनसे खबर मिलेगी... आह, वह रहे राजचिकित्सक!”
धनवंतरी दरबारियों के हटने का इंतज़ार किए बिना सभा में घुस गए। भीड़ पीछे हट गई, जिससे वैद्य को वराहमिहिर तक पहुँचने का रास्ता मिल गया। वराहमिहिर हॉल के बीच में शंकु, रानी उपश्रुति, महल के रक्षकों के प्रमुख और कुछ वरिष्ठ दरबारियों के साथ खड़े थे। जिज्ञासु निगाहों के घेरे को देखते हुए वैद्य ने सीधे-सीधे बात की।
उन्होंने घोषणा की, "हम पर हमला हो रहा है।"
"दोबारा?"
धनवंतरी के दाहिनी ओर से कहीं से एक धीमी सी आवाज़ आई, जो घबराहट भरी आहों और फुसफुसाहटों में दब गई। उसके बाद अविश्वास भरी खामोशी छा गई, जिसमें बारिश की बूँदों की आवाज़ और दूर से आती खतरे की घंटियों की दर्द भरी गूंज सुनाई दे रही थी। धनवंतरी ने सोचा कि अश्विनी आक्रमण का सदमा अभी भी ताजा था, इसलिए पीतल की घंटियों की चेतावनी के बावजूद, दरबारी शायद यही उम्मीद कर रहे थे कि सब कुछ ठीक हो जाएगा।

"हम पर हमला कौन कर रहा है?" वराहमिहिर ने अपनी बैसाखी पर झुकते हुए पूछा, मानो इस खबर का बोझ उनके कंधों पर एक अतिरिक्त भार हो।
“हमें नहीं पता,” धनवंतरी ने सिर हिलाते हुए कहा। “लेकिन ऐसा लगता है कि कुछ... चीजें... शहर पर बेतरतीब ढंग से हमला कर रही हैं। बड़ी-बड़ी और बेहद हिंसक चीजें।”
निराशा की एक सामूहिक आह पूरे हॉल में गूंज उठी और अंत में झुके हुए कंधों पर आकर ठहर गई।
“हमले कहाँ हुए हैं?” वराहमिहिर ने जोर देकर पूछा।
“हर जगह। शहर के हर कोने में। घर, दुकानें, नगर सुरक्षा चौकियों... हर चीज़ पर हमला हो रहा है। वे लोगों को घायल कर रहे हैं, मार रहे हैं और तबाही मचा रहे हैं। नगर सुरक्षा के सैनिक उनसे मुकाबला करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन ये लोग बहुत शक्तिशाली हैं।”
“उनकी संख्या कितनी है?”
“कोई नहीं जानता,” धनवंतरी ने नाखुशी से कंधे उचकाते हुए कहा। “लेकिन हमले की भयावहता को देखते हुए, शायद बहुत कम लोग ही जानते होंगे।”
“ये क्या चीज़ें हैं?” यह एक वरिष्ठ दरबारी का सवाल था, उसकी आवाज़ तनाव से भरी हुई थी। “ज़रूर किसी ने इन्हें देखा होगा, आदरणीय पार्षद।”
“अंधेरा हो गया है और तेज बारिश हो रही है,” चिकित्सक ने उत्तर दिया।
“और ये चीजें जाहिर तौर पर बहुत तेजी से चलती हैं। किसी ने भी इन्हें साफ तौर पर नहीं देखा है – कम से कम जीवित लोगों में से किसी ने तो नहीं।”
“जो अभी जीवित है, उनमें से किसी ने ऐसा किया है।” क्षपणक की आवाज़ दरवाज़े के पास से दूर से आई। “ये जीव संभवतः असुर हैं।”
सबकी निगाहें घूम उठीं और दरबारी चुपचाप सलाहकार के लिए रास्ता बना दिया। क्षपणका एक हाथ में धनुष लिए और कमर पर तलवार लटकाए हुए हॉल में दाखिल हुईं। धनवंतरी की तरह वह भी बारिश से भीगी हुई थीं और उनके वस्त्र उनके आकर्षक शरीर से चिपके हुए थे।
“नगर सुरक्षा बल के एक सिपाही ने बताया कि पूर्वी इलाके में दो शराबी लोगों ने ऐसी ही एक चीज़ को प्रकट होते देखा,” उसने समझाया। “शराबियों के अनुसार, वह चीज़ बिजली की एक चमक के साथ प्रकट हुई।” धनवंतरी को भौंहें चढ़ाते देख उसने सिर झुकाया। “ऐसा लगता है कि उस चीज़ ने उनके एक दोस्त को अपने पैर से कुचलकर मार डाला।”

“क्या शराबियों पर विश्वास किया जा सकता है?” एक संशयवादी दरबारी ने आपत्ति जताई। “हो सकता है कि उन्होंने यह सब मनगढ़ंत कहानी बनाई हो।”
“सिटी वॉच के सिपाही ने पुष्टि की है कि पूर्वी इलाके में एक पार्क के पास सड़क पर एक बुरी तरह क्षत-विक्षत शव मिला है, जहाँ नशे में धुत लोगों का दावा है कि उनके दोस्त की हत्या की गई थी,” क्षपनाका ने शांत स्वर में कहा। “उस आदमी को किसी बेहद भारी चीज़ के नीचे कुचला गया था – जैसे कोई बड़ा पत्थर, पेड़ का तना या किसी भारी पैर से। और शव के पास कोई पत्थर या पेड़ का तना नहीं मिला।” उसने इस बात को समझने के लिए कुछ देर रुककर कहा, “शराबी कहते हैं कि उस राक्षस का शरीर तो मनुष्य जैसा था, लेकिन वह बहुत बड़ा और भारी था, और उसकी आँखें चाँदनी की तरह चमकती थीं। उसके सिर पर चार सींग भी थे।”
“जी हां, पाताल लोक के राक्षस,” वराहमिहिर ने वैद्य से निगाहें मिलाईं। अपनी आवाज बुलंद करते हुए, ताकि उनकी बात स्पष्ट सुनाई दे, उन्होंने आगे कहा, “वे यहाँ कटार लेने आए हैं, दरबारी।”
कमरे में चारों ओर चिंता के भाव छा गए। महल के रक्षकों के बुजुर्ग प्रमुख सद्गुण ने अपना गला साफ किया। उन्होंने वराहमिहिर से अपील करते हुए कहा, "हमें सम्राट को जगाना होगा।"
“हम ऐसा नहीं कर सकते,” पार्षद ने तीखे स्वर में उत्तर दिया। अपनी आवाज़ को नियंत्रित करते हुए और उसे कानाफूसी में बदलते हुए, उन्होंने चारों ओर व्याकुल चेहरों को देखा। “सम्राट को सीमावर्ती लोक की यात्रा में विचलित नहीं किया जाना चाहिए। यह बहुत खतरनाक है – आप सभी जानते हैं। आचार्य सम्राट को तभी वापस ला सकते हैं जब वे स्वयं लौटने के लिए तैयार हों।”
“क्या पार्षद कालिदास कुछ नहीं कर सकते?” सद्गुण ने ज़ोर देकर पूछा। सभा में गूंजती सहमति से स्पष्ट था कि दरबारी संसप्तकों के सेनापति पर बहुत आशाएं लगाए बैठे थे।
उन्हें निर्देश दिए गए हैं कि कोई भी व्यक्ति... या कोई भी चीज सम्राट और आचार्य को परेशान न करे।
“वरारुचि ने अपनी माता से मिलने के लिए ऐसा समय क्यों चुना?” रानी उपश्रुति के होंठ असहमति की पतली रेखाओं की तरह सिकुड़ गए; उन्होंने उषांथा का नाम लेने से परहेज किया। “संकट के समय में उसे महल में ही रहना चाहिए। वह निश्चित रूप से देवी की चेतावनी से अवगत होगा।”

“बड़ी-माँ से मिलने का उनका कोई ज़रूरी कारण रहा होगा।” वराहमिहिर ने धनवंतरी की ओर एक नज़र डाली, जिसने अपनी नज़रें हटा लीं। “शायद उन्हें भी इतनी जल्दी हमले की उम्मीद नहीं थी। सच कहूँ तो, मुझे भी नहीं थी।”
महारानी माँ ने कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन जिस चिड़चिड़ेपन से उन्होंने अपने हाथ बांधे और दूसरी ओर देखा, उससे वराहमिहिर को पता चल गया कि उन्हें इस विषय पर उनकी राय पसंद नहीं आई।
“इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन यहाँ नहीं है,” क्षपणक की आवाज़ कुछ ऊँची हो गई, अधिकार की गूंज में थोड़ी झुंझलाहट छिपी थी। “हम यहाँ हैं। अगर असुरों को कटार चाहिए, तो वे महल में ज़रूर आएंगे। हमें अपनी पूरी ताकत से महल की रक्षा करनी होगी। आइए इसके लिए तैयारी करें।”
जैसे मानो उन्हें उसके शब्दों से ही शक्ति मिल गई हो, दरबारी सहमति में सिर हिलाने लगे। राहत महसूस करते हुए भी, वराहमिहिर ने सावधानी से हाथ उठाया। "हां, लेकिन हमें उन राक्षसों को शहर में तबाही मचाने से रोकने की भी कोशिश करनी होगी।"
“हम दोनों काम एक साथ कैसे कर सकते हैं?” एक दरबारी ने पूछा। “हम या तो शहर की रक्षा कर सकते हैं या महल की।”
“हमें दोनों की रक्षा करनी होगी,” वराहमिहिर दृढ़ थे। “अगर खंजर की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है, तो अवंती के नागरिकों की रक्षा करना भी हमारा कर्तव्य है। दोनों में से किसी एक को चुनने का कोई सवाल ही नहीं उठता।”
“मैं सहमत हूँ, आदरणीय दरबारीगण,” शंकु ने पहली बार बोलते हुए कहा। वह वराहमिहिर की ओर मुड़ी और बोली, “मुझे नगर में जाने की अनुमति दीजिए।”
“मैं आपके साथ चलूँगा,” धनवंतरी आगे बढ़ा। “मैं नगर रक्षक दल को संगठित करने में आपकी मदद करूँगा।” क्षपणक से वराहमिहिर की ओर देखते हुए उसने कहा, “राजगुरु और कालिदास सम्राट का साथ नहीं छोड़ सकते, इसलिए महल की रक्षा की जिम्मेदारी आप दोनों और महल के रक्षकों पर है। लेकिन मैं आपकी सहायता के लिए कुछ संसप्तक टुकड़ियाँ भेजूँगा।”
“हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेंगे,” वराहमिहिर ने आश्वासन दिया। “अच्छी तरह लड़ो, मेरे मित्रों।”
शंकु और वैद्य के हॉल से निकलते ही वराहमिहिर ने एक दरबारी से कहा, “कालिदास और आचार्य को असुरों के आक्रमण की सूचना भेज दो। उन्हें हमारे सामने मौजूद खतरे की प्रकृति के बारे में पता होना चाहिए।”

सद्गुणा की ओर मुड़ते हुए, सलाहकार ने निर्देश देना जारी रखा। “कृपया महारानी माँ और शाही परिवार के अन्य सभी सदस्यों को भूलभुलैया की सुरक्षा में ले जाएं। अपने आदमियों को यह सुनिश्चित करने के लिए कहें कि महल खाली कर दिया गया है, भूलभुलैया को सील कर दिया गया है और उसमें जाल बिछा दिए गए हैं, और किसी को भी कोई खतरा नहीं है।”
प्रमुख ने रानी उपश्रुति की ओर रुख किया और दोनों महल के पहरेदारों के साथ ऊपर के कमरों की ओर जाने वाली सीढ़ियों की ओर चल पड़े। वे सीढ़ियों पर आधे रास्ते ही पहुँचे थे कि वराहमिहिर ने सद्गुण को पुकारा।
“मैं पार्षद क्षपनाका के साथ परिषद कक्ष में रहूंगा। महल की सुरक्षा सुनिश्चित हो जाने के बाद मुझसे वहीं मिलें।”
महल के रक्षक निर्देशों का पालन करने के लिए तुरंत हरकत में आ गए और कनिष्ठ दरबारी क्षपणक, वराहमिहिर और तीन वरिष्ठ दरबारियों के सभा कक्ष में जाने पर जल्दबाजी में चर्चा करने लगे। महल के बाहर लगातार बारिश हो रही थी और उज्जैन में पीतल की घंटियों की संख्या और तीव्रता बढ़ती जा रही थी।
***

"क्या खंजर अभी तक घूलमास्टर को सौंप दिया गया है, राजगुरु?"
वेताला भट्टा धीमी आवाज सुनकर चौंक गए। बाहर बज रही खतरे की घंटियों की आवाज़ से परेशान होकर वे बंद खिड़की को बेचैनी से घूर रहे थे और सोच रहे थे कि ये घंटियाँ किस खतरे का संकेत दे रही हैं। लेकिन उन्हें इस बात की भी चिंता सता रही थी कि ये घंटियाँ कितनी तेज़ बज रही थीं - अगर ये शोर उनके राजा की मृत्यु- नींद में खलल डालता और उन्हें खलल डालता, तो सम्राट शायद कभी भी सीमावर्ती दुनिया से बाहर निकलने का रास्ता न खोज पाते।
एक और बात थी जो आचार्य को परेशान कर रही थी। एक वाक्यांश जो उन्होंने राजा के सीमा पार करते ही सुना था, एक धुंधली सी चेतावनी जो उनके मन के कोनों में खटक रही थी...
सावधान रहें... सावधान रहें...
बाईं ओर मुड़कर उन्होंने देखा कि कालिदास का विशालकाय रूप शयनकक्ष के मध्य से नीचे की ओर आ रहा है। उस दैत्य ने एक हाथ में अपनी तलवार और दूसरे हाथ में पीतल की बनी एक चौड़ी ढाल धारण कर रखी थी। हथियारों का यह दृश्य देखकर आचार्य विचलित हो गए।
विक्रमादित्य के निष्क्रिय शरीर पर एक नज़र डालते हुए, राजगुरु ने अपने हाथों से इशारा करके कालिदास को कमरे से बाहर जाने का निर्देश दिया। धीरे से

उठकर, वह उस विशालकाय व्यक्ति के पीछे-पीछे शयनकक्ष से बाहर निकल गए। जब वे बाहर गलियारे में पहुँचे, तब जाकर वेताल भट्ट ने बोलना शुरू किया।
“नहीं, कटार अभी भी राजा के पास है। शायद अभी तक उनकी मुलाकात बेताल से नहीं हुई है। शायद बेताल ने अभी तक कटार पर कब्ज़ा नहीं किया है।”
“क्या वह कटार लेने से इनकार करेगा?” कालिदास ने पूछा। “क्या वह ऐसा कर सकता है?”
“वह ऐसा कर सकता है।” आचार्य ने कंधे उचकाते हुए कहा। “वह इसे स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं है। लेकिन विक्रम को पूरा विश्वास था कि बेताल अपना वचन निभाएगा। इसीलिए उसने सीमावर्ती लोक की यह यात्रा करने का साहस किया है।” कालिदास ने सिर हिलाया और गलियारे के कोनों पर अपनी नजरें घुमाईं।
राजगुरु ने तलवार की ओर देखा। "बाहर क्या है?" उन्होंने सिर हिलाकर इशारा किया।
“राक्षस,” उस विशालकाय ने उत्तर दिया। “उन्होंने शहर पर हमला कर दिया है और तबाही मचा रहे हैं। मुझे बताया गया है कि हमारे कई सैनिक और नागरिक मारे जा चुके हैं।” उसकी तलवार पर पकड़ और कस गई, क्रोध और अधीरता से उसका जबड़ा सख्त हो गया। “धनवंतरी और शंकु शहर में प्रवेश कर चुके हैं। क्षपणक और वराहमिहिर नीचे हैं, महल को हमले से बचाने के लिए किलेबंदी कर रहे हैं।”
“और वरारुची?”
“लगता है वो बड़ी-माँ से मिलने गए हैं।” कालिदास ने गहरी साँस ली और उनकी चौड़ी छाती ऊपर-नीचे हुई। उनकी आँखों में चिंता झलक रही थी। “पता नहीं वो समय पर लौट पाएँगे या नहीं।”
“मुझे पता है कि आप बाकी लोगों के साथ मैदान में रहकर हमले का मुकाबला करना और लोगों की जान बचाना चाहते हैं,” वेताला भट्टा ने नरम लेकिन दृढ़ स्वर में कहा। “लेकिन हम, आप और मैं, ऐसा नहीं कर सकते। हमारी ज़रूरत यहाँ है।”
कालिदास को सिर हिलाते देख राजगुरु शयनकक्ष की ओर मुड़ गए और दरवाजा बंद कर लिया। उन्हें पता था कि उन्होंने जो कहा था वह अनावश्यक था – चाहे कुछ भी हो जाए, कालिदास पर भरोसा किया जा सकता था कि वे उस दरवाजे के बाहर खड़े होकर अपने राजा के लिए अपनी अंतिम सांस तक लड़ेंगे।
वेताल भट्ट को वह दिन याद था जब उन्होंने पहली बार उस छोटे अनाथ बच्चे को देखा था, जो लगभग आठ साल का दुबला-पतला था, लेकिन अपनी उम्र के हिसाब से लंबा था। विक्रमादित्य उस बच्चे को राज पुस्तकालय में लाए थे जहाँ राजपरिवार के बच्चों को पढ़ाया जाता था, और उन्होंने उसका परिचय कालिदास के रूप में कराया

था। युवा विक्रम ने बताया था कि उन्होंने उस बच्चे को लावा के पास एक मंदिर में छिपा हुआ पाया था, और उसे अपने अतीत की कोई याद नहीं थी। इसलिए वे उसे उज्जैन ले आए थे, और वे सोच रहे थे कि क्या आचार्य कालिदास को भी अपने संरक्षण में लेंगे।
राजगुरु को कुछ आशंकाएँ थीं – और वे कालिदास के प्रति काफी गहरी थीं। कालिदास मुश्किल से ही बोलते थे, और उनके सामाजिक कौशल भी बहुत ही कमज़ोर थे। लेकिन आचार्य ने युवा विक्रम की आस्था और कालिदास के प्रति स्नेह के कारण दृढ़ता दिखाई। हालाँकि कालिदास ने कभी भी बदले में स्नेह नहीं दिखाया; वह लगभग हठपूर्वक चुप और अंतर्मुखी थे। बात यहाँ तक पहुँच गई कि आचार्य राजकुमार को यह कहने ही वाले थे कि वे अब कालिदास को नहीं पढ़ा सकते, तभी एक शाम अमर सिंह अचानक उनसे मिलने आ गए। सलाहकार ने वेताल भट्ट को ताड़ के पत्ते पर लिखा एक छोटा, लेकिन बेहद मार्मिक कविता भेंट की, जो कृतज्ञता और मित्रता पर आधारित थी।
रचना की उत्कृष्टता को देखते हुए, वेताल भट्ट ने अमर सिंह की रचना की जमकर प्रशंसा करना शुरू कर दिया था, तभी व्याकरणविद् ने उन्हें रोक दिया - यह खुलासा करते हुए कि कविता वास्तव में कालिदास द्वारा विक्रमादित्य के लिए रची गई थी!
उस शाम, उज्जैन लाए जाने के एक साल से कुछ अधिक समय बाद, कालिदास के भीतर कुछ बदल गया था।
महल के बाहर बारिश तेज़ हो गई, जिससे खतरे की घंटियों की आवाज़ थोड़ी धीमी हो गई। राजगुरु ने मन ही मन मुस्कुराते हुए सिर हिलाया। उस शाम, कालिदास के भीतर कुछ स्थायी रूप से बदल गया था। उस युवा लड़के को विक्रमादित्य के प्रति अपने आत्मीय लगाव को समझने की कुंजी मिल गई थी।
उस शाम, कालिदास का पुनर्जन्म उस कालिदास के रूप में हुआ, जिसे वे प्यार करते थे, प्रशंसा करते थे और सम्मान करते थे - वही कालिदास जो अब शयनकक्ष के दरवाजे के बाहर खड़ा था, अपने राजा के लिए अपनी अंतिम सांस तक लड़ने को तैयार था। अपने सबसे पुराने दोस्त के लिए।
***

उज्जैनी के नज़र आने से बहुत पहले ही वरारुचि और शुक्राचार्य के कानों तक घंटियों की आवाज़ पहुँच चुकी थी। सलाहकार अँधेरे और बारिश में तेज़ी से आगे बढ़ रहा था, शहर के नज़दीक आते ही वह अपने घोड़े को और भी तेज़ दौड़ा रहा था, और शुक्राचार्य उसके साथ कदम मिलाकर चलने के लिए संघर्ष कर रहा था। मुख्य

पुरोहित ने दो-तीन बार वरारुचि को आवाज़ देकर पूछा कि क्या हो रहा है, लेकिन राजा के सौतेले भाई ने केवल हाथ से इशारा करके और तेज़ चलने को कहा। क्षिप्रा नदी के पश्चिमी तट पर घोड़ों को अचानक रोकते ही वरारुचि अपने घोड़े से कूदकर नदी के किनारे की ओर चल पड़ा, जहाँ एक ढके हुए दीपक की रोशनी में एक नाव पानी पर तैरती हुई दिखाई दे रही थी। नगर रक्षक दल के कुछ सैनिक नाव के पास खड़े होकर प्रतीक्षा कर रहे थे। क्षिप्रा नदी के उस पार, उज्जैनी की रोशनी बारिश में परावर्तित होकर फैल रही थी, मानो गेरू रंग की धुंध की नदी अपने किनारों को तोड़कर शहर की दीवारों पर धीरे-धीरे बह रही हो।
घंटियाँ लगातार बजती रहीं।
अपने घोड़े से उतरकर, शुक्राचार्य तेजी से तटबंध से नीचे उस स्थान पर पहुंचे जहां वरारुचि उस समय नगर रक्षक दल के सैनिकों के साथ गंभीरता से बातचीत कर रहे थे।
“क्या आप मुझे बताएँगे कि क्या हो रहा है?” महायाजक ने समूह के पास पहुँचते हुए पूछा।
"हमारा शहर हमले की चपेट में है," वरारुची ने रूखेपन से समझाया।
“कौन?” शुक्राचार्य ने भ्रम दूर करने के लिए अपना सिर हिलाया। “मेरा मतलब है, किसके द्वारा?”
“शायद आप हमारे साथ नहीं आना चाहेंगे,” पार्षद ने सवाल को टालते हुए जवाब दिया। “मुझे बताया गया है कि अंदर हालात काफी खराब हैं। बेहतर होगा कि आप यहीं रहें। ज्यादा सुरक्षित।”
“लेकिन महाराज, आप पर हमला क्यों हो रहा है?” शुक्राचार्य ने दृढ़ता से पूछा। “और यह कैसे संभव है? कुछ घंटे पहले जब हम निकले थे तब सब कुछ शांतिपूर्ण था।” “हम पर असुरों का हमला हो रहा है।” प्रधान पुजारी की आंखें हैरानी से खुलती देख वरारुचि ने गंभीर भाव से सिर हिलाया। “समझे मेरा मतलब? अंदर आने से बेहतर है यहीं रहना।”
पार्षद और सैनिक नाव में चढ़ने लगे, तभी शुक्राचार्य कुछ कदम आगे बढ़े। “लेकिन... मैं भी आना चाहूंगा।”
“क्यों?” वरारुचि ने चिढ़कर कहा। उज्जैनी की ओर हाथ हिलाते हुए उन्होंने पूछा, “क्या तुम मरना चाहती हो? अंदर बहुत बुरा हाल है... लगता है कई जानें जा चुकी हैं। यहीं रहो। अगर कल तक शहर बचा रहा तो तुम अंदर आ सकती हो।”
"मैं मदद कर सकता है।"

“क्या मदद?” एक पैर नाव में रखते हुए, पार्षद ने झुंझलाहट से शुक्राचार्य की ओर मुड़कर देखा। “कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम लड़ाई में मदद करोगे?”
“आप भूल गए हैं कि मैं एक वैद्य हूँ, महाराज।” मुख्य पुजारी कुछ देर रुका जब वहाँ मौजूद लोगों की निगाहें उस पर टिक गईं। “मैं घायलों की मदद कर सकता हूँ। विशेषकर सैनिकों की।”
नाव अपने लंगर से निकलकर काले पानी में घुस गई, नाविक तेज़ी से चप्पू चलाते हुए अंधेरे स्नान घाटों की ओर बढ़ रहे थे। शुक्राचार्य बीच में बैठे थे, उनके बगल में वरारुचि और नगर रक्षक दल का एक सिपाही था।
“आपको कैसे पता चला कि यह असुरों का हमला है?” मुख्य पुजारी ने पूछा।
उसके बगल में खड़े सैनिक ने जवाब दिया, "हमलावर विशालकाय राक्षस हैं जिनके सिर पर चार सींग हैं।"
"बस इतना ही?"
“उनका शरीर कठोर, कवच जैसा होता है जिसे भाले और तीर भेद नहीं पाते। तलवारें तो उन पर टकराकर चकनाचूर हो जाती हैं। और उनकी आंखें सफेद चांदनी की तरह चमकती हैं।”
शुक्राचार्य की धड़कन तेज़ हो गई। “क्या उनका रंग... गहरा नीला है? उनकी त्वचा?”
सिपाही ने सिर हिलाया। "पता नहीं। इतना अंधेरा है कि कुछ पता नहीं चल रहा, और वैसे भी उनके शरीर का अधिकांश भाग उस कवच से ढका हुआ है।"
“तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो?” वरारुची मुड़ा और बड़ी उत्सुकता से महायाजक की ओर देखा।
“कोई खास वजह नहीं। बस... अपनी यात्राओं में मैंने लोगों को असुरों के बारे में बात करते सुना है जिनकी आंखें चांदनी जैसी और त्वचा नीली होती है।” शुक्राचार्य थोड़ा हिचकिचाए और फिर संभले। “इसलिए मुझे जिज्ञासा हुई।” पार्षद ने सिर हिलाकर वैद्य को विदा कर दिया। "हमें मृतकों की अनुमानित संख्या का कुछ अंदाजा तो होना ही चाहिए," उसने सैनिकों की ओर आशा भरी निगाहों से देखा।
“महामहिम, तरह-तरह के आंकड़े बताए जा रहे हैं,” नाव के अगले हिस्से के पास बैठे सिपाही ने जवाब दिया। “कुछ लोग मरने वालों की संख्या पचास बता रहे हैं, कुछ का कहना है कि यह 75 के करीब है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, अकेले पूर्वी हिस्से में ही तीस लोग मारे गए हैं। हमें बस इतना ही पता है कि मरने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है।”

शहर की ओर देखते हुए, वरारुची ने एक भावुक शपथ ली।
“सबसे ज्यादा नुकसान अदृश्य आग से हो रहा है,” दूसरे सैनिक ने भय और विस्मय से कांपती आवाज में कहा। “क्योंकि इसे देखा नहीं जा सकता...”
“अदृश्य आग?” पार्षद ने बीच में ही टोकते हुए कहा।
“असुर ऐसी चीज़ फेंकते हैं जो आँखों से दिखाई नहीं देती, लेकिन छूते ही त्वचा को झुलसा देती है,” जहाज के अगले हिस्से पर खड़े सिपाही ने पुष्टि की। “मुझे एक गली में तीन शव मिले जो बुरी तरह जल चुके थे और पहचानना मुश्किल था। वे पहरेदार थे – मैं उनकी तलवारों से पहचान गया।”
"अदृश्य आग," वरारुची ने अविश्वास से बुदबुदाया।
“वे तलवारों से भी लैस हैं, महाराज। विशाल, नुकीली तलवारें, स्टील की तरह तेज। लेकिन वे देखने में ऐसी लगती हैं मानो हड्डियों से बनी हों।”
शुक्राचार्य ने अपनी सांस रोक ली, उन आदमियों के एक भी शब्द पर ध्यान नहीं दिया। असुर जिनके सिर पर चार सींग थे, कवच जैसे अभेद्य शरीर, सफेद चांदनी जैसी चमकती आंखें... और हड्डियों से बनी नुकीली तलवारें।
दिति के सात राक्षसी पुत्र। भयंकर मरुत। जन्म से असुर, निष्ठा से देव।
इस विडंबना ने शुक्राचार्य के होठों पर हल्की सी व्यंग्यात्मक मुस्कान ला दी। आखिरकार, वह जन्म से तो देवता थे, लेकिन निष्ठा से असुर थे। उनके लिए वफादारी ही सब कुछ थी और कुछ भी नहीं।
हंसी जल्दी ही गायब हो गई और उसकी जगह ठंडी, स्तब्ध कर देने वाली चिंता ने ले ली। वह इस बात पर भरोसा कर रहा था कि मानव राजा नरक की अग्नियों से हमले को रोक लेगा। लेकिन अब जब उसे हमलावरों की पहचान पता चल गई थी, शुक्राचार्य को समझ आ गया था कि इस युद्ध में नरक की अग्नियां बेकार होंगी - क्योंकि दिति ने चतुराई से दोनों तलवारों में मंत्रों का संचार कर दिया था ताकि चुड़ैलें उसकी कोख से पैदा हुए लोगों को नुकसान न पहुंचा सकें।
शुक्राचार्य इंद्र की उस रणनीति पर आश्चर्यचकित थे जिसमें उन्होंने मरुतों को उज्जैन भेजा था। मनुष्य उस कटार की रक्षा के लिए कुछ भी नहीं कर सकते थे। अब पूरी तरह से यही उस पर निर्भर था कि वह उज्जैन पहुंचे और सात राक्षसों को हलाहल पर अपना अधिकार जताने से रोके।

मरुत

विक्रमादित्य के चारों ओर कोहरा छाने से बहुत पहले ही सूर्य का प्रकाश फीका पड़ चुका था। अब केवल एक धुंधली, सफेद, निराकार अर्धप्रकाश ही दिखाई दे रहा था जो राजा के चारों ओर घूम रहा था, मानो एक सतर्क प्रहरी की तरह उन्हें देख रहा हो, जब वे समतल, गीले दलदली इलाके से गुजर रहे थे। हवा में नमी भरी हुई थी, और ऊपर से आती हल्की बूंदा-बांदी सम्राट पर एक चिपचिपे कफ़न की तरह जम रही थी। विक्रमादित्य के पैरों के नीचे की धरती नरम और क्षारीय थी, जिसमें छोटे-छोटे गड्ढों में गहरे हरे रंग का पानी भरा हुआ था। इन गड्ढों के किनारों पर उगी काई, लाइकेन और बौनी नरकट की झाड़ियों के अलावा, ज़मीन पर कोई वनस्पति नहीं थी; दलदली ज़मीन की एकरसता को तोड़ने के लिए कोई पेड़ या झाड़ी नहीं थी। आश्चर्यजनक रूप से, यद्यपि इस निर्जन वीरान स्थान में उसे अपना रास्ता खोजने का कोई तरीका नहीं था, फिर भी राजा के पैर सहज रूप से जानते थे कि उसे कहाँ ले जाना है।
विक्रमादित्य को यह याद नहीं था कि वह कितनी देर से चल रहे थे, तभी उन्हें अपने से कुछ आगे, बाईं ओर थोड़ा हटकर, कोहरे के पर्दे को चीरती हुई एक धुंधली नारंगी रोशनी दिखाई दी। कोहरा घना होते ही वह रोशनी टिमटिमाकर बुझ गई, और सम्राट ने इसे अपने मन का भ्रम समझकर नज़रअंदाज़ कर दिया। लेकिन थोड़ा आगे जाकर, उनके दाईं ओर एक और रोशनी दिखाई दी। फिर एक और, सीधे आगे। पहली रोशनी के विपरीत, ये दोनों रोशनी उनकी दृष्टि में लगातार बनी रहीं।
राजा को एहसास हुआ कि वह आखिरकार श्मशान घाट पर पहुंच गया है।

लगभग तुरंत ही, मानो किसी मौन आदेश का पालन करते हुए, कोहरा ज्वार की तरह छंट गया और विक्रमादित्य के सामने श्मशान भूमि प्रकट हो गई। सैकड़ों धुआं रहित चिताएं चारों दिशाओं में फैली हुई थीं, जो दलदली धुंध में विलीन होती जा रही थीं। कई चिताएं धीमी जल रही थीं, जबकि कई अन्य पूरी तरह से धधक रही थीं। इनके चारों ओर, राजा ने प्रेतों के समान मंडराते हुए पिशाचों के छोटे-छोटे समूहों को देखा, जो आग की देखभाल कर रहे थे और यह सुनिश्चित कर रहे थे कि मृतकों का अंतिम संस्कार पूर्ण और बिना किसी घटना के हो। मठवासी पिशाचों ने सम्राट पर कोई ध्यान नहीं दिया - उनका काम चिताओं पर लाए गए मृतकों के साथ था, न कि अपने पैरों पर चलने वाले जीवितों के साथ।
विक्रमादित्य ने उन प्रेत सेवकों पर भी ध्यान नहीं दिया। उनका ध्यान जलती हुई चिताओं के बीच उगे एक विशाल बरगद के वृक्ष पर केंद्रित था। वृक्ष इतना भव्य था कि उसकी ऊपरी शाखाएँ ऊपर घने कोहरे में छिपी हुई थीं। लेकिन उसकी निचली शाखाएँ श्मशान भूमि पर एक विशाल छतरी की तरह फैली हुई दिखाई दे रही थीं। इन शाखाओं से विशाल हवाई जड़ें जमीन तक फैली हुई थीं, जो स्तंभों का एक सुरक्षात्मक घेरा बना रही थीं - एक के बाद एक, संकेंद्रित वृत्तों में बाहर की ओर फैलती हुई। ये राख के रंग की जड़ें इतनी घनी थीं कि वृक्ष का तना पूरी तरह से दिखाई नहीं दे रहा था।
अपनी कमर में रखे खंजर को थपथपाते हुए, विक्रमादित्य पेड़ की ओर बढ़ा, यह सोचते हुए कि वह अंदर जाने का रास्ता कैसे खोजेगा।
लेकिन जैसे ही वह उलझी हुई हवाई जड़ों के सबसे बाहरी घेरे के पास पहुंचा, उसके ठीक सामने की जड़ें चमत्कारिक रूप से खुल गईं, जिससे एक संकरा गुफा जैसा प्रवेश द्वार बन गया। अंदर घोर अंधेरा था, लेकिन विक्रमादित्य ने सिर झुकाकर प्रवेश किया और चलना शुरू कर दिया। उसके पीछे, जड़ें पर्दे की तरह धीरे से वापस अपनी जगह पर आ गईं, लेकिन आगे और जड़ें रास्ता बनाने लगीं, जिससे राजा एक अंधेरी सुरंग से होकर आगे बढ़ा जो उसके ठीक आसपास खुलती और बंद होती रहती थी। यह सफर अंतहीन सा लग रहा था, इसलिए जब सुरंग अचानक तेज नारंगी रोशनी में खुली, तो विक्रमादित्य की आंखें चौंधिया गईं और वे चौंक गए। उन्होंने कुछ पल के लिए पलकें झपकाईं और आसपास के वातावरण से तालमेल बिठाने के लिए अपनी आंखों को ढँक लिया। फिर धीरे-धीरे अपने हाथ नीचे करके वे रोशनी की ओर चल पड़े।
और इसका स्रोत।
राजा एक विशाल, खुले मैदान में था, जिसका आकार निश्चित नहीं था; नीचे की मिट्टी चारों ओर छाया में गायब हो रही थी। इस खुले मैदान के बीचोंबीच एक

विशालकाय राक्षस मंडरा रहा था, जिसके सिर पर बालों की जगह आग की लपटें थीं। आग की मोटी लपटें उसके कंधों और पीठ पर बिखरी हुई थीं, जिससे कमरे में एक खुशनुमा चमक फैल रही थी।
उस पिशाच का शरीर चांदी जैसा और वाष्पशील था, जिसमें दो लंबे, प्रेत जैसे हाथों के अलावा कोई विशिष्ट शारीरिक संरचना नहीं थी, जिनके सिरे अजीब तरह से मुड़े हुए, तेज धार वाले पंजों में समाप्त होते थे। हालाँकि, उसकी विशेषताएं अधिक स्पष्ट थीं - एक पतला, कंकालनुमा चेहरा जिस पर एक स्थायी मुस्कान थी जो नुकीले दांत और तीखे दांत दिखाती थी। उसकी काली आँखों के गड्ढों में लाल रोशनी के छोटे-छोटे बिंदु जल रहे थे, जो सम्राट पर टिके हुए थे।
“नरक की आग के स्वामी को मेरा नमस्कार,” उस पिशाच ने अपनी बूढ़ी, कंकालनुमा आवाज़ में कहा। “अब जब आप यहाँ हैं, तो मुझे याद आया कि आप आएंगे।”
“आपको नमस्कार, घोलमास्टर,” विक्रमादित्य मुस्कुराया। “तो अगर आपको याद था कि मैं आऊंगा, तो आपको यह भी पता होगा कि मैं यहाँ किस लिए आया हूँ?”
“मुझे नहीं पता, हे विद्वान राजा।” सम्राट ने बेताल के लहजे में व्यंग्य का भाव पहचाना। “पर जब आप मुझे बताएँगे, तो मुझे याद रहेगा।”
***

पत्थर पर घोड़ों के खुरों की तेज़ आवाज़ शंकु का पीछा कर रही थी, जब वह नगर रक्षक दल के बीस घुड़सवारों के दल के आगे चल रही थी। अब जब नगर को उसके सामने आने वाले खतरों के बारे में पर्याप्त चेतावनी मिल चुकी थी, तो खतरे की घंटियाँ मंद पड़ने लगी थीं। बारिश भी थोड़ी कम हो गई थी, जिससे दृश्यता में सुधार हुआ था, और शंकु को राहत मिली कि उज्जैनी की सड़कें लगभग खाली थीं, जहाँ नागरिक अपने घरों के भीतरी हिस्सों में छिपे हुए थे। खुली सड़कों का मतलब था नगर रक्षक दल, संसप्तकों और शाही सेना के सैनिकों के लिए निर्बाध प्रगति, जिन्हें भी सेवा में लगाया गया था।
यह तो अच्छी खबर थी। दुर्भाग्य से, बुरी खबरें अच्छी खबरों पर भारी पड़ती रहीं।
शहर भर में हमले हो रहे थे, और किसी को भी यह अंदाजा नहीं था कि शहर को कितने असुरों का सामना करना पड़ रहा है। इन राक्षसों की अविश्वसनीय गति के कारण उनका पता लगाना लगभग नामुमकिन था। उज्जैन के किसी नए कोने से लगातार अंधाधुंध हमलों की खबरें आ रही थीं, और अब तक मिली जानकारी के अनुसार लगभग साठ लोगों की जान जा चुकी थी।

“हमें उस जीव का ध्यान भटकाना होगा,” शंकु ने घबराकर पीछे मुड़कर देखा। “तुममें से दो लोग दूसरी तरफ से जाओ और उसके पास पहुँचो। जब तक हम उस जीव को इस तरफ लाते हैं, तब तक तुम लोग उस घर के अंदर फंसे लोगों को आज़ाद करो। जाओ!”
दो घुड़सवार अलग होकर चले गए। शंकु ने कुछ पल असुर को घूरा, फिर अपना घोड़ा मोड़कर बाकी घुड़सवारों की ओर मुड़ी। “हमें उस प्राणी को जाल में फंसाना होगा। क्या हमें पता है कि सबसे नज़दीकी नगर सुरक्षा चौकी कहाँ है?”
“उस तरफ कुछ गलियों के बाद एक है,” सैनिकों में से एक ने संदेह से जवाब दिया। “लेकिन मुझे यकीन नहीं है कि वह अभी भी मौजूद है... और अगर है, तो क्या वहां अभी भी सैनिक तैनात हैं।”
“हमें जोखिम उठाना होगा,” शंकु ने कहा। “चलो जानवर पर हमला करके उसे चौकी की ओर खींचते हैं। तुम—” उसने एक सिपाही को बेतरतीब ढंग से चुना। “चौकी को तैयार रहने की सूचना दे दो।”
सिपाही चला गया, उसकी राहत साफ झलक रही थी। शंकु ने बाकी घुड़सवारों को देखा, उनके उदास चेहरे और एक-दूसरे को झिझकती निगाहों से देखने से उनकी आशंकाएं लगभग छिप ही रही थीं। शंकु को एहसास हुआ कि उसका विचार आत्मघाती था, लेकिन इन असुरों को रोकने के लिए कुछ तो करना ही था...
“चलो,” उसने अपने घोड़े को घुमाते हुए कहा। और उसकी आँखें हैरानी से चौड़ी हो गईं।
राक्षस ने दरवाजा पीटना बंद कर दिया था और गुस्से में सींगों वाला सिर हिलाते हुए भाग रहा था। घर और उसमें रहने वालों में उसकी रुचि खत्म हो गई थी, यह अच्छी बात थी। लेकिन अब वह उस दिशा में बढ़ रहा था जहाँ से वे दो घुड़सवार प्रकट होंगे जिन्हें उसने मार गिराया था। और वे सीधे उस राक्षस के रास्ते में आ गिरेंगे – निश्चित मृत्यु की ओर।
शंकु ने अपने घोड़े को सरपट दौड़ाया और राक्षस का ध्यान आकर्षित करने के लिए जोर-जोर से चिल्लाते हुए गली में दौड़ पड़ी। उसके पीछे घुड़सवार अधिक सावधानी से उसका पीछा कर रहे थे।
जैसे ही वह घोड़े पर सवार हुई, शंकु का हाथ उसकी काठी में बने चौड़े मुंह वाले थैले में रखी मोटी, गोलाकार तलवारों में से एक पर जा लगा। लोहे से बनी, जिसकी बाहरी धार बेहद तेज थी, चक्रम् घुमंतू जनजाति का एक प्राचीन, दूर से वार करने वाला हथियार था, जो बेहद घातक था, लेकिन चलाना अविश्वसनीय रूप से कठिन था। चक्रम् को काठी से उठाकर, सावधानी से खुद को संभालते हुए, शंकु उस खूंखार जानवर की ओर चल पड़ी।

***

वररुची ने अपने दाहिने हाथ में छोटी कटारी तलवार को कसकर पकड़ा और खुले बाजार चौक के किनारे स्थित इमारतों की छतों का जायजा लिया।
घातक उरुमी युद्ध में उनका सबसे पसंदीदा हथियार था, लेकिन इसके सभी गुणों के बावजूद, वरारुचि जानते थे कि उज्जैन के सबसे बड़े बाज़ार के खंडहरों के बीच खड़े राक्षस के मोटे, कंकालनुमा कवच को कोई उरुमी भेद नहीं सकती। उनका सबसे अच्छा विकल्प कटारी था - बशर्ते कि वे उसके बिल्कुल करीब जाकर सटीक निशाना लगा सकें।
लेकिन इस विशालकाय जीव के साथ तो यह भी एक गंभीर चुनौती थी।
वररुचि ने उस राक्षस को बाज़ार में तबाही मचाते हुए देखा था। पहरेदारों और एक दर्जन संसप्तकों ने उस राक्षस को काबू में करने की कोशिश की, लेकिन उसके जवाबी हमले की भयंकरता चौंकाने वाली थी। राक्षस ने सैनिकों को एक तरफ धकेल दिया, एक संसप्तक का सिर दो टुकड़ों में काट दिया और अदृश्य ऊर्जा के विस्फोटों से चार सैनिकों को जलाकर मार डाला।
शहर के रक्षकों को ही राक्षस के हमले का सामना नहीं करना पड़ा। एक दुकान में शरण लिए तीन निर्दोष मज़दूरों ने अनुचित समय पर भागने की कोशिश की; भागते हुए तीनों को देखते ही उस राक्षस ने उनका पीछा किया और बेरहमी से उनकी हत्या कर दी। उसकी इस क्रूरता को देखकर वरारुचि दंग रह गए। पार्षद ने बाज़ार चौक में कम से कम पंद्रह सैनिकों को पड़ा हुआ देखा और उन्हें लगा कि अवंती के वे बहादुर सैनिक अब कभी उठ नहीं पाएंगे। यह सोचकर उनके रगों में क्रोध उमड़ आया और उन्होंने दृढ़ निश्चय से अपने जबड़े भींच लिए।
अगर उसे अपनी आखिरी इच्छा भी पूरी करनी हो तो भी वह इस असुर को मार गिराएगा। उसकी नज़र उस इमारत पर पड़ी जो उस राक्षस के थोड़ा बाईं ओर खड़ी थी। उसकी छत की ऊँचाई सही थी और वह इतनी नज़दीक थी कि वह उस दानव पर हमला कर सके। एक पल भी बर्बाद किए बिना, वरारुची अँधेरे में छिपते हुए, चौक का चक्कर लगाते हुए उस इमारत की ओर बढ़ गया...
***

महल के मार्ग पर चल रहे युद्ध को देखकर वराहमिहिर की आंखें विस्मय और भय से चौड़ी हो गईं।
राक्षस पुल के आधे रास्ते तक पहुँच चुका था, अपनी विशाल दाँतेदार तलवार से वार कर रहा था, और महल के पहरेदारों को जिस तेज़ी से पीछे हटना पड़ रहा था, वह

चिंताजनक था। महल की छतों और खिड़कियों से तीरंदाजों ने राक्षस की प्रगति को धीमा करने की कोशिश की थी, लेकिन अब, अवंती को घायल होने के डर से उन्होंने भी हमला करना बंद कर दिया था।
घायल और क्षत-विक्षत सैनिक पुल पर पड़े थे और झील के गहरे पानी में तैर रहे थे।
“पीछे हटो, पीछे हटो...” महल के रक्षकों के प्रमुख को अपने आदमियों को निर्देश देते हुए सुना जा सकता था। “पीछे हटो... हम महल के द्वार बंद कर रहे हैं।” वराहमिहिर के ठीक नीचे महल के भारी द्वार थे, और सलाहकार ने देखा कि चिंतित सैनिक और महल के सेवक उन्हें रोकने के लिए डटे हुए थे, ताकि राक्षस के और करीब आने से पहले ही वे द्वार बंद कर सकें। बाहर खड़े लोगों को राक्षस के रहमो-करम पर छोड़ने के डर ने ही उन्हें समय से पहले द्वार बंद करने से रोका था। “द्वारों को जल्दी बंद करना होगा,” क्षपनाका की तनाव भरी आवाज वराहमिहिर के कानों में गूंजी, जो उसके बगल वाली खिड़की से बाहर झुकी हुई थी। “हम उस राक्षस को अंदर नहीं आने दे सकते।”
युद्ध के शोर के बीच अंततः उनके वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश सुनाई दिए, और पुल पर मौजूद सैनिक महल की सुरक्षा की ओर पीछे हटने लगे। हालाँकि, प्रतिरोध कमजोर पड़ते ही, राक्षस और भी तेज़ी से आगे बढ़ने लगे और द्वार तक की दूरी को तेज़ी से कम करते चले गए।
“जल्दी करो, जल्दी करो,” सद्गुणा ने आग्रह किया। “जल्दी से फाटकों के पीछे जाओ।”
जैसे ही सैनिक महल में वापस जाने लगे, क्षपनाका खिड़की से बाहर निकली और द्वार के सामने वाली गैलरी की पूरी लंबाई में दौड़ पड़ी। "जल्दी से द्वार बंद करो... जल्दी करो," उसने भारी दरवाजों पर तैनात सैनिकों पर चिल्लाते हुए कहा। "उस चीज़ को महल में प्रवेश मत करने दो।"
पुल पर अफरा-तफरी मच गई, सैनिक लड़ाई छोड़कर सुरक्षा के लिए भागने लगे, इससे पहले कि फाटक उन्हें घेर लें। उनके पीछे राक्षस ने धावा बोल दिया, उनकी निहत्थी पीठों पर वार करते हुए उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया। वराहमिहिर उस भयानक, नुकीली तलवार से मारे गए लोगों की गिनती नहीं कर पाए।
“झील में कूद जाओ!” सद्गुणा चिल्लाया। द्वार तेज़ी से बंद हो रहे थे, और यह स्पष्ट था कि बचे हुए पहरेदारों में से कोई भी समय पर सुरक्षित स्थान तक नहीं पहुँच पाएगा। “कूदो, कूदो...” सरदार की आवाज़ में अपने सैनिकों के लिए पिता तुल्य चिंता झलक रही थी।

सैनिक ज़ोरदार छपछपाहट के साथ पानी में कूद पड़े और पुल खाली हो गया। महल के अंदर, दरवाज़े को जल्दी बंद करने के लिए और भी धक्का-मुक्की होने लगी। गैलरी से नीचे देखते हुए, वराहमिहिर ने राक्षस को धीमा होते देखा, मानो वह अपनी अगली रणनीति का आकलन कर रहा हो। फिर, अपना सिर नीचे करके, वह पुल पर दौड़ पड़ा। “जल्दी करो, जल्दी करो... द्वार बंद करो!” वराहमिहिर ने पूरी ताकत से चिल्लाते हुए कहा। “असुर आ रहा है।”
उसने अपनी सांस रोक ली, दरवाजों को धीरे-धीरे बंद होते हुए देखता रहा... जब तक कि एक आखिरी झटके के साथ वे गूंजती हुई खड़खड़ाहट के साथ बंद नहीं हो गए।
देखते ही देखते, पहरेदारों ने भारी बोल्ट लगा दिए।
पुल के बाहर, बंद द्वार से अभी भी कुछ दूरी पर, राक्षस रुक गया।
महल में क्षपणक की आवाज गूंजते ही वराहमिहिर ने गहरी सांस छोड़ी।
“धनुषधारियों, तुम्हारा निशाना स्पष्ट है। अपने तीर चलाओ।”
मिसाइलें तेज़ी से पुल पर गिरीं, लेकिन अपनी पूरी ताकत के बावजूद वे बेअसर रहीं, असुर के अस्थि कवच पर मुश्किल से ही कोई खरोंच आ पाई। वहीं, वह विशालकाय जीव अपनी जगह पर डटा रहा और मूर्खतापूर्ण हठ के साथ द्वार को घूरता रहा। गोलियों की बौछार को अनसुना करते हुए, राक्षस ने अपना एक हाथ सिर के ऊपर उठाया, मानो कोई बड़ा पत्थर पकड़े हुए हो। फिर, अचानक हाथ को नीचे की ओर झटका देते हुए, उसने अपने हाथ में जो कुछ भी था - जो आँखों से दिखाई नहीं दे रहा था - उसे महल की ओर फेंक दिया। वराहमिहिर केवल हवा में हल्की सी हलचल और सुरंग जैसी आकृति देख पाए, जो उस तेज़ गति से आते हुए गोले के गुजरने का संकेत दे रही थी...
अगले ही पल, अत्यधिक वजन और बल वाली कोई चीज जोरदार धमाके के साथ गेट से टकरा गई!
वराहमिहिर ने द्वार को हिलते-डुलते देखा, और उसके धातु के हिस्से पर ज़ोरदार प्रहार हुआ जिससे वह विकृत रूप से फूल गया। पास में खड़े पहरेदार और महल के सेवक लड़खड़ाकर पीछे गिर पड़े, मानो उन पर बैलों का झुंड टूट पड़ा हो।
गैलरी और नीचे के एट्रियम में सन्नाटा छा गया। इससे पहले कि कोई संभल पाता, द्वार पर दूसरा प्रहार हुआ। इस बार द्वार अपने कब्ज़ों पर कांप उठा, बोल्ट अपने घेरों पर खिंचकर टूट गए। द्वार के खुलने पर गलियारे से एक दिल दहला देने वाली दहाड़ उठी, दरार धीरे-धीरे चौड़ी होती गई और दहलीज पर तलवार लिए खड़ा राक्षस दिखाई दिया...
टूटे हुए द्वार को धकेलते हुए, वह जानवर महल में प्रवेश कर गया।

***

महल के दूसरे छोर पर, सबकी निगाहों से छिपा हुआ, एक मारुत का सींगों वाला सिर चुपचाप महल की दीवारों के पास स्थित अंधेरी झील की सतह को चीरता हुआ दिखाई दिया।
तुरंत आगे बढ़ने के बजाय, मारुत कुछ देर तक पानी में तैरता रहा, ऊपर स्थित इमारत का जायजा लेता रहा, खिड़कियों और छतों में हलचल देखता रहा, और किसी ऐसी आवाज का इंतजार करता रहा जिससे पता चले कि उसे देख लिया गया है। पुल पर हो रही लड़ाई की आवाजें राक्षस को साफ सुनाई दे रही थीं, जबकि झील के उस पार से उसके एक साथी की गर्जना रात के सन्नाटे को कंपा रही थी।
जब मारुत ने यह सुनिश्चित कर लिया कि रास्ता सुरक्षित है, तो वह पानी से बाहर निकला और महल की दीवार पर चढ़ने लगा। वह आश्चर्यजनक फुर्ती और दृढ़ता से दीवार पर चढ़ता चला गया, सहारे के लिए सबसे संकरे उभारों और पैर रखने की जगहों का इस्तेमाल करता रहा। अंत में, उस दीवार पर बहुतायत से उगी मोटी लताओं की मदद से, राक्षस एक खुले, असुरक्षित चबूतरे पर पहुँच गया।
यह सुनिश्चित करते हुए कि किसी ने उसे देख न लिया हो, मारुत चुपचाप महल के द्वार की ओर बढ़ा, चलते-चलते उसका दाहिना हाथ उसकी गर्दन के पीछे चला गया। राक्षस के नाखून उसकी गर्दन के पीछे की गहरी नीली त्वचा में धंस गए, उंगलियां मांस में गहराई तक घुस गईं, जब तक कि उसका हाथ नीचे दबी किसी लंबी और कठोर चीज पर जकड़ नहीं गया। एक सहज, बिना किसी प्रयास के झटके से, मारुत ने उस चीज को मांस से बाहर खींच लिया।
दीवार पर लगे दीपों के समूह से आती रोशनी राक्षस पर पड़ी जब वह छत पार करके द्वार से अंदर दाखिल हुआ। रोशनी ने उस वस्तु को रोशन कर दिया जिसे मारुत ने उसकी पीठ से निकाला था - एक बड़ी, नुकीली, तेज तलवार। एक ऐसी तलवार जो मारुत की अपनी रीढ़ की हड्डी से बनी थी!
हड्डी की तलवार को छोटे-छोटे चापों में घुमाते हुए, राक्षस एक गलियारे से नीचे उतरा और नरक की अग्नि से निकलने वाली ऊर्जा को ग्रहण करने लगा। उज्जैन में अवतरित होने के बाद से ही मरुतों ने तलवारों की ऊर्जा को महसूस किया था - आखिरकार, ये तलवारें उनकी शापित माता दिति की रचना थीं, जो उनके रक्त और स्तन के दूध से शुद्ध हुई थीं। अब, हर कदम आगे बढ़ने के साथ, मरुत ने नरक की अग्नि की ऊर्जा को और अधिक तीव्र होते हुए महसूस किया, जो उसके चारों ओर के वातावरण में स्पंदित हो रही थी।
तलवारें बहुत करीब थीं। इसका मतलब था कि मानव राजा भी आसपास ही होगा।

मारुत एक मोड़ पर मुड़ा और दो कदम चलने के बाद रुक गया। नरक की आग गलियारे में मौजूद दो दरवाजों में से एक के पीछे छिपी थी – लेकिन गलियारे की रखवाली कोई कर रहा था। एक लंबा-चौड़ा, मजबूत कद-काठी वाला, सांवले चेहरे वाला व्यक्ति, जिसके बाल ऊँची चोटी में बंधे थे। उसने एक हाथ में भारी तलवार और दूसरे हाथ में एक बड़ी कांस्य ढाल पकड़ रखी थी।
उनकी निगाहें एक-दूसरे से मिल गईं।
राक्षस ने देखा कि मनुष्य ने अपनी छाती फुलाकर पूरी ऊंचाई तक खड़ा हो गया, ढाल हमले को रोकने के लिए तैयार थी, तलवार चट्टान की तरह स्थिर और प्रहार करने के लिए तत्पर थी। मनुष्य का हावभाव एक जोरदार लड़ाई का वादा कर रहा था, जिससे राक्षस प्रसन्न हो गया। बहादुर योद्धाओं के रक्त के समान हड्डियों की तलवारों को कोई और चीज पोषण नहीं देती थी...
बढ़ती उत्सुकता के साथ, मारुत ने हड्डी की तलवार को दोनों हाथों में कसकर पकड़ा और मनुष्य की ओर एक कदम बढ़ाया। मनुष्य ने भी दो कदम आगे बढ़कर जवाब दिया।
एक-दूसरे के करीब आते हुए, वे धीरे-धीरे एक-दूसरे के चारों ओर चक्कर लगाने लगे।
***

नाव के किनारे लगते ही और उज्जैनी में प्रवेश करते ही शुक्राचार्य के लिए वरारुचि और नगर रक्षक दल के सैनिकों को चकमा देना आसान हो गया था। वरारुचि के मन में नरसंहार रोकने की चिंता सर्वोपरि थी, इसलिए सलाहकार ने तुरंत अपने सैनिकों को इकट्ठा किया और मुख्य पुजारी की ओर देखे बिना ही घोड़े पर सवार होकर निकल गए।
शुक्राचार्य अब शहर के पश्चिमी हिस्से की एक सुनसान गली में घुटनों के बल बैठे थे, उनकी पीठ झुकी हुई थी और वे मरुतों का मुकाबला करने के लिए नए-नए विचारों पर मंथन कर रहे थे – साथ ही अपने दिमाग में बन रही एक नई और कारगर योजना की मजबूती का परीक्षण भी कर रहे थे। उनके सामने, एक दुकान के अंधेरे आंगन की मिट्टी पर बना एक मंडल था, जो अवंती काल में उनके द्वारा बनाए गए किसी भी मंडल से कहीं अधिक जटिल था।
उसने अपने सारे विकल्प तौल लिए थे, और यह स्पष्ट था कि वह जो भी करे, परिणाम मनुष्यों के पक्ष में नहीं होगा। अपनी असाधारण शक्ति और जादुई शक्तियों के बल पर मरुतों की जीत निश्चित थी। वह बेशक सीधे हस्तक्षेप करके युद्ध का रुख बदलने की कोशिश कर सकता था, लेकिन उसे यह भी यकीन नहीं था कि वह सफल होगा। इसके

अलावा, इसका मतलब था खुद पर ध्यान आकर्षित करना, मानव राजा के सामने अपनी असली पहचान उजागर करना और अवंती में अपनी उपस्थिति के बारे में देवताओं को सचेत करना। मुख्य पुजारी को यह जोखिम लेने में दुविधा थी। खासकर तब जब उसे बदले में कटार मिलने का भी आश्वासन नहीं था।
फिर भी, वह जानता था कि यदि उसने शीघ्र कार्रवाई नहीं की, तो दिति के पुत्र विजयी होंगे और हलाहला हमेशा के लिए खो सकता है।
हवा की दिशा में अचानक आए बदलाव ने युद्ध के कोलाहल को शुक्राचार्य के कानों तक नए जोश के साथ पहुँचा दिया, जिससे उन्हें एक निर्णय लेने के लिए मजबूर होना पड़ा। अब केवल एक ही रास्ता खुला था। उन्हें मनुष्यों की मदद करनी थी ताकि वे मरुतों का सामना कर सकें। इसलिए नहीं कि वे उन्हें हरा दें - यह तो एक कोरी कल्पना होती। बल्कि इसलिए कि वे उनकी मदद कर सकें जिससे युद्ध इतना लंबा खिंच जाए कि वे उस समय फैली अराजकता का फायदा उठाकर महल में प्रवेश कर सकें... और स्वयं वीषाद का खंजर प्राप्त कर सकें।
इस धुंधली सी उम्मीद पर भरोसा रखते हुए, शुक्राचार्य जमीन पर बैठ गए, पैर मोड़े और आंखें बंद कर लीं। वे मनुष्यों को हमले के प्रति अधिक प्रतिरोधी, अधिक मजबूत और अधिक लचीला बनाकर शुरुआत करेंगे। वे उन्हें खोई हुई शक्ति और साहस वापस पाने में मदद करेंगे, ताकि वे दिति के पुत्रों से लंबे समय तक लड़ सकें और उन्हें परेशान कर सकें। मंडल पर हाथ रखे हुए, मुख्य पुजारी ने दशा- महाविद्याओं का आह्वान करना शुरू किया।
इसके बाद उन्होंने उज्जैन की मानव आबादी पर पुनर्जन्म का मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया।

घोलमास्टर

जी हाँ, मुझे वह सब कुछ याद है जो आपने अभी-अभी मुझे खंजर के बारे में बताया और यह भी कि आप इसे मेरे पास क्यों लाए हैं।
विक्रमादित्य के सामने बेताल खड़ा था, उसका धधकता सिर खाली कक्ष में टिमटिमाती परछाइयाँ बिखेर रहा था। उसने राजा का वृत्तांत चुपचाप, बिना किसी रुकावट के सुना था, और यद्यपि उसका कंकालनुमा चेहरा भावहीन था, विक्रमादित्य ने पिशाच स्वामी की आवाज़ में उदासी - यहाँ तक कि त्याग - का एक अंश महसूस किया।
"क्या आप मेरी इस विनती को स्वीकार करेंगे कि मैं इस खंजर को अपनी सुरक्षा में रखूं?"
काफी देर तक बेताल चुप रहा। जब आखिरकार उसने बोलना शुरू किया, तो उसकी आवाज़ दयालु, आश्वस्त करने वाली और कृतज्ञता से भरी हुई थी।
“हे महाराज, मुझे अपना वह वादा याद है जो मैंने बहुत समय पहले किया था,” उसने कहा। “यह वादा कि आवश्यकता पड़ने पर मैं आपकी सहायता करूंगा। अब जब आप इतनी आशा लेकर मेरे पास आए हैं, तो मैं आपको निराश होकर कैसे लौट सकता हूं? हे सम्राट विक्रमादित्य, मेरा अस्तित्व आप पर ही निर्भर है। मैं हलाहल की रक्षा का दायित्व सहर्ष ग्रहण करूंगा।”
राजा मुस्कुराया, मानो उसके कंधों से बोझ उतर गया हो। उसने अपनी कमर में हाथ डालकर कटार निकाली और उसे पिशाच सरदार की ओर बढ़ा दिया। कटार के हाथ बदलते ही,

सम्राट को लगा जैसे कटार की मूठ में चमकती हुई इंद्रधनुषी किरणें उसे शरारती ढंग से चिढ़ा रही हों।
“मैं तुम्हें इसके प्रति सावधान रहने की याद नहीं दिलाऊँगा। तुम सर्वज्ञानी से किए गए मेरे वादे के बारे में पहले से ही जानते हो। मुझे भरोसा है कि तुम मेरे वचन का पालन करने में मेरी मदद करोगे।”
“मैं प्राचीन देवताओं जितना ही प्राचीन हूँ,” बेताल ने अपने हाथों में खंजर थामे हुए उत्तर दिया। “यदि उनमें से किसी ने आपको यह सौंपा है, तो आपकी सेवा करना मेरे लिए सम्मान की बात होगी।”
“परन्तु याद रखना कि मैं इस कटार को सीमालोक में इसलिए नहीं लाया कि इसकी जिम्मेदारी तुम्हें सौंप दूं,” विक्रमादित्य ने याद दिलाया। “हलाहल की जिम्मेदारी मेरी ही रहेगी, और सिर्फ मेरी ही। देव और असुर मानते हैं कि कटार मेरे पास है, और मैं उन्हें कभी भी इसके विपरीत सोचने का कोई कारण नहीं दूंगा। मैं तुम्हें वचन देता हूं कि हलाहल की लालसा रखने वाले लोग इस कटार के लिए सीमालोक की शांति भंग नहीं करेंगे।”
“हे बुद्धिमान राजा, मैंने कभी आपके वचन या आपके निष्पक्षता पर संदेह नहीं किया,” घूलमास्टर ने उत्तर दिया। “अब शांति से जाओ।”
सम्राट ने आभार व्यक्त करते हुए सिर झुकाया और जाने के लिए मुड़ गए। बेताल उनके पीछे-पीछे चले। लेकिन जैसे ही वे उस कक्ष के किनारे के पास पहुँचे जहाँ जड़ों का पर्दा दिखाई देने लगा, राजा रुक गए और पिशाच स्वामी पर विचार करने लगे।
“तुम्हें मेरे आने की जानकारी थी, तुम्हें खंजर और मेरी विनती की जानकारी थी। क्या तुम्हें यह भी पता था कि तुम हलाहला स्वीकार करोगे?”
"मैंने ऐसा किया, जब मुझे याद आया कि मैं पहले ही इसे आपके लिए रखने के लिए सहमत हो चुका था।"
“तुम्हें तो सब कुछ पता है जो हो चुका है। क्या तुम्हें नहीं पता कि इन सबका अंत कैसे होगा?”
बीटाल कुछ पल सोच-विचार में डूबा रहा, फिर उसने सिर हिलाया। “मैं समझ गया कि तुम क्या कहना चाहते हो,” उसने कहा। “बॉर्डरवर्ल्ड में सब कुछ पहले ही घटित हो चुका है – एक तरह से यह बाकी तीनों लोकों का भविष्य है। लेकिन नहीं, दुर्भाग्य से मुझे चीजें तभी याद रहती हैं जब वे घटित होती हैं – ठीक वैसे ही जैसे तुम इंसान कभी-कभी किसी घटना को पहले देखने या अनुभव करने के बाद याद रखते हो, भले

ही वह घटना तुम्हारी आँखों के सामने ही घटी हो। तुम जानते हो मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ… जैसे कोई भूला हुआ सपना खुल कर साकार हो रहा हो?” विक्रमादित्य ने सहमति में सिर हिलाया।
“मेरे लिए, हर पल ऐसा ही है,” घोलमास्टर ने कहा। “मैं जो कुछ भी देखता, सुनता, कहता और करता हूँ, वह सब पहले भी हो चुका है। ऐसा लगता है जैसे मैं एक ही वास्तविकता को बार-बार जी रहा हूँ। यह कभी-कभी बहुत परेशान करने वाला हो सकता है। अलविदा, बुद्धिमान राजा।”
सम्राट ने एक बार फिर सिर हिलाया और आगे बढ़ा, तभी जड़ें फिर से अलग हो गईं। ***

शंकु यह नहीं बता सकी कि उसके घोड़े के खुरों की धमक का असर हुआ या उसकी चीख का, लेकिन जिस जानवर का वह पीछा कर रही थी, वह आखिरकार रुका और मुड़ गया। यही वह पल था जिसका वह इंतजार कर रही थी।
स्वयं को संभालते हुए, उसने चक्रम को हवा में उछाल दिया। चक्रम राक्षस के बाईं ओर दूर तक एक हल्की सी सरसराहट के साथ चला गया, उसकी गति में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे लगे कि वह राक्षस के पास कहीं भी जाएगा... लेकिन अंतिम क्षण में, चक्रम ने दिशा बदल दी, और राक्षस के सिर की ओर तेज़ी से बढ़ते हुए वार किया। फिर भी, जब चक्रम अपने लक्ष्य से कुछ ही फीट दूर था, राक्षस झुक गया, और चक्रम बिना किसी नुकसान के रात के अंधेरे में गायब हो गया।
शंकु ने शाप दिया। चक्रम् सबसे कपटी हथियारों में से एक था, जिसे समझना लगभग असंभव था। फिर भी, इस असुर ने बड़ी सहजता से इसे चकमा दे दिया था। शंकु ने एक और चक्रम् निकालकर उसे राक्षस पर फेंका। लेकिन उसकी हताशा ने उसके विवेक को प्रभावित किया और चक्रम् सीधे राक्षस की छाती पर जा लगा, जो उसके मोटे कवच से टकराकर उछल गया।
पार्षद तीसरी अंगूठी लेने के लिए हाथ बढ़ा ही रही थी कि तभी राक्षस तेजी से दौड़ता हुआ आया और सीधे उसकी ओर आ गिरा।
शंकु को पहले ही चेतावनी दी गई थी कि ये जानवर बहुत तेज होते हैं, लेकिन फिर भी उसने मानसिक रूप से जो तैयारी की थी और जो वास्तविकता उसने देखी, उसके बीच एक अंतर था।
राक्षस उछलता-कूदता गली में तेज़ी से भागा, और अविश्वसनीय गति से दूरी कम करता चला गया। शंकु को हर बार जब उस दानव का पैर ज़मीन पर पड़ता, तो ज़मीन कांपती हुई महसूस होती थी। वह उसके और करीब आता जा रहा था, उसकी चमकीली आँखें शंकु पर टिकी हुई थीं। उसने अपने पीछे घुड़सवारों को चिल्लाते और उकसाते

सुना, लेकिन वह उस राक्षस को अपनी ओर आते देख पूरी तरह से मंत्रमुग्ध हो गई थी।
“भागो, पार्षद जी... कृपया भागो!”
अंततः एक सैनिक की आवाज़ शंकु के मन में गूंजी और वह होश में आ गई। उसने घबराकर अपने घोड़े को घुमाया और उसे सरपट दौड़ाया। उसके सामने, नगर रक्षक दल के घुड़सवार पहले ही इधर-उधर भागने लगे थे, खतरे से बचने के लिए सड़कों पर निकलने के रास्ते तलाश रहे थे। पीछे से, उसने राक्षस के पैरों की धमक और उसके गले से निकलती कर्कश गुर्राहट सुनी।
फिर कोई भारी चीज - शंकु को लगा जैसे कोई चौड़ा बीम हो, या शायद पत्थरों से भरा एक बड़ा बोरा - उसके घोड़े से टकरा गई।
दर्द से कराहते हुए घोड़ा लड़खड़ाया और उसके नीचे गिर पड़ा, उसके पिछले पैर किसी भी चीज़ के प्रहार से उखड़ गए। जलते हुए बालों और मांस की तीखी गंध शंकु की नाक में घुस गई, जैसे ही वह पीछे की ओर लुढ़की और काठी से नीचे गिर गई। उसका घोड़ा, जिसके पिछले पैर और कूल्हे हड्डियों तक झुलस गए थे, एक तरफ लुढ़क गया, फिर कभी नहीं उठा।
शंकु गीली ज़मीन पर पीठ के बल गिर पड़ी। कुछ पल के लिए वह अचेत पड़ी रही। फिर, जैसे ही उसकी आँखें साफ़ होने लगीं, उसने राक्षस का चेहरा उल्टा देखा, जो उसके ऊपर झुका हुआ था, उसकी आँखें चाँदी-सफ़ेद चमक रही थीं, और उसके होंठ क्रोध से भरे हुए थे।
दांत पीसते हुए, असुर ने अपना दाहिना पैर शंकु के सिर के ऊपर उठाया और उस पर बेलगाम हिंसा के साथ वार किया।
***

छत पर दुबके वरारुचि पर निराशा की एक गहरी लहर छा गई। वह बाजार चौक के चारों ओर जितनी तेज़ी से दौड़ सकता था, दौड़ा और बिना साँस लिए छत पर चढ़ गया, फिर भी नीचे चौक में देखने पर उसने देखा कि राक्षस उससे दूर होता जा रहा है। बचे हुए कुछ सैनिक और संसप्तक सुरक्षित दूरी पर हट गए थे और उस राक्षस से लड़ने के मूड में नहीं थे। यह स्पष्ट था कि असुर ने बाजार में अपनी रुचि खो दी थी और शहर के किसी अन्य हिस्से में तबाही मचाने की तैयारी कर रहा था।
मैं उस चीज को भागने नहीं दे सकता!
वररुची ने छत और उस राक्षस के बीच की दूरी का तुरंत जायज़ा लिया। यह एक बहुत बड़ी खाई थी, इतनी चौड़ी कि एक छलांग में इसे पार करना उसके लिए नामुमकिन था।

और हर गुज़रते पल के साथ यह खाई और चौड़ी होती जा रही थी। यह इंसानी तौर पर नामुमकिन था...
मैं उस चीज को भागने नहीं दे सकता!
वरारुचि ने कटारी को हाथ में कसकर पकड़ रखा था और खड़े हो गए। गति प्राप्त करने के लिए पाँच कदम पीछे हटकर, वे छत के किनारे तक दौड़े और राक्षस की ओर झपटे।
उसके नीचे, अस्त-व्यस्त पड़ा बाज़ार हवा के झोंके की तरह तेज़ी से गुज़र गया। उसने देखा कि नगर रक्षक दल के कुछ सैनिक उसकी ओर देख रहे थे, उनके मुँह आश्चर्य से खुले रह गए थे। उसने राक्षस की चौड़ी पीठ देखी - और उसने देखा कि राक्षस ने खतरे को भांपते हुए अपने सींगों वाले सिर को चारों ओर घुमाया। और फिर वह नीचे उतरने लगा।
अपने दृढ़ संकल्प के बावजूद, वरारुचि को उम्मीद थी कि वह राक्षस से काफी दूर गिर जाएगा और बुरी तरह से ज़मीन पर टकराएगा, जिससे हड्डियाँ चूर-चूर हो जाएँगी। लेकिन जैसे-जैसे वह उस विशालकाय राक्षस के करीब आता गया, उसे एहसास हुआ कि उसने किसी तरह एकदम सही छलांग लगाई है।
वह योजना के अनुसार असुर की पीठ पर उतरेगा।
उनके शरीरों के टकराने से एक भारी, चटकने जैसी आवाज़ हुई जो चौक के चारों ओर बनी इमारतों की दीवारों से टकराई। वरारुचि को राक्षस के कवच जैसे कवच से टकराते ही अपने अंगों में तेज़ दर्द महसूस हुआ। दर्द को नज़रअंदाज़ करते हुए, उसने अपना बायाँ हाथ राक्षस की गर्दन पर कसकर पकड़ लिया और उसकी पीठ से लटक गया। अपनी पूरी ताकत से उसने अपनी बांह से राक्षस का गला घोंट दिया, उसके सिर को ऊपर और पीछे की ओर धकेल दिया। फिर, बिजली की तेज़ी से, उसने कटारी उठाई और उसे राक्षस की खुली गर्दन के दाहिने हिस्से में घुसा दिया, और तब तक गहरा धंसाता रहा जब तक कि छोटी सी तलवार मूठ तक अंदर न धंस गई।
राक्षस ने दर्द भरी दहाड़ मारी और अपना शरीर घुमाया। इस अचानक हरकत से वरारुचि की पकड़ ढीली पड़ गई और वह ज़मीन पर गिर पड़े, गिरते समय कटारी उनके हाथ से छूट गई। सलाहकार असुर के शक्तिशाली पैरों के बीच गिरे, लेकिन तुरंत मुड़कर खुद को खतरे से बचा लिया। घूमकर, वह राक्षस के प्रकोप का सामना करने के लिए तैयार हो गए।
लेकिन असुर चौक के बीचोंबीच खड़ा रहा, अपनी गर्दन के दाहिने हिस्से को पकड़े हुए, उसकी उंगलियां कटारी से बने गहरे, खुरदुरे घाव में धंसी हुई थीं।

वरारुचि ने देखा कि उसकी उंगलियों के बीच से एक गाढ़ा, चांदी जैसा तरल पदार्थ तेजी से बह रहा था, जिसका रंग उस जानवर की आंखों जैसा ही था।
चौक में मौजूद सैनिक उस राक्षस को कुछ क्षणों तक अनिश्चित रूप से डगमगाते हुए देखकर अचंभित रह गए। फिर उसने अपना सिर घुमाकर वरारुचि की ओर देखा, उसकी आँखें फीकी पड़ रही थीं और काली व धुंधली होती जा रही थीं। पार्षद बचाव के लिए कोई कदम उठाने ही वाला था कि आकाश से बिजली की एक तेज चमक आई और राक्षस को जा लगी।
चौक में खड़े लोग सहम गए, मानो उन्हें लगा कि बिजली की तेज चमक से वे सब नष्ट हो जाएंगे। लेकिन जैसे ही उनके चारों ओर बिजली कड़की और पूरे शहर में गूंजी, उन्हें एहसास हुआ कि उनका भ्रम टूट गया था। चमत्कारिक रूप से, उनमें से किसी को भी कोई नुकसान नहीं हुआ था।
उन्हें यह भी एहसास हुआ कि वे अकेले हैं। चौक में आतंक मचाने वाले चार सींगों वाले असुर का कोई निशान नहीं था।
***

महल के द्वार पर पूरी तरह से अफरा-तफरी मची हुई थी।
असुर रक्षकों पर टूट पड़ा, दाएं-बाएं वार करते हुए, घबराकर भाग रहे पहरेदारों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। ऊपर की गैलरी से तीरंदाजों ने तीरों की बौछार कर दी, लेकिन राक्षस आगे बढ़ता रहा, तीर उसकी हड्डियों के कवच पर टहनियों की तरह टूट रहे थे। राक्षस ने गैलरी में ऊर्जा के दो गोले छोड़े, जिसका अच्छा असर हुआ - अपने एक दर्जन साथियों को सूखते और जलते देख तीरंदाजों का प्रतिरोध खत्म हो गया और तीर रुक गए। कुछ ही क्षणों में, राक्षस महल के प्रांगण को पार कर गया और ऊपर की मंजिलों और गैलरी की ओर जाने वाली सीढ़ियों की ओर बढ़ रहा था।
हार को भांपते हुए और बचाव को एकजुट करने के लिए बेताब होकर, महल के रक्षकों का प्रमुख उस जानवर पर झपटा और उसका रास्ता रोकने की कोशिश की।
“इसे घेर लो, साथियों!,” उसने असुर पर वार करते हुए चिल्लाकर कहा। “लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। हम इसे अभी भी हासिल कर सकते हैं...”
सबसे निचली सीढ़ी पर एक पैर रखकर, राक्षस घूमकर सद्गुण की चुनौती का सामना करने के लिए तैयार हो गया। चार रक्षक अपने सेनापति के आदेश पर पहुंचे, लेकिन चारों ने प्रतिक्रिया देने में देरी की। अपनी तलवार के एक ही वार से राक्षस ने पहले बूढ़े योद्धा को निहत्था कर दिया। फिर, जब सरदार भयभीत और निहत्था खड़ा था, तो उस क्रूर जानवर ने दोबारा प्रहार किया और उसका सिर धड़ से अलग कर दिया।

सतर्कता और अविश्वास भरी निगाहों से असुर को महल के पुल पर आगे बढ़ते देखा गया। राक्षस पुल के आधे रास्ते तक ही पहुँचा था कि उस पर बिजली गिरी। अगले ही पल, पुल खाली हो गया, सिवाय अवंती के मारे गए सैनिकों के शवों के जो उस पर बिखरे पड़े थे।
***

राजा के शयनकक्ष के बाहर, कालिदास झील से आए मारुत के साथ भयंकर संघर्ष में उलझे हुए थे।
सलाहकार ने सबसे पहले हमला किया, अपने प्रतिद्वंद्वी को चौंकाने के इरादे से अचानक आगे बढ़ते हुए। लेकिन मारुत बहुत तेज था, और कालिदास ने मारुत की तलवार के सटीक प्रहार से अपनी कृपाण खो दी। अपने शत्रु को निहत्था देखकर राक्षस ने भयंकर आक्रमण किया, लेकिन हारने के बजाय, सलाहकार ने अपनी ढाल से वारों को सफलतापूर्वक रोका, जब तक कि हड्डी की तलवार चकनाचूर होकर गिर नहीं गई। टूटी हुई तलवार को एक तरफ फेंककर, मारुत कालिदास की ओर दौड़ा, और दोनों अब निहत्थे ही भिड़ गए।
मरुत ने कालिदास को सिर से लगातार प्रहार करके वश में करने की कोशिश की, लेकिन कालिदास ने अपने विशाल हाथों का इस्तेमाल करके घातक सींगों से खुद को बचा लिया और राक्षस की गतिविधियों को सीमित कर दिया। हालांकि, मरुत अपने भारी शरीर और ऊंचाई के कारण अधिक शक्तिशाली था और उसने अपने लंबे हाथों का इस्तेमाल करते हुए कालिदास के पेट और पसलियों पर लगातार कई घातक प्रहार किए। इन प्रहारों से कालिदास की सांस फूल गई और पूरे शरीर में दर्द की लहर दौड़ गई, जिससे वह झुक गया। इस मौके का फायदा उठाते हुए, मरुत ने कालिदास को पीछे से जकड़ लिया। कालिदास ने राक्षस की पकड़ से खुद को छुड़ाने के लिए संघर्ष किया, लेकिन जितना अधिक उसने संघर्ष किया, उतने ही अधिक शक्तिशाली हाथ उसके चारों ओर कसते गए, उसे निचोड़ते, कुचलते, गला घोंटते हुए, उसकी जीवन शक्ति को निचोड़ते हुए...
अपनी बची हुई शक्ति का इस्तेमाल करते हुए, कालिदास ने अपने सीने और गले पर जकड़े हाथों को झटक कर छुड़ा लिया। उस घातक पकड़ से मुक्त होकर, वह मुड़े और अपने दाहिने हाथ को मुट्ठी में कसकर बंद कर लिया, जिसे उन्होंने मारुत के कवच वाले पेट पर ज़ोर से मारा। सलाहकार की बांह में एक असहनीय दर्द का झटका लगा और उसकी उंगलियों के ऊपर की त्वचा फट गई, लेकिन उन्हें इस बात की संतुष्टि मिली कि उनके प्रहार से राक्षस का कवच टूट गया। उन्होंने तुरंत अपनी बाईं मुट्ठी

से भी उसी जगह पर वार किया। और भी तेज़ दर्द हुआ, लेकिन इस बार कालिदास का हाथ और भी गहरा चला गया, जिससे कवच अंदर धंस गया और टूट गया।
मरुत आश्चर्य से पीछे हट गया, लेकिन कालिदास ने संभलने का समय देने के बजाय, अपना कंधा राक्षस पर ज़ोर से मारा और उसे पीछे धकेल दिया। मरुत ने कालिदास की पीठ पर मुक्के मारकर हमले को रोकने की कोशिश की, लेकिन कालिदास ने अपनी पूरी ताकत से धक्का दिया, दबाव बनाते हुए, अपने हाथों से राक्षस के धड़ को जकड़ लिया। गति पकड़ते हुए, दोनों गलियारे के अंत तक और एक खुले चबूतरे पर जा गिरे। कालिदास फिर भी आगे बढ़ते रहे, अपने इरादे में दृढ़ रहे, मरुत को अपने आगे धकेलते हुए तब तक ले गए जब तक वे चबूतरे की पत्थर की दीवार तक नहीं पहुँच गए। दोनों योद्धा दीवार तोड़कर नीचे पानी में ईंट-पत्थर बिखेरते हुए अंदर घुस गए। एक पल के लिए वे चबूतरे के किनारे पर डगमगाए रहे और फिर कालिदास के अंतिम धक्के से वे एक जोरदार छपछपाहट के साथ झील में गिर पड़े।
ठंडे पानी में गिरते ही कालिदास की मारुत पर पकड़ ढीली पड़ गई और राक्षस ने लात मारकर खुद को छुड़ा लिया। परामर्शदाता पानी के अंदर जाते ही ऊपर की ओर देखने लगा, मारुत को ढूँढ़ने लगा। हमलावर को दूर जाते देख, कालिदास उसका पीछा करने के लिए ऊपर की ओर उछले, तभी ऊपर से पानी की सतह पर एक तेज़ रोशनी चमकी... उसी क्षण, परामर्शदाता के शरीर में एक तेज़ दर्द की लहर दौड़ गई और उसे अपने चारों ओर पानी उबलता हुआ महसूस हुआ।
दर्द और गर्मी को मन से दूर धकेलते हुए, कालिदास पानी की सतह पर आ गए। गहरी साँसें लेते हुए, उन्होंने जलते हुए झील में मरुत की तलाश की। लेकिन वह राक्षस कहीं भी दिखाई नहीं दिया।
***

शंकु ने अचरज से अपना सिर हिलाते हुए अपने आसपास के वातावरण को देखा।
वह एक संकरी गली में खड़ी थी, जिसके किनारे छोटे-छोटे घर एक-दूसरे से सटे खड़े थे। सारे घर वीरान लग रहे थे, और अंधेरे में जितना वह देख पा रही थी, उससे लग रहा था कि उनमें से कई खंडहर हो चुके हैं, कुछ खतरनाक तरीके से झुके हुए हैं, और कुछ रात के अंधेरे में बस टूटे-फूटे ढांचे बनकर खड़े हैं। हवा में पुरानी, जली हुई लकड़ी की गंध फैली हुई थी, और जैसे-जैसे वह गली में आगे बढ़ती गई, उसे लगा जैसे उसके होठों पर राख का स्वाद आ रहा हो।
घुमावदार गली से निकलकर जब वह खुले मैदान में आई, तब जाकर शंकु को एहसास हुआ कि वह कहाँ है। उसके दाहिनी ओर, घरों का समूह एक विशाल दीवार तक फैला हुआ था,

जिसमें एक बड़ा द्वार बना हुआ था। दीवार के पीछे से चौकस सिरों की तरह कई पहरेदार मीनारें निकली हुई थीं।
शंकु समझ गया कि वह उज्जैन के उत्तरी द्वार को देख रही थी, जहाँ कुछ ही रात पहले उसने अश्विनों के संघ के विरुद्ध मोर्चा संभाला था। और उसके चारों ओर की झोपड़ियाँ उसी अश्विनी हमले के जले हुए अवशेष थे।
उसने एक बार फिर असमंजस में अपना सिर हिलाया।
कुछ क्षण पहले, वह शहर के दक्षिणी भाग में, बारिश से भीगी एक सड़क पर लेटी हुई थी और हमलावर असुरों में से एक के चेहरे को घूर रही थी। उसने भय से देखा कि कैसे उस राक्षस ने अपना विशाल पैर उठाकर उसे कुचल कर मार डाला। उसने देखा कि वह पैर नीचे आया और ऊपर का आकाश ढक गया। अगले ही पल, उसने खुद को उज्जैन की उत्तरी दीवार से बहुत दूर, जली हुई और सुनसान गली में अकेला पाया, जहाँ न तो उस राक्षस का कोई निशान था और न ही नगर रक्षकों का।
शंकु को आश्चर्य हुआ कि क्या वह सपना देख रही थी। शायद वह मर चुकी थी, राक्षस के पैर के नीचे कुचल गई थी, और यह उसकी आत्मा थी, शरीर से मुक्त होकर, अपनी प्रिय अवंती में स्वतंत्र रूप से विचरण कर रही थी?
लेकिन अगर वह सिर्फ आत्मा ही थी, तो उसके सिर में उस जगह दर्द क्यों हो रहा था जहाँ घोड़े से गिरने पर उसका सिर पत्थर की सड़क से टकराया था? उसने धीरे से हाथ उठाकर उस दर्द वाली जगह को छुआ और सिहर उठी। जब उसने हाथ नीचे किया, तो उसे अपनी उंगलियों पर खून की चिपचिपी नमी महसूस हुई। उसे खून बह रहा था और दर्द हो रहा था। वह मरी नहीं थी, यह तो निश्चित था।
तभी उज्जैन पर बिजली गिरी। बिजली के कड़कने से धरती हिल उठी, और शंकु ने देखा कि दूसरी, तीसरी बिजली भी शहर पर गिरी - फिर चौथी, एक के बाद एक। कुल मिलाकर, उसने सात बिजलीें गिनीं।
उसे याद आया कि उज्जैन में असुर बिजली की कड़क के रूप में प्रकट हुए थे। क्या इसका मतलब यह था कि और भी असुर आने वाले थे? वह दौड़ पड़ी और उत्तरी द्वार की ओर चल पड़ी, यह सोचती हुई कि क्या यह सब एक सपना था जिससे वह जाग जाएगी।
***

वेतला भट्ट का हाथ राजा के माथे पर कांप रहा था और उसके होंठ उन्मादी मंत्रों का जाप कर रहे थे। खोपड़ियों के गड्ढों से निकलने वाली रोशनी कभी कम तो कभी ज्यादा हो रही थी, कभी तेज लाल चमक रही थी, तो कभी लगभग पूरी तरह से काली हो रही थी।

बाहर गलियारे में भीषण संघर्ष शुरू होने के समय ही विक्रमादित्य के हाथ से कटार गायब हो गई थी, और राजगुरु ने शोर को अनसुना करने की पूरी कोशिश की ताकि वे सम्राट को वापस लाने पर अपना ध्यान केंद्रित कर सकें। वे लगभग सफल हो ही गए थे कि तभी बिजली फिर से चमकने लगी, दो बिजली के झटके महल के बहुत करीब गिरे। आचार्य को समझ नहीं आ रहा था कि ये क्या हो रहा है, लेकिन उनके लिए राजा को मृत्यु-नींद से जगाने पर ध्यान केंद्रित करना कठिन होता जा रहा था। विक्रमादित्य की सांसें लगभग रुक चुकी थीं, उनका शरीर बिस्तर पर बेजान पड़ा था, चेहरा एकदम पीला पड़ गया था।
आचार्य ने अपनी आँखें बंद रखीं और राजा के माथे पर ठंडा पसीना आने तक अपना काम करते रहे। आँखें खोलते ही राजगुरु ने देखा कि शयनकक्ष तीव्र लाल रोशनी से जगमगा रहा है और उनका उत्साह चरम पर पहुँच गया। लेकिन अगले ही पल रोशनी मंद पड़ गई और फिर पूरी तरह बुझ गई। सम्राट कांप उठे और अकड़ गए, फिर पलंग पर गिर पड़े।
अपने सूखे होंठों को चाटते हुए, चिंता से पीला पड़ा चेहरा लिए, वेतला भट्ट ने अपनी आंखें बंद कर लीं और मंत्रों का जाप करने में वापस लग गए।
“राजगुरु, मैं सीमावर्ती दुनिया में कितने समय तक रहा?”
वेतला भट्ट के हृदय में राहत की लहर दौड़ गई। एक क्षण के लिए वह आँखें बंद करके चुपचाप बैठ गया, अपनी तनावग्रस्त नसों को शांत करने का प्रयास कर रहा था। अंत में उसने राजा की ओर देखा, जो कोहनी के बल बैठा हुआ था और थकी हुई आँखों से मुख्य सलाहकार को निहार रहा था।
“विक्रमा, तुम वापस आ गए!”
“हां, लेकिन मैं बॉर्डरवर्ल्ड में कितने समय तक रहा?” सम्राट ने फिर पूछा। मुझे खेद है कि इसमें बहुत समय लग गया। आपके अनुपस्थित रहने के दौरान उज्जैन पर हमला हो गया है।
“हम पर किसने हमला किया है?”
राजा का चेहरा चिंता से भरा हुआ था और उन्होंने उठने की कोशिश की, लेकिन उनके थके-हारे शरीर ने उनका साथ नहीं दिया। थकान से उनका सिर तकिए पर गिर पड़ा, तभी आचार्य ने सहारा देने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।
“नहीं विक्रम, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए,” उनका स्वर कोमल था लेकिन दृढ़ था। “तुम अभी-अभी मृत्यु-नींद से जागे हो…”
“लेकिन हम पर हमला किसने किया है, आचार्य?” विक्रमादित्य ने बढ़ती हुई बेचैनी के साथ जोर देकर पूछा।

आचार्य के उत्तर देने से पहले ही शयनकक्ष का द्वार खुल गया। राजगुरु ने रक्षा मुद्रा में अपना भाला उठाते हुए मुड़कर देखा तो द्वार पर क्षपनाका खड़ी थी, जिसका बाण धनुष पर चढ़ा हुआ कमरे की ओर ताना हुआ था। उसके पीछे कुछ महल के रक्षक खड़े थे।
“ओह, सम्राट वापस आ गए हैं।” राहत की सांस लेते हुए उन्होंने धनुष नीचे रखा और कमरे में प्रवेश किया। “हम यह देखने आए थे कि यहाँ सब ठीक है या नहीं।” आचार्य से सम्राट की ओर देखते हुए उन्होंने पूछा, “क्या कटार सुरक्षित है?”
वेतला भट्टा ने सिर हिलाया। “बाहर क्या हो रहा है? कालिदास कहाँ हैं?”
“वह यहाँ नहीं है,” क्षपणक ने गलियारे की ओर देखा, मानो उसे आधा यकीन था कि कालिदास प्रकट होकर उसकी बात का खंडन करेंगे। “लेकिन ऐसा लगता है कि हमने असुरों को एक बार फिर परास्त कर दिया है, राजगुरु।”
“क्या वे चले गए?” आचार्य के कंधे ढीले पड़ गए। “क्या सभी चले गए?”
“महल के द्वारों पर हमला करने वाला राक्षस सचमुच बिजली की एक चमक में गायब हो गया है। उज्जैनी पर एक से अधिक बार बिजली गिरी, और वराहमिहिर का मानना है कि वे सभी उसी रास्ते से वापस चले गए हैं जिससे वे आए थे।”

क्रोध

दंडकभुक्ति एक बदसूरत, अप्रिय कस्बा था, इमारतों, झोपड़ियों और कच्चे मकानों का एक जर्जर समूह जो पहाड़ियों से नीचे, धातु के ढेरों और भट्टियों के बीच लड़खड़ाता हुआ उतरा था और नीचे मैदानों पर दुर्गंध की तरह फैला हुआ था। पहली लौह खदान के बनने से बहुत पहले, यह जगह एक शांत, साधारण सा गाँव हुआ करती थी, लेकिन अब यहाँ केवल आर्थिक लालच के ही निशान थे, जिसने उस धरती को रौंद डाला था जहाँ जीवनदायी फसलें और फलदार पेड़ उगते थे। यह स्पष्ट था कि इस कस्बे के निवासी ज़मीन के ऊपर की चीज़ों से ज़्यादा ज़मीन के नीचे की चीज़ों में रुचि रखते थे।
दंडकभुक्ति भूदृश्य पर एक धब्बा थी, फिर भी शूरासेना केंद्रीय शस्त्रागार के बरामदे की छाया में बैठकर इसे बड़े हर्ष और गर्व से देख रहे थे। वांगा शासन के अधीन भी, शस्त्रागार दंडकभुक्ति का प्रशासनिक केंद्र था - अब यह गणतंत्र में मगध अभियान के अस्थायी मुख्यालय के रूप में कार्य कर रहा था।
“क्या बहुत से लोग हताहत हुए हैं?” शूरासेना ने शहर से अपनी प्रशंसा भरी नज़र हटाकर कपिला और जनरल दैपायाना की ओर देखते हुए पूछा, जो उसके साथ थे। सुबह की तेज़ धूप से उसकी आँखें झपकने लगीं और उसने थोड़ा सा आँखें सिकोड़ लीं।
“जब वे... तो हमने चार आदमियों को खो दिया,” कपिला ने कहना शुरू किया, लेकिन उसके भाई के अधीरता भरे हाथ के इशारे से उसकी बात अधूरी रह गई।
“मैं अपने नुकसान की बात नहीं कर रहा हूँ। क्या बहुत सारे स्थानीय लोग मारे गए?” मगध के राजकुमार ने दक्षिण की ओर एक नज़र डाली, जहाँ कौवे अभी भी हवा में

उड़ते हुए, हाल ही में मरे हुए लोगों की हड्डियों के बीच टुकड़े खोज रहे थे। “खासकर मजदूर?”
“हमने वांगा के सभी सैनिकों और आधिकारिक प्रतिनिधियों को मार डाला,” दैपायाना ने जवाब दिया। “जनता को आज्ञापालन के लिए बाध्य करने के लिए ऐसा करना हमेशा ही उचित होता है। लेकिन नहीं, मुझे नहीं लगता कि आधे दर्जन से ज़्यादा मज़दूर मारे गए। जो लोग मारे गए वे विद्रोही थे और उन्हें सबक सिखाने के लिए ऐसा करना ज़रूरी था।”
“अनुपालन के लिए,” शूरासेना ने सिर हिलाया। “लेकिन ध्यान रहे कि हम उनमें से बहुतों को सबक न सिखाएं। हमें खदानों और फाउंड्री में काम जारी रखने के लिए श्रमिकों की आवश्यकता है। और मुझे उम्मीद है कि खदान इंजीनियर अभी भी मौजूद हैं। गिरिव्रजा से हमारे अपने प्रतिस्थापन आने तक कम से कम दो दिनों के लिए उनकी आवश्यकता है।”
“मैं समझ गया, महाराज,” सेनापति ने कहा।
कुछ देर तक तीनों रईस चुपचाप बैठे रहे और बड़े-बड़े प्यालों में ठंडा, किण्वित नारियल पानी पीते रहे। अंत में कपिला बोली।
“विक्रमादित्य का यह दूत जो अवंती पर देवों और असुरों के आक्रमण की खबर लेकर महल में आया था... क्या वह किसी तरह मगध की सहायता मांग रहा था?” “विक्रमादित्य की सिंधुवर्त को हूणों और शकों से बचाने की ज़िद को देखते हुए मुझे यही उम्मीद थी,” शूरसेना ने उत्तर दिया। “लेकिन दूत ने बस इतना कहा कि विक्रमादित्य अवंती के सहयोगी राज्यों को हमलों और उनके कारणों के बारे में बताना चाहते थे। सैनिकों की कोई माँग नहीं की गई... न ही कुछ और।”
“क्या यह कहानी सच हो सकती है कि सर्वज्ञ भगवान ने विक्रमादित्य को हलाहल दिया था?” कपिल एक ही समय में संदेह और विस्मय दोनों से भरे हुए लग रहे थे। “एक प्राचीन देवता किसी मनुष्य पर भरोसा क्यों करेंगे?”
शूरासेना ने कंधे उचकाते हुए कहा, “मैंने जासूसों को तथ्यों की पुष्टि करने का आदेश दिया है, लेकिन मुझे विक्रमादित्य के झूठ बोलने का कोई कारण नहीं दिखता – उनका धर्म उन्हें ऐसा करने की अनुमति कभी नहीं देगा।” उनके चेहरे पर धीरे-धीरे एक धूर्त मुस्कान फैल गई। “दरअसल, मुझे उम्मीद है कि हमें जो कुछ भी बताया गया है वह सच है।”
कपिला और दैपायन ने शूरसेना की ओर उत्सुकता से देखा।
"वांगा के खिलाफ इस चुनाव अभियान में एक बात हमेशा मुझे परेशान करती रही है," शूरासेना ने अपनी सीट से उठते हुए कहा।

कपिला और सेनापति की निगाहें उसका पीछा करती रहीं, जब वह एक रेलिंग से टिककर शहर की उत्तरी सीमा पर स्थित महाशिलाकंटकों की कतार को धूप में तिरछी नज़रों से देखने लगा। “वह मूर्ख सुदासन कहीं विक्रमादित्य से मदद की गुहार न लगा दे, और अवंती के समर्थन के बदले न जाने क्या-क्या रियायतें न दे दे। और अगर अवंती हस्तक्षेप करता है, तो हम उम्मीद कर सकते हैं कि सिंधुवर्त के सभी कठपुतली शासक वांगा का साथ देंगे।”
शूरासेना ने मुड़कर बाकी दोनों पुरुषों की ओर देखा। “लेकिन अगर विक्रमादित्य के पास सचमुच सर्वज्ञानी का खंजर है और देव और असुर उसे चाहते हैं, तो उन्हें सुदूर वंगा में कुलाधिपति सुदासन की दुर्दशा से कहीं अधिक चिंता करनी पड़ेगी। हलाहल और हूणों और शकों के खतरे के बीच, मुझे लगता है कि हम बिना किसी बाधा के मगध के विस्तार को आगे बढ़ाने के लिए स्वतंत्र होंगे। पहले वंगा, उसके बाद कलिंग और ओद्रा। फिर शायद प्राग्ज्योतिषपुरा...”
“तो फिर, क्या हम ताम्रलिप्ति पर कब्जा करने की तैयारी शुरू कर दें, महाराज?” दैपायन ने उत्सुकता से अपने हाथ मलते हुए पूछा।
“हमें ऐसा करना चाहिए, जनरल। बिना देरी किए।”
***

"क्या यह अंतिम परिणाम है?"
विक्रमादित्य ने सभा की मेज पर बिखरे ताड़ के पत्तों से नज़रें उठाकर देखा। उन्होंने थकी हुई, नींद से रहित आँखों से अपने चारों ओर के चेहरों को देखा; पिछली रात की थकान से उनका अपना चेहरा मुरझाया हुआ और पीला पड़ गया था। ताड़ के पत्तों पर आकृतियाँ और टिप्पणियाँ खुदी हुई थीं, उज्जैन के विभिन्न क्षेत्रों और स्थानों के नामों के आगे संख्याएँ अंकित थीं।
वररुची ने सिर हिलाया। "मुझे लगता है कि बस इतना ही है - जब तक कि किसी नए स्थान पर और शव न मिल जाएं।"
आचार्य ने कहा, "यह न भूलें कि झील में अभी भी मछली पकड़ने का काम जारी है। हो सकता है और भी शव निकाले जाएं।"
सम्राट ने आह भरी और अपना ध्यान पत्तों पर केंद्रित किया। “पूरे शहर में लगभग तीन सौ चालीस लोग मारे गए हैं, जिनमें से सौ से अधिक तो अकेले महल के द्वार पर ही मारे गए।” उन्होंने सिर हिलाया। “अब तक, अवंती पर हुए तीन हमलों में हमने एक हज़ार तीन सौ जानें गंवाई हैं।”
परिषद कक्ष में सन्नाटा पसरा हुआ था। बाहर, सुबह की हल्की धूप कल के बारिश के बादलों के बीच से छनकर आ रही थी, हालांकि पूरब से चल रही सुहावनी हवा के कारण

वे बादल भी जल्दी ही छंट रहे थे। सुबह का समय भयभीत जनता को संभालने और रात भर हुए नुकसान का जायजा लेने में बीता था, और पार्षद अपने राजा को रिपोर्ट देने के लिए महल में लौट आए थे।
क्षपनाका ने कहा, “लोग सदमे में हैं। चारों ओर सिर्फ डर का माहौल है।”
“जिनके पास जाने के लिए और जगह है, उन्होंने शहर छोड़ना शुरू कर दिया है,” वराहमिहिर ने आगे कहा। “मेरी कार्यशाला में काम करने वाले एक सहायक ने संदेश छोड़ा है कि वह जा रहा है और उज्जैन वापस आने का उसका कोई इरादा नहीं है।” विक्रमादित्य ने अपने होंठ दबाए और अपने जुड़े हुए हाथों को देखते हुए कुछ नहीं कहा। फिर भी, उनकी आँखों में अपने लोगों की दुर्दशा सुनकर हो रही पीड़ा स्पष्ट झलक रही थी।
"अगर हम उन्हें भगाने में कामयाब नहीं होते, तो स्थिति और भी बदतर हो सकती थी," चिकित्सक ने सबको स्थिति का सकारात्मक पहलू दिखाने के प्रयास में यह बात कही।
“यह सच है,” राजा का चेहरा गर्व और कृतज्ञता से दमक उठा। “तुमने अपने शहर के लिए शेरों की तरह लड़ाई लड़ी।”
“मुझे अब भी यकीन नहीं हो रहा कि मैंने वो छलांग लगाई,” वरारुची ने हैरानी से अपनी ठुड्डी पर उगी दाढ़ी को सहलाते हुए कहा। “मैंने जो भी प्रशिक्षण लिया था, उससे मैं वो करने के लिए तैयार नहीं था जो मैंने किया।”
"अगर सैनिकों की बात सच है, तो तुम उस असुर को गिराने के लिए उस बाजार चौक के आधे हिस्से तक छलांग लगाकर गए थे," धनवंतरी ने कहा।
“मुझे लगता है कि यह थोड़ी अतिशयोक्ति होगी,” वरारुची ने कंधे उचकाते हुए कहा। “लेकिन बहुत ज्यादा नहीं।”
वेताल भट्ट ने कहा, "मुझे इस बात में भी बहुत दिलचस्पी है कि महल के द्वार तोड़ने वाले असुर का क्या हुआ। आप कहते हैं कि उसका कवच अचानक ही चूर-चूर हो गया?"
“जी आचार्य,” वराहमिहिर ने ज़ोर देकर कहा। “हमारी आँखों के सामने, बिना किसी समझ से परे। हमने उस राक्षस को रोकने के लिए हर संभव प्रयास किया, लेकिन कुछ भी कारगर नहीं हुआ। तभी क्षपणक ने एक बाण चलाया और उसका कवच चकनाचूर हो गया।” “क्या उस बाण में कोई अनूठी बात थी?” विक्रमादित्य ने क्षपणक की ओर देखा। “बिल्कुल नहीं। यह शाही संघ में बने एक सेट का हिस्सा था, जैसे बाकी सबके होते हैं। दरअसल, इससे पहले मैंने जो तीर चलाए थे, वे भी इसी सेट के थे। लेकिन

हाँ...” क्षपणक रुका। “पहले तीर के बाद मैंने जो तीर चलाया, उसका भी राक्षस के कवच पर असर हुआ। कवच चकनाचूर हो गया।”
“बेहद दिलचस्प,” राजगुरु ने टिप्पणी की।
“अगर यह इतना दिलचस्प है, तो शंकु के साथ जो हुआ उसके बारे में आपकी क्या राय है?” सम्राट ने सिर पर पट्टी बांधे चुपचाप बैठी लड़की की ओर देखते हुए कहा। “सचमुच,” वराहमिहिर ने आश्चर्य से शंकु की ओर मुड़ते हुए कहा। “तुम उत्तरी द्वार के बाहर कैसे पहुँच गए?”
“मुझे नहीं पता, माननीय न्यायाधीश,” शंकु ने थोड़ा सिकुड़ते हुए सिर हिलाया। “मुझे कुछ याद नहीं है।”
“उसके साथ मौजूद सैनिकों का कहना है कि उन्होंने उसे राक्षस के पैर से कुचलने से ठीक पहले गायब होते देखा,” कालिदास ने अविश्वास से सिर हिलाया। विक्रमादित्य को आश्चर्य से कहीं अधिक कालिदास की आवाज़ में राहत महसूस हुई। “तुमने भी कुछ बुरा नहीं किया, मेरे मित्र,” राजा ने कहा। “ये असुर स्पष्ट रूप से बलवान और क्रूर थे, लेकिन तुमने उनमें से एक का कवच अपने नंगे हाथों से तोड़ दिया और उसे झील में फेंक दिया।”
“इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है,” धनवंतरी ने हल्के-फुल्के अंदाज़ में हंसते हुए कहा। “ये तो बस कालिदास का स्वाभाविक अंदाज़ था। जब वो और अमर सिंह इस तरह की हरकतें करते हैं तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए।”
“उससे कोई खबर मिली?” राजा ने पूछा। दूसरों को सिर हिलाते देख वह नाराज़ हो गया। “काफी समय हो गया है, है ना? ऐसे समय में अमरा सिंह का नियमित रूप से खबर न भेजना अजीब लगता है।”
“शायद हमें बताने के लिए कुछ है ही नहीं,” चिकित्सक ने आँखों में शरारत भरी चमक के साथ कहा। “यह अजीब बात है कि अमरा सिंह युद्ध के इरादे से सीमा पर गए थे; उनके जाने के दिन से ही हम युद्ध में व्यस्त हैं, जबकि वे शायद उदयपुरी की चौकी में मक्खियाँ भगा रहे होंगे।”
अपने साथी पार्षद की दुर्दशा के बारे में सोचकर माहौल में कुछ सुधार आया, लेकिन आचार्य द्वारा कही गई अगली बात के महत्व ने फिर से गंभीरता को वापस ला दिया।
“मुझे लगता है कि अमारा सिम्हा को वापस बुलाना एक अच्छा विचार हो सकता है। वह यहाँ ज़्यादा उपयोगी साबित होंगे – कम से कम तब तक जब तक हमें सीमावर्ती इलाकों से हुना और साका लोगों की गतिविधियों के बारे में कोई ठोस खबर नहीं मिल जाती।”

विक्रमादित्य चुपचाप अपनी उंगलियों के जोड़ों को देखता रहा।
“महाराज, आप जानते हैं कि वे लौटेंगे। इसीलिए आपने कल रात सीमावर्ती लोक की यात्रा करना उचित समझा। इसीलिए आप मातृ भविष्यवक्ता को महल में लाए हैं।” आचार्य कुछ देर रुके, उनकी स्मृति में कुछ हलचल हुई – एक चेतावनी! – लेकिन पल भर में वह गायब हो गई। “उज्जायिनी की रक्षा के लिए अधिक से अधिक सैनिकों की आवश्यकता है, और अमर सिंह सर्वश्रेष्ठ बीस सैनिकों के बराबर हैं।”
सम्राट ने सिर हिलाया। “आप सही कह रहे हैं, राजगुरु। मैं तो बस यह सोच रहा था कि क्या घटाकरपारा को बिना निगरानी के छोड़ना ठीक रहेगा। वह अभी छोटा है...” “उस उम्र में आप हूणों और शकों से लड़ रहे थे,” वेतला भट्ट ने याद दिलाया। “और वह अकेला नहीं है। वह अतुल्यतेज के साथ है, और अमर सिंह से जो कुछ भी पता चलता है, अतुल्यतेज एक सक्षम सेनापति है। मुझे लगता है कि हमें घटकरपारा पर और भी अधिक भरोसा करना चाहिए।”
“हम आपकी सलाह मानेंगे,” राजा ने सिर झुकाया और वरारुचि की ओर मुड़े। “कृपया उदयपुरी को अमर सिंह को वापस बुलाने का संदेश भेजें।”
वररुचि के जाने के साथ ही सभा भंग होने लगी। जब पार्षद खड़े हुए तो वराहमिहिर ने राजा से कहा, “इस सारी अफरा-तफरी में मैं आपसे विशाखा के बारे में पूछना भूल गया। क्षमा चाहता हूँ... वह कैसी है?”
“वह ठीक है, हालांकि कल से उसकी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ है,” विक्रमादित्य ने उत्तर दिया। “मुझे डर है कि भूलभुलैया में ले जाने से उस पर असर पड़ा होगा। और हाँ, मुझे याद आया – मैंने वैद्य को कल शाम से नहीं देखा है…” सलाहकारों की ओर देखते हुए चिंता से उसकी भौंहें तन गईं। “मुझे उम्मीद है कि वह अभी भी महल में है और सुरक्षित है। उसे बुला लो।”
वराहमिहिर ने धनवंतरी पर तिरछी नज़र डाली। वैद्य का उत्साह फीका पड़ गया था, और जब वह दूसरों के पीछे-पीछे कक्ष से बाहर निकला, तो वह बेहद उदास और निराश लग रहा था। वराहमिहिर को अफ़सोस हुआ कि उसने विशाखा की हालत का ज़िक्र क्यों किया।
अपनी बैसाखी के सहारे लड़खड़ाते हुए बाहर निकलते समय, वराहमिहिर ने मन ही मन वैद्य को कोसना शुरू कर दिया।
***

जैकारांडा का पेड़ झील के चारों ओर बने सैरगाह के उत्तर-पूर्वी छोर पर स्थित था। महल के मुख्य मार्गों से अलग और सजावटी बांसों की घनी झाड़ियों से छिपा हुआ, यह पेड़ शुक्राचार्य को एकांत और गोपनीयता प्रदान करता था - जिसकी

उन्हें सुबह से तलाश थी। उनके मन में बहुत कुछ चल रहा था और वे किसी भी तरह की बाधा नहीं चाहते थे।
जैकारांडा के पेड़ के नीचे बैठे मुख्य पुजारी को आश्चर्य हो रहा था कि मरुतों ने हलाहल की खोज को किस प्रकार छोड़ दिया था। वे इतनी अचानक और अप्रत्याशित रूप से चले गए थे - उज्जैनी पर पुनर्जन्म मंत्र पढ़ने के कुछ ही मिनटों बाद - कि उन्हें क्षण भर के लिए चिंता हुई कि शायद उन्हें वह मिल गया है जिसके लिए वे आए थे।
उनकी पराजय से शुक्राचार्य अत्यंत प्रसन्न हुए, भले ही इससे कटार चुराने की उनकी अपनी योजना अचानक रुक गई थी। लेकिन उन्हें इससे कोई फर्क नहीं पड़ा; उनके पास विशाखा से जुड़ी एक और विस्तृत योजना थी जिस पर वे काम कर सकते थे। उन्हें तो बस इस बात से आनंद आया कि मनुष्यों ने इंद्र के अहंकार को करारा जवाब दिया था।
फिर भी, दिति के पुत्रों का आत्मसमर्पण समझ से परे था, खासकर तब जब उनकी सभी गणनाओं ने मानव विजय की संभावना को पूरी तरह खारिज कर दिया था। इसके अलावा, मुख्य पुजारी को पता चला था कि विक्रमादित्य स्वयं किसी भी युद्ध में शामिल नहीं थे – हमलों के दौरान राजा कहाँ थे? – जिसका अर्थ यह था कि उनके सलाहकारों ने ही इस भयंकर हमले को विफल किया था।
और कुछ अफवाहें भी थीं जो चारों ओर फैल रही थीं। राजा के सौतेले भाई ने एक मरुत पर हमला करने के लिए असंभव छलांग लगाई थी... उस विशालकाय ने एक और मरुत से लड़कर उसे महल की झील में फेंक दिया था... एक युवती तीसरे मरुत के पैरों तले से गायब हो गई थी... शुक्राचार्य को सहज ज्ञान से समझ आ गया था कि उनके मंत्र ने इस हार में भूमिका निभाई है। उन्हें बस यह नहीं पता था कि ये सारी बातें आपस में कैसे जुड़ती हैं।
एक और बात जो उसे परेशान कर रही थी, वह यह थी कि वह राजा और उसकी परिषद को कैसे समझाएगा कि रात्रि के हमले में असुरों का कोई हाथ नहीं था। योजना के अनुसार काम होने के लिए यह आवश्यक था कि मनुष्य असुरों को अनुकूल दृष्टि से देखें; लेकिन अब, मरुतों के कारण, असुरों की छवि खराब हो गई थी।
फिर भी, वह सीधे परिषद के पास जाकर उन्हें यह नहीं बता सकता था कि मारुत इंद्र के आदेश पर उज्जैन आए थे...
मुख्य पुजारी लोहे की बनी बेंच से उठकर महल में वापस चले गए। उन्हें जवाब चाहिए थे। पिछली रात जो कुछ भी हुआ था, उसके बारे में उन्हें हड्डियों से परामर्श करना था।

***

अपने महल के शिखर पर स्थित एक ऊंचे बुर्ज पर खड़े होकर, इंद्र अमरावती के विशाल दृश्य को निहार सकते थे, जो पश्चिम दिशा से आती धूप में चमकीले चादर की तरह जगमगा रहा था। लेकिन देवता सौंदर्य के प्रति उदासीन थे, उनकी गहरी निगाहें शहर के ऊपर एक बिंदु पर टिकी हुई थीं, उनका मन अंधकारमय विचारों और भयानक कर्मों से भरा हुआ था।
जब से नारद ने अचानक आकर उसे इस हालत में देखा था, तब से उसका यही हाल था। उसने उर्वशी और दो अन्य अप्सराओं को एक-दूसरे के वस्त्र उतारते देखा, और अवंती में हुए नरसंहार की खबर से उनका मनमोहक और उत्तेजक प्रेम प्रसंग बाधित हो गया। नारद द्वारा मरुतों के दुर्दशा का वर्णन सुनकर, देवलोक के स्वामी ने उन अप्सराओं को विदा कर दिया और क्रोध और कुंठा में एक दर्जन तलवारें तोड़ दीं - फिर अपनी अगली चाल की योजना बनाने के लिए एकांत में चले गए।
विक्रमादित्य। नरक की अग्नियों को धारण करने वाला।
उसे उस मानव राजा का नाम सुनना कितना बुरा लगता था। वही राजा जिसने उसे पहले ही दो बार अपमानित किया था। वही राजा जिसने अश्विनों और मरुतों के भाईचारे को उनकी जीत से हठपूर्वक वंचित रखा था... जिसने उसे कटार सौंपने से इनकार कर दिया था...
ऐसी हठधर्मिता को दंडित किया जाना था। मृत्युदंड के रूप में।
एक गहरी सांस लेते हुए इंद्र ने मन बना लिया। वह अलका जाकर जादुई यक्षों के स्वामी कुबेर से मिलने अवश्य जाएगा। यह विचार उसे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन उसने अपना अहंकार त्यागकर उस घृणित और अभिमानी यक्ष राजा से मिलने का निश्चय किया।
विक्रमादित्य से बदला लेने की इंद्र की योजना में कुबेर की सहायता अत्यंत महत्वपूर्ण होगी।

पुस्तक 1 का अंत

[illegible]
([illegible])

alankara	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
badi-maa	[illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible]; [illegible] [illegible]
bhoota	[illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible]
chhoti-maa	[illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
danava	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
Dasa-Mahavidyas	[illegible] [illegible] [illegible]; [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
gurudev	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]	[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

suryayantra	□□□□□-□□□□□; □□□□□□□□□□□□
□□	□□□; □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□
tilaka	□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□
□□□□□□□	□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□
□□□□	□□□□□□□

जल्द आ रहा है…

देवलोक और पाताल लोक से आए हमलावर गिरोहों को सफलतापूर्वक खदेड़ दिया गया है
– लेकिन इन हमलों ने अवंती को बुरी तरह से पंगु बना दिया है। उज्जैन बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई है, उसके नागरिक भयभीत हैं और उनका मनोबल बुरी तरह से टूट गया है। दूसरी ओर, सिंधुवर्त के सहयोगी राज्यों के बीच दरारें उभरने लगी हैं, साथ ही हूणों और शकों का खतरा भी बढ़ता जा रहा है – और मगध पूर्व में एक शक्तिशाली राज्य के रूप में उभर रहा है।
अच्छी बात सिर्फ यह है कि हलाहला फिलहाल सुरक्षित है।
लेकिन इंद्र और शुक्राचार्य विष प्राप्त किए बिना चैन से नहीं बैठेंगे – वे विक्रमादित्य के संकल्प को तोड़ने के लिए पहले से ही अपनी योजनाएँ बना रहे हैं। और नारद के पास शायद वह युक्ति हो जो न केवल राजा के प्रतिरोध को तोड़ दे, बल्कि रक्षकों के विनाश का कारण भी बने...

"... the gold standard: a great story in the hands of a great storyteller. Epic in scale. Rich in characters."

– *Rensil D'Silva, scriptwriter* (*Rang De Basanti & 24*)

The deadly Halahala, the all-devouring poison churned from the depths of the White Lake by the devas and asuras, was swallowed by Shiva to save the universe from extinction.

But was the Halahala truly destroyed?

A small portion still remains – a weapon powerful enough to guarantee victory to whoever possesses it. And both asuras and devas, locked in battle for supremacy, will stop at nothing to claim it.

As the forces of Devaloka and Patala, led by Indra and Shukracharya, plot to possess the Halahala, Shiva turns to mankind to guard it from their murderous clutches. It is now up to Samrat Vikramaditya and his Council of Nine to quell the supernatural hordes – and prevent the universe from tumbling into chaos!

A sweeping tale of honour and courage in the face of infinite danger, greed and deceit, *The Guardians of the Halahala* is a fantastical journey into a time of myth and legend.

SHATRUJEET NATH has sold ice creams, peddled computer training courses, written ad copy and reported on business as a journalist and assistant editor at *The Economic Times*. His first book, *The Karachi Deception*, was published in 2013. He divides his time between writing fiction and poetry, reading, playing with his daughter, and dreaming of buying a small castle in Scotland. Till that happens, he plans to continue living in Mumbai.

Cover Illustration: Vijayakumar Arumugam. Titling: WhiteCrow Designs. Sun-crest: Paul Thomas

Elevate Your Life. Transform Your World.

JAICO BOOKS

www.jaicobooks.com Fiction

ISBN-13: 978-81-8495-638-2